In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बनौषधि-चन्द्रोदय--

लेखक—
चन्द्रराज भण्डारी "विशारद"

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

B.J.B.N.L

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वनौषधि-चन्द्रोदय

(चौथा भाग)

('चि से लेकर तू' तक की औषधियां)

लेखक—
श्री चन्द्रराज भण्डारी 'विशारद'

प्रकाशक—
चन्द्रराज भण्डारी
ज्ञान-मन्दिर, भानपुरा
(इन्दौर-स्टेट)

प्रथम संस्करण

MOTI LAL BANARSI DASS LAHORE

मूल्य

पूरा सेट १० भाग का
साधारण संस्करण ३०)
साधारण सजिल्द ३५)
राज संस्करण ५०)

एक भाग का
साधारण संस्करण ३)
साधारण संस्करण सजिल्द ३॥)
राज संस्करण ५)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रकाशक—
चन्द्रराज भण्डारी,
संचालक—
ज्ञान-मन्दिर,
भानपुर (इन्दौर-स्टेट)

Vaidyaraj ...
National Ayurvedic ...
Punjabi Bagh, New Delhi ...
Call No.....
Book No.
Acc No. 000019

भूल सुधार

इस भाग के पृष्ठ १११६ पर डिजीटेलिस के प्रकरण में डिजीटेलिस का धर्म "हृदय के लिये उत्तेजक" छप गया है उस स्थान पर "हृदय के लिए बलदायक" ऐसा होना चाहिए । पाठक इसको जरूर सुधार लें । क्योंकि डिजीटेलिस हृदय को उत्तेजना नहीं देता, वह उसकी गतिको सुव्यवस्थित करके उसे बल देता है ।

LX
152N.4

270

मुद्रक—
मथुरा प्रसाद गुप्त,
जाव प्रेस, करनघण्टा, बनारस ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

PATRONS.

1—His Highness Maharaja dhiraj Sir George Jiwaji Rao Scindia Alijah Bahadur G. C. I. E., Gwalior.

2—Late Lieutenant colonal His Highness Maharao Sir Ummed Singh Bahadur G. C. S. I. G. C. I. E. G. B. E., Kotah.

3—Lieutenant His Highness Maharaja Krishna Kumar Singh Bahadur, Bhawnagar.

4—Lieutenant colonal His Highness Maharaja Jam Sahab Sir Digvijay Singh Bahadur K. C. S. I., Nawanagar.

5—Lieutenant colonal His Highness Maharaja Lokendra Sir Govind Singh Bahadur G. C. S. I., K. C. S. I., Datia,

6—Lieutenant His Highness Maharaj Rana Rajendra Singh Bahadur, Jhalawar.

7—Captain His Higaness Maharaja Mahendra Sir Yadvendra Singh Bahadur K. C. S. I., K. C. I. E., Panna.

8—Rai Bahadur Devi Singh Diwan Rajgarh State, Rajgarh.

9—Seth Magni Ramji Ram Kumarji Bangar Didwana.

10—Rai Bahadur Rajya Bhushan Danbir Seth Hiralal Kashaliwal Indore.

11—Seth Sohanlalji Shubhakaranji Ratanlalji Dugar Fatehpur.

12—Seth Chunnilal Bhaichand Mehta Bombay..

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust.

स्मृति

स्व० सेठ कमलापतजी सिंहानिया कानपुर
की स्मृतिमें

001615

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection .

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय सूची

(१)

हिन्दी

नाम	पृष्ठ
चिलका मकोय	६१५
चाँदकुड़ा	६१६
चिनाई घास	६१६
चिरबिल्व (चरेल)	६१७
चीड़	६१७
चीनी मिट्टी	६२०
चीपी	६२१
चीना	६२१
चीकू	६२२
चुकन्दर	६२३
चुन्नापिण्डु	६२५
चुनार	६२५
चुङ्गी	६२६
चितासिंगी	६२७
चुम्बर	६२७
चूलासी	६२८
चूका	६२८
चेरुका	६१२६
चेम्बुल	६२६
चेरुपिनाई	६३०
चेदबला	६३०
चेरुचुराल	६३१
चोबचीनी	६३१
चूना	६३५

नाम	पृष्ठ
चूड़ाखी	६४२
चोबेहयात	६४२
चोबचीनी बड़ी	६४४
चोबचीनी हिन्दी	६४५
चोबचीनी (जंगली उसवा)	६४५
चोहतक	६४६
चोरा	६४७
चौलिया	६४७
चोधारा	६४८
चोटाहलकुसा	६४८
चौंलाई	६४६
छरीला	६५१
छत्री	६५२
छत्ता	६५३
छतरछी	६५४
छतरमूठा	६५४
छिरेटा	६५५
छोंकर (खेजड़ा)	६५८
छिरबेल	६६०
छतिवन (सप्तपर्ण)	६६१
छोटाचांद (सर्पगंधा)	६६४
छोटा तरोदा	६६७
छोटाकूट	६६७
छोटा जंगली अंजीर	६६८

नाम	पृष्ठ
जकाल	६६८
जखमेहयात	६६८
जंगली अंगूर	६७०
जंगली बादाम	६७१
जंगली अरण्डी	६७२
जंगली अखरोट	६७३
जंगली झाऊ	६७४
जंगली गाजर	६७४
जगली सूरण (मदनमस्त)	६७६
जंगली हलदी	६७६
जंगली अदरख	६७७
जंगली जायफल	६७७
जंगली प्याज	६७८
जंगली मदनमस्त	६७८
जंगली मेहंदी	६७६
जंजबील	६७६
जंजीदयून	६७६
जटामांसो	६८०
जतसाल पान	६८४
जदवार	६८४
जनबा	६८८
जनबक	६८८
जफ्त बहरी	६८६
जफ्ततर	६८६

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नाम	पृष्ठ
जफ़ आफरीद	९९१
जन्ब-अल-खरूप	९९१
जन्ब अलसब्बा	९९२
जन्ब-अल-करब	९९३
जम्ब-अल-खील	९९३
जबरजद	९९४
जबरा	९९५
जवरा हींग	९९६
जमसत	९९७
जमना	९९७
जमरासी (भूतकेशी)	९९७
जमालगोटा	९९८
जम्भीरी	१००३
जमीकन्द (सूरणकन्द)	१००३
जयन्ती	१००५
जरेशक	१००६
जरनब	१००६
जरर	१००७
ज़रीन	१००८
जरविन्द-इ-तवील	१००८
जरविन्द-इ-गिर्द	१००९
जरमीलक	१०१०
जरायु प्रिया	१०११
जरूल	१०१२
जगबूल	१०१३
जफ़रा	१०१३
जरी	१०१३
जल	१०१४
जल कुम्भी	१०२३
जलकुतरा	१०२४
जलजम्बुवा	१०२४
जलकन्दरा	१०२५
जल केशर	१०२६
जलनीम	१०२६
जल पिप्पली	१०२७
जलबेंत	१०२८
जलब्राह्मी	१०२९
जल महुवा	१०२९
जलसिरस	१०३०
जलाधारी	१०३०
जलमदास	१०३१
जलूर	१०३२
जवासा	१०३३
जस्त	१०३४
जहरत अलमाह	१०३६
जहरी सोनटक्का	१०३७
जहरमोहरा खताई	१०३८
जाकूट	१०४०
जादा	१०४०
जामुन	१०४०
जाम्बू (हरुल)	१०४९
जामू	१०५०
जायफ़ल	१०५०
जायपत्री	१०५३
जालनीम	१०५४
जालीदार	१०५५
जावशीर	१०५६
जावशीरका गोंद	१०५७
जेठीमद	१०५८
जैत-अल-सूदान	१०५८
जैतून	१०५९
जोटोजोटिया	१०६१
जोड़ तोड़	१०६२
ज़ोजुल मरज	१०६३
जोलावदेसा	१०६३
जौ	१०६४
जियापोता	१०६७
जिकलक	१०७०
जिंगन	१०७०
जिंगना	१०७२
जिम	१०७३
जिउन्दली	१०७४
जिमजिम	१०७४
जियान	१०७५
जीरा	१०७६
जीरा स्याह	१०७८
जीउन्ती	१०८०
जीवन्ती (सोमलता)	१०८१
जीवन्ती	१०८१
जीवन्ती बड़ी	१०८२
जीवन्ती पीली	१०८३
जीवन्ती कड़वी	१०८३
जुआर	१०८४
जुल पापड़ा	१०८६
जुनवेदस्तर	१०८७
जूकूश्ता	१०८९
जूट	१०९०
जूफरा	१०९२
जूफा	१०९२
जूही	१०९४
जेबुरेंडी	१०९५
झड़बेर	१०९६
झाऊ	१०९७
झाऊलाल	१०९९
झामरबेल	१०९९
झिंझेरी	११००
झिंझा	११०१
झिन्ती	११०१
झिन्तीनीली	११०२
झिल	११०३
झीपटा	११०४
झुनझुनिया	११०५
टंकारी	११०५
टण्डीझंकनी	११०५
टमाटर	११०६

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नाम	पृष्ठ
टरमेरा	११०८
टरारा	११०९
टिकचना	११०९
टिंटा	१११०
टीण्डसी	१११०
टेला जुमिकी	१११०
टेल्लेउसिरिका	१११०
टोरकी	१११२
डिकामारी	१११३
डिगिबेंटिया	१११५
डिजिटेलिस	१११५
डौडी	१११७
ढाक	१११८
ढोल समुद्र	११२३
तगर	११२४
तगर (२)	११२७
तज	११२८
तपनी वेल	११२९
तपसी	११३०
तबर्रक	११३०
तम्बाकू	११३१
तम्बाकू कलकतिया	११३४
तरबूज	११३४
तरली	११३५
तरमीस	११३६
तराबुल सीदा	११३७
तरवा	११३८
तरवा चूक	११३८
तरवड़	११३९
तरोई	११४०
तवाखीर	११४२
ताड़	११४३
तान्दुलजा	११४६
तापमारी	११४६
ताम्बा	११४७
ताम्बट	११५५
ताम्बरा	११५६
ताम्बूल (नागरवेल)	११५७
तारक	११६२
तालमखाना	११६३
तालीस पत्र	११६६
त्रायमाण	११६८
तिड़ी	११७०
तितवेशुल	११७०
तिन्दू	११७१
तिनिश	११७३
तिपानी	११७४
तिपानी (२)	११७५
तिमूर	११७५
तिमूकिंची	११७६
तिरफ़ल	११७६
तिल	११७७
तिलक	११८२
तिलफाड़ा	११८२
तिलवन	११८३
तिलियाकोरी	११८३
त्रिनपालि	११८४
त्रिपत्र	११८४
त्रिपंखी	११८५
तीताफूल	११८५
तुइया	११८६
तुक्किर (असरून)	११८६
तुख्म हमाज	११८७
तुख्म रिहां	११८८
तुख्म कशूस	११८८
तुख्म अशिस्त	११८९
तुख्म शरबती	११८९
तुख्म फेरुंज मुश्क	११८९
तुख्म बलंगू	११९०
तुख्म मलंगा	११९१
ततुम्बड़ीजटा	११९१
तुम्बरु (नैपाली धनिया)	११९१
तुम्मुल	११९४
तुरंजबीन	११९४
तुलसी	११९५
तुलसी बबुई	१२०२
तुलसी अर्जकी	१२०५
तुलसी मूत्री	१२०६
तुला	१२०६
तून	१२०७

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय सूची

(२)

संस्कृत

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
अमृतो पहिता	६३१	घण्टावीणा	१११५	टंकारी	११०५
अर्क पुष्पी	६६०	चन्द्र सुरा	६६४	डिण्डिश	१११०
अरण्य सूरण	६७५	चंचू	१०६०	ढोल समुद्रिका	११२४
अप विषा	६८४	चीनक	६२२	तण्डुलीय	६४६
अर्शोघ्न	१००३	चूर्ण	६३५	तगर	११२४
अम्बु शिरीषिका	१०३०	चिरबिल्व	६१७	तन्दुलिया	११२९
अश्वघ्न	१०३०	छत्र	६५३	तवक्षीर	११४२
अधिकंटक	१०३३	जटामांसी	६८०	ताम्र	११४७
अश्मन्तक	११००	जयपाल	६६८	ताम्बूल बल्लि	११५७
अल्प मारिश	११४६	जयन्ती	१००५	तारक	११६३
अर्जका	१२०५	अरायुप्रिया	१०११	तालीस पत्र	११६६
अजगन्धिका	१२०२	जल पिप्पली	१०२७	तिक्तजीवन्तिका	१०८३
आबर्त्तकी	११३६	जल बेतस	१०२८	तिक्त जीवन्ती	१११७
इक्षुपत्रका	१०८४	जल मधुक	१०२९	तिन्दुक	११७१
ऊपन	११८६	जम्बू	१०४१	तिनिश	११७३
ओष्ट फल	६४७	जाति फल	१०५०	तिल	११७७
कृष्ण जीरक	१०७८	जाति पत्री	१०५३	तिलक	११८२
कामुक	६७७	जिंगनी	१०७०	त्रिपर्णिका	११७५
कान काकुली	१०४६	जीरक	१०७६	त्रिपत्री	११८५
कालिंग	११३४	जीवन्ती	१०८१	तुलसी	११६५
कुम्भिका	१०२३	जीवदास	९४२	तुम्बरु	११६१
कोषातकी	११४०	झाऊका	१०६७	तुम्बरु	११७६
कोकिलाक्ष	११६३	झिन्ती	११०१	तूर्ण	११७७
ग्रीष्म सुन्दर	१०७३	झिल्ला	११०३	दासी	११०२

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नाम	पृष्ट	नाम	पृष्ट	नाम	पृष्ट
धूम्र पत्रिका	११३१	भाद्र दारु	६१७	रक्त झाऊ	१०९९
नाड़ी हिंगु	१११३	भूमि पिशाच	११४३	शण पुष्पी	११०४
निकुम्भा	६७२	भूतघ्ना	११०८	शमी	६५८
पर्पटका	१०८७	भूम्यावर्त्तकी	९६७	शिला पुष्प	६५०
पलाश	१११८	मसि	११५६	सप्तपर्ण	६६१
पाताल गरुड़ी	९५५	यशदम्	१०३४	सलिल	१०१४
पुत्र जीवा	१०६७	यव	१०६४	सुभद्राणी	११६८
वन हरिद्रा	६७६	यवास शर्करा	११६४	हिरण्य शाक	६४५
बनार्द्रकम्	६७७	रक्त गुञ्जन	६२३	हेम सागर	६६६
				हेम पूर्ण	१०८३

विषय सूची

(३)

मराठी

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
अलंबि	९५३	गोमेटी	११३५	जयन्ती	१००५
अरन	९६७	गोण्डाल	१०२३	जला पिप्पली	१०२७
अतकी	१०७४	घायमारी	६६६	जलवेतस	१०२८
अजगन्धा	१२०५	चिकू	६२२	जल शिरसी	१०३०
आपटा	११००	चुकन्दर	९२३	जवासा	१०३३
कंचेरी	१०२४	चूना	६३५	जश्त	१०३५
कालिंगड़	११३४	चोबचीनी	६३१	जम्बा	१०४६
काला पलास	११७३	चोंचे	१०६६	जव	१०६४
कोड़ सुन्दा	११६३	जंगली बादाम	६७१	जाई	१०६४
काले झान	६७०	जंगली एरण्डी	६७२	जायफल	१०५०
खरमटी	१०५५	जंगली अक्रोड़	६७३	जायपत्री	१०५३
खरस	१०८६	जंगली सरू	६७४	जाम्बू	१०४१
खटखटी	११५५	जंगली गाजर	६७४	जीवपुत्रक	१०६७
गोटी शुकचिन	६४४	जटामांसी	६८०	जीरें	१०७६
गोड़ा सूरण	१००३	जदवार	६८४	जीवन्ती	१०८१

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नाम	पृष्ठ
जुआर	१०८४
जैपाल	६६६
झरस	१०७३
झाऊ	१०६७
टेम्बुरणी	११७१
डेकामारी	१११३
डिंडा	११२४
तगर	११२४
तम्बाकू	११३१
तरवड़	११३६
तवखीर	११४२
ताड़	११४३
तापमारी	११४६
ताम्बे	११४७
तामड़ी सिरनाटी	१०६६
तान्दलजा	६४६
त्रायमाण	११६८
तिपानी	११७४
तिरफल	११७६
तिल्ली	११७७
तिल पुष्पक	११८१
त्रिपत्ती	११८५
तीवर	६२१
तुलसी	११६५
तुलसी बाबुई	१२०२
तूणी	१२०७
तेजवल	१०३०
तोरकी	११११
दग्गड़ फूल	६५१
धागरी	११०४
नागवेल	११५७
नैपालौ धनिया	११६३
पलास	१११८
पित्तमारि	११७५
पांढरा चौधारा	६४८
पानी	१०१४
फ़ोपटी	११०५
बरमी	११६६
बावड़	६१७
बाबी	६३०
बुन्द्रा	१०१२
भुईबोर	१०६६
भुंईतरवड़	६६७
मदनमस्त	६७५
मलावारी हलद	६७७
मूत्री तुलस	१२०६
मोई	१०७०
मोटवेल	६४५
राले	६२२
राणहलद	६७६
राणजायफ़ल	६७७
रानशेर	१०८१
राय दौड़ी	१११७
रानतान्दुलजा	११४६
लहानमाट	११२६
लोहलक्कड़ (चोबेइयात)	६५२
वासनवेल	६५५
व्हेला लोठी	६८४
विषदौड़ी	१०८३
शमी	६५८
शिरदौड़ी	६६०
शाजीरे	१०७८
शिराली	११४०
सरल देवदार	६१८
सञ्जा	१२०३
सातविण	६६१
सापसंधा	६६४
हरणवेल	१०८३

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय सूची

(४)

गुजराती

नाम	पृष्ठ
अड़खाऊ तान्दलजो	११४६
आवड़	११३६
आसुन्दरो	११००
एखरो	११६३
कड़वो खररखोडो	१०८३
कणझो	६१७
कागदाना छत्तर	६५३
काली फुलड़ी	१०७२
कालिगडूं	११३४
कासियन घास	११८४
खरखोड़ी	१०८३
खाकरा	१११८
खेज़ड़ी	६५८
खीरवेल	६६०
घुगरा	११०४
चम्बेलि	१०३२
चणिया बोर	१०६६
चीणो	६२२
चीकुनु झाड़	६२३
चुकन्दर	६२३
चूना	६३५
चोपचीनी	६३१
छूंछ	६८०
जटामांसी	६८०
जयन्ती	१००५
जलकुम्भी	१०२३
जलजाम्बवों	१०२४
जलवेतस	११२८
जलमहुड़ो	१०२६
जलसिरसी	१०३०
जवासा	१०३३
जश्त	१०३४
जहरमोहरो	१०३८
जव	१०६४
जाम्बो	१०४२
जायफ़ल	१०५०
जायपत्री	१०५३
जियापोता	१०६७
जीरूं	१०७६
जुआर	१०८४
जुआशुर	१०५६
जुई	१०६४
जेठोमद	१०५८
झाऊ	१०६७
झिल	११०३
झीणकी गली	११२२
टीमरू	११७१
डेकामारी	१११३
ढीमड़ा	११२६
तगर गंठोड़ा	११२४
तमाखू	११३१
तवाखीर	११४२
तल	११७७
ताम्बो	११४७
ताड़	११४३
तालीसपत्र	११६६
त्रायमाण	११६८
तान्दलजो	६४६
तुरियां	११४०
तुलसी	११६५
तून	१२०७
तेजबल	१०३१
दरिया बेल	११२६
धोली अड़बाउ गदब	६२७
धोलू चोधारो	६४७
निविशी	६८४
नानी डौड़ी	१११७
नागर बेल पान	११५७
नैपालो	६६८
पदेखड़ो	१०५५
पत्थर फूल	६५०
पाणी	१०१४
बन आदुं	६७७
बेवड़ी	६५५
भींतगरियों	१०९६
भीनो हरमो	११७३
भूत केशी	६६७
मवेड़ी	१६७०
मीढी आंवल	६६७
मोटी खरखोड़ी	१०८२
रतबेलियो	१०२७
राड़ा रुड़ी	१०८१
रुंछाली धामणी	११५५
लाल झाऊ	१०६६
बासरियो ओखराड़	११८५
शाजीरूं	१०७८
सरल देवदार	६१८
सर्प गंधा	६६४
सब्जा	१२०२
सातवण वृक्ष	६६१
सूरण	१००३

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय सूची

(५)

बंगला

नाम	पृष्ठ
अर्चिका	९२१
ओल	१००३
कुमारिका	६४५
कुलगाछ	१०९६
कुद्री	११३५
कुलेकाँटा	११६३
कोपाटा	६६९
गाब	११७१
गुरिया शुकचीनो	६४५
घोषालता	११४०
चंपनतिया	६४६
चिने	९२२
चूना	९३५
चेतुर	१०३२
चोटाहल कुसा	६४८
छतकुड़ा	९५३
छतिनगाछ	६६१
छोटा चाँद	९६४
जंगली अक्रोट	९७३
जटामांसी	६८०
जतसाल पान	६८४
जयन्ती	१००५
जरूल	१०१२
जल	१०१४
जलवेंत	१०२८
जलमौल	१०२६
जवासा	१०३३
जवेशी	१०५६
जामगाछ	१०४१
जायफल	१०५०
जायत्री	१०५३
जियापोता	१०६७
जिमशाक	१०७३
जीरे	१०७६
जीवन्ती	१०८१
जुल पापड़ा	१०८६
जूई	१०९४
जैपाल	६६८
जोआर	१०८४
झएटी	११०१
झाऊ	६ ४
झाऊ गाछ	१०६७
टेपारी	११०५
तगर पाटुका	११२४
तमाकू	११३१
तरमूज	११३४
तवक्षीर	११४२
तलगाछ	११४३
तामा	११४७
ताम्बूल	११५७
तारो	११६३
त्राय माण	११६८
तित बेगुम	११७१
तिंनिश	११७३
तिलगाछ	११७७
तिलिया कोरी	११८३
तुक्किर	११८६
तुलसी	११६५
तून	१२०७
तोप चीनी	६३१
दस्ता	१०३५
दासि	११०२
नैपाली धने	११६२
पलाश गाछ	११ ८
पाना	१०२३
पानी कंचिरा	१०२७
पाट	१०६०
बनसनुई	११०४
बन हलद	६७६
बरा तरोदा	११३६
बाझी नली	१०३१
बाबुइ तुलसी	१२०२
बिट पलग	६२३
बिरमी	११६६
बुद्ध नारिकेल	१२०६
भड़जीवी	१०८२
भांगरा	१११२
मथरंजा	१११२
मुया मुया	६६७
यव	१०६४
लाल भेरण्ड	६७२
शाई गाछ	६५८
शिलिन्दा	६५५
शैलजा	६५१
सरल गन्ध्रा	६१७
हरिन शुकचिन	९४४
हिंगु बिशेष	१११३

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Index.

Latin Names.

Achras Sapota	922	*Borassus Flabellifer*	1143
Agaricus Compestris	953	*Bryophyllum Calycinum*	929
Alewrites moluceana	973	*Butea Frondosa*	1118
Alhagi mawrorum	1033	*Calamus Travencoricus*	931
Allamanda Cathartica	1037	*Calophillum Apetalum*	930
Allophylus Serratus	1174	*Calamus Fasciculatus*	1028
Alpinia Allhugas	1163	*Callicarpa macrophylla*	1112
Alstonia Scholaris	961	*Cappris Heyneane*	929
Alternanthera Sessiles	1024	*Cassia Abovata*	967
Amaranthus Viridis	1129	*Cassia Auriculata*	1139
Amaranthus Blitum	1146	*Casurina Equisetifolia*	974
Amaranthus Tenifolius	949	*Carum Carui*	1078
Amorphophallus sylueticus	975	*Castoreum*	1087
Amorphophallus Campenlatus	1003	*Cimicifuge Felida*	1080
Anagallis Arvensis	1072	*Cinnamomum Cassia*	1128
Angelica Glauca	946	*Citrullus Vulgaris*	1134
Anisomeles malabarica	948	*Claviceps purpurca*	1156
Aralia pseudoginseng	1146	*Corchorus Capsularis*	1090
Aristolochia Longa	1008	*Cocculus Laurifolius*	1182
Aristolochi Rotunda	1009	*Cocculus Villosus*	955
Artemisia Sacrorum	927	*Coldenia Procumbus*	1185
Aqua	1014	*Croton Tiglium*	999
Bassia Longifolia	1029	*Crotalaria Verrucosa*	1104
Bauhinia Vahlii	1032	*Curcuma Aromatice*	976
Bauhinia Racemosa	1100	*Curcuma Angustifolia*	1142
Barleria Cristate	1101	*Cumminum cyminum*	1076
Barleria strigosa	1102	*Cuprum*	1147
Beta Vulgaris	923	*Cycas Rumphii*	978
		Desmodium Pulchelum	984

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Desmotrichum Fimbriatum 1081
Delphinium Denadatum 985
Delphinium Zalil 1168
Diospyros Embryopteris 1171
Digitalis purpurla 1115
Dracocephalum moldavicum 1189
Dregea volubilis 1083
Elaeodendron Glaucum 997
Erigeron Canadensis 1011
Eruca Sativa 1108
Eugenia Jambolana 1042
Ficus Ribos 968
Gordenia Gummifera 1113
Gostrochilus Pandurata 1176
Gentiana Tenalla 1110
Gingibar Cassumunar 977
Gracilaria Lichenoisdes 916
Grewia villosa 1055
Grewia pilosa 1155
Guaiacum officinalis 942
Hippophae Rhamnoides 1138
Hippophae Salicifolia 1138
Holoptelea Integrifolia 917
Holostemma Rheedii 960
Holeus Sorghum 1084
Horâeum Vulgar 1064
Humboldtia Valiana 1063
Hygrophila Spinosa 1163
Hypercum patulam 1194
Hyssopus officinalis 1042
Ipomeu Lridentata 1099
Inedigofera Pausifolia 1103
Indigofero Linifolia 1112
Jasminum Auriculatum 1094
Jatropha Glandulifera 971
Kalanchoe Spathulata 1109
Lagersrocmia Flosregina 1012
Launala Asplenifolia 1109
Leea macrophylla 1124
Leptadenia Reticulata 1117
Leucas aspera 948
Lime 936
Lippia nodiflora 1027
Luffa Acutangula 1140
Lycopus Europaeus 1054
Manisuris Granularis 1184
Maesa Indica 1074
Melilotus Alba 927
Mollugo stricta 1086
Mollugo oppositifolia 1073
Myristica Malabarica 977
Myristica Fragrans 1050
Nordostachys Jatamansi 980
Naregamia Alata 1175
Nepata Elliptica 1191
Nicotiana Tabacam 1131
Nicotiano Rustica 1134
Ocimum Sanctum 1195
Ocimum Baslicum 1202
Ocimum Canum 1205
Ocimum Grandiflorum 1206
Oadina wodeir 1070
Olea Europaca 1059
Opopana ax Chironium 1056
Osbeckia Crinita 928
Ougenia Oogeinensis 1173
Oxyria Digyna 946
Panicum millari 922
Passiflora Foetida 1111
Parmelia Perforata 951
Physalis Peruviana 1105
Phlogacanthus Thyrsiflorus 1085
Pimpinella Heyneana 1170
Pinus Longifolia 918
Pistia Stratiotes 1023

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Piper Betal	1157	*Smilax Zaylanica*	945
Polyporus officnalis	955	*Sonneratia caseolaris*	921
Polyalthia Simiarum	1115	*Solanum Torvom*	1170
Portulaca Tulerosa	974	*Sterculia Foetida*	971
PouZolzia Indica	1186	*Tamarix Gallica*	1097
Prosopies Spicigera	958	*Tamarix Articulata*	1099
Prunus Carnuta	997	*Taxas Baccata*	1166
Primula Reticuleta	1024	*Teverniera nummularia*	1058
Pterygote Alata	1206	*Tonsatto*	1106
Putraziva Roxburghii	1067	*Tiliacora Acuminata*	1183
Ranunculas Avensis	929	*Tricho desma Zeylanicum*	1030
Rauwolfia Serpentina	964	*Tripolium Pratensa*	1184
Rhamnus Dahuricus	930	*Typha Augustata*	1050
Rheum Novile	928	*Urena Repanda*	1061
Rhynchisia mininia	1129	*Veleriana Wallichii*	1124
Ruellia Suffruticosa	947	*Valeriana Hardwickii*	1127
Sagittaria Sagittifolia	967	*Vitis Indica*	971
Salvia Egyptiaca	1190	*Xylia Dolabrifomis*	1049
Sarcocephalus missionis	1031	*Zanthoxylum Oxyphyllum*	1175
Sarcostemma Bretstigma	1081	*Zanthoxylum Rhetsa*	1176
Sauropus Quadrongularis	1111	*Zanthoxycum Alatum*	1192
Serpant Stone	1038	*Zehneria Umbellata*	1135
Sesbonia Egyptiana	1005	*Zincum*	1035
Smilax China	931	*Ziyiphus nummularis*	1096
Smilax glabra	944	*Zornia Diphyila*	1105

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय सूची

(८)

(रोगानुक्रम से)

इस विषय सूची में इस ग्रन्थ में आई हुई औषधियां जिन २ रोगों पर काम करती हैं उनमें से कुछ खास २ रोगों के नाम और औषधियों के नाम पृष्ठांक सहित दिये जारहे हैं। सब रोगों के नाम इसमें नहीं आसके इसलिये उनका विवरण ग्रन्थ के अन्दर ही देखना चाहिये। जिन रोगों के अन्दर जो औषधियां विशेष प्रभावशाली और चमत्कारिक हैं उनपर पाठकों की जानकारी के लिये ऐसे फूल * लगा दिये गये हैं:—

ज्वर

नाम	पृष्ट	नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
चीकू	९२३	जटामांसी	९८३	जीरा	१०७६
चेम्बुल	९३०	जरुल	१०१२	ताम्बा	११५३
चौधारा	९४८	जल*	१०१६	तुलसी*	११९८
छतिवन*	९६२				

अतिसार

चीचू	९२३	जंगली जायफल	९७८	झिझेरी	१९०१
चूना	९३६	जयन्ती	१००६	झिझा	११०१
छतिवन	९६१	जरायु प्रिया	१०११	तरोई	११४१
जख्मेहयात	९६१	जल	१०१६	तिन्दू	११७२
जंगली झाऊ	९७४	जायफल*	११५१	तिल	११७९

जलोदर

जटामांसी	९८४	जमाल गोटा	९९९	जिंगला (जोंकभारी)	१०७३
जदवार	९८६	जल	१०१६	डिजिटेलिस (हृदयोदर)	१११६
जफ्त अफरीद	९९१	जहरी सोनटक्का	१०३८	तालमखाना*	११६४

बवासीर

चीड़	९१९	जरविन्द-इ-तवील	१००९	ढाक	११२२
चौलाई	९४९	जल	१०१६	ताम्बा	११५४
जख्मेहयात	९६९	जीरा स्याह	१०७९	तिल	११७८
जमींकन्द (सूरागकन्द)*	१००४				

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कब्जियत

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
चोरा	६४७	जटामांसी	६८१	जल	१०१६

मन्दाग्नि

चिलका मकोय	६१५	छत्ता	६५३	जल	१०१६
चुंगी	६२६	छतिवन*	६६३	जवाखार*	१०६५
चोबेहयात	६४३	ताम्बा	११५४	जीरा	१०७३
चोरा	६४७	जटामांसी	६८१		

अजीर्ण

चूना	६३७	जीरा	१०७६	तिरफल	११७७
छतिवन	६६३	ताड़	११४५		

उदरशूल

चौधारा	६४८	जटामांसी	६८१	जम्ब-अल-खरुप	९६२
चौलाई	६५०				

गुल्म

चूना	६४१	जटामासी	६८१	जमीकन्द	२००४

प्लीहा और यकृत रोग

चीना	६२२	छत्री	६५२	जामुनक्ष	१०४६
चुकन्दर	६२४	जन्व-अल-खसूप	६९२	झाऊ	१०९८
चूना	६४०	जल	१०१६	ढाक*	११२२
छरीला	६५१				

हिचकी

छरीला	६५१	जीरा	१०७८	ताम्बा	११५४
जमालगोटा	१००२				

हैजा

चोबेहयात	६४४	टरारा	११०६	ताम्बा	११४८
जख्मेहयात	६७०				

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पीलिया और कामला

नाम	पृष्ट	नाम	पृष्ट	नाम	पृष्ट
जामुन*	११४७			जोड़तोड़	१०६२

सुजाक

चीड़	९१६	चौंलाई	६५०	छिरबेल	६६०
चूना	६३६	छिरेटा	६५७	जलकेशर	१०२६

उपदंश

चोबचीनी *	६३३	चौलिया	९४७	जमालगोटा	१०००
चोबचोनी बड़ी	६४४	छिरेटा*	६५६	जलकुम्भी	१०२३
चोबचीनी (जंगलीउसवा)	६४६	जख्मेहयात	६७०		

प्रमेह

चिलका मकोय	९१५	जटामांसी	६८३	टमाटर	११०८
चौंलाई	६५०	जामुन* (मधुमेह)	१०४४	तरवड़*	११४०
छोंकर (खेजड़ा)	६५८	जायफल	१०५३		

नपुन्सकता और बाजिकरण

चुकन्दर	६२४	जफ्ततर	६६०	जावशीर का गोंद	१०५७
चोबचीनी	६३३	जफ्तअफरीर	६६१	ढाक	१११६
जंगली अखरोट	६७३	जमीकन्द (सूरण कन्द)	१००४	ताम्बा	११५२
जंगली सूरण (मदनमस्त)	६७५	जल	१०१६	तालमखानाक्ष	११६५
जंगली मदनमस्त	६७८	जायफल	१०५१	तुलसीक्ष	११६८
जदवार	६८६				

पथरी अर मूत्राघात

चीड़	६१६	जदवार	६८६	जमाल गोटा	१००१
चौंलाई	६५०	जबरजद	६६४	जलकुम्भी	१०२३
छरीला	९५१				

प्रदर रोग

चूना	६३८

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बन्ध्यत्व

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
		जिया पोता*	१०६७		

प्रसव और आर्त्तव सम्बन्धी रोग

चोबे हयात	६४३	जटामांसी	६८३	ताम्बराक्ष	११५६
छरीला	६५१	जयन्ती	१००६	तिल	११७८
छतिवन*	६६३	जरायुप्रिया	१०११		

क्षय या राज यक्ष्मा

चीड़	६१६	छिरबेल	६६०	जफ्ततर	९९०
चौंलाई	६५०				

खांसी

चीड़	९१६	जलकुम्भी	१०२३	झिंतीनीली	११०२
चौंलाई	६५०	जवासा *	१०३४	तम्बाकू * (हूपिंग कफ)	११३२
छिरबेल	६६०	जवारखार	१०६५	तिल	११७८
जफ्तर	६६०	जूफ़ा	१०६३		

दमा

चीड़	६१६	जफ़्ततर	६९०	जूफ़ा	१०९३
चेम्बुल	६३०	जमालगोटा	१००२	डिजिटेलिस	१११६
चूना	६४१	जल कुम्भी	१०२३	तुम्बरू	११६२
छत्री	६५२	जवासा	१०३४		

हृदय रोग

चूना	६४०	जटामांसी	६८१	डिजिटेलिस *	१११६
चोरा	६४७	जदवार	६८७	तालीस पत्र	११६७
छरीला	६५१				

कंठमाला

चीड़	६१८	चूना	६३८	छिरबेल	६६०
चोब चीनी	६३३	चोबचीनी (जंगली उसबा)	६४६	जियापोता	१०६८

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्नायुरोग और वात व्याधि

(लकवा, गठिया, संधिवात इत्यादि)

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
चिरबिल्व (छरेल)	९१७	छरीला	९५१	जमीकन्द	१००४
चेरुका	९२९	छीरेटा*	९५६	जरविन्ह-इ० तवील	१००९
चेम्बुल	९३०	जङ्गली अरण्डी	९७३	जल	१०१६
चोब चीनी*	९३३	जदवार	९८६	जवाशीर का गोंद	१०५७
चोबे हयात	९४३	जफ्ततर	९९०	जुआर	१०८५
चोब चीनी हिन्दी	९४५	जमाल गोटा	९९९	जुनबेदस्तर*	१०८८
चोबचीनी(जंगलीउसबा)	९४६				

उन्माद हिस्टीरिया और माली खोलिया.

चोब चीनी	९३३	जटा मांसी*	९८१	जमालगोटा	९९९
छरीला	९५१	जदवार	९८६	जल	१०१६
छत्री	९५२	जमरासी	९९८	जिंगना (जोंकभारी)	१०७३
छोटा चांद*	९६५				

मृगी

चीड़	९१८	जटामांसी	९८१	जरविन्द-इ-तवील	१००९
चुकन्दर	९२४	जदवार	९८७	जिंगना	१०७३
छरीला	९५१	जबरजद	९९४	तगर	१,२६
छत्री	९५२	जमाल गोटा	९९९		

सर्प बिष

चोटाहल कुसा	९४९	जंगलीहलदी*	९७६	ढाक	११२०
छिरेटा	९५७	जंगली अदरख	९७७	तुलसी *	११९८
छोटा चांद *	९६४	जदवार	९८७		

बिच्छू का विष

चूना	९४०	चोबेहयात	९४४	जयन्ती	१००६
चूड़ाखी	९४२	जमी कन्द	१००४		

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अन्यान्य बिष

नाम	पृष्ट	नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
चूना	६३८	जदवार	६८६	जहरमोहरा	१०३६
चोबेहयात	६४४	जफ्तर	६६०	जामुन (कुचलेका विष)	१०५४
चौलाई	६५०	जन्ब-अल-करब	६६३	जुआर	१०८५
छत्री	६५२	जबरजद	६४४	तम्बाकू (कुचलेका विष)	११३३

पागल कुत्ते का बिष

चूना	६४१	जोटोजोटिया	१०६२	तम्बाकू	११३३
छरीला	६५१				

सूजन

चुनार	६२६	जदवार	६८६	जमरासी	६६८
जंजबील	६७९			जोजुलमरज	१०६३

सांघातिक फोड़े

जंगली मदन मस्त	६४४	जियापोता	१०६८	त्रिपंखी (बाल तोड़)	११८५
जमाल गोटा	१०००	झाऊ	१०१८		

कुष्ट

चोबे हयात	६४४	ढाक *	११२२	तुलसी	११६८
जमाल गोटा	१००१	ताम्बा	११५२		

बिस्फोटक

चोबचीनी ❀	६३३	जंगली हलदी	६७६	जिमन	१०७१

दाद

चिरबिल्व (चरेल)	६१७	जफ्तर	६६०	जूही	१०६४
जङ्गली अरण्डी	६७३				

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चर्म रोग और रक्त बिकार

नाम	पृष्ट	नाम	पृष्ट	नाम	पृष्ट
चीड़	६२०	जख्मे हयात	६६८	जबरा	६६५
चेरुपिनाई	६३०	जंगली अरण्डी	६७३	जयन्ती	१००६
चोबचीनी *	९३३	जंगलीं हलदी	९७६	जलकुम्भी	१०२३
चूना	६३६	जंगलो अदरख	६७७	जल पिप्पली	१०२८
चोटाहल कुसा	६४६	जटा मांसी	६८३	जस्त	१०३६
छतरछी	६५३	जनबक	९८९	जैतून	१०५६
छिरेटा	६५६	जम्बे-अल-खील	९९३	तुलसी ❀	११९७
छतिवन	६६३				

नेत्र रोग

चौलिया	६४७	जफ़्तर	६९०	ढाक *	१११६
छरीला	६५१	जबरजद	९६४	तरवड़	११४०
जख्मे हयात	६७०	जस्त *	१०३६	तरोई	११४१
जंगली अरण्डी	९७३	जावशीर	१०५७		

कर्ण रोग

चीड़	६१८	जफ़्तर	६९०	जावशीर	१०५७
चुकन्दर	९२४	जमालगोटा	१००१	जूही	१०६४
चूना	६३८				

दंतरोग

चुकन्दर	९२४	जफ्ततर	९९०	जावशीर	१०५७
चूलासी	९२८	जमालगोटा	१००१	तम्बाकू	११३३
छरीला	९५१				

कृमि रोग

चीड़	६१९	छतिवन	९६३	ढाक *	११२०
चेरु चुरल	६३१	जदवार	६८६		

नारु

चूना	६३९	छिरेटा	६५८	डिकामारी	१११४
चौलाई	९५०				

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बालरोग

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
चूना	६३७	जहरमोहरा *	१०३९	डिकामारी	११११४
चौधारा	९४८				

मस्तक शूल और आधा शीशी

चुकन्दर	६२४	चूना❀	९३६	छरीला	९५१

हड्डी का टूटना या मोच आना

चीपी	९२१	छिरेटा	६५६	जन्ब-अल-सब्बा	६६२
चूना	९३६	जंगली हलदी	६७६	जबरा	६६५
छत्री	६५२				

शस्त्रके जख्म और दूसरे घाव

चीड़	९२०	चूना	९३६	जख्मे हयात	९७०
चुनार	६२६				

नासूर

चीती मिट्टी *	६२१	ढोल समुद्र	११२४

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वनौषधि-चन्द्रोदय

पाँचवा भाग

बहुत सजधज के साथ छपना शुरु हो गया है । इस ग्रन्थ में भी अनेक महत्व पूर्ण औषधियों का चमत्कार पूर्ण वर्णन दिया गया है बहुत शीघ्र ग्राहकों की सेवा में पहुँचेगा ।

चन्द्रराज भण्डारी,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वनौषधि चन्द्रोदय

(चौथा भाग)

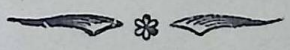

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वनौषधि चन्द्रोदय

(चौथा भाग)

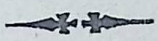

चिलकामकोय

नाम—

यूनानी—चिलकामकोय ।

वर्णन—

यह एक प्रकारकी रोइदगी होती है । इसके पत्ते गोल, छोटे, पतले, नाजुक और तोते की जबान की तरह होते हैं । इसकी शाखाएं पतली और फूल कालापन लिये लाल रंग के होते हैं । इसकी फली उड़द की फली की तरह और बीज खुरासानी अजवायन के दानों की तरह होते हैं । इन बीजों का स्वाद कड़वा और तेज होता है । इसके पत्तों की तरकारी बनाई जाती है । इसके फूलों का रंग तोते की नाक की तरह होता है, इसीलिये इसका नाम चिलकामकोय रखा गया है ।

इसकी एक जाति और होती है जिसका पौधा आधे गज तक ऊंचा होता है । इसके पत्ते नई के पत्तों की तरह होते हैं । इनका स्वाद मीठा होता है । इसका फूल छोटा और पीला होता है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मत से इसके पत्ते शीतल तथा बीज गरम और खुश्क होते हैं। इसके पत्तों का रस प्रमेह में लाभ पहुंचाता है। इसकी तरकारी कफको नष्ट करती है। यह औषधि पाचनशक्ति को तीव्र करके भूख को बढ़ाती है। आमाशय को बलवान बनाती है। जो मधुमेह मेदे की खराबी से पैदा होता है, उसमें यह लाभ पहुँचाती है। आमाशय की खराबी को यह दूर करती है। इसकी मात्रा आधे तोले तक की है।

चांदकुड़ा

इस वनस्पति का वर्णन इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के पृष्ठ २७६ पर 'उपास' के नाम से दिया गया है।

चिनाई घास

नाम—

हिन्दी—चिनाई घास। लंका—अगरअगर। तेलगू—समुद्रउपाची। अंग्रेजी—Ceylon Moss (सीलोग मास)। लैटिन—Gracilaria Lichenoides (ग्रेसीलेरिया लायचेनोइडेस)।

वर्णन—

यह वनस्पति लंका और कन्याकुमारीके खारे तालाबोंमें पैदा होती है। मोह एक शेवाल जातिय की वनस्पति है। इसके तंतु पीले रंग के, सीने के धागे के समान मोटे होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

चिनाई घास स्नेहन, पौष्टिक और पचने में बहुत हल्की होती है। इसका रासायनिक विश्लेषण करने पर इसमें एक प्रकार का पौष्टिक कफ नाशक सत्व ५४ प्रतिशत पाया जाता है। इसमें ७ प्रतिशत क्षार का अंश भी रहता है। सिंहल द्वीप और हिन्दुस्तान के हिस्से में इस वनस्पति का बहुत प्राचीन काल से उपयोग होता आ रहा है। इसके चूर्ण की खीर बनाकर संग्रहणी, आम इत्यादि आंतों के रोग

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और फेफड़ें के रोगों में लाभदायक पदार्थ की तरह दी जाती है। क्षयरोग में भी यह वनस्पति लाभदायक मानी जाती है।

चिरबिल्व (चरेल)

नाम—

संस्कृत—चिरबिल्व। हिन्दी—चिरबिल्व, चिरमिल, चरेल, पापरी, करंजी। मराठी—बावड़। काठियावाड़—चरेल। गुजराती—कणझो। तेलगू—नवीली। तामील—अयम्-लेटिन-Holoptelea Integrifolia (होलोप्टेलिया इंटेग्रिफोलिया)।

वर्णन—

यह एक बड़ा वृक्ष होता है, जिसकी ऊंचाई २० से २५ हाथ तक होती है। इसका वृक्ष करंज के वृक्षकी तरह दिखाई देता है। इसकी छालका रंग खाकी, डालें झुकी हुई और गुच्छेदार, पत्ते उग्र दुर्गन्धियुक्त, फूल छोटे, पीले, तीव्रगंधयुक्त और फल फीके पीले रंग के चपटे होते हैं। हर-एक फल में एक एक बीज रहता है। इसकी छाल से बहुत सुन्दर रेशे निकलते हैं जिनकी रस्सी बनाई जाती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति शोथनाशक और संधिवात में लाभ पहुंचाती है। इसकी जड़की छाल को औटाकर सन्धियों की सूजन पर बाँधने से लाभ होता है। इसके पत्तों की लुग्दी से तेल को सिद्ध कर उस तेल को व्रणों पर लगाने से व्रण भर जाते हैं। इसकी डालियों के रसको दाद पर लगाने से दाद नष्ट हो जाता है।

चीड़*

नामः—

संस्कृत—भाद्रदारू, धूपवृक्षका, मनोजना, मरिचपत्रिका, पीतदारू, पिताद्रू, पूतिकष्ट, सरला, सुरभिदारुका। हिन्दी—चीड़, साला, सारल, सरल। अलमोड़ा—साला। बंगाल—सरल

*नोटः—इस ग्रन्थ के तीसरे भाग में गन्धा विरोजा के प्रकरण में भी इसका संक्षिप्त वर्णन दिया गया है। यहां पर इसका विस्तृत वर्णन दिया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गच्छा, सरल कष्ठा। गुजराती—सरल देवदार। मराठी—सरलदेवदार। गढ़वाल—साला, कोलेन, कुलहेन। कुमाऊं—चीड़। काश्मीर—चीड़, साला, सल्ल। पंजाब—चीड़, गुला, नखतार, नश्तार। संयुक्तप्रान्त—चीड़, कोलन। नेपाल—धुपसलसी। लेटिन—Pinus Longifolia (पायनस लांगिफोलिया)

वर्णनः—

चीड़ का वृक्ष बहुत बड़ा होता है। यह हिमालय प्रदेश में सिंध से भूटान तक डेढ़ हजार फीट से साढ़े सात हजार फीट की ऊंचाई तक और अफ़ग़ानिस्तान में पैदा होता है। इसके पत्ते गुच्छों में लगते हैं। इसकी डालियां हलके पीले रंग की होती हैं। इसकी छाल में दरारें पड़ी हुई रहती हैं। इसके पत्ते चमकीले हरे रंग के और फल नोकदार होते हैं। इस फल में बीज रहता है। इसकी छाल में किसी औजार से जखम कर देने से एक प्रकार का चिकना गोंद निकलता है। जिसको संस्कृत में श्रीवास और हिन्दी में चीड़ का गोंद या गन्धा विरोजा कहते हैं। इस गन्धे विरोजे को सूखी हालत में भभके में रख कर तेल उड़ाते हैं। इस तेल को खन्नू तेल या सत बिरोजा कहते हैं। इस तेल में तारपीन के तेल की तरह खुशबू आती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत से यह वृक्ष मीठा, तीक्ष्ण, कड़वा, गरम, स्निग्ध और आँतों के कीड़ों को नष्ट करने वाला होता हैं। आँख, कान, गला, रक्त और चर्म की बीमारियों में भी यह लाभदायक है। इसका गोंद कड़वा, कसैला, गरम और स्निग्ध होता है। यह पेट के आफरे को दूर करता है, कामोद्दीपक होता है। मूत्रल, कृमि नाशक और वेदना शून्यता लाने के गुण भी इसमें विद्यमान हैं। योनि और गर्भाशय की तकलीफों में भी यह लाभदायक है। मन्दाग्नि, व्रण, खुजली, प्रदाह और सिर दर्द को यह दूर करता है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे इसका गोंद तीसरे दर्जे में गरम और खुश्क होता है। पुरानी खांसी, दमा, हिस्टीरिया, मृगी, बवासीर और जिगर तथा तिल्ली की बीमारियों में यह मुफीद हैं। गुलाब के तेलमें घोटकर इस को कान में टपकाने से सिर का दर्द और कफ से पैदा हुआ कान का दर्द मिट जाता है। फोड़े, नासूर और जख्मों पर इसका लेप करने से बहुत लाभ होता है। पट्ठों के फ़ालिज या लकवा में भी यह बहुत फायदा करता है। इसकी लकड़ी वायु और कफ को बिखेरती है, गुर्दे और मसाने की पथरी को तोड़ती है, हिचकी में भी लाभ पहुँचाती है। कण्ठमाला पर इस का लेप करने से लाभ होता हैं। मुंह के छालो पर भी यह मुफीद हैं।

डाक्टर मुडीन शरीफ के मतानुसार इसका गोंद अंतः प्रयोग और बाह्यप्रयोग में लिये जाने पर उत्तेजक औषधि का काम करता है। अन्तः प्रयोग में लिये जाने पर यह पाकाशय और मूत्राशय की

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्लेष्मिक झिल्लियों पर अपना असर बतलाता है। सुजाक की यह एक उत्तम दवा है। हमने इस बीमारी के कई बीमारों पर इस औषधि को अजमाया और जहाँ कोपेबा, कबाब चीनी, टरपेन्टाइन और गुर्जन के प्रयोग भी सफल नहीं हुए, वहां भी इससे लाभ हुआ। इसकी खुराक एक से लगा कर तीन ड्राम तक की हैं। इसे २४ घन्टे में ४ बार देना चाहिये।

डाक्टर वामन गणेश देसाई के मतानुसार गन्धाविरोजा के अन्दर टरपेन्टाइन के सब धर्म मौजूद रहते हैं। गन्धाविरोजा खाने के पश्चात मुंह में पानी छूटता है, पेट में गर्मी और ठण्ढाई होने के समान अनुभव होता है, डकार आती है, वायु सरती है, नाड़ी भरपूर चलने लगती हैं, श्वासोच्छ्वास का प्रमाण बढ़ता हैं, शरीर में गर्मी पैदा होती है, पेशाब की मात्रा बढ़ती है और आमाशय व मज्जा तंतुओं में उत्तेजना पैदा होती है। इसको अधिक मात्रा में लेने से वमन और दस्त होते हैं, नाड़ी क्षीण होती है, जी घबराता है, शरीर ठण्ढा पड़ जाता है, पेशाब में जलन होकर खून गिरने लग जाता है और सारे शरीर में शिथिलता पैदा हो जाती है। इस लिये इस को अथवा इसके तेल को थोड़ी मात्रा में देना चाहिये। इसकी मात्रा साधारणतया १० रत्ती से १५ रत्ती तक की है। इसको मुलहटी के चूर्ण और शहद के साथ देने से विशेष अच्छा रहता है।

गंधाविरोजा यह एक उत्तम वायु नाशक पदार्थ है। यह आंतों को उत्तेजित करके दस्त लाता है जिससे आँतों के अन्दर सड़े हुए पदार्थ बाहर निकल जाते हैं और उनसे होने वाला उदर शूल तथा पेट का फूलना बन्द हो जाता है। इसके सेवन से दोनों ही द्वार से वायु सरता है और आँतों के विजातीय द्रव्य नष्ट होंजाते हैं। इसके तेल को पेट पर मालिश करने से और इसकी वस्ती (एनेमा) देने से बहुत लाभ होता है। पित्त से पैदा हुई पथरी में भी यह औषधि बहुत लाभ पहुँचाती है। इसके तेल को थोड़ी सी शक्कर और पानी के साथ मिलाकर देने से आँतों के क्लमि नष्ट होते हैं और आँतों से बहने वाला रक्त भी बन्द होजाता है रक्तातिसार और आँत्र ज्वर में रक्तश्राव बन्द करने के लिये यह एक उत्तम औषधि है। बवासीर में इसकी गोलियाँ बनाकर देने से गुदा के ऊपर प्रत्यक्ष क्रिया होकर रक्तश्राव बन्द हो जाता है। रक्तयुक्त आंव, आंव और आंत्र ज्वर मे इसको प्रति घण्टा बीस २ बूँद की मात्रा में देना चाहिये।

गंधाविरोजा रक्त के अन्दर बहुत जल्दी मिल जाता है और वहाँ से श्वासोच्छ्वास की श्लेष्मत्वचा के द्वारा और स्तन तथा मूत्रपिण्ड के द्वारा बाहर निकलता है। त्वचा के द्वारा बाहर निकलते समय यह त्वचा की विनिमय क्रिया को सुधारता है और पसीना लाता है।

जीर्ण कफ रोगों में और कफ से पैदा हुए क्षय में यह वस्तु बहुत उपयोगी है। इसके सेवन से फेफड़े और श्वासनलिका की रक्ताभिसरण क्रिया सुधरती हैं, कफ कम होता है, कफ की दुर्गन्धि मिटती है और वह जल्दी गिरता है। कफक्षय में कभी कभी फुफ्फुस के

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अन्दर की रक्तवाहिनी फटकर रक्त बहने लगता है और वह कफ़ के साथ गिरने लगता है। ऐसी हालत में चीड़ का तेल खिलाने से, सुँघाने से और उसकी मालिश करने से लाभ होता है। फुफ्फुस और श्वास नलिका की सूजन में और दर्द में चीड़ का तेल छाती पर मालिश किया जाता है।

मूत्र पिण्ड से लेकर मूत्र द्वार तक के सारे मार्ग का शोधन करने में भी यह वस्तु बहुत प्रभाव शाली है। इसके सेवन से इन भागों की रक्ताभिसरण क्रिया बढ़ती है, विनिमय क्रिया में सुधार होता है और श्लेष्मा की कमी होती है। वस्ती की सूजन और पुराने सुज़ाक में इसका बहुत उपयोग होता है। खन्नू तेल को १ से लेकर ३ बूंद की मात्रा में देने से पुराने सुजाक में बहुत लाभ होता है।

त्वचा के मार्ग से बाहर निकलते समय यह वस्तु त्वचा के अन्दर की सूक्ष्म रक्तवाहिनियों का संकोचन करती है, जिससे रक्तपित्त, दाद, खुजली, इत्यादि रोगों में इसका उपयोग किया जाता है।

यकृत की खराबी से पैदा हुए जलोदर में पेशाब बढ़ाने के लिये चीड़ का तेल लाभ दायक होता होता है मगर ऐसे रोगों में इसका उपयोग करने के पहिले पेशाब जाँच कर इस बात की पुख्ता जांच कर लेना चाहिये कि रोगी का मूत्रपिण्ड बिलकुल निरोग हो। अगर मूत्रपिण्ड में खराबी हो तो इसका उपयोग कभी नहीं करना चाहिये, नहीं तो बहुत नुकसान होता है।

ताजे घावों पर चीड़ तेल को लगाने से रक्तस्राव बन्द होता है और घाव में पीब पैदा नहीं होता। इसका व्रणरोपक धर्म बहुत उत्तम है। सड़ने वाले व्रणों पर इसकी बत्ती लगाने से वे जल्दी भर जाते हैं। इसकी मात्रा १२ रत्ती से २० रत्ती तक की है और इसके दर्प को नाश करने के लिये कतीरा बबूल का गोंद और मीठी बदाम का तेल मुफीद है।

चीनी मिट्टी।

नाम—

हिन्दी, यूनानी—चीनी मिट्टी।

वर्णन—

यह एक मशहूर मिट्टी है जो सफेद रंग की होती है जिसके बर्तन बनाये जाते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

चीनी मिट्टी को बारीक पीस कर कपड़े में छान कर मंजन करने से दांत चमकदार होते हैं। इस का चूर्ण ताजा जख्मों के खून को बन्द कर देता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नासूर के अन्दर भी यह औषधि बहुत लाभदायक साबित हुई है। इसके लिये इसको उपयोग करने का तरीका इस प्रकार है। चीनी मिट्टी को पीसकर, कपड़े में छानकर, नीम के पत्तों के रस में तर कर लें और एक चीनी की रक़ाबी पर फैलाकर सुखा लें। सूखने पर उसको फिर से नीम के पत्तों के रस में तर कर के सुखावें। इस प्रकार उसको तीन बार तर कर के सुखावें और फिर बारीक पीसकर और कपड़े में छानकर रखलें। इस औषधि को नासूर में भरने से नासूर बहुत जल्दी आराम होता है।

हकीम अलीका कहना है कि नासूर के ऊपर यह दवा निहायत और अजीब फायदेमन्द हैं। दस बार के प्रयोग में एक बार भी ऐसा नहीं देखा गया कि नासूर अच्छा न हुआ हो। दूसरे हकीमों ने भी यही लिखा है कि यह दवा हर जगह के नासूरों में फायदेमन्द है। एक बार गुदा के नासूर में भी इससे फायदा पहुँचा।

अगर चीनी मिट्टी न मिले तो चीनी के बरतन का फूटा हुआ टुकड़ा काम में ले सकते हैं।

(ख० अ०)

चीपी।

नाम—

बम्बई—चीपी। बंगाल—अर्चिका, ओर्च। उरिया—सुन्दरिगुन। मराठी—तिवर। तामील—किनई। मलयालम—थिरला, बिलति। लेटिन—Sonneratia Caseolaris (सोनेरेटिया केसिओलेरिस)।

वर्णन—

यह वनस्पति हिन्दुस्तान, सीलोन, मलाया प्रायः द्वीप, स्याम और जावा में समुद्र के किनारों पर पैदा होती है। यह एक छोटे कद का वृक्ष होता है। इसके पत्ते अंडाकार, फूल गुलाबी ६ पंखड़ियों वाले और फल २-५ से ५ सेन्टिमीटर तक लम्बा और अंडाकृति होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति रक्त संग्राहक और व्रणरोपक होती है। इसके फल का पुल्टिस बनाकर मोच और सूजन पर बांधने से लाभ होता है। इस के फल का रस जिसमें कि खमीर उठा लिया जाता है रक्तस्राव बन्द करने के लिये उपयोगी माना गया है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चीना

नाम

संस्कृत—चीनक, काककंगु, शुश्लक्ष्ण। हिन्दी—चेना, चीना। बंगाल—चिने। मराठी—राले गुजराती—चीणों। फारसी—उरजान। अरबी—बारेगा। अंग्रेजी—Millet (मिलेट)। लेटिन—Panicum Miliari (पेनिकम मिलेरी)।

वर्णन—

यह एक प्रकार का अनाज है जो कंगनी की जाति का होता है। यह धान मथुरा, आगरा, पंजाब, बुन्देलखण्ड आदि में खेती करके बहुत पैदा किया जाता है। शिमले के तरफ के लोग इसकी रोटी बनाकर तथा चांवलों की तरह पकाकर खाते हैं। व्रत उपवास के रोज हिन्दू लोग इसका फलाहार करते हैं। इस अनाज में से ६६ प्रतिशत मैदा और ३ प्रतिशत तेल निकलता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक मत से चीना मधुर, रुचि कारक, कसेला, स्वादिष्ट, शीतल, दाह नाशक, रूखा और भग्न हड्डी को जोड़ने वाला है।

यूनानी मत—यूनानी मत से यह पहले दर्जे में सर्द और दूसरे दर्जे में खुश्क है, कब्जियत करता है, मेदे की रतूबत को सुखाता है, जलोदर की बीमारी में पथ्य है। इसको दूध और घी के साथ खाने से सीने की जलन दूर होती और वीर्य बढ़ता है।

हब्स बूलर के मतानुसार बलूचिस्तान में शोरन नामक स्थान पर यह सुजाक की बीमारी पर काम में लिया जाता है।

कर्नलचोपरा के मतानुसार यह वनस्पति तिल्ली और रक्तश्राव में फायदा पहुँचाती है।

चीकू

नाम—

हिन्दी—सपेता, चीकू। गुजराती—चीकूनू झाड़। कच्छी—चीकूजो झाड़। दक्षिण—चिकू। उड़िया—सोपेटो। अंग्रेजी—Bully Tree। लेटिन—Achras Sapota (एक्रस सपोटा)।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

चीकू का वृक्ष छोटा और सुन्दर होता है। इसमें बारहों महीने पत्ते रहते हैं। इसकी छाल भूरे रंग की होती है। फूल फीके, सफेद और फल टीमरू की तरह रहते हैं। इसमें टीमरू की तरह ही गुठलियां निकलती हैं। यह वृक्ष मूलतः अमेरिका का है, मगर अब भारतवर्ष में भी बहुत पैदा होने लगा है।

गुण, दोष और प्रभाव—

कोकण के अन्दर इसका फल पित्तनाशक और ज्वरनाशक औषधि की बतौर काम में लिया जाता है। इसकी छाल पौष्टिक और ज्वरनाशक होती है। इसकी क्रिया साधारणतया सिनकोना की तरह होती है इसके बीज एक जोरदार मूत्रल औषधि हैं। इन बीजों की मात्रा ३ रत्ती की है। इससे अधिक मात्रा में यह जहरी हो जाते हैं। इनके प्रयोग से पेशाब बहुत अधिक होता है। इसकी छाल का काढ़ा बनाकर जीर्ण ज्वर में दिया जाता है।

बेंटली के मतानुसार इसकी छाल में ज्वरनाशक और बीज में मूत्रल और विरेचक गुण रहता है।

वेस्ट इंडीज में इसके बीज मृदु विरेचक और मूत्रल माने जाते हैं और इसकी छाल पौष्टिक और ज्वरनाशक मानी जाती है। कम्बोड़िया में इसकी छाल संकोचक और ज्वरनाशक मानी जाती है। अतिसारमें इसका काढ़ा बनाकर दिया जाता है।

चुकन्दर

नाम—

संस्कृत—रक्तग्रञ्जन। हिन्दी—चुकन्दर। फारसी—चुकन्दर। उर्दू—चुकन्दर। बंगाल—बिटपलंग, पलंग साग। अंग्रेजी—Beet (बीट) लेटिन—Beta Vulgaris (बीटा व्हलगेरिस)।

वर्णन—

यह एक प्रकार की तरकारी है। इसका पौधा मूलीके पौधे की तरह होता है। इसका कन्द भी मूली की तरह होता है मगर इसका रंग लाल होता है और इसका आकार लम्बाई की अपेक्षा मोटाई में ज्यादा होता है। इसको काटनेसे लाल रंग का पानी बहता है और इसके अन्दर चकरियां नजर आती हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण, दोष और प्रभाव—

इसके पत्ते मूत्रल, विरेचक,सूजन को दूर करने वाले और सिरदर्द, लकवा, यकृत और तिल्ली की बीमारियोंमें और कान के दर्द में लाभदायक हैं। इसके बीज कड़वे, मूत्रल, कफनिःसारक, शान्तिदायक, पेटके आफरे को मिटाने वाले, ऋतुश्राव नियामक और सूजन को दूर करने वाले होते हैं। इनका तेल दर्द पर मालिश करनेसे लाभ पहुंचाता है। इसका कन्द मीठा, सूजन में लाभदायक और मानसिक तकलीफों में फायदेमन्द हैं। इसके ताजे पत्तों को रगड़ और मोच पर लगाने से फायदा होता है।

रासायनिक विश्लेषण—

चुकन्दरके कन्दमें एक प्रकारकी शक्कर पाई जाती है। अगर इसको व्यापारिक तौर पर तैयार किया जाय तो गन्ने की शक्कर से यह सस्ती पड़ती है। मगर गन्नेकी शक्कर के बराबर इस में गुण नहीं होते। गन्ने की शक्कर जैसे हृदय के लिये पौष्टिक पदार्थ है वैसे यह नहीं है।

यूनानी मत—खजाइनुल अदवियाके मतानुसार चुकन्दरके पत्तोंके रसको शहदके साथ सूजनपर लगानेसे सूजन बिखर जाती है। इसके पत्तोंके काढ़ेको ठंडा करके आगसे जले हुए स्थानपर डालने से लाभ होता है। इसके रस को कुनकुना करके कान में टपकानेसे कानकी सूजन और कानके दर्दमें फायदा होता है। इसके पानी को नाकमें टपकाने से दिमाग की खराबी दूर होती है और मिरगी में लाभ पहुंचता है। इसकी जड़का असारा नाकमें टपकाने से आधा शीशी दूर होती है। इसके रससे कुल्ले करने से दाँत का दर्द हमेशा के लिये मिट जाता है। राई और सिरके के साथ इसको पकाकर खाने से यकृत और तिल्लीके सुद्दे बिखर जाते हैं। गरम मसाले के साथ इसको खाने से तिल्ली की सूजन बिखर जाती है। अगर किसी के सिर के बाल उड़ गये हों तो इसके पत्तों के पानी को लगातार लगाते रहने से बाल फिर जम जाते हैं। इसकी साग बनाकर खाने से कामेंद्रिय की शक्ति बढ़ती है। यह वनस्पति गरम मिजाज बालों को दही और मट्ठे के साथ और सर्द मिजाज वालों को गरम मसाले के साथ खाना चाहिये।

मुजिर—यह बनस्पति अधिक मात्रा में सेवन करने से पेट में फुलाव और मरोड़े पैदा करती है। मेदे को नुकसान पहुँचाती है। इसकी जड़ से जी मचलता है और कभी २ उदर शूल भी पैदा हो जाता है।

दर्पनाशक—इसके दर्प को नाश करने के लिये गरम मसाला, सिरका, राई, खट्टे अंगूर का रस और नींबू का शर्बत मुफीद है।

प्रतिनिधि—इसका प्रतिनिधि शलगम है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चुन्नापिण्डू

नाम:—

यूनानी—चुन्ना पिण्डू।

वर्णन—

यह एक जंगली वृक्ष है। इसकी शाखाएं बहुत घनी होती हैं। इसके पत्ते गोल और छोटे होते हैं। उनका रंग हरा होता है। इसके फल गुच्छों में लगते हैं। हरएक फल आकार में ज्वार के दाने के बराबर और सफेद होता है। इसका स्वाद खटमीठा होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमत—यूनानी मतसे यह सर्द और तर है, पित्त को नष्ट करता है। जी मिचलाने को रोकता है। मेदे को ताक़त देता है। भूख बढ़ाता है। पित्तजन्य बुखार को दूर करता है, देर से हज़म होता है। गरम प्रकृति वालों के लिये यह विशेष लाभ दायक है।

मुजिर—यह फ़ेफड़े को नुकसान पहुँचाता है।

दर्प नाशक—इसके दर्प को नष्ट करने के लिये मीठा अनार मुफीद है (ख० अ०)

चुनार

नाम—

यूनानी—चुनार।

वर्णन—

यह एक बड़ी जाति का वृक्ष होता है। इसके पत्ते अरंड के पत्तों की तरह मगर उससे छोटे होते हैं। इनका आकार हाथ के पंजे की तरह होता है। इसका स्वाद कड़वा और बुक्सा होता है। इसके फूल पीले, हलके और छोटे होते हैं। इसका फल पीला, ख़ाकी, ललाई लिये हुए, गोल, खारदार और हलका होता है। यह खाने के काम में नहीं आता। इस पेड़ की छाल मोटी होती है। इसकी लकड़ी अन्दर से लाल और जौहरदार निकलती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानीमत—यूनानीमत से यह पहले दर्जे में सर्द और खुश्क है। इसकी लकड़ी सर्द और तर होती है। इसके पत्तों को पीसकर लेप करने से जोड़ों और जाँघों की सूजन मिट जाती है। कफ की वजह से पैदा हुई हर जगह की सूजन में यह लेप मुफीद है। इसकी छाल को जलाकर जख्मों पर छिड़कने से जखम सूख जाते हैं। इसकी राख का लेप करने से सफेद दाग में फायदा होता है। इसकी छाल को सिरके में पकाकर चर्बी मिलाकर आग से जले हुए स्थान पर लगाने से शान्ति मिलती है। इसके हरे पत्तों को पीस कर सिरपर लगाने से सिरदर्द मिटता है। इसके सूखे पत्ते और फल का चूर्ण सूंघने से नक्सीर का खून बन्द हो जाता है।

मुज़िर—यह वस्तु फेंफड़े और हलक् को नुकसान पहुँचाती है। श्वास की नलीपर भी इसका खराब असर होता है।

दर्प नाशक—इसके दर्प को नाश करने के लिये मक्खन, शहद, दुध, दालचीनी और अगर मुफीद है।

प्रतिनिधि—इसकी छाल के बदले में अनार की छाल और इसकी लकड़ी के बदले में अञ्जीर लकड़ी काम में ली जा सकती है। (ख० अ०)

चुंगी

नामः—

यूनानी—चुंगी।

वर्णन—

यह एक छोटी जाति का पेड़ होता है। इसकी दो जातियाँ होती हैं। एक छोटी और एक बड़ी। छोटी जाति के पौधे की लम्बाई आधे गज तक और बड़े की एक गज तक होती है। छोटी जाति के पत्ते अनार के पत्तों की तरह मगर उनसे लबाई में कम और चौड़ाई में ज्यादा होते हैं। इसके फूल पीले होते हैं और बीज फलियों में लगते हैं। इसके फूल, फली और बीज, पंवार के फूल, फली और बीज की तरह होते हैं। इसका स्वाद कुछ कड़वा और तेज होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मत—यूनानी मत से यह दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। मेदे के लिये यह बहुत ताक़तवर है, यह भूख बढ़ाता है। इसकी जड़ को मुँह में रखने से प्यास और खुश्की मिटती है (ख०अ०)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चितसिंगी

नामः—

हिन्दी—चितसिंगी । गुजराती—धोली अडबाउगदब । कच्छी—अच्छेरोजिजको । अंग्रेजी—White Melilot (ह्वाइट मेलिलोट) । लेटिन Melilotus Alba (मेलिलोटस एल्बा) ।

वर्णन—

यह एक प्रकार का घास होता है । इसके पौधे १ फुट से २ फुट तक ऊंचे होते हैं । पत्ते मेथी के पत्तों की तरह होते हैं । फूल सफेद आते हैं । इसकी फली में प्रायः दो २ बीज निकलते हैं ।

गुण दोष और प्रभाव—

यह औषधि अस्पर्क नामक औषधि की जगह पर काम में ली जाती है ।

(अस्पर्क का वर्णन इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में देखिये)

चुम्बर

नामः—

पंजाब—चुम्बर, बरनक, झबूर । लेटिन—Artemisia Sacrorum (आर्टीमीसिया सेक्रोरम) ।

वर्णन—

यह वनस्पति कुमाऊ और तिब्बत में दस हजार फीट से बारह हजार फीट की ऊँचाई तक होती है । यह एक कांटेदार झाड़ी नुमा वृक्ष है । इसकी छाल लाल और बादामी रंग की होती है । इसके पत्ते २-५ से लेकर ५ सेंटि मीटर तक लंबे होते हैं । ये लबंगोल और तीखे होते हैं । इसके फूल पीले होते हैं ।

गुणदोष और प्रभाव—

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति घोड़ों के सिर दर्द में मुफीद है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चूलासो

नाम—

नेपाल—चूलासी। लेटिन—Osbeckia Crinita (आसबेकिया क्रिनिटा)।

वर्णन—

यह वनस्पति सिक्किम और भूटान में ४००० फीट से ८००० फीट तक की ऊँचाई पर और खासिया पहाड़ियों तथा बरमा में पैदा होती है। यह एक झाड़ीनुमा बहुशाखी वृक्ष है। इसके पत्ते ५ से लगाकर १० सेंटिमीटर तक लम्बे बरछी आकार के होते हैं। इसके फूल बैंगनी और सफेद होते हैं। इसका फल २ सेंटिमीटर तक लंबा होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

चापा जाति के लोग इसके सूखे पत्तों का काढ़ा दांत के दर्द में काम में लेते हैं।

चूका

इसका वर्णन अमलवेत के प्रकरण में इस ग्रन्थ के पहले भाग में पृष्ठ १०५ पर देखना चाहिये।

चूका (सिकिम)

नाम—

सिकिम—चूका। लेटिन— Rheum Novile (ह्रीयूम नोवाइल)।

वर्णन—

यह वनस्पति हिमालय के भीतरी भागों में १३००० फीट से १५००० फीट तक की ऊंचाई पर होती है। इसकी जड़ें बहुत लंबी होती हैं। इसके पत्ते लंबगोल, कटी हुई किनारों के और फल गोल होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

इसकी गठान तीक्ष्ण, कटुपौष्टिक और मृदुविरेचक होती है। पेचिश में क्षुधा के नष्ट होने पर यह लाभदायक है। इसके गुण रेवंदचीनी के गुण से मिलते जुलते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यूनानी मतानुसार इसकी जड़ तीखी और कड़वी होती है। यह विषनाशक, विरेचक, ऋतुस्राव नियामक और मूत्रल होती है। पित्त, कटिवात, मस्तक की गर्मी, बवासीर, जीर्णज्वर, वायुनालियों का जीर्ण प्रदाह, दमा, शूल, और रगड़ में यह उपयोगी है।

कर्नल चोपरा के मतानुसार इसमें ग्लुकोसाइड्स और अन्य अम्ल रहते हैं। इसके गुण रेवंद-चीनी से मिलते जुलते हैं।

चेरुका

नाम—

हिन्दी—चेरुका। लेटिन—Capparis Heyneane (केपेरिस हेनिएना)।

वर्णन—

यह वनस्पति भारत के दक्षिण में तथा सीलोन में पैदा होती है। यह एक झाड़ीनुमा वृक्ष है। इसके पत्ते हरे और तीखी नोक वाले रहते हैं। इसके फूल सफेद और हलके पीले रंग के होते हैं इनकी पंखड़ियां गोलाकार रहती हैं। इसका फल अभी तक देखा नहीं गया।

गुण दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपरा के मतानुसार इसके पत्ते आमवात और जोड़ों के दर्द में उपयोगी हैं। इसके फूल विरेचक होते हैं।

चेम्बुल

नाम—

पंजाब—चेम्बुल। लेटिन—Ranunculus Avensis (रेनन्क्युलस एवेन्सिस)।

वर्णन—

यह वनस्पति हिमालय में काश्मीर से कुमाऊ तक और आबू पहाड़ में पैदा होती है। यह एक सीधी बहुशाखी वनस्पति है। यह फिसलनी और पीले रङ्ग की होती है। इसके फूल हलके पीले रंग के और फल नोकदार रहते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण, दोष और प्रभाव—

यूरोप में यह वनस्पति पार्यायिक ज्वर, गठिया और दमे के उपयोग में ली जाती है। इसके पत्ते विषैले होते हैं।

चेरुपिनाई

नाम—

बंबई—चेरुपिनाई, सरापुना। मराठी—बाबी, दूरई। कनाड़ी—बाबी, बोबी। ट्रावनक्कोर—अतुपुन्ना, कत्तपुन्ना, सेरुपुन्ना। तामील—सिरुबिचई। लेटिन—Calophillum Apetalum (केलाफ़िलम एपीटेलम)

वर्णन—

यह वनस्पति बंबई प्रेसिडेन्सी के पश्चिमी घाट में और मैसूर से ट्रावनकोर तक १००० फीट की ऊंचाई तक होती है। यह एक मध्यम आकार का वृक्ष है। इसकी छाल कुछ पीले रंग की, पत्ते कटी हुई किनारों के, लंबगोल, फल अंडाकार, चिकना और पकने पर लाल हो जाता है।

गुण दोष और प्रभाव—

इसका गोंद घाव पूरने वाला, वेदना शून्यता पैदा करनेवाला और प्रदाह को कम करने वाला होता है। इसके बीजों से तैयार किया हुआ तेल कोढ़ और चर्मरोगों में उपयोगी माना जाता है। इसका शीत निर्यास शहद के साथ मिलाकर गीली खुजली और संधिघात के उपयोग में लिया जाता है।

चेदबला

नाम—

हिन्दी—चेदबला, चेतो। पंजाब—चक्का, चेतर, चेतेन, दादुर, गोकसा, कुङ्जि, ममरल मतनी, नियोर, रेतियोन, रेमस्क, शोमफल, सिंदरोर, शीतपंजा, तादू, थलोट। कुमाऊं—स्पिटी। तिब्बत—नैल, सापो। लेटिन Rhamnus Dahuricus (ह्रेम्नस डेन्हरीकस)।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

यह वनस्पति पंजाब और हिमालय में २५०० से ६००० फीट की ऊंचाई तक तथा शिमला, भूतान और मद्रास प्रेसिडेन्सी में पैदा होती है। यह एक प्रकार की कटीली झाड़ी है। इसके पत्ते बहुत घने, पंखड़ियां लंब गोल तथा फल काला और चमकीला रहता है। फल के अन्दर गुठली बहुत सख्त होती है। यह स्वाद में बहुत कड़वा होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपरा के मतानुसार इसका फल वमनकारक और विरेचक होता है। तिल्ली के विकारों में यह उपयोगी माना जाता है। इसमें ऑक्सिमेथिल, एन्थ्राक्विनोन्स और रेमनोस नामक पदार्थ पाये जाते हैं।

चेरुचुरल

नाम—

मलयालम—चेरुचुरल, कटुचुरल। लेटिन— Calamus Travancoricus (केलेमस ट्रेवेनकोरिकस)।

वर्णन—

यह वनस्पति दक्षिणी प्रायद्वीप में मलाबार से ट्रावनकोर तक होती है। इसका तना बहुत नाजुक रहता है। इसके पत्ते ३ से लेकर ५ तक के गुच्छे में रहते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपरा के मतानुसार इसके कोमल पत्ते पित्तविकार, अग्निमाद्य और कान की तकलीफों में उपयोगी माने जाते हैं। ये कृमि नाशक होते हैं।

चोबचीनी

नाम—

संस्कृत—द्वीपान्तरवचा, अमृतोपहिता। हिन्दी—चोबचीनी। बंगाल—तोपचीनी। मराठी—चोपचीनी। गुजराती—चोपचीनी। फ़ारसी—बेकचीनी, एवन। अरबी—एवन। तेलगू—पटंगी चक्का। अंग्रेजी China Root (चायनारूट)। लेटिन— Smilax China (स्माइलेक्स चायना)।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

चोबचीनी की जड़ें चीनदेश से यहाँ पर आती हैं। चीन में इनको "ट्रूफूह" कहते हैं। इसका पेड़ जमीनपर बिछा हुआ होता है। डालियाँ पतली होती हैं। इसके पत्ते लंब-गोल, पतले और तेजपात के पत्तों से मिलते जुलते होते हैं। इसकी जड़ सुर्खी माइल गुलाबी रंग की होती है। कोई २ सफेद और काली भी होती है। चीन के पहाड़ों के अतिरिक्त, बंगाल में सिलहट के पहाड़ों पर और नेपाल के पहाड़ों पर भी यह पैदा होती है।

मखजूनल अदविया में चोबचीनी का वर्णन करते हुए लिखा है कि यह एक जाति की लता की जड़ होती है जो चीन के तरफ से आती है। इसके टुकड़े प्रायः एक बालिश्त तक या उससे छोटे बड़े होते हैं। कोई टुकड़ा कम गठानवाला, कोई अधिक गठानोंवाला, कोई चिकना, कोई खुरदरा कोई वजनदार, कोई हलका, कोई सख्त, कोई मुलायम, कोई गुलाबी रंग का, कोई सफेद और कोई काला होता है। इन टुकड़ों में सबसे अच्छी चोपचीनी वही होती हैं, जिसका रंग लाल या गुलाबी हो, स्वाद मीठा हो, चमकदार और चिकनी हो, जिसमें गांठें कमहो और रेशे न हो। जो भीतर और बाहर से एक रंगकी हो, जो स्वादमें कुछ मीठी हो, और जो पानी में डालने से डूब जाय। जो टुकड़े वजन में हलके और सफेद रंग के हों उनको कच्चे समझना चाहिये और जो काले रंग के टेढ़ेमेढ़े और अनेक गठानों वाले हों उनको हलकी जाति के समझना चाहिये।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत— पूर्व कालीन आयुर्वेदिक ग्रन्थों में इस औषधि का उल्लेख कहीं देखने को नहीं मिलता। मगर मध्यकालीन भावमिश्र ने अपने भावप्रकाश ग्रन्थ में इसका वृत्तान्त लिखा है। इससे ऐसा मालूम होता है कि इस औषधि का प्रचार मुसलमानी हकीमों के द्वारा ही यहां पर हुआ।

भावप्रकाश के मतानुसार चोबचीनी चरपरी, मधुर, कड़वी, गरम, मल मूत्र को शोधने वाली तथा आफरा, शूल, वात व्याधि, अपस्मार, उन्माद और अंग की वेदना को दूर करने वाली है। विशेष रूप से यह फिरंग रोग में लाभदायक है।

इसका रस कुछ मधुर और कुछ कड़पा होता है। यह गरम और अग्निवर्द्धक होती है। कब्जियत को मिटाती है। आफरा और उदरशूल को दूर करती है। दस्त और पेशाब को साफ़ लाती है। पक्षाघात, संधिवात तथा वायुके दूसरे रोगों में बहुत लाभदायक है। अपस्मार और उन्माद में भी फायदा पहुँचाती है। उपदंश रोग के लिए यह एक अक्सीर औषधि है। पुरुषों के वीर्यदोष और स्त्रियों के रजोदोष को यह दूर करती है। कंठमाल और नेत्ररोगों में भी यह लाभदायक है।

डाक्टर वामन गणेश देसाई का कथन है कि चोबचीनी की मुख्य क्रिया त्वचा के ऊपर और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

त्वचा के उपभाग अर्थात् संधियों, बंधन और रस ग्रन्थियों पर होती है। यह एक उत्तम रसायन और दिव्य औषधि है। इसकी मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक है, जो सूंठ के साथ दूध के अनुपान से दी जाती है।

सुज़ाक की वजह से पैदा हुई संधियों की सूजन और संधियों की अकड़न में तथा उपदंश की दूसरी और तीसरी अवस्था में चोबचीनी बहुत लाभ पहुँचाती है। इन रोगों में पोटेशियम आयोडाइड की अपेक्षा अधिक शीघ्रतासे और अधिक निश्चयपूर्वक चोबचीनी लाभ पहुँचातो है। सुज़ाक और उपदंश की वजह से पैदा हुई रसग्रन्थियों की सूजन में इसके सेवन से पहले दर्द की कमी होती है और उसके पश्चात सूजन उतरती है। इन रोगों में पोटेशियम आयोडाइड से जैसा त्रास होता है वैसा चोबचीनी से नहीं होता। यह औषधि चूर्ण के रूप में जैसा गुण बतलाती है वैसा क्वाथ या शीतनिर्यास के रूप में नहीं बतलाती।

चोबचीनी शरीर की संधियों और शिराओं के अन्दर प्रवेश करके अविकृत पित्त को सहायता पहुँचाती है। खून को साफ़ करती है, संधियों को मज़बूत करती है, पेशाब को गति देती है, मासिक धर्म को साफ करती है। लकवा, हाथ पैरों का सूजना, उपदंश की वजह से होने वाला सिर दर्द, आधा-शीशी, पुराना नज़ला, विस्मृति, चक्कर, उन्माद, उपदंश और दमे के रोगों में भी यह लाभदायक है। खून को शुद्ध करने का इसमें खास गुण होने की वजह से यह फोड़े, फुन्सी, घाव तथा खून की गर्मी से होने वाले रोगों में अक्सीर-फायदा करती है। इसके सेवन से अफीम खाने की आदत छूट जाती है। जहरी पदार्थों के विकार को भी यह शान्त करती है इसी प्रकार जो लोग कामदेव की शक्ति नष्ट हो जाने से नाउम्मीद हो गये हों उनको भी यह फिर से नवीन पुरुषार्थ देती है।

डॉक्टर मुडीन शरीफ कहते हैं कि चोब चीनी की मज़बूत गाँठों वाली जड़ एक सस्ती और सुनिश्चित औषधि है। कॉडलिव्हर ऑइल, सार्सा परेला और पोटास आयोडाइड के बदले में यह बहुत सफलताके साथ काम में आती है। मैंने विस्फोटक रोग की अन्तिम असाध्य अवस्था में तथा उपदन्श, सन्धिवात और कण्ठ माला के कितने हीं केसों में इसका उपयोग बहुत सफलता के साथ किया है। यह औषधि चूर्ण और क्वाथ के रूप में काम में ली जा सकती है।

उपरोक्त विवेचन से मालूम होता है कि चोब चीनी की क्रिया सीधी रक्त के ऊपर होती है और इस लिये यह रक्तविकारके तमाम दोष, उपदंशके विष और संधिवात, गठिया इत्यादि वात व्याधियों पर बहुत लाभ पहुँचाती है। इसके अतिरिक्त इसका वाजिकरण धर्म भी बहुत प्रभावशाली है। इस लिये कामशक्ति की निर्बलता, वीर्य की खराबी, इत्यादि व्याधियों पर भी इसका उत्तम असर होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यूनानीमत—यूनानीमतसे चोबचीनी शरीर के अन्दर मुलायिमत पैदा करती है। भीतरकी खराबियों को दूर करती है, खून साफ करती है, दिल, दिमाग, कलेजे और कामेन्द्रियको ताकत देती है। फ़ालिज, लकवा, कंपकंपी, ऐंठन, पागलपन, मालीखोलिया इत्यादि ज्ञानतन्तु सम्बन्धी बीमारियाँ, गर्भाशय की बिमारियां, गुदा सम्बन्धी बीमारियां, तथा कोढ़, खुजली, जहरीले फोड़े, दाद, इत्यादि रक्त सम्बन्धी रोगों में यह बहुत लाभ पहुँचाती है। वातसे पैदा हुआ बुखार, चौथिया ज्वर और फील पाँव में भी यह लाभदायक है। इससे अफ़ीम खानेकी आदत छूट जाती है। इसके सेवन से चेहरेका रंग लाल, साफ और रौनकदार हो जाता है जिसको बेजानकारीमें पेशाब जानेका रोग हो उसे भी यह ठीक करती है।

इसको सर्दीके शुरूमें अथवा बसन्त ऋतुमें सेवन करना चाहिये। कड़ाकेकी सर्दी और कड़ाकेकी गर्मीमें इसका सेवन मुनासिब नहीं। जवानीके आखिरमें और बुढ़ापे के शुरूमें इसका सेवन करनेसे बुढ़ापेका असर अधिक मालूम नहीं होता। कफ सम्बन्धी बीमारियोंमें इसका सेवन ठीक नहीं है।

मुज़िर—अधिक गरम मिज़ाजवाले लोगोंको और बच्चोंको इसके सेवनसे बहुत खुश्की पैदा होती है। निर्बल मनुष्योंको इसका सेवन करानेमें बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिये क्योंकि यह हृदय की धड़कनको कम करती है।

दर्प नाशक— इसके दर्पको नाश करनेके लिये अनार उत्तम है।

प्रतिनिधि—हकीमोंके मतानुसार इसका प्रतिनिधि उसबा और वैद्योंके मतानुसार असगंध है।

मात्राः—इसके चूर्ण की मात्रा ३ माशेसे ६ माशे तककी है।

उपयोग—

उपदंश—जिसका शरीर उपदंशसे फूटगया हो और जिसके सारे शरीरमें उपदंशका विष फैल गया हो उसको चोबचीनीके शीत निर्यासमें शहद मिलाकर पिलाना चाहिये।

गंडमाल—इसका चूर्ण ४ माशे से १ तोले तककी मात्रामें शहदके साथ चटानेसे कंठ मालमें लाभ होता है।

रक्त विकार—इसके चूर्णको शहदके साथ चटानेसे त्वचाके पुराने रोग मिटते हैं।

बनावटें:—

उपदंश नाशक चूर्ण—चोब चीनी १६ तोले, मिश्री ४ तोले, पीपर, पीपलामूल, काली मिर्च, लवगं, अकल करा, सूंठ, खुरासानी अजवायन, वायबिडङ्ग, दालचीनी, ये सब चीजें एक २ तोला। इन सबका बारीक चूर्ण करके इसमें से ६ माशे चूर्ण सुबह शाम शहद के साथ लेने से रक्त में मिले हुए उपदंशके कीटाणु नष्ट होते हैं और उपदंश के परिणामसे होने वाले अन्य रोग, जैसे रक्त विकार, संधिवात, गठिया, लकवा, प्रमेह, इत्यादि नष्ट होते हैं। (वनौषधि गुणदर्श)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चोबचीनी पाक—चोबचीनी ४८ तोले, पीपर, पीपला मूल, कालीमिर्च, सूंठ, अकलकरा और लोंग, ये सब एक २ तोला। इन सबके चूर्णका जितना वजन हो उतनीही शकरकी चाशनीमें इसका पाक बना लेना चाहिये। इस पाकमें से एक २ तोला सवेरे-शाम लेनेसे नपुँसकता, व्रण, कुष्ट, वातरोग, भगन्दर, क्षय, इत्यादि रोग दूर होते हैं।

भगंदर नाशक मोदक—चोबचीनीका चूर्ण आधी छटांक, शक्कर आधी छटाँक और घी आधी छटाँक। इन तीनोंको मिलाकर इनके २ लड्डू बनालेना चाहिये। एक लड्डू सवेरे और १ लड्डू शामको खाकर ऊपरसे गायका दूध पीना चाहिये। पथ्यमें सिर्फ गेहूँकी रोटी, घी, शक्कर और दूधही देना चाहिये। १४ दिन तक इस औषधिका सेवन करनेसे भगंदर नष्ट होजाता है। अगर इस दवाके सेवनसे शरीरमें गर्मी मालूम पड़ेतो दवाकी मात्रा कम करदेना चहिये और घी दूधकी मात्रा बढ़ादेना चाहिये।

(जंगलनी जड़ी बूँटी)

रक्त शोधक क्वाथ—चोबचीनी, अनंत मूल, मजीठ, सनाय, हरड़, बहेड़ा, आँवला, नीम गिलोय, नीमकी अन्तर छाल, कुटकी, पीपलकी अन्तर छाल, दारू हलदी और मुलेठी इन सबको समान भाग लेकर चूर्ण करलेना चाहिये। इस चूर्णमें से ४ तोला चूर्ण लेकर ६४ तोले पानीमें औटाना चाहिये। जब ८ तोला पानी बाकी रह जाय तब छानकर पी लेना चाहिये। इस प्रकार दिनमें दोबार इस क्वाथका सेवन करनेसे शरीरमें फैला हुआ उपदंशका विष दूर होजाता है तथा सब प्रकारके रक्त विकार, खाज, खुजली, व्रण, भगंदर, कुष्ठ, वगैरह रोग नष्ट होते हैं। एक्जिमाके ऐसे केसमें जिनमें डाक्टरोंने रोगीका पांव काट डालनेकी सलाह दी थी इस औषधिके प्रयोगसे अराम होता देखा गया है।

मदन संजीवन चूर्ण—जायफल, लवंग, जायपत्री, पीपर, तज, तमाल पत्र, इलायची, नागकेशर, पीपलामूल, अजवायन, कौंचबीज, सेमरमूसली, असगन्ध, सफेदमूसली, बलबीज, गोखरू, समुद्रशोषके-बीज, धतूरेके बीज, वंशलोचन और मुलेठी। ये सब चीजें एक २ तोला। चोबचीनी ४० तोला। इन सब औषधियोंका बारीक चूर्ण करके रख देना चाहिये। इस चूर्णमें से ३ माशे चूर्ण ३ माशे शहद और ६ माशे घी के साथ मिला कर चाटना चाहिये और ऊपरसे गायका दूध पीना चाहिये। यह चूर्ण अत्यन्त कामोद्दीपक और वाजिकरण है। इससे सब प्रकारके वीर्यदोष नष्ट हो कर मनुष्यकी काम शक्ति बहुत बढ़ती है।

चूना

नाम—

संस्कृत—चूर्ण, सुधा, सहोदभूषणकं, शिलाक्षारम् शुद्धक्षार, हिन्दी—चूना। गुजराती—चूना।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मरोठी—चूना। बंगाल—चूना। पंजाब—चूना। तेलगू—चुन्नपु। द्राविड़ी—शुन्नाम्बु अरबी—किलस। फ़ारसी—आहक। अंग्रेजी—Lime, Carbonate of Lime, quick lime।

गुण, दोष और प्रभाव—

चूना भारतवर्षमें अत्यन्त प्राचीनकालसे जनसमाज के परिचयमें आरहा है। हज़ारों बर्ष पहिलेसे यहां पर चूनेसे इमारतें बनाने का काम होता आया है। कंकरीसे चूना जलाने की प्रथाभी यहां पर बहुत प्राचीन कालसे चली आई है। सुश्रुत, बाग्भट्ट, इत्यादि प्राचीन आयुर्वेदाचार्योंने औषधि बिज्ञानमें भी इस वस्तुका उपयोग किया है।

आधुनिक काल में इस वस्तुने और भी अधिक महत्व धारण किया है। मनुष्य शरीर का पोषण करनेके लिये और हड्डियों को मज़बूत करनेके लिये आजकल केलशियम नामक तत्व बहुत उपयोगी माना जाता है और वह केलशियम इसी चूनेके अन्दर पाया जाने वाला एक तत्व है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमत— यूनानीमत से यह चौथे में गरम और खुश्क होता है। यह कब्जियत पैदा करता है, खट्टेपन को मिटाता है, पेशाब और खून को साफ करता है, जखम पर लगानेसे ज़खम भर देता है। मुज़ाकमें इसके पानीकी पिचकारी देते हैं। आगसे जले हुए स्थान पर चौगुने मक्खनमें इसको मिला कर लगानेसे शान्ति मिलती है। जले हुए स्थानको शान्ति पहुचाने की इसमें खास तासीर है। चोट लगनेके स्थान पर इसको शहद और तिलके ताजे तेलके साथ मिला कर लगाने से लाभ होता है। शरीर के किसीभी हिस्से से खून बहता हो तो वहां पर धुले हुए चूनेको लगाने से बन्द हो जाता है। चूना और अफीम दोनों को समान भाग लेकर उड़दके बराबर गोलियाँ बना कर सुबह शाम लेनेसे दस्त, मरोड़, पेचिश और संग्रहणीमें लाभ होता है। अद्रकके पानीमें चूना मिला कर थोड़ा सा नमक डालकर सर्दी की सूजनपर लगानेसे सूजन बिखर जाती है।

मुज़िर—अधिक मात्रामें चूना खाने और पीनेसे पीने वालेके मुंहमें खुश्की पैदा होती है, मुंहमें छाले होजाते हैं, मेदेमें जलन होकर मेदा खिंचने लगता है, पेशाब रुक जाता है, आंतोंमें घाव होकर मरोड़ी और खूनके दस्त आने लगते हैं, दिलमें धड़कन होकर बेहोशी पैदा होजाती है। अगर ऐसा उपद्रव हो तो ताज़ा दूध या बादामका तेल पिलाना चाहिये और तर पदार्थ खिलाना चाहिये।

कर्नल चीपराके मतानुसार कलीके चूनेमें पाया जाने वाला केलशियम सब प्रकारके प्रादाहिक सोजन के लिये एक उत्तम औषधि है। इसे चूनेके पानीके रूपमें काममें लेते हैं। २ औंस कलीके चूनेको एक गैलन पानीमें डालकर घोल देते है। चूना जम जानेपर पानी को निथार लेते हैं। इसी लाइमवाटरमें केलशियम रहता है। इस चूनेके पानी को किसी साधारण जातिके तेलमें मिलाकर खाज, खुजली, जलना

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इत्यादि चर्म रोगों पर लगाने व पिलाने के काममें लेते हैं। बच्चोंके पेटके कीड़ोंको नष्ट करनेके लिये ३ औंस चूनेके पानी का एनिमा दिया जाता है। मंदाग्नि और हृदय की जलनमें भी इसको पिलानेसे बड़ा लाभ होता है। वमन और अतिसारमें, बच्चों की वमन और क्षय में और खनिज अम्लोंके विषमें चूने का पानी उत्तम औषधि है इसे दूधके साथ मिलाकर देनेसे काफी फायदा होता हैं। १ पिंट दूधमें ४ औंस पानी मिलाया जाता है।

चूने का पानी अम्लनाशक होता है। इसे जोड़ों के दर्द में, दादमें, गंजमें और पीलिया में उपयोग में लेते हैं। मूत्र सम्बन्धी रोग, ग्रंथियों की वृद्धि और अम्ल की अधिकता में यह लाभदायक है।

उपयोग—

गांठ और मस—चूना, सज्जी, तूतिया और सुहागेको पानीमें पीसकर मसपर लगानेसे लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ्र—चूनेके निथारे हुए पानीमें तिल का तेल और शक्कर मिलाकर पिलानेसे किसी दूसरी औषधिसे नहीं मिटने वाला मूत्रकृच्छ्र मिट जाता है।

अम्लपित्त—५ तोले कलीको ५ सेर पानीमें कागदार शीशीमें बुझाकर २।३ मिनट तक हिलावें और काग बंद कर रख छोड़ें। जब चूना नीचे जम जाय तब उस निथरे हुए पानी में से ढाई २ तोला पानी सुबह शाम पिलाने से अम्ल पित्त मिटता है।

बालरोग— ढाई तोले चूने को ५ तोले मिश्री के साथ खरल करके ढाई पाव पानी में मिलाकर कागदार शीशी में भरकर काग बन्द करके रख दें। जब पानी निथर जाय तब उसमें से १५।२०बूंद पानी दूधमें मिलाकर बच्चेको पिलानेसे उसके पेटमें होनेवाले दूध सम्बन्धी विकार नष्ट हो जाते हैं। वह तन्दुरुस्त रहता है और केलशियम की कमी से होने वाले उपद्रवोंसे उसकी रक्षा होती है।

अजीर्ण—अजीर्णकी वजहसे जिसका पेशाब रुक गया हो या पीला पड़ गया हो, खट्टी डकारें बहुत आती हों और वमन होने लग गई हों ऐसे रोगमें दूधमें चूनेका पानी मिला कर पिलाने से लाभ होता है।

अतिसार—जिसको अम्लापित्तसे अतिसार हो गया हो उसको चूनेके निथरे हुए पानीमें बबूलका गोंद मिला कर पिलानेसे अतिसार मिटता है।

नम्बर २—चूनेके पानीमें कुन कुना दूध और गोंद मिला कर गुदामें पिचकारी देनेसे भी अतिसार मिटता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वमन—जब किसी भी औषधिसे वमन नहीं रुकती हो तो दूधमें चूनेका नितरा हुआ पानी मिला कर पिलासेसे रुक जाती है। पीले बुखारमें काली वमन को रोकनेके लिये दूध और चूनेका पानी बहुत हितकारी है।

श्वेतप्रदर—एक भाग चूनेके नितरे हुए पानीमें तीन भाग पानी मिला कर पिचकारी देनेसे श्वेत-प्रदरमें लाभ होता है।

गंडमाला—जिस गंडमालमें पीववाले फोड़े होते हों और लगातार घाव पड़ते जाते हों वह भी चूने के पानी को दूध के साथ मिलाकर पीनेसे मिट जाती है मगर वह दूध १२ घंटेसे अधिक नहीं पड़ा रहना चाहिये। साथमें गंडमालाके फोड़ों पर चूनेका पानी भी लगाना चाहिये।

दुष्टव्रण—सवा पाव चूनेके नितरे हुए पानी में १५ रत्ती रसकपूर मिलाकर उपदंश सम्बन्धी फोड़ों और न भरनेवाले फोड़ों पर लगानेसे लाभ होता है। मगर इसका कपड़ा फाड़ों पर हमेशा तर रहना चाहिये। खुजली और दूसरे दाहक चर्मरोगोंमें चूनेके नितरे हुए पानीमें तेल मिलाकर उसमें कपड़ा तर करके रखने से बड़ा लाभ होता है।

कर्णरोग—चूनेके पानीमें दूध मिलाकर नाक या कानमें उसकी पिचकारी देनेसे नाक और कान का बहना बन्द हो जाता है।

क्षयरोग—क्षयरोग वाले मनुष्य को दूधमें चूनेका पानी मिलाकर देनेसे लाभ होता है। बहु मूत्रके लिये भी यह प्रयोग हितकारी है। जिस बच्चेकी गुदामें चुरनिये पड़ गये हों उसको चूनेके पानी की पिचकारी देनेसे लाभ होता है।

संखिये का विष— चूने का पानी पिलाने से संखिये का विष उतरता है।

अग्नि से जलना— अग्नि से जले हुए स्थान पर चूना और अलसी का तेल मिलाकर लगाने से शान्ति मिलती है।

शीतलाके व्रण— रूई के फोयेको चूनेके जलमें भिगो कर शीतला के व्रणों पर रखनेसे वह गहरे नहीं पड़ते हैं।

बदगांठ— चूना और शहद मिलाकर कपड़ेपर लगाकर बदगांठ पर बांधने से बदगांठ बिखर जाती है।

पसली का दर्द— चूने और शहद को कपड़ेपर लगाकर पसली के दर्दपर रखकर पट्टी चढ़ा देने से पसली का दर्द मिट जाता है।

मकड़ी का जहर— चूने को नीबू के रस में मिलाकर लगाने से मकड़ी का जहर उतर जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मतस्क पीड़ा— चूने और नोसादर को मिलाकर सुंघाने से कफ और वात का सिरदर्द और हर तरह की बेहोशी दूर होती है।

नारु— चूने और बीड़लवण को पानी के साथ पीसकर लेप करनेसे नारु मिटता है।

तिल्ली— चूने को शहद के साथ पीसकर तिल्ली पर लेप करके ऊपर अंजीर के पत्ते बांधनेसे तिल्ली मिटती है।

मकड़ी का विष— चूना, तेल और चिरोंजी को पीसकर लगानेसे मकड़ी का जहर दूर होता हैं।

अग्निमान्द्य— कली का चूना २ रत्ती, तुलसी के पत्तों के रस या अद्रक, प्याज अथवा लहसनके रस के साथ लेने से आमाशय का खट्टापन दूर करके जठराग्नि को तीव्र करता है। आमाशय के विजातीय द्रव्यों को यह दस्त के द्वारा बाहर निकाल देता है।

अतिसार और संग्रहणी— कली का चूना २ रत्ती तुलसी के रस या शहद में मिलाकर चाटनेसे अतिसार और संग्रहणी में लाभ होता है।

खाज और खुजली— कली का चूना १ तोला लेकर ढाई तोला गौमूत्र में खूब अच्छी तरह मिला लेना चाहिये। उसके बाद उसमें थोड़ा मोम गलाकर डाल देना चाहिये। जिससे वह मरहम की शक्ल का हो जायगा। इस मरहम को खाज खुजली और घावों पर लगाने से बहुत जल्दी आराम होता है।

मूत्रकृच्छ्र—कली का चूना १ रत्ती, भैंस के कान का मैल पावरत्ती, इन दोनों चीजों को शहद में मिलाकर चटाने से पेशाब साफ होकर मूत्रकछ्र में तुरंत लाभ होता है। इसको नाभिके ऊपर लगादेने से भी यही लाभ होता है।

आधा शीशी और मस्तक शूल— गोविन्द फल वा व्याघ्रनखी की ३ माशे नरम कोंपलें लेकर उसमें आधी रत्ती चूना मिलाकर उसको गौमूत्र में मिला देना चाहिये। अगर व्याघ्रनखी न मिले तो २।३ नीम के पत्तों का रस निकालकर उसमें पाव रत्ती चूना मिलाकर उसकी १।२ बूंद नाक अथवा कान में डालने से आधाशीशी और मस्तकशूल फौरन आराम होता है।

मोच और हड्डीका टूटना— चूने को मक्खन के साथ मिलाकर मोच के ऊपर बांधने से मोचकी पीड़ा शान्त होती है और हड्डी में पड़ी हुई गठान भी बिखर जाती है। टूटी हुई हड्डीपर इस औषधि का लेप करके उसके ऊपर मोरपंख के रुंओं की पट्टी बांधना चाहिये। इस पट्टी को ५।७ दिन में बदलते रहना चाहिये।

मुंहकी कीलें— चने को शहद में मिलाकर मुंह की कीलों पर लगाने से मुंह की कीलें मिट जाती हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वमन— चूने को पानी में घोल कर एक स्थान पर रख देना चाहिये। जब चूना नीचे जम जाय तब साफ पानी को नितारकर उस पानी में शहद मिलाकर पीने से वमन, जी का मिचलाना और आमाशय का खट्टापन दूर होता है। रुचि उत्पन्न होती है। बच्चा अगर दूध निकालता हो तो वह भी इस औषधि को देने से बंद होजाता है।

चमजुएं— कई लोगों के गंदगी की वजहसे बगलमें, गुह्य स्थानों पर और आंखों की पलकों में चमजुएं पड़ जाती हैं। ऐसी हालतमें नहानेके गरम जलमें चूना और नीमके पत्तोंका रस डालकर उस पानीसे स्नान करनेसे और आँखें धोनेसे चमजुएं नष्ट होजाती हैं। रक्त और पसीनेके विकारको दूर करने के लिए ३ माशे घी में १ रत्ती चूना मिलाकर खाना चाहिये। नहानेके पहले शरीर पर चूना मिले हुए घी का मालिश कर लेना चाहिये। इस सारे उपचार से चमजुएं बहुत जल्दी नष्ट होती है।

यकृत और तिल्ली की बृद्धि— कली का चूना १ रत्ती और सरपंखे की जड़ का रस १ तोला मिलाकर पेट पर लेप करने से और उस हिस्से पर शहद, सोंठ और चूने को समान भाग लेकर उसका बंधान बांधने से अच्छा लाभ होता हैं।

बिच्छू का विष— नीम के पत्तों के रसमें १ रत्ती चूना मिलाकर उस रस की १।२ बूंदे कानमें डालने से और डंक पर बार २ लगाने से बिच्छू का विष उतरता है।

अग्नि से जलने पर— चूने के नितरे हुए पानी में दही की मलाई समान भाग मिलाकर लगाने से अग्नि के जले हुए पर शान्ति मिलती है।

शस्त्रका घाव— अगर चाकू छुरी, वगैरह किसी शस्त्र से गहरा घाव पड़ गया हो तो चूनेको मक्खन और सूंठ के साथ मिलाकर घाव में भरने से खून का बहना बन्द हो जाता है और कुछ दिनों में घाव अच्छा होजाता है।

कानका बहना— आधी रत्ती कली का चूना गौमूत्र में मिलाकर कानमें भरकर, १ घण्टे तक रोगी को ऐसे सुला देना चाहिये जिससे वह बाहर न निकल सके उसके बाद उसको बाहर निकाल देना चाहिये। इसप्रकार हर तीसरे दिन करने से कान का बहना बंद होजाता है।

नासूर—कली का चूना और मक्खी की हंगार समान भाग लेकर शहद में मिलाकर उसमें बत्ती को तरकरके नासूर के अंदर भरने से और गौमूत्र और नीम के पत्तों के रससे व्रण को धोते रहने से नासूर जल्दी मर जाता है।

हृदयरोग—कलीका चूना ३ रत्ती और गुड़ ५ तोला इनको मिलाकर रोग के हमले के अनुसार कमज्यादा मात्रामें चटानेसे हृदयके भीतरका वेग और पीड़ा मिटकर हृदय मज़बूत होता है और रक्ताभिसरणकी क्रिया सुधर जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दमा—एक रत्ती कलीका चूना १ तोला शहद में मिलाकर चाटने से दमे में लाभ होता है।

बालकोंका सूखा रोग—कलीका चूना १ रत्ती, शहदमें मिलाकर चटाकर ऊपर से धारोष्ण दूध पिलाने से बालकों का सूखा रोग मिटता है।

बायुगोला—कलीका चूना डेढ़ रत्ती, शक्कर १॥ रत्ती और नमक १॥ रत्ती पाव भर पानी में मिलाकर उस पानी में से २ तोला पानी देनेसे बायगोला, आफरा और पेटके कृमि नष्ट होते हैं।

अजीर्ण और अरुचि—एक रत्ती कलीका चूना, ३ माशे अदरकके रसमें कुछ शहद मिलाकर लेने से अजीर्ण और अरुचि मिटती है और भूख लगती है।

स्वर भंग—चूनेको बबूल की कलियों के रसमें पीसकर चने के बराबर गोलियाँ बना लेना चाहिये इन गोलियों को मुँहमें रखकर चूसने से सरदी की वजह से बैठा हुआ गला खुल जाता है।

शक्तिवर्धक—कलीका चूना १ रत्ती, सबेरे शाम ६ माशा शहद में मिलाकर चाटना चाहिये। ऊपर से केशर और शक्कर मिला हुआ बढ़ियाँ दूध पीना चाहिये। इस प्रयोग से अन्न हजम होता है। भूख लगती है, निर्बलता दूर होती है और वीर्य तथा पुरुषार्थ बढ़ता है।

विदेशमें होने वाला जलवायुका दूषित प्रभाव—१ मन भर पानीमें भाव भर कलीका चूना डाल कर उस पानीको निथार कर के पीते रहने से जलवायु के सब दोष दूर हो जाते हैं। अगर किसी को विदेश के जलवायुसे विकार हो गये हों तो एक रत्ती चूने को १॥ माशे जीरेके चूर्णमें मिलाकर सबेरे शाम खानेसे सब बिकार मिट जाते हैं।

वात नाशक प्रयोग—चूना २ तोला, अफीम १ तोला, तीन वर्षका पुराना गुड़ ४ तोला। इन सब चीजों को मिलाकर खूब खरल करना चाहिये। फिर चनेके बराबर गोलियें बना लेना चाहिये। इसमें से १ गोली सबेरे शाम पानीके साथ देने से बादी की वजह से होने वाला पेटका दर्द, पसली का दर्द और जोड़ों का दर्द मिटता है।

धनुर्वात्—अजवायन को बकरीके मूत्रकी ७ भावना देकर सुखालेना चाहिये। फिर उसमें समान भाग चूना मिलाकर पीसकर चूर्ण करलेना चाहिये। इसमें से ३ माशे से ६ माशे तक दिन में तीन बार देने से धनुर्वात् में लाभ होता हैं।

पागलकुत्ते का बिष—चूने को आँकड़े के दूधमें ७ भावनाएं देकर चनेके बराबर गोलियाँ बनालेना चाहिये। इसगोली को सबेरे शाम एक २ की मात्रामें देने से शरीरमें से पागलकुत्ते का बिष नष्ट हो जाता है। अगर किसी को विष चढ़ गया हो तो प्रति आधघन्टे में इसमे से एक २ गोली देने से वमन के द्वारा जहर बाहर निकल जाता है। वमन अगर नहीं भी हो तो कोई हर्जनहीं। बिना वमन के ही

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जहर के दोषों को दूर करके रोगी को आरोग्य करदेती है। फिर भी यह आवश्यक है कि रोगी १ वर्षतक पानी के प्रवाह, अग्नि की ज्वाला और खटाइ इत्यादि अपथ्य कारी भोजनोंसे बचारहे।

चूड़ाखी

नाम—

यूनानी—चूड़ाखीम, चूड़ाखी।

वर्णन—

यह एक जाति का फल है जो फालसे के समान होता है। कच्चा फल खट्टा और कुछ कड़वा होता है। इसका अचार बनाते हैं। पकने पर यह लाल और जायकेदार हो जाता है। इसकी जड़ कुछ लालरंग की होती है।

गुण दोष और प्रभाव,—

इसकी प्रकृति गरम और खुश्क है। इसकी सूखी जड़ के चूर्ण को सूँघने से छींकें आकर मास्सिष्क साफ हो जाता है। बिच्छू का जहर भी इससे निकल जाता है। इसके फल को खाने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं। खाँसी, दमा और मेदे की खराबियों को भी यह दूर करता है। इससे हाजमा दुरुस्त होकर भूख बढ़ती है।

(ख० अ०)

चोबे हयात

नाम—

संस्कृत—जीवदास, लोहकाष्ट, वृद्धमित्र, अमृतदारू, गुह्याह्व। हिन्दी—चोबे हयात यूनानी—चोबे हयात। बंबई—लोह लकड़। लेटिन—Guaiacum Officinalis (गुएकम आफिसिनेलिस)।

वर्णन—

यह एक झाड़ी नुमा पौधा होता है। इसकी लकड़ी उदी रंग की औरबहुत सख्त होती है। इस लकड़ी के अन्दर कुछ तेल का अंश होता है। यह पानीमें डालने से डूबजाती है और कूटनेमें बहुत कठिन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होती है। इसको जलाने से धूप के समान खुशबू निकलती है। इसकी छाल बहुत अस्त व्यस्त और डालियाँ बाँकीटेढ़ी होती हैं। पत्ते जोड़े से लगते हैं। औषधि के प्रयोग में इसकी लकड़ी और उसमें से निकाला हुआ राल काम में आता है। यह वृक्ष पहाड़ी प्रान्तों में होता है और बहुत बढ़ता है। ऐसा कहाजाता है कि यह वृक्ष बनारस, गोरखपुर और हाथरस के ज़िलों में पैदा होता है और वहां इसकी लकड़ी से पलंग और तख्त के पाये बनते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

चोबे हयात दीपन, पाचन, मूत्रल, वेदना नाशक, आनुलोमिक, पसीना लानेवाली, सूजन को नष्ट करनेवाली, धातुपरिवर्तक, मासिक धर्म को साफ करनेवाली एक उत्तम रसायन है। इसके सेवनसे आमाशय में गर्मी पैदा होती है। पाचक रस दौड़ने लगता है, जिससे भूख लगती है, अन्न पचता है और दस्त साफ होता है। अधिक दिनों तक सेवन करने से मनुष्य की जीवन विनिमय क्रिया सुधरती है और शरीर में ओज और लावण्य बढ़ता है। इसको अधिक मात्रा में सेवन करने से दस्तें लगती हैं। जम्भाइयां आती हैं, नाड़ी जल्दी चलने लगती है और त्वचा तथा मूत्रपिंड की क्रिया शीघ्रगामी हो जाती है।

ढलती हुई उम्र के लोगों के लिए यह एक उत्तम औषधि है, इसको पारे और गन्धक के साथ भी दिया जाता है। यह औषधि छोटी मात्रा में कई वर्षों तक लेते रहने पर भी कोई नुकसान नहीं होता।

प्राचीन आमवात में, संधियों की अड़कन में तथा ग्रधृसी, इत्यादि वात रोगों में इसके सेवन से वेदना की कमी हो जाती है और बहुत लाभ होता है। इसको गंधक, शोरा, सूंठ और तिलपर्णी के साथ मिलाकर रात्रिके समय चाटने से लाभ होता है।

प्रौढ़ मनुष्योंके गलेकी श्लेष्म त्वचा, पर गांठ या सूजन होनेपर इसके सेवनसे बहुत लाभ होताहै। ऐसे समय में इसकी लकड़ी के चूर्ण को जबान पर रखकर गले में उतारना चाहिये। अगर वैसे नहीं उतरे तो पानी के साथ उतारना चाहिये। प्रौढ़ मनुष्यों के गले की सूजन के लिए इस औषधि के बराबर दूसरी चमत्कारिक औषधि नहीं हैं।

आर्तव के ऊपर भी इस औषधि की क्रिया बहुत प्रभावशाली है। मासिकधर्म की रुकावट और कष्टप्रद मासिकधर्म के लिये यह एक उत्तम औषधि है। अगर इसको धैर्य के साथ लगातार दिया जाय तो स्त्रियों के गर्भाशय की शुद्धि होकर वे सन्तानोत्पति के योग्य होजाती हैं।

रासायनिक विश्लेषण—इसको लकड़ी में एक प्रकार की अम्ल स्वभाव की राल पाई जाती है, जो खाकी रंगकी और सुगन्धित होती है। यह पानीमें अघुलन शील और अलकोहल में घुलनशील होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मात्रा—इसकी लकड़ीके चूर्ण की मात्रा १५ रत्ती तक की है जो दिनमें ३ बार ली जा सकती है। और इसकी राल की मात्रा २ से ७ रत्ती तक की है।

यूनानी मत— यूनानी मत से यह दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। इसकी लकड़ी में जहर दूर करने की अच्छी तासीर है। अगर किसी ने जहर खा लिया हो तो इसके इस्तेमाल से लाभ होता है। सांप और बिच्छू के जहर में भी यह बड़ी लाभदायक है। इसका लेप भी जहर की जगह पर करने से वेदना कम होकर शांति मिलती है। हैजे के लिए भी यह बहुत लाभदायक है। इसके सेवन से हैजे की दस्त और उलटियाँ बन्द हो जाती हैं। इसके मरहम से जख्म भर जाते हैं। इसके चूर्ण को ४ माशे की मात्रा में एक माशे काली मिर्च के साथ पानी में पीस कर प्रातःकाल पीने से और ऊपर से २।३ निवाले गेहूँ की रोटी को गाय के घी में तर करके खाने से ४० दिन में कोढ़ जाता रहता है।

चोबचीनी बड़ी

नाम—

हिन्दी—बड़ी चोबचीनी। बंगला—हरिनाशुक् चिन। मराठी—गोटी शुकचिन। पहाड़ी—हाजिना। लेटिन— Smilax Glabra (स्माईलेक्स ग्लेबेरा)

वर्णन—

यह वनस्पति आसाम, सिलहट और खासिया पहाड़ियों में पैदा होती है इसकी डालियां नाजुक और फिसलनी होती हैं। इसके पत्ते कुछ पतले और अंडाकार रहते हैं। इसके फूल बहुत छोटे और सफेद होते हैं। इसकी जड़ चोबचीनी की जड़की तरह ही मोटी होती है। औषधि प्रयोगमें यह जड़ही काम आती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आसाम के पहाड़ी लोग रक्तविकार, फोड़े—फुन्सों और उपदंशजनित उपद्रवों पर इसकी ताजा जड़ का काढ़ा बनाकर देते हैं। दुराचार जनित व्याधियों में यह एक उपयोगी वस्तु है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चोबचीनी हिन्दी

नाम—

हिन्दी— चोबचीनी हिन्दी। बंगला—गुरियाशुकचीनी, पहाड़ी—हूरिन शुकचिन।

वर्णन—

यह भी चोबचीनी की एक जाति है। इस की वेल पूर्वी बंगाल, आसाम और बरमामें पैदा होती है। इसके पत्ते झिल्ली दार और शल्याकृति होते हैं। इसकी डालियां नाजुक रहती हैं। इसका कंद चोब चीनी की तरह होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आम वातमें और संधिवातमें इसके कंद का रस पिलाया जाता है और उसका बचा हुआ बोदर दर्द की जगह पर बांधा जाता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसके गुण साधारण चोबचीनीसे मिलते जुलते हैं। यह कामोद्दीपक, पसीना लाने वाली और संधिवातमें लाभ दायक है।

चोबचीनी (जंगली उसबा)

नाम:—

हिन्दी—चोबचीनी, जंगली उसबा, राम दन्तुन। बंगला—कुमारिका। संस्कृत—हिरण्य शाक। मराठी—मोटवेल, गुटी। नेपाल—चोबचीनो। तामील—मले तामर। मलाबार—कलतामर। तेलगू—कोंद तमर। लेटिन Smilax Zaylanica (स्माइलेक्स झेलेनिका)। Smilax Macrophylla (स्माइलेक्स मेक्रो फिला)

वर्णन—

यह एक मोटी और कांटेदार बेल मलाबार और कोकणके जंगलों में होती है। इसके पत्ते लम्बे, मोटे, अखंड और गोल होते हैं। ऊपरसे ये चमकीले रहते हैं। इसका फल बड़े मटर के आकार का रहता है। इसकी जड़ें बहुत होती हैं और वे उसबाके समान लाल रंग की दिखाई देती हैं। ये जड़ें ही औषधिके काममें आती हैं। गोवामें इसकी जड़ें बिकती हैं और वहां इन्हें देशी सार्सापरिला कहते हैं। ये जड़ें ताजी ही गुण कारी होती है, पुरानी होने पर निःसत्व हो जाती हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति पसीना लाने वाली, मूत्रल, पौष्टिक और रसायन होती हैं। उपदंश की दूसरी अवस्थामें, पुरातन आमवातमें, और संधियों की सूजनमें यह बहुत उपकारी है। उपदंश की वजहसे होने वाले फ़ोड़े-फुन्सी, संधिवात, अस्थिवात और सारे शरीरमें होने वाली गठानों पर यह बहुत उपयोगी है। पुराने चर्म रोग और कंठमालामें भी इससे लाभ होता है।

मात्रा—इसकी जड़के १ या २ तोले चूर्ण का क्वाथ एक बारमें पिलाना चाहिये। नेपालके निवासी इसको ३ माशेकी मात्रामें सुजाक की बीमारी और श्लेष्मिक झिल्लियोंके अन्य विकारमें देते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह कामोद्दीपक, पसीना लाने वाली, शान्ति दायक और संधिवातमें सपयोगी है।

चोहतक

नाम—

पंजाब—चोहतक, अयकू। लेटिन Rheum Nobile (ह्रीम नोबिली) Oxyria Digyna (अक्सेरिया डिगिना)।

वर्णन—यह वनस्पति काश्मीरसे सिक्किम तक हिमालयमें १०००० से १७५०० हजार फीट की ऊंचाई तक पैदा होती है। इसकी डंडियां खट्टी होती हैं। इनको उबाल कर खाते हैं। ये रुचिकर और शीतल होती हैं। इसका पाताली धड़ फ़ैलनेवाला होता हैं। इसके पत्ते लंबे पत्र वृन्त वाले होते हैं। इसका फल ४ से लगाकर ६ मिलिमिटर तक के आकार का होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह औषधि शीतल और ज्वर तथा प्यास को उपशम करने वाली होती है।

चोरा

नाम—

पंजाव—चोरा, चुरा। लेटिन—Angelica Glauca (एंगेलिका ग्लोका)।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

यह वनस्पति पश्चिमी हिमालयमें काश्मीरसे लगाकर सिमला तक पैदा होती है। इसका तना पोला रहता है। तनेके ऊपर कुछ रेखाएं रहती हैं। इसके पत्ते बड़े और गहरे हरे रंगके रहते हैं। इसके फूल सफेद और बैंगनी रंगके होते है। इसका फल लंब गोल और मोटा रहता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपरा के मतानुसार यह वनस्पति हृदयके लिये लाभदायक और उत्तेजक है। इसे अग्निमांद्य और कब्जियत की शिकायतमें काममें लेते हैं।

चौलिया

नाम—

संथाल—चौलिया। मुंडारि— कारपाडू। लेटिक Ruellia Suffruticosa रुएलिया सफ्रूटिकोसा।

वर्णन—

यह वनस्पति उत्तरी गंगाके मैदान, उत्तरी पश्चिम बंगाल और छोटा नागपुरमें पैदा होती है। यह एक सीधी जाति की वनस्पति है। इसको जड़ें मोटी और पत्ते अण्डाकार होते हैं। इसको फली ३-८ से टिमीटर लम्बी और फिसलनी होती है। यह बैंगनी रंग की रहती है।

गुण दोष और प्रभाव—

केम्प बेलके मता नुसार संथाल जातिके लोग इस वनस्पति को सुजाक उपदंश और गुर्देके रोगोंमें काममें लेते हैं।

इनसायक्लोपीडिया मुंडेरिकाके मतानुसार अगर इसकी सूखी जड़के चूर्ण को २ औंस की मात्रा में गर्भवती स्त्री लेले तो उसके गर्भ पात होने का डर रहता है। इसकी ज़ड़ को सुखा कर पीस कर, पानी में छानकर नेत्र रोगों को दूर करनेके लिये आँखोंमें डालते हैं

चोधारा

नाम—

संस्कृत—ओष्टफल, बैकुंठ, स्प्रक्का। हिन्दी—चोधारा, बम्बई–चौधारा। गुजराती–धोलूं चोधारो,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मखमली चोधारो। मराठी—पांढरा चेाधारा, सुन्दारा, सुन्दरा, कपूरि माधुरी तामील–पेई मरुति तेलगू—मगबिरा, मोगभेरी। कनाड़ी—करिंतुम्बे। अंग्रेजी Malabar Catumind (मलाबार केटमिंड)। लेटिन Anisomeles Malabarica (एनिसोमेलस मलेबारिका)।

वर्णन—

यह एक रुएंदार झाड़ी नुमा पौधा होता होता है। इस पौधे की ऊंचाई २।३ फीट तक होती है। इसके पत्ते बहुत जाड़े, लम्ब—गोल और कुछ शल्या कृति होते हैं। इसके फूल हलके पीले रंगके और फल अंडाकार, चपटे और बादामी रंग के होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति पसीना लानेवाली, शीतनाशक, उत्तेजक और तीव्र होती है। दक्षिणी भारतमें यह अत्यन्त लोकप्रिय और घरेलू औषधि मानी जाती है। इसके सुगन्धित कटुतत्वों का शीतनिर्यास पेट और आँतों की पीड़ामें बहुत उपयोगमें लिया जाता है। पार्यायिक ज्वर और जुकाममें भी यह बहुत उपयोगी है। ज्वर की चिकित्सामें इसे अन्तः प्रयोगमें तो लेते ही हैं मगर साथमें इसके गरम काढ़े की भाफ को नाकके द्वारा सूंघा भी जाता है। ऐसा करनेसे पसीना आकर ज्वर उतर जाता है। इसके पत्तों का शीत निर्यास बच्चोंके उदरशूल, अग्निमांद्य और दांत निकलनेके समयके उपद्रवोंमें लाभदायक माना जाता है। इसका काढ़ा और इसके पत्तोंसे प्राप्त किया हुआ उड़न शील तेल सन्धिवातमें बाह्य उपचार की तौर पर काममें लिया जाता है।

कोमान का मत है कि इस बनस्पतिका निर्यास दांत निकलनेके समय होनेवाले उपद्रवों पर बच्चों को दिया गया और वह उपयोगी पाया गया।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति उदरशूल, अग्निमांद्य तथा सांप और बिच्छूके जहर पर उपयोगी मानी जाती है। इसमें उड़नशील तेल रहता है।

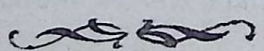

चोटाहलकुसा

नाम—

हिन्दी बंगाली—चोटाहलकुसा। बंबई—तांवा। तामील—तुम्बेइ। तेगे लाग—पानसी पानसी। लेटिन—Leucas Aspera (ल्यूकास एस्पेरा)।

वर्णन—

नह वनस्पति भारतवर्षके मैदानोंमें पैदा होती है। यह एक वर्ष जीवी वनस्पति है। इसकी ऊँचाई

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१५ से लगाकर ४५ सेंटिमीटर तक की होती है। इसका तना सीधा रहता है। इसकी शाखाएं जड़ सेही फूटती हैं। इसके पत्ते २-५ से ७ सेंटिमीटर तक लम्बे होते हैं। इसका फल लम्बगोल रहता है।

गुण दोष और—प्रभाव

इसके पत्ते पुरानेवातमें लाभदायक हैं। इसका रस विसर्पिका और अन्य प्रकारके चर्म रोगोंमें उपयोगी माना जाता है। सर्प विष को नष्ट करनेमें भी इस औषधिकी बड़ी प्रशंसा है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति कृमिनाशक है। इसे सर्दी, खुजली और सर्प दंशके उपयोगमें लेते हैं।

केस और महइकरके मतानुसार यह वनस्पति सर्पदंशमें निरुपयोगी है।

चौंलाई

नाम—

संस्कृत—तंडुलीय, मेघनाद, कांडेर, तंडुलीबीज, विषघ्न, बहुवीर्य, कंचट, इत्यादि। हिन्दी—चौंलाइ का शाग। मराठी—तांदलजा, चंवलाई। गुजराती—तांदलजो। फारसी—सुपेजमर्ज। बंगाल—चंपनतिया, लाल चंपनतिया। तेलगू—मोलाकुरा, कुइकोरा। तामील—कपिकिरीः। अंग्रेजी Hermaphrodite Amaranth हरमेफ्रोडाइट एमेरेन्थ लेटिन—Amaranthus Tenifolius (एमेरेन्थस टेनिफोलियस)।

वर्णन—

यह एक मशहूर शाग हैं जो भारतवर्ष में सब दूर बोई जाती है और सब दूर खाई जाती है इसे सब कोइ जानते हैं।। इसलिये इसके विशेष विवेचन की आवश्यकता नहीं।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वैदिक मत— आयुर्वैदिकमत से चौंलाई हलकी, शीतल, रूखी, पित्त कफनाशक, रक्तविकार नाशक, मलमूत्र निःसारक, रुचिकारक, दीपन और बिषहारक है। यह रसविपाक में मधुर, अत्यन्त शीतल, रूखी तथा तृषा, अरुचि, दाह पित्त, रुधिर विकार और विष को नष्ट करती है।

चौंलाई के पत्ते छूने में शीतल और अर्श, रक्तपित्त, विष तथा खांसी को नष्ट करते हैं। ये मलरोधक, पचने में मधुर और दाह तथा सूजन को नष्ट करने वाले हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चौंलाई की जड़ गरम, कफ नाशक, रज रोधक तथा रक्तपित्त और प्रदर को दूर करने वाली है ।

जल चौंलाई कड़वी, हलकी और रक्तपित्त तथा वात को नष्ट करती है ।

यूनानी मत— यूनानी मत से यह पहले दर्जेमें सर्द और खुश्क है मगर इसकी लालजाति बहुत गरम और खुश्क होती है । यह हजम होने में हलकी और मीठी होती है । इसके पंचांग का रस पिलाने से सांप का विष नष्ट होता है । इसकी जड़का काढ़ा पिलाने से वायु से पैदा हुआ उदरशूल मिटता है । इसकी जड़ को घोट छानकर पिलाने से सुजाक में लाभ होता है । इसकी जड़को पीसकर लेप करने से बदगांठ और दूसरे फोड़े जल्दी पक्व जाते हैं । इसके पत्तों को गरम पानीमें भिगोकर मल छानकर पिलाने से मूत्रनाली की जलन मिट जाती है । इसकी जड़ को घिसकर लेप करनेसे बिच्छूका जहर उतर जाता है । इसकी जड़ को रसोत, शहद और चांवलों के धोवन के साथ पिलाने से स्त्रियों का श्वेतप्रदर और रक्तप्रदर मिटता है । चौंलाई के पत्ते और नीम के पत्तों को पीसकर कनपटी पर लेप करने से नकसीर बन्द होता है । इसकी तरकारीको हमेशा खाते रहनेसे पथरी गल जाती है । इसकी जड़ोंको पीसकर नारु पर बांधने से नारु गल जाता है । इसके पंचांग की राख को मुंह पर लेप करके थोड़ी देर धूप में बैठने से मुंह की झांईं मिट जाती है ।

तालीफ शरीफ नामक ग्रन्थके मतानुसार चौंलाई पित्त, कफ और खूनके फसाद को मिटाती है, पेशाब अधिक लाती हैं । शरीर की गंदगी को दस्तों की राह निकाल देती है । रक्त पित्तके दोषों को मिटाती है । प्रमेहमें लाभ पहुँचाती है, खाँसी को दूर करती है, पित्तसे पैदा हुए बुखार और पागल पन में लाभ पहुंचाती हैं । सर्पविषमें भी यह लाभ दायक है । लाल चौंलाई की जड़को पानीमें पीसकर प्रातः काल रोजाना पीनेसे गर्भाशयसे बहने वाला खून रुक जाता है । अगर किसीके कफमें खून आता हो तो उसके लिये भी यह लाभ दायक है । इसके पत्तों को घी में पीस कर मकड़ीके जहर पर लगानेसे लाभ होता है । इसकी जड़ का रस निकाल कर उसमें ४॥ माशे रसोद और एक माशा नाग केशर का चूर्ण मिला कर जंगली बेरके बराबर गोलियाँ बाँध लें । इनमें से एक गोली प्रति दिन खाकर उसके ऊपर, चौंलाई की जड़के शीत निर्यासका एक प्याला पी लिया करें । इस प्रयोग से कुछ दिनोंमें खूनी बवासीर मिट जाता है । मगर ऐसी चीजें न खाँयं जो बवासीर को बढाने वाली होती है ।

मात्रा—इसकी जड़ के क्वाथ की मात्रा २॥ तोले से ५ तोले तक की हैं ।

छरीला

नामः—

संस्कृत—शैलाख्य, शैलेयम्, वृद्ध, सुभग, शिलापुष्प, शिलाभव, कालानुसारिवा, हिन्दी—छरीला,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छार छरीला, भूरि छरीला, पत्थर काफूल। बंगाल–शैलजा। मराठी–दगड़ फूल फ़ार्सी–दहाल। अरबी–आसीना; उस्ना। । गुजराती-पत्थरफूल। पंजाब-छार छरीला, अस्नेहा। करनाटकी-कलहू। तेलगू-रति पति। तामील—कलाहू। उर्दू-हवाकरमनी। लेटिन—Parmelia Perforata (परमेलिया परफ़ोरेटा)।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत से छरीला शीतल, हृदयको हितकारी, कफा पित्तनाशक,हलका और खुजली, कुष्ट, पथरी, दाह, विष और गुदा के रक्त श्राव को दूर करने वाला है।

निघंटु रत्नाकरके मतानुसार छरीला चरपरा,शीतल,सुगंधित, हलका हृदयको हितकारी, रुचिकारक तथा कफ, दाह, तृषा, वमन, श्वास, घाव, खुजली, कोढ़, पथरी, विष,ज्वर, रुधिर विकार, वातरोग और खूनी बवासीरको नष्ट करने वाला है।

यूनानी मतसे वह पहले दर्जेमें सर्द और खुश्क है। यह सुगंधित,कब्ज करनेवाला,संकोचक,पौष्टिक, धातुपरिवर्तक, पेटके आफरेको दूर करने वाला और कामोद्दीपक है। यकृत और तिल्लीकी सूजन और गुर्दे तथा मसानेकी वायुको यह बिखेरता है। दिलकी धड़कन, मृगी, वमन, जी मिचलाना, यकृतके रोग, गर्भाशयके रोग और मासिकधर्म सम्बन्धी बीमारियोंमें यह मुफीद है। यह कामेंद्रियको ताक़त देता है। और पथरी को बिखेरता है। हृदय के लिये यह एक बहुत पौष्टिक वस्तु है। इसको जलाकर इसका धुआँ नाकमें पहुँचाने से मृगी, सिरदर्द, आधाशीशी और हिस्टीरियामें लाभ पहुँचाता है। इसे आँखेमें लगाने से आंखों को ताकत मिलती है और उनकी ज्योति तेज़ होती है। आँखकी सूजनको चाहे वह सर्दीकी वजहसे हुई हो या गर्मीकी वजहसे यह बहुत फायदा पहुँचाता है। इसका लेप करनेसे शरीरके ढ़ीले अंग कठोर होते हैं। जोड़ोंके दर्दमें भी यह वस्तु लाभ पहुँचाती है। इसको पीस कर घावपर छिड़कनेसे घाव जल्दी भर जाता है। यह आमाशय और आँखों को ताक़त देता है, और हिचकी को मिटाता है।

दर्पनाशक—इसका दर्पनाशक अनीसून है।

प्रतिनिधि—इसके प्रतिनिधि बालछड़ और अजखर है

मात्रा—यूनानी मतसे इसकी मात्रा १ मासे तककी है

अनुभूत चिकित्सा सागरके मतानुसार छड़ीला कामला रोगमें बहुत उपकारी है। कुत्तेके विष को उतारने के लिये इसका प्रयोग किया जाता है। इसके सेवनसे मन्दाग्नि मिटती है। फेंफड़े के रोगोंमें भी इसका सेवन बहुत लाभ दायक है। इसके चूर्ण को सूंघने से मस्तक पीड़ा मिटती है। व्रण और घावपर इसको लगाने से बहुत लाभ होता है। कष्टदायक मासिक धर्म, वमन, पथरी, नाकसे गाढ़े पीबका

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निकलना, तथा यकृत, गर्भाशय और आमाशय की पीड़ामें यह उपयोगी है। गले और दातोंके रोगों को भी यह मिटाता हैं। इसको पानीमें औटाकर, पीसकर,पुल्टिस बनाकर, गुर्दे और कमरपर बाँधनेसे पेशाब की रुकावट मिटकर पेशाब साफ होता है।

छत्री

नाम—

हिन्दी—छत्री। पंजाब—कीआइन। लेटिन— Polyporus officinalis (पोली पोरस आफसिनेलिस) अंग्रेजी—Larch Agaric (लार्क एगेरिक)।

वर्णन—

यह वनस्पति पंजाब के अन्दर पैदा होती है। ऐसा मालूम होता है कि यूनानी की सुप्रसिद्ध दवा गारीकून जिसका वर्णन इस ग्रन्थ के तीसरे भाग में दिया गया है, इसीसे तैयार होती है। यद्यपि इसका कोई मजबूत प्रमाण नहीं है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह मूत्रल, मृदुविरेचक और कफ निःसारक होती है। इसे स्नायुमंडल को पुष्टकरने के काममें लेते हैं। यह वनस्पति प्राचीनकाल से ही ग्रीक और रोमन चिकित्सकों की अत्यन्त प्रिय औषधि रही है। मध्यकाल के यूनानि हकिमों ने इसकी इसी उपयोगिता के कारण इसे जीवन में अमृत तुल्य समझकर इसके सम्बन्ध में काफी खोजकी है। उनके मतानुसार इस औषधि में निम्नांकित गुण हैं।

यह घाव को पूरती है। शरीर में गर्मी पैदा करती है। गिरने से मोच आजानेपर और हड्डी के टूट जाने पर भी यह लाभ पहुँचाती है। ज्वर में इसे शहद और पानी के साथ देते हैं। यकृत की शिकायतों में तथा दमा, पीलिया, पेचिश, गुर्देके रोग, मूत्रनाली के रोग और उन्माद में भी यह बहुत उपयोगी है। क्षयमें इसको अंगूर की शराब के साथ देते है। तिल्ली के रोगों में इसको शहद और सिरके साथ दिया जाता है। पानीके साथ इसको देनेसे खूनका बहना बन्द हो जाता है। मृगीमें इसको शहद और सिरके के साथ देनेमें इससे लाभ होता है। सर्पविष और दूसरे जहरों पर इसको शराब के साथ देने से फायदा पहुँचता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छत्ता

नाम—

संस्कृत—छत्र, भुइछत, भूमि स्फोट, भूसुता, भूछत्र, संस्वेदजशाक, कवच, हिन्दी—सांपकी छत्री, छाता, छतोना, फेनछत्तर। बंगाल—छतकुड़ा, छाता, भुइछाती। बंबई—अलंबे, कंलबे, खुंबा गुजराती—कागदाना छत्तर, फुग्यू, मीनड़ानी वल्लो। मराठी—अलंबि, भुइफोड़, सत्री, कुन्याचेमूत्त। फ़ारसी—कुललिकदिब, समरुग, समरोधा, छत्रीमार। उर्दू—कागमिठा। कोकण—कामिल। अंग्रेजी Msharoom मशरुम। लेटिन—Agaricus Campestris एगेरिकस कंपेस्ट्रिस. A. Psalliota (एगेरिकस सेलिओटा)।

वर्णन

यह वनस्पति पहली बरसात के होते ही पशुशालाओं में, मिट्टी की दिवालों पर और मलमूत्र की जगह अपने आप पैदा हो जाती है। यह बिलकुल छत्री के आकार की होती है इसकी लम्बाई ४ इंचसे ८ इंच तक रहती है। इसका रंग सफेद रहता है। नीचे से एक डंडी निकलती है और उसके ऊपर छत्री के आकार का ढक्कन पैदा होता है। इसकी तीन जातियां पैदा होती हैं। सफेद, लाल और काली।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत— भावप्रकाश के मतसे छत्री शीतल, दोषजनक, भारी तथा वमन, अतिसार, ज्वर और कफ रोगों को उत्पन्न करती है। सफेद शुभ्र स्थान में होने वाली तथा काठ बांस और गायके स्थानों पर पैदा होने वाली छत्री अधिक नुकसानदायक नहीं है। शेष सब त्यागने के योग्य है।

निघन्टु रत्नाकरके मतानुसार छत्री शीतल, बलकारक, भारी, भेदक, मधुर, त्रिदोषजनक, वीर्य वर्द्धकऔर कफकारक होती है। यह पाचनक्रिया में अनियमितता पैदा करती है। इसकी लाल जाति सबसे कम हानिकारक होती है।

यूनानी मत— यूनानी मत से छत्री नाक आंख और यकृत की तकलीफों में लाभ पहुँचाती है। जलार्बुद, पक्षाघात, और यकृत की तकलीफों में भी यह लाभदायक है। इसकी काली जाति जहरीली होती है।

डाक्टर वामन गणेश देसाई के मतानुसार जब आमाशय की पाचन शक्ति कमजोर होजाती है और रोगी क्षीण होता जाता है। तब इस वनस्पति की तरकारी बनाकर देने से लाभ होता है। क्षयरोग में इसको दूध के साथ उबालकर शक्कर मिलाकर देते हैं। ताकत के लिए इसे घी में भूनकर लो

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जाती है। इस वनस्पति में बहुत सी जहरीली होती है। इसलिए इसको लेते वक्त सावधानी रखना चाहिये। जिसमें किसी प्रकार की दुर्गन्ध न हो और जो बहुत जल्दी मुड़ जाती हो वह वनस्पति खाने लायक समझी जाती है।

इसकी एक जाति कपासके झाड़के ऊपर पैदा होती है। इसका रंग खाकी होता है। यह व्रण रोपक और रक्त संग्राहक होती है। इसको पानीमें उबाल कर बच्चोंके मुखरोग पर लगानेके काममें लेते हैं।

छतरछी

नाम—

यूनानी—छतरछी।

वर्णन—

यह एक बहुत छोटी रोइदगी होती है। इसके पत्ते इमली के पत्तोंकी तरह मगर उनसे छोटे होते हैं। इसका फूल गोल, सांपकी आंखके बराबर लाल रंगका होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह गरम और खुश्क होती है। कितनी ही सख्त खुजली हो गई हो इसके इस्तेमालसे नष्ट हो जाती है। वायुके रोगोंमें भी यह लाभ पहुँचाती है। आँखोंके लिये भी यह मुफीद है।

छतरमूठा

नाम—

यूनानी—छतर मूठा।

वर्णन—

यह एक सुन्दर पेड़ होता है, जिसका तना बहुत छोटा होता है। इसकी शाखाएं अनारकी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शाखाओंकी तरह होती हैं। इसके पत्ते सन्दलके पत्तोंसे कुछ छोटे और कैंथके पत्तोंसे कुछ बड़े होते हैं। इसके फूल सफेद होते हैं जिनमें ४ पंखड़ियाँ होती हैं। इन पंखड़ियोंके अन्दर छोटी २ पंखड़ियाँ और होती हैं। इसके मूंग की तरह पत्तियाँ लगती हैं। इसकी फलीका छिलका उपरसे हरा और भीतरसे लाल होता है। इसके बीज काले, इलायचीके दानोंकी तरह होते हैं। इसके पत्तों, शाखों, और फलियोंसे दूध निकलता है। (ख० अ०)

गुण दोष और प्रभाव,—

यूनानी मतके अनुसार इसके पत्ते, फलीका गूदा और छिलका सर्द और खुश्क है। बीज दूसरे दर्जे में गरम और पहले दर्जे में खुश्क होते हैं। यह वनस्पति कब्जको दूर करती है। खूनको साफ करती हैं। पीनस, सिर दर्द और कमरके दर्दमें लाभदायक है। दूध, पसीना, और पेशाबको यह बढ़ाती है। इसके चूर्णको शक्करके साथ खानेसे कुष्ट, बवासीर और कमरके दर्द में लाभ होता है। (ख० अ०)

छिरेटा।

नाम—

संस्कृत—पाताल गरूड़ी, दृढ़कांडा, दीर्घवल्ली, महामूला, सोमवल्ली, वनतिक्तिका, तिक्तांगा, इत्यादि। हिन्दी—छिरेटा, पाताल गरुड़ी, हियर, जलयमनी, जमटी की बेल, फरोद बूटी। गुजराती—बेवड़ी, बेव, पाताल गलोरी। काठियावाड़—वधीनोवेलो। मराठी—वासमवेल, वसनवेल, परवेल, हुन्देर, भुइपाड़। बंगाल—हरोर, शिलिंदा, चिलिंदा। कोकण—वनतिक्तका। फारसी—फरीद बूटी। उर्दू—फरीद बूंटी। तामील—कटुकोदि। तेलगू—चिपुरटिगे, कतलटिगे। उड़िया—मूसाकानी। सीमाप्रदेश—पाठा। कनाड़ी—दागड़ी बेल, सुगंधि वालि। सिंध—कुरसन, झमीर। बलुचिस्तान—अफबंद, झमूर। लेटिन—Cocculus Villosus, कोक्यूलस व्हिलोसस C. Hirustus (को० हिरसूटस)।

वर्णन—

छिरेटाकी बेलें बरसातके दिनोंमें सब दूर पैदा होतीं हैं। कहीं २ ये बारहों महिने देखी जाती हैं। यह पहाड़ों पर नहीं होतीं। इसकी बेलें बहुत लंबी और ज़मीन पर फैली हुई रहती हैं। अथवा यदि नजदीक में कोई वृक्ष हो तो उस पर चढ़ जाती हैं। इस सारी वेलके डंठलों पर सफेद बालके रुएँ होते हैं। नई बेलके डंठल कोमल रहते हैं मगर पुरानी होने पर ये लंबे, मजबूत व चीठे हो जाते हैं। इसके

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पत्ते २ से ३ इञ्च तक लंबे और १॥ से २ इञ्च तक चौड़े कहीं गोल और कहीं तिकोने होते हैं। कहीं ये ५ कोने वाले होते हैं। कुछ पत्ते नागर बेलके पत्तों की तरह होते हैं। एकही बेलपर और एकही डाली पर भिन्न २ प्रकारके पत्ते नज़र आते हैं। इसके फूल सब्जी माइल पीले रंगके, बहुत छोटे होते हैं। इसके फलभी बहुत छोटे, कच्ची हालत में हरे और पकने पर बैंगनी हो जाते हैं। इनमें कालारस भराहुआ रहता है। इसके फूल वर्षामें और फल जाड़े में आते हैं। इसके पत्तों को पानी में मसल देनेसे पानी जम जाता है इसी लिये इसको जल जमनी कहते हैं। इस बेलकी जड़ में बहुत गहरा एक कंद निकलता है। इसीसे इसका नाम पाताल गरुड़ी रक्खा है। औषधिमें इसके पत्ते और इसकी जड़े काममें आती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदके मतसे छिरेटा मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारक तथा दाह, पित्त रुधिर-विकार और विषके उपद्रवोंको नष्ट करने वाला है। इसकी जड़ उष्णवीर्य्य, पसीना लाने वाली, मूत्रल, बल वर्धक, ज्वर नाशक, वायुके विकारोंको दूर करने वाली, शोधक और मृदु स्वभावी होती है। मूत्र मार्गों के ऊपर यह ग्राही और शामक क्रिया करती है इसके पत्ते जलन को शांतकरने वाले, मूत्रल, सूजनको नाश करने वाले और दुग्धवर्द्धक होते हैं।

हब्सबूलर के मतानुसार इसका लुआब दूधके साथ लेनेसे अनैच्छिक वीर्यश्रावमें लाभ पहुँचता है। खांसीमें भी यह लाभदायक है। आँखों की पलकों का सूजन दूर करने पर भी इसका उपयोग किया जाता है।

मुरेके मतानुसार सिंध में इसकी जड़ें और पत्ते सिर दर्द और स्नायुके शूलमें लाभ-दायक माने जाते हैं।

फरमा कोपिया ऑफ इंडिया के मतानुसार इस वनस्पतिमें संभवतः गिलोय के पौष्टिक गुण भी रहते हैं।

गुजरात, काठियावाड़ और कोकण में यह एक लोकप्रिय और घरेलू औषधि है। वहां पर इसकी जड़ों को बकरीके दूधमें उबाल कर उसमें पीपर, सूंठ और मिर्च डालकर पुराने आम वात, चर्म रोग और उपदंश जन्य संधिवातमें देते हैं। इसके पत्तों का रस शीतवीर्य होने की वजह से जीरा और खड़ी शक्करके साथ नये सुज़ाक़में बहुत लाभ पहुँचाता है। चोट, सूजन, मोच, रगड़, इत्यादि व्याधियों पर इसके पत्तोंको गरम करके बाँधते हैं।

संधिवात, विस्फोटक, खुजली तथा उपदंशकी वजहसे पैदा होने वाले रक्तविकारों पर यह सार्सा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परिलाकी तरह लाभ पहुँचाती है और ऐसे रोगोंमें इसकी दो तोला जड़को ७ काली मिरच के साथ पीसकर ६० तोला पानीमें उबालते हैं। जब ५ तोला पानी शेष रहजाता है तब उसको पिलाया जाता है।

इसकी जड़में से बहुत गहराई पर एक कन्द निकलता है। ऐसा कहा जाता है कि इस कन्द को घिसकर पानीके साथ पिलानेसे उल्टी होकर साँपका विष तत्काल नष्ट हो जाता है। इसीसे इसका नाम संस्कृतमें पाताल गरुड़ी रक्खा गया है।

इसके सिवाय इस औषधिमें एक और महत्व पूर्ण गुण पाया जाता है। जिन लोगोको अफीम खानेका व्यसन पड़ जाता है और वह किसी प्रकार नहीं छूटता, उन लोगोंको अगर धीरे २ अफीम कम करते हुए उसके बदलेमें छिरेटेकी जड़का चूर्ण दिया जाय तो धीरे २ अफीमका व्यसन छूट जाता है। यह चूर्ण शुरूमें १ तोलेकी मात्रामें देना चाहिये और इसके पश्चात् धीरे २ कम करते जाना चाहिये। इस औषधिके सेवनसे सिरमें चक्कर आते हैं और उल्टी भी होती है इसलिये इसके ऊपर मिश्री मिले हुए दूधमें १।।-२ रत्ती जायफलका चूर्ण मिलाकर पीना चाहिये। इस प्रकार एक दो मास लगातार इस औषधि का प्रयोग करनेसे २० वर्षका पुराना अफीमका व्यसन भी छूट जाता है।

इस वनस्पतिमें दूसरा चमत्कारिक गुण यह बतलाया जाता है कि इसके जरिये पारेकी अग्नि स्थाई गोली बनाई जा सकती है। इसकी तरकीब इस प्रकार है—

छिरेटेके पत्ते और आँकडेके कुछ कच्चे और पके पत्ते समान भाग लेकर उनका १ सेर रस निकाल लेना चाहिये। उसके बाद मिट्टीकी एक सराबली लेकर उसे चूल्हे पर रखकर नीचे धीमी आँच लगाना चाहिये। फिर उसमें उस रसका कुछ हिस्सा डालना चाहिये। जब रस गरम होकर उफान देकर नीचे बैठ जाय तब उसमें ७ तोला पारा डाल देना चाहिये। जैसे २ नीचेका रस जलता जाय वैसे २ ऊपरसे नया रस डालते जाना चाहिये। इस प्रकार जब रस जल जाय तब उस सरावलीको नीचे उतार लेना चाहिये। इस प्रकार १० दिनमें १० सेर रस पचा देने के पश्चात् पारेकी गोली बन जाती है। ऐसा कहा जाता है।

(जंगलनी जड़ी बूटी)

उपयोग—

सुजाक—छिरेटाके २ तोले पत्तोंको पानीमें पीसकर छान लें और प्रातःकाल पीलें। ऊपर से २-३ माशे मिश्री चबालें। पथ्यमें बिना नमककी रोटी और थूली खूब घी के साथ खावें। ७ दिन तक इसका सेवन करनेसे सुजाक जड़से जाता रहता है।

उपदंश और गठिया—इसकी ताजा जड़के २ छटाक क्वाथमें बकरीका ढाई छटाक दूध

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मिलाकर उस पर कुछ काली मिर्चका चूर्ण डालकर प्रातःकाल पिलाने से गठिया और गर्मीकी वजह से होने वाले दूसरे उपद्रव मिटते हैं।

हाजमेकी कमजोरी—इसके ६ माशे चूर्णमें शक्कर और सोंठ मिलाकर देनेसे पित्तकी वजहसे पैदा हुई हाजमेकी कमजोरी मिटती है।

नारू—इसको पानीके साथ पीसकर पिलानेसे नारू मिट जाता है।

मात्रा—इसकी जड़के रसकी मात्रा ४ माशे तक और पत्तोंकी मात्रा ४ माशेसे ७ माशे तक है।

छोंकर (खेंजड़ा)

नाम—

संकृत—शमी, भादरा, दुरितदामिनि, हब्रिरगंधा, केशहंत्रा, लक्ष्मी, पापनाशिनि, शक्तुफला, शांता, शिवा, इत्यादि। हिन्दी—छोकर, छिकुर, खेजड़ा, सफेद कीकर। गुजराती—खेजड़ी, खीजड़ो। बंगाल—शाईं गाछ, छुइ बावला। मराठी—शमी, लघु शमो। पंजाब—जंड, जंडी। बंबई—शमी, शंबरी। मारवाड़ी खेजड़ां, कजरा। तेलगू—जंबी, जाँबी, प्रियादर्शिनी, तामील—जंबू, कलिसम्। अंग्रेजी—Spunge Tree (स्पंज ट्री)लेटिन—Prosopies Spicigera (प्रोसोपिस स्पिकीगेरा)।

बर्णन—

यह वृक्ष पंजाब, सिंध, राजपूताना, गुजरात, बुंदेलखंड इत्यादि प्रान्तों में बहुत अधिक तादाद में होता है। खेजड़े के बृक्ष १५ से लेकर ३० फीट तक ऊँचे होते हैं। इसके फूल कुछ सफेदी किये हुए पीले रंग के और लंबी कलंगी की तरह आते हैं। इसके पापड़े सफेद रंगके ४ से लेकर ८ इंच तक लंबे होते हैं। एक २ पापड़े में १० से लेकर १५ तक बीज निकलते हैं। ये पापड़े थोड़ी मात्रा में बैलोंके लिये पौष्टिक खाद्य होते हैं। अधिक मात्रा में ये नशीले और जहरीले होजाते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे खेजड़ा कड़वा, चरपरा, शीतल, कसेला, रोचक, हलका, तथा कफ खांसी, भ्रम, श्वास, कोढ़, बवासीर और कृमि को दूर करता है। इसका फल पित्तजनक, रूखा बुद्धिवर्धक और केशों को नष्ट करने वाला होता है। (भाव प्रकाश)

खेजड़ा रूखा, कसेला, शीतल, हलका, कड़वा, चरपरा, दस्तावर तथा रक्तपित्त, अतिसार,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुष्ठ, बवासीर, श्वास, खांसी, कफ, भ्रम, कम्प और थकावट को नष्ट करने वाला है इसका फल तीक्ष्ण, पित्तजनक, मेधाजनक, भारी, स्वादिष्ट, रूखा, गरम और केशनाशक है।

इसकी छाल खुश्क, कसेली, कटु और तेज स्वाद वाली होती है। यह शीतल, कृमिनाशक और पौष्टिक है। कोढ़, पेचिश, वायु नलियों का प्रदाह, दमा, धवलरोग, बवासीर, मस्तिष्क की विकृति और मज्जाओंके कम्पनमें यह लाभदायक है। इसके पत्तों का धुआं नेत्रों की तकलीफ़में उपयोगी है।

सुश्रुत और योगरत्नाकरके मतानुसार यह वृक्ष साँपके विषपर लाभदायक है। सुश्रुतके मतानुसार इसका छिलटा बिच्छूके काटने पर भी उपयोगी है।

केस और महश्करके मतानुसार इस वनस्पतिके सब हिस्से सर्प विषमें निरुपयोगी हैं।

पंजाबके अंदर इसका पापड़ा संकोचक माना जाता है।

मध्य प्रदेशमें इसकी छाल संधिवातके उपयोगमें ली जाती है।

हब्स बूलरके मतानुसार झलवानके सरूमा नामक गांवमें गर्भवती स्त्रियाँ इसके फूलोंको शक्करके साथ लेती हैं जिससे गर्भ पात होनेका डर नहीं रहता है।

लास बेलामें इसकी राखको चमड़े पर रगड़ते हैं जिससे बाल गिर जाते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसका पापड़ा संकोचक है। इसका छिलटा संधिवातमें और बिच्छूके काटने पर लाभ दायक है।

उपयोग—

आगसे जलनेपर,—खेंजड़ेके पालेको पीसकर गायके दहीमें मिलाकर लेप करनेसे अग्निसे जले हुए स्थान पर शांति मिलती है।

नख और दाँतके जहर पर—खेंजड़ा, नीमकी छाल, वड़की छाल तीनों को पीसकर लेप करनेसे नख और दाँतोंसे पहुँचे हुए जंगम विषपर लाभ पहुँचता है।

प्रमेह—खेंजड़ेकी कोमल कोंपलें १ तोला लेकर उसमें ३ माशे जीरा मिलाकर बारीक पीस लेना चाहिये। उसके बाद गायका कच्चा दूध पाव भर लेकर उसमें उनको मिलाकर कपड़ेमें छान लेना चाहिये। फिर उसमें सफेद जासूद की जड़ आधा तोला और मिश्री २ तोला मिलाकर पी लेना चाहिये। इस प्रकार १४ दिन तक पीनेसे प्रमेह नष्ट होता है। यह योग गर्मी के अन्दर भी लाभ पहुँचाता है।

(बनौषधि गुणादर्श)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छिरबेल

नाम—

संस्कृत—अर्क पुष्पी, दुर्धषी, जल कांडका, जीवंती, क्षीरोदधि, शीतला शीतपर्णी, सूर्य वल्ली। हिन्दी—छिरवेल। बंबई—दूदोली, सीदोरी, तुलतुली। गुजराती—खरनेर, खीरवेल, मराठी—शिरदोड़ी, तुलतुली, खानदोड़की। मुंडारी—अपंग, संथाल—अपंग, भोटो राख। तेलगू—पले किरे। तामील—पल पुर लेटिन—Holostemma Rheedii (होलोस्टेमा रेडी)

वर्णन—

यह वनस्पति हिमालय, बरमा और कोकणमें बहुत पैदा होती है। यह एक बड़ी जाति की झाडीनुमा वेल होती है। इसके पत्ते गिलोय के समान मोटे, गोल, नोकदार और जाड़े, फूल लाल और सफेद तथा सुगन्धित और उनके ऊपर छत्रो के आकारके तुरें रहते हैं। इसके पत्ते मोंड़नेसे दूध निकलता है। इसकी डोड़ी नुकीली होती है। इसके बीज लम्बे और पतले रहते हैं। इसकी जड़ें खाकी रंगकी, और जड़ों की छाल मोटी होता है।

इसी बेलकी तरह दीखने वाली एक और दूसरी बेल होती है। जिसको विषदोड़ी, भुइ दोड़ी तथा लेटिनमें टायलोफोरा फेसिक्यूलेटा कहते। यह बेल बहुत जहरीली होती है। इस लिये छिरबेलके बदलेमें यह न आजाय इस की पूरी सावधानी रखनी चाहये।

गुणदोष और प्रभावः—

आयुर्वैदिकमत—यह वनस्पति मीठी, धातु परिवर्तक, आंतों को सिकोड़ने वाली शीतल, मूत्रल और सूजन को नाश करने वाली होती है।

नये सुजाकमें इसकी जड़ों का काढ़ा जीरा, मिश्री और दूधके साथ देनेसे मूत्र नलिकाकी जलन कम होती है, पेशाब अधिक होता है और सुजाक मिट जाता हैं। इसकी जड़ों को पीसकर उसका लेप आँखों पर करने से नेत्र रोगोंमें लाभ होता है। अनैच्छिक वीर्यश्रावमें इसकी जड़ को सुखाकर पीस कर दूध और शक्करके साथ दिनमें २ वक्त दिया जाता है।

इसके पत्तों को पीसकर और तेलमें मिलाकर गले पर बाँधनेसे गले की गठानों की जलन कम होती है। वे जल्दी पक कर फूट जातीं हैं और उनका जखम जल्दी भर जाता है।

संथाल जातिके लोग इसके काढ़े को खाँसी और अंडकोषकी सूजनमें उपयोगमें लेते है। मुंडा जातिके लोग इसको पेटके दर्दमें काममें लेते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर्नल चोपराके मतानुसार इसकी जड़ें शीतल और धातु परिवर्तक हैं। ये आंखकी बीमारीमें काममें लीजाती हैं।

छतिवन (सप्तपर्ण)

नामः—

संस्कृत—सप्तपर्ण, शारद, गृहनाश, सूतिपत्र, मदगन्ध, देववृक्ष, बहुपर्ण, शाल्मलिपत्रक, गन्धपर्ण इत्यादि। हिन्दी—छतिवन, सतवन, सतोना, छातियान, शैतानका झाड़। बंगाल—छाटीन, छतिनगाछ। गुजराती—सातवण वृक्ष, सप्तपर्ण। मराठी—सातविण। बरमा—लेटोंप, टौंगमियोक। कनाड़ी—एलेलेहेल, हाले, जंत्रहेल, कोडेल, मुघोल, मुडिहाले। अंग्रेजी— Dita Bark (डिटाबार्क)। लेटिन—Alstonia Scholaris (अलस्टोनिया स्कॉलेरिस)।

वर्णन—

यह एक बड़ी जाति का वृक्ष है। जो भारतवर्ष के दक्षिणी हिस्सों में और सीलोन में बहुत पैदा होता है इसकी पैदावार विशेषकर सूखे जंगलों में होती है। इसके पत्ते सेमर के पत्तोंकी तरह होते हैं। इसीसे प्राचीन जमानेमें इसका नाम सप्तच्छद रक्खा गया था। इसका दूध कड़वा होता है। इसकी छाल भूरी और खुरदरी होती है। इसके पत्ते कटी हुई किनारोंके लंबगोल ऊपर की बाजू गहरे हरे और नीचेकी बाजू फ़ीके हरे होते हैं। इसके फूल कुछ हरापन लिए हुए सफेद रंगके रहते हैं। इसका फल लंब गोल रहता है और इसमें बीज रहता है। औषधि प्रयोग में इसकी छाल काम में आती है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत से छतिवन कड़वा, कसेला, उष्णवीर्ण, स्निग्ध, भूख बढ़ानेवाला, मृदुविरेचक कृमिनाशक और दूध बढ़ानेवाला होता है। यह हृदयरोग, दमा, धवलरोग, व्रण, रक्तविकार, त्रिदोष, अर्बुद और पुराने घावों को नष्ट करता है। दांतों की सड़ानमें भी यह फायदा पहुँचाता है।

इस वृक्षकी छाल संकोचक, पौष्टिक, कृमि नाशक, धातु परिवर्तक और ज्वर नाशक है। जीर्णातिसार या पुराने पेचिशमें भी यह लाभ दायक है। इसका दूध व्रणपर लगानेसे व्रण जल्दी भर जाता है। इसे तेलके साथ मिलाकर कानमें डालनेसे कानका दर्द मिटता है। इसके नाजुक पत्तोंको भूंजकर पानीमें पीसकर पुल्टिस बनाकर खराब फ़ोड़ोंपर बांधनेसे फायदा होता है।

फिलिपाईन द्वीप समूहमें यह एक बहुत ही लोक प्रिय औषधि है। वहां इसे ज्वर और पेचिशके अन्दर काममें लेते हैं। कंबोड़ियामें इसकी छाल संकोचक, पेचिशको नाश करनेवाली और ऋतुस्राव-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नियामक मानी जाती है। इसे यकृत सम्बन्धी शिकायतोंमें, पुराने उदर रोगोंमें और तिल्लीकी शिकायतोंमें काममें लेते हैं।

सश्रुत और योग रत्नाकरके मतानुसार इसकी छाल अन्य औषधियों के साथ में सर्प विषको नष्ट करने के लिये दी जाती है।

केस और महश्करके मतानुसार सर्प और बिच्छूके विषमें इसकी छाल बिल्कुल निरुपयोगी है।

मलेरिया ज्वर और सतवन वृक्ष—उपरोक्त गुणोंके अतिरिक्त आधुनिक युगमें इस औषधिके अंदर मलेरिया ज्वरको नष्ट करनेकी अद्भुत शक्तिका पता लगा है। आजकल मलेरिया ज्वरको नष्ट करनेके लिये प्रत्येक स्थानपर क्विनाइनका उपयोग करनेका रिवाज़ बहुत प्रचलित है। मगर उसमें कठिनाई यह होती है कि क्विनाइन उसी हालतमें रोगीको दी जा सकती है जबकि उसके अंदर ज्वरका अंश न हो। चढ़े हुए ज्वरमें उसका कोई उपयोग नहीं होता। इसलिये कई स्थानोंपर क्विनाइन निरुपयोगी होजाती है। इसके अतिरिक्त क्विनाइनकी प्रतिक्रियाएं भी बहुत खराब होतीं हैं अगर उसको कुछ अधिक मात्रामें कुछ अधिक समय तक दिया जाय तो कानमें बहरापन, पेटमें मंदाग्नि, इत्यादि कई उपद्रव खड़े हो जाते हैं। मगर सतवनके उपयोगसे ये सब खराबियां पैदा नहीं होतीं। कलकत्ताके मनिला अस्पतालमें मलेरियाके अनेकों रोगियोंपर इसके परीक्षण किये जा चुके हैं और उन परीक्षणोंमें यह औषधि बहुत सफल साबित होचुकी है और यह सिद्ध हो चुका है कि मलेरिया ज्वरमें यह कुनेनके समानही फायदा पहुंचाती है। मगर कुनेनसे होनेवाला कोई नुकसान इससे नहीं होता।

डॉक्टर ग्रूपने इस वृक्षकी छालमेंसे डिटेनिन नामक सत्वकी खोजकी है। यह सत्व भी ताज़ी छाल की तरह निरुपद्रव ढंगसे मलेरिया ज्वरपर अपना प्रभाव बतलाता है।

सर जॉर्ज वाट अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ "दी इकॉनामिक प्रॉडक्ट्स ऑफइंडिया"में लिखते हैं कि इस वृक्षकी छाल ग्राही, पौष्टिक, रक्त सुधारक और कृमिनाशक होती हैं। यह एकांतरा, तिजारी, चौथिया, इत्यादि मलेरियाके कीटाणुओंसे सम्बन्ध रखने वाले ज्वरोंपर उपयोगमें ली जाती है इसकी छालमेंसे निकलनेवाला डिटेनिन नामक सत्व क्विनाइनके बदलेमें मलेरिया ज्वरपर सफलतापूर्वक दिया जा सकता है।

इंडियन ड्रॅटस एंड ड्रग्सके लेखक डॉक्टर नॉड करनी लिखते हैं कि डिटेनिन इस वृक्षकी छालमें पाया जानेवाला गुणकारी तत्व है जिसमें कि ऊँचीसे ऊँची जातिके सल्फेट ऑफ क्विनाइनके समान ही मलेरिया ज्वरोंको रोकने की शक्ति है। क्विनाइनसे होनेवाली प्रतिक्रियाएँ भी इससे नहीं होतीं।

डॉक्टर कोमानके मतानुसार इस वनस्पतिकी छाल एक तेज, पौष्टिक और ज्वर निवारक पदार्थ मानी जाती है। इसके सत्व और इसके काढ़े मलेरिया ज्वरके कई रोगियोंपर अजमाये गये और उनका परिणाम संतोष जनक रहा। यद्यपि क्विनाइनके मुकाबलेमें इससे अधिक समयमें फायदा होता है किन्तु इसमें ज्वर नाशक गुण निस्सन्देह पाया जाता है। अदरकके साथमें यह पौष्टिक औषधिका काम करती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रसूतिकाल में अगर पहले दिनसे ही इसकी छाल को दूसरे सुगन्धित और ज्वरनाशक द्रव्योंके साथ दी जाय तो प्रसूता को ज्वर नहीं होता, अन्न भली प्रकार पचता है और दूध खूब छूटता है। ज्वर के पश्चात् अथवा प्रसूतिकालके पश्चात् जब थकावट मालूम होती है, अन्न नहीं पचता है, और शरीरमें फीकापन रहता है ऐसी हालत में सतबन के प्रयोग से अच्छा लाभ होता है।

त्वचाके ऊपर भी इस औषधि की अत्यन्त प्रत्यक्ष और उत्तेजक क्रिया होती है। इसलिये चर्म-रोगोंमें भी यह औषधि अच्छा लाभ पहुँचाती है। पुराने व्रणोंके ऊपर इसकी छाल का लेप किया जाता है। सड़े हुए व्रणोंके ऊपर इसके कोमल पत्तों को गरम करके उनको पीसकर उनका लेप करनेसे अच्छा लाभ होता है। रक्तपित्त में इसका घन क्वाथ चोबचीनी के साथमें दूधके अनुपान से दिया जाता है।

यह वनस्पति आमाशय की शक्ति को बढ़ाकर पाचनक्रिया को दुरुस्त करती है। इसलिए जीर्ण ज्वरके साथ होने वाले अजीर्णमें इसकी छाल के चूर्ण को १० रत्ती की मात्रामें कालीमिर्च और सेंधे निमक के साथ देनेसे बहुत लाभ होता है। जीर्ण अतिसार और आंव रोग में भी इसका काढ़ा एक मूल्यवान औषधि है। जीर्ण आमवात और संधियों की सूजन में इसकी छालका लेप करने से फायदा होता है।

मात्रा— इसकी छाल के चूर्ण को २ तोले की मात्रामें लेकर उसका क्वाथ या शीतनिर्यास बना कर देना चाहिये। छाल के चूर्ण की मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक की है। इसके सत्व डिटेनिन की मात्रा ५ रत्ती से १० रत्ती तक की है इसके घनसत्व की मात्रा १॥ माशे से ३ माशे तककी है।

उपयोग—

अतिसार— इसकी छालके क्वाथमें अतीस का चूर्ण डालकर पिलाने से पुराना अतिसार बन्द हो जाता है।

पेट के कृमि— इसकी छालके क्वाथमें बायबिडंग का चूर्ण डालकर पीनेसे पेटके कृमि नष्ट हो जाते हैं।

रक्तविकार— इसकी छाल का त्रिफलाके साथ शीत निर्यास बनाकर पिलानेसे खून साफ होकर रक्त विकार मिट जाता है।

फोड़े— जिन जख्मोंसे बदबूदार पीब निकलता हो उनपर इसके नरम पत्ते को आगपर तपाकर पीसकर लेप करनेसे बड़ा लाभ होता है।

बनावटें—

ज्वर नाशक क्वाथ— छतिवन-की छाल, नीमगिलोय, अड़ूसे के पत्ते, नागरमोथा, भोजपत्र,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खैरकी छाल और नीमकी अंतर छाल इन सब चीजों को समानभाग लेकर कूटकर ४ तोलेकी मात्रा में लेकर ६४ तोला पानीमें औटाना चाहिये। जब आठ तोला पानी शेष रह जाय तब उसको सबेरे के टाइम में पिलाना चाहिये। जिन रोगियों को सतत विषम ज्वर रहता हो, शरीरमें से बुखार नहीं निकलता हो, उनका बुखार इस औषधिसे बिलकुल निकल जाता है।

छोटाचाँद (सर्पगंधा)

नाम—

संस्कृत—चंद्रसुरा, चंद्रिका, नाग गंधा, नकुलेष्ठा, रक्तपत्रिका, सुगंधा, सुरसा, वसुपुष्पा, विष नाशिनि, अहिलता, अतिमर्दिन, भाद्रा। हिन्दी—सर्पगंधा, छोटाचाँद, हरकइचाँद, नकुलिकंद, इसरोल। बंगाल—चंद्र, छोटाचाँद, बंबई—चंद्र, छोटाचाँद, अमेलपोदी। बिहार, उड़ीसा—धान मरवा, धान बरुआ। कनाड़ी—चंद्रिका, गरुड़ पाटला, शिवनामि, सूत्रनाभि। मराठी—मूँगसावेल, सर्पसंधा,। मुंडारि—नागबेल। तामील—सोअन्नमिलबोरी। तेलगू—दुम परसन्, पाटलगंधि, पाटला गरुड़। लेटिन—Rauwolfia Serpentina (रौलफ़िया सर्पेंटिना)।

वर्णन—

यह वनस्पति हिमालयमें सरहिन्दसे पूर्वकी तरफ बरमा, अंडमान, कोकण, उत्तरी केनेड़ा, मद्रास, सीलोन और जावामें होती है। मैदानोंमें मुरादाबादसे सिकिम तक ४००० फीटकी ऊंचाई तक पाई जाती हैं। दक्षिणी घाटमें ट्रावन कोरसे सीलोन तक और उत्तरी बिहार, पटना और भागलपुरके जंगलोंमें पैदा होती है। यह एक प्रकारकी पराश्रयी झाड़ी नुमा लता है। इसकी छाल फीके रंगकी होती है। इसके पत्ते $7\frac{1}{2}$ से १८ सेंटि मीटर तक लम्बे और २-५ से ६-३ सेंटी मीटर तक चौड़े होते हैं। ये बरछी आकारके तीखी नोक वाले रहते हैं। ये ऊपरकी बाजू तेज चमकीले और नीचेकी बाजू फीके हरे होते हैं। इनमें ८ से लगाकर १० तक नसें रहती हैं। इसके फूल सफेद रहते हैं। इन फूलोंकी किनारों पर हलका आसमानी रंग रहता है। इसका फल पकने पर बैंगनी या काले रंगका हो जाता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे इसकी जड़ कड़वी, कसेली, गरम, तेज और चरपरी होती है। यह कृमिनाशक, त्रिदोषमें फायदा पहुँचाने वाली और सर्प तथा बिच्छूके विषको नष्ट करने वाली होती है।

भारतवर्ष और मलाया प्रायः द्वीपके अन्दर बहुत पुराने समयसे इसकी जड़ें जहरीले सर्प तथा जहरीले कीटाणुओंके विष पर उपयोगमें ली जाती हैं। इसे बहुतसे स्थानों पर ज्वरनिवारक वस्तुकी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तौर पर भी काममें लेते हैं। यह गर्भाशय की सिकुड़न को उत्तेजित करती है और गर्भस्थ सन्तानको बाहर निकाल देती है।

सर्पगन्धा और पागल पन—

आधुनिक युगमें नवीन खोजोंके अन्दर इस वनस्पतिमें एक और बहुत महत्व पूर्ण गुणका पता लगा है। निद्रानाश, बहम और पागलपनके लिये यह एक बहुत उपयोगी दवा साबित हुई है। यद्यपि इसके इन गुणोंका पता प्राचीन औषधि ग्रन्थोंमें नहीं है फिरभी बिहारके रहनेवाले गरीब लोग इन गुणोंको बहुत समय पहिलेसेही जाने हुए हैं। वहां पर छोटे बच्चोंको सुलानेके लिये इस औषधिका उपयोग अब भी किया जाता है। संयुक्त प्रांत और बिहारमें यह दवा पागलपनकी दवाके नामसे बेची जाती है। इसका उपयोग देशी वैद्योंमें अब भी सर्व सामान्य रूपसे किया जाता है। यह औषधि कितनी लोकप्रिय है, इसका अन्दाज इसी बातसे किया जाता है कि सिर्फ बिहारमें ही यह प्रति वर्ष कई मनों की तादादमें बेची जाती है।

रासायनिक विश्लेषण—

देशी औषधियोंमें इसकी तारीफ अधिक होनेके कारण कई लोगोंने इसके रासायनिक तत्वोंके विषयमें जाँच पड़ताल की। सनू १६३१ में सेन और बोसने इसकी जड़में २ उपक्षार पाये। ये उपक्षार इसमें काफ़ी तादाद में पाये जाते हैं। इनका अनुपात सूखी जड़ोंमें १ प्रतिशत रहता है। इसके अतिरिक्त इसकी जड़ोंमें रेजिन, पोटेशियम—कारबोनेट, फासफेट सिलिसेट, लोहा और मेगनेशिया भी पाये जाते हैं।

एस. सिदीकी और आर. एच. सिदिकीने सन् १६३१ में इसमें ५ नये उपक्षार पाये। इन पांचों ही उपक्षारोंके नीचे लिखे हुए ५ नाम रक्खे—

(१) अजमे लाइन—यह ·१ प्रतिशत पाया जाता है।
(२) अजमेली नाइन—यह ·०५ प्रतिशत पाया जाता है।
(३) अजमेली साइन—यह ·०२ प्रतिशत पाया जाता है।
(४) सर्पेंटाइन—यह ·०८ प्रतिशत पाया जाता है।
(५) सर्पेंटिनाइन—यह ·०८ प्रतिशत पाया जाता है।

कलकत्ता स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन और हाइजिनके रसायन विभागमें इसके परीक्षण चल रहे हैं। सिर्फ एकही उपक्षार अभीतक प्रथक् किया गया है। यह अलकोहल ईथर, क्लोरोफार्म और बेन्झिल में घुल जाता है, मगर गरम पानीमें बहुत कम घुलता है। इसका हाइड्रोक्लोराइड ठंडे पानीमें अच्छी तरह घुल जाता हैं।

सिद्दिक और सीदिकीने इसके क्रिया शील तत्वोंका अध्ययन करके जाहिर किया है कि इसमें पाये

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जाने वाले सफेद और पीले दोनों प्रकारके तत्वोंके भिन्न २ गुण हैं। अजमेलाइन वर्गके तीनों सफेद तत्व हृदयके ऊपर अवसन्नताकारक प्रभाव डालते हैं। ये श्वास प्रश्वास की क्रिया और स्नायु मंडलपर भी अपना प्रभाव डालते हैं। दूसरे सर्पेण्टाइनवर्गके पीले तत्व हृदयपर तो उत्तेजक प्रभाव डालते हैं किन्तु स्नायुमंडल और श्वाच्छोश्वास की क्रियापर निष्क्रियताका प्रभाव डालते हैं। ये परिणाम मेण्डकोंके ऊपर इसको अजमाकर निकाले गये हैं। यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि मनुष्योंके ऊपर भी इसके इसी किस्मके प्रभाव नजर आवेंगे या नहीं।

सेन और बोसने बड़ी जातिके प्राणियों पर भी इसके परीक्षण किये। उन्होंने इसे बिल्लियों परभी अजमाया। वे इस निर्णयपर पहुँचे कि इस सारी वनस्पतिके जलीय तत्व जो प्राणियोके शरीरमें पहुँचाये गये, उनका कोई चमत्कारिक प्रभाव नजर नहीं आया। इसके रेजिन्सको अलग करके उनकोभी अजमाया गया किन्तु इनका भी कोई विशेष प्रभाव नजर नहीं आया। सिर्फ गर्भाशयके मज्जाओंको कुछ उत्तेजना पहुँची। इसके उपक्षारोंकी परीक्षाकी गई और इनका निश्चित असर पायागया। इनसे रक्तभार (Blood pressure) कुछ गिरा हुआ दिखलाई दिया और श्वासोच्छवासकी क्रिया उत्तेजित पाई गई।

हृदयके मज्जातंतुभी इनसे कुछ अवसन्न होगये और छोटी आंत तथा गर्भाशयमें कुछ ढीलापन पाया गया। यह वनस्पति मुँहसे ली जानेपर या इन्जेक्शनके द्वारा पहुँचाई जानेपर कोई नुकसान नहीं पहुँचाती। रायने सन् १६३१ में यह बात सिद्ध की कि मामूली खुराकमें ली जानेपर यह कुछ भी नुकसान नहीं पहुँचाती। अगर खुराक अधिक मात्रामें ली जावे तो गहरी नींद आती है। धीरे २ चैतन्यता कम होती जाती है और श्वास क्रियाके निष्क्रिय बनजानेपर मृत्युतक हो सकती हैं।

इस वनस्पतिको बहुत पुराने समयसे पागलपनकी दवा मानते हैं। सेन और बोसने इस बनस्पतिको मानसिक विकृतिके रोगियोंपर और जिनका रक्तभार अधिक था ऐसे लोगोपर अजमाया। इसकी पीसी हुई जड़को दिनमें दो बार २० से ३० ग्रेनतककी मात्रामें देनेसे न केवल शांतिदायक असर ही होता है किन्तु रक्तभार भी घट जाता है। एक सप्ताह के अन्दर ही बीमार का दिमाग ठीक हो जाता है। बहुत से केसों में समय अधिक लगता है। हाय ब्लडप्रेशर में भी इन लोगोने इस औषधिको संतोष जनक पाया। खास करके फेफड़ोंकी तकलीफ जिसमें मौजूद है और हृदयके तंतुओंमें कुछ फोड़े पाये जाते हों, यह विशेष लाभदायक हैं। ज्वरमें भी इसकी उपयोगिता बतलाई जाती है। किन्तु अभी तक इस विषयमें जोरदार प्रमाण नहीं मिले हैं। सूतिका ज्वरमें भी इसकी तारीफ की जाती हैं किन्तु इस विषयमें भी इसे अजमानेकी जरूरत है।

अभीतक जो प्रमाण उपलब्ध है उनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि पागलपनमें स्नायुमंडलकी जलनमें और हाय ब्लड प्रेशरमें यह एक चमत्कारिक औषधि हैं।

डिपार्टमेंट ऑफ फारमेकेलाजी स्कूल ऑफ ट्रापिकल मेडिसिनमें इस औषधिके और भी परीक्षण चल रहे हैं और इसके लिये और भी परिणाम निकलनेको शीघ्र ही संभावना है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छोटातरोदा (मींढीआँवल)

नाम—

संस्कृत—भूम्यावर्तकी, भूतलपोटा, भूम्याहुली । हिन्दी—छोटातरोंदा, जंगलीसोनामुखी । गुजराती—मींढ़ीआँवल, सूरतीसोना मुखी । मराठी—भुइंतरवड़, तामील—तिलवरे, कटुतिलवरे । तेलगू—नेलबोना, नेलतँगेदु, सुन्नमुखी । अंग्रेजी—Country Senna (कंट्रीसेना) । लेटिन—Cassia Abovata (केसिया एबोबेटा) ।

वर्णन—

यह बहु वर्षायु क्षुप पंजाब, सिंध, गुजरात और दक्षिण में पैदा होता है । यह वनस्पति बहु वर्ष स्थायी और फैलनेवाली होती है । इसका वृक्ष ३० से लगाकर ६० सेंटिमीटर तक ऊँचा होता है । इसका तना फिसलना और फीके हरे रंगका रहता है । इसके पत्ते ५ से लगाकर १० सेंटिमीटर तक लंबे रहते हैं । ये लंबगोल और फीके हरे रंगके होते हैं । इनके पीछे बहुत रुएं रहते हैं । इसके फूल पत्तों की अपेक्षा छोटे, फली अर्ध चंद्राकार, पतली और गोल होती है । इसमें ६ से लगाकर १२ तक बीज होते हैं । ये चमकीले और गहरे बादामी रङ्गके होते हैं ।

गुण, दोष और प्रभाव—

इस बनस्पति का उपयोग और गुण धर्म बिलकुल सनायकी तरह होता है ।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसमें आक्झिमेंथिल, और एंथाक्विनोन्स नामक तत्व पाये जाते है ।

छोटाकूट

नाम—

बंगाल—छोटोकूट, मुयामुया । मुंडारि—हुरिगंदमे लेटिन—Sagittaria Sagittifolia (सेगिटेरिया सेगटि फोलिया) ।

वर्णन—

यह बनस्पति हिन्दुस्तानके सभी मैदानों में पैदा होती है । इसके पत्ते बहुत कोमल, मुलायम और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तीखी नोक वाले होते हैं। ये ५ से लेकर २० सेंटिमीटर तक लंबे होते हैं। इसके फूल अक्सर सफेद होते हैं। ये गुच्छोंमें लगते हैं। फूलोंकी पँखडियाँ लंबी और गुलाइ लिये हुए होती हैं। इसकी मंजरी लंब गोल होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

यह औषधि प्रसूति कालके पश्चात् गर्भाशय से जो श्राव होता है उसे उत्तेजित करनेके काममें ली ज़ाती है। चर्मरोगोंमें और जरोयुके फूल की रुकावटके लिये भी इसका उपयोग किया जाता है।

छोटा जंगली अञ्जीर

नामः—

हिन्दी—छोटा जंगली अञ्जीर। तामील—चिरियापेटी तेलगू—चिनवेरीपांडु। लेटिन—Ficus Ribes (फायकस रिवेस)।

वर्णन—

यह अञ्जीर की एक जाति होती है। इसके पत्ते लम्ब गोल, फिसलने और कुछ रुएँ दार होते हैं।

गुण दोष और—प्रभाव

इस औषधि के गुण धर्म सब काठ गूलरके गुण धर्म ही की तरह होते हैं। काठ गूलरका गुण धर्म इस ग्रंथके दूसरे भागमें देदिया गया है।

ज़काल

नान—

यूनानी—ज़काल।

वर्णन—

यह एक बड़े झाड़ का फल होता है। इसकी शक्ल करोंदे की तरह होती है। कई लोगोंने इसको करोंदा ही माना है। मगर कई लोग इसको जरेशककी एक जाति मानते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मत से यह दूसरे दर्जे के आखिरमें सर्द और खुश्क है। यह कब्जियत करता है, दस्तोंको रोकता है, आँखोंको ताकत देता है, प्यासको बुझाता है, मेदे और जिगरकी तकलीफको दूर करता है, खून और पित्तके उफान को शान्त करता है। इसके पत्तोंकी राख बदन पर लगानेसे बदनके दाग़ मिटते हैं।

बगदादी हकीमोंके मतानुसार यह काबिज़ नहीं है। यह दस्तको ढीला करता है। प्यास और बेचेनीको फौरन मिटाता है। इसके गुण जरे शकसे मिलते हुए हैं। (ख० अ०)

जख्मेहयात (हेमसागर)

नाम—

संस्कृत—पर्णबीज़, हेमसागर। हिन्दी—जखमहयात, अहिरावण, महोरावण। बंगाल—कोपाटा। कनाड़ी—काडूसले। तेलगू—सिमाजमुदु। मराठी—धायमारी। द्राविड़ी—मलैकल्ली। फ़ारसी—जख़्महयात। लेटिन—Bryophyllum Calycinum (ब्रायो फिलम केलसीनम)।

वर्णन—

यह बहु वर्षायु मांसल क्षुप विशेष रूपसे दक्षिणी बंगालमें और साधारण रूपसे सारे भारतवर्षमें पैदा होता है। इसका पिंड सीधा, मोटा और पोला, पत्ते किनारेदार, आमने सामने लगे हुए और फूल बड़े होते हैं। इसकी डालियाँ जहाँ पृथ्वी को छूती है वहीं बीज गिरकर झाड़ खड़े हो जाते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति व्रणशोधक, व्रणरोपक और रक्त संग्राहक होती है। यह एक दिव्य औषधि है। इसके रसकी क्रिया बारीक धमनियों पर होती है। इससे धमनियों का संकोचन होकर उनसे बहने वाला रक्त बन्द हो जाता है। फिर वह रक्त चाहे त्वचा के रस्ते से निकलता हो, चाहे दस्तके, चाहे बवासीरके और चाहे नाक या मुंहके रास्तेसे गिरता हो।

रक्त मिश्रित अतिसारके अन्दर इसके पत्तोंका रस ३ माशा, जीरा ३ माशा और घी ६ माशा मिलाकर देनेसे दस्तोंसे खूनका गिरना बंद हो जाता है और आँतों को उत्तेजना मिलती है। चोट, मोच, रगड़, जख़्म और व्रणके ऊपर इसके पत्तोंको जरा कूटकर गरम करके बाँधनेसे सूजन, लाली

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और वेदना कम हो जाती है और घाव जल्दी अच्छा हो जाता है। दूसरी चिकित्सा की अपेक्षा इसके पत्तोंको जख़्म पर बाँधनेसे बहुत जल्दी लाभ होता हैं। नये जख्मों पर तो इसके मुक़ाबिले की कोई दूसरी औषधि नहीं है। हर एक जख़्म इतना आसानीसे और इतना जल्दी भरता है कि उसका निशान भी सहसा नजर नहीं आता।

उपयोग—

नेत्ररोग—इसके ताजा पानी में काला सुरमा तीन रोज खरल करके आँखों में आँजने से नेत्र पीड़ा शान्त होती है।

हैजा—इस बूंटी को पीसकर पिलाने से हैजे में लाभ होता है।

बवासीर—(१) काली मिर्च के साथ इस बूटी कों पीसकर पिलाने से खूनी और बादी बवासीर में लाभ होता है।

(२) इसकी छोटी जातिके पत्तोंको छायामें सुखाकर पीसलें। रातमें सोते समय सात तोला गुड़ खाकर सो जांय। सबेरे इसके चूर्णको हथेली भरकर ठण्डे पानीके साथ खालें। इस प्रकार सात दिनतक सेवन करनेसे बवासीरके मस्से मुरझा कर हमेंशाके लिए आराम हो जाते हैं। दवा लेते समय खटाई और बादीकी चीजोंसे परहेज करें।

मूत्रावरोध—इस बनस्पतिको काली मिरचके साथ पीसकर पिलानेसे, सुजाकका जख़्म, पेशाबकी जलन और मूत्रावरोध दूर हो जाते हैं।

कुष्ठ और उपदंश—पहले कोई उत्तम जुलाबसे कोठा साफ करके बादमें इस बनस्पतिको काली मिरचके साथ चालीस दिनोंतक पिलानेसे कुष्ठ और उपदंशके घाव अच्छे हो जाते हैं।

चर्मरोग—इसके पत्तोंको गरम करके चोटपर बांधनेसे सूजन उतर जाती है। जखमपर बाँधनेसे जख्म भर जाता है। इसके पत्तोंका लेप करनेसे बिगड़े हुए फोड़े आराम होजाते हैं, और चमड़े का रंग बदलना बन्द हो जाता है। मोच खाई हुई और आगसे जलीहुई जगहोंपर भी इसका लेप लाभदायक हैं।

जंगली अंगूर

नाम—

हिन्दी—जंगली अंगूर, आमधुक, बंगाल—अमोलुक, अंघउका। मराठी—कोलेझान, राणद्राक्ष

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कोकण—पालकंद, मलयालम—सेपरवल्लि । तामील—सांवरवल्लि । तेलगू—साँवरबल्लि । कनाडी—निरालीनांदी, लोटिन—Vitis Indica व्हिटिस इण्डिका ।

वर्णन—

यह एक बड़ी बेल होती है । इसके पत्ते और फल अंगूरकी तरह होते हैं । इसकी जड़ बहुवर्षायु और कंदमय होती है । इसके फूल हरे और बैंगनी रंगके होते हैं ।

गुणदोष और प्रभावः—

यह बनस्पति भेदक, मूत्रल और शोधक होती है । इसका काढ़ा बच्चोंका रक्त शुद्ध करनेके लिये दिया जाता है । इसकी जड़का रस नारियलके गूदेके साथमें मृदु विरेचक वस्तुकी तौरपर काममें लिया जाता है । यह ग्रंथिरसोंको निर्विकार बनाता है ।

कंबोड़ियामें इसकी जड़ें सीनेके रोगोंको दूर करने वाली और मूत्रल मानी जाती हैं । इन्हें श्वास-नलियोंके प्रदाहमें और सुजाकमें काममें लेते हैं ।

जंगली बादाम

नाम—

हिन्दी—जंगली बादाम । बंबई—जंगलीबादाम, पन । ब्रम्हा—लेत कोक, शाब्यू, शोब्ज । कनाड़ी—भाटला, झटैली, गोल निकई, जेनुकइ तिइली, कडुरेगोष्टु, पेनारी । गोवा—जंगली बादाम, विरोही । कोकण—कनवेम रुक, विरोइ । मलायलम—पोटक वलम । मराठी—गोलदारू, जंगली बादाम, नगलकुड़ा । तेगेलाग कलोंमपन, कलुपंग, कलुमपेंग । तामील—अरली, कुदिरइ पिदुकू, मलई, तेंगई, पिनारी, पुदगर, पन बतई तेलगू—गुट्ट पू बदाम, मुंजि पोनाकु, पियातो पोनाकू । तुलूपिनारी । लेटिन—Sterculia Foetida (स्टेर क्यूलिया फ़ोइटिडा)

वर्णन—

यह बनस्पति कोकण, मद्रास प्रांतके समुद्री किनारे पर और मलाया प्रायः द्वीपमें पैदा होती है । यह एक बड़ी जातिका वृक्ष है । इसकी छाल सफेद, लकड़ी खाकी, पत्ते जुड़मा, फूल लाल और पीले, बीजकोष लंबा और पकने पर चमकीला लाल रंगका होता है । प्रत्येक बीज कोषमें १० से १५ तक बीज रहते हैं । औषधि प्रयोगमें इसकी छाल और इसका तेल काममें आता है । इसके बीजोंमें ४० प्रतिशत तेल रहता है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण दोष और प्रभाव—

इसकी छाल पसीना लानेवाली, मूत्रल और विरेचक होती है। यह आमवात और उदर रोगोंमें उपयोगी मानी जाती है। इसके बीजोंसे निकाला हुआ तेल साधारण मृदुविरचेक होता है। यह पेटके आफरेको दूर करने वाला और शांतिदायक होता है। अगर इसके बीज असावधानीसे निगले जायँ तो वमन और सिरमें चक्कर पैदा करते हैं।

जावामें इसका फल सुज़ाकमें उपयोगी माना जाता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह मृदुविरेचक, पसीना लानेवाली और मूत्रल है।

जंगली अरंडी

नाम—

हिन्दी—जंगली एरंडी, उंदर बीबी। संस्कृत—नकुम्भा। बंगाल—लाल भेरंड। बंबई—जंगली एरंडी, उंदर बीबी। तामील—अदलई, कटमनाकु, दुलिया मनाकू। तेलगू—नेलमिदि। कनाड़ी—करि तरू, तोतला बिदर। मलयालम—अतला, नाकदन्ती। फारसी—बेदी अंजीरा। उर्दू—जंगली एरंड। लेटिन—Jatropha Glandulifera (जेट्रोफा ग्लेन्ड्यूलिफेरा)

वर्णन

यह वनस्पति दक्षिण में तथा कलकत्तामें पैदा होती है। इसका झाड़ अरंडीकी तरह ही होता है। इसके पत्ते लाल रंगके होते हैं। इसके फूल हरे पीले और फली १-३ सेन्टिमीटर लम्बी, गोल, फिसलनी और बीज काले तथा चमकीले होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसके पत्ते ऋतुस्राव नियामक, वेदना शून्यता पैदा करने वाले और खराब स्वाद वाले होते हैं। इसकी जड़ बवासीरमें लाभदायक है, इसके पत्ते बिच्छूके काटने पर लगाये जाते हैं और तत्काल असर करते हैं। ये प्रदाह, दमा, वायुनलियों का प्रदाह, कटिवात और पक्षाघातमें भी लाभ पहुँचाते है। इसके बीज विरजेक होते हैं।

इसकी जड़ को पानीके साथ पीसकर देनेसे बच्चोंका बढ़ा हुआ पेट जुलाब लगकर हलका हो जाता है और ग्रन्थियोंकी सूजन कम हो जाती है

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इस वनस्पति का रस आँखोंकी बीमारी में भी लाभदायक है इसके प्रयोगसे आँखोंमें कीचड़का आना भी वन्द हो जाता है।

इसके बीजोंमें पाया जाने वाला स्थायी तेल विरेचक गुण वाला होता है। इसको मज्जाओंके व्रण पर, बुष्ट घावों पर, दाद पर, संधिवात पर और पक्षाघात पर लगाने के काममें लेते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति विरचेक है और इसे पुराने व्रण पर लगाने के काम में लेते हैं।

जंगली अखरोट

नाम—

हिन्दी—जंगली अखरीट, अपोला। मराठी—जंगली अक्रोड़। बंगाल—अकोला, जंगली अक्रोट। बम्बई—अक्रोट, जंगली अक्रोट। कनाडी—नाट्क्रोड़ू। तामील—तेलगू—नाट्ट अखरोटू। लेटिन—Aleurites Moluceana (अलेरिटस मोल्यूसीएना)।

वर्णन—

यह एक अखरोटकी जातिका बड़ा वृक्ष होता है। इसके झाड़ोंकी कर्नाटकमें खेतीकी जाती है। इसके पत्ते गोल और बरछी आकार के होते हैं। ये ७·५ से १५ सेंटिमीटर तक लम्बे और ६-३ से ७·५ सेटीमीटर तक चौड़े होते हैं। इसके फूल सफेद रहते हैं। इसका फ़ल अखरोटकी तरह ही लम्बगोल, सख्त और मोटा रहता है। हर एक फलमें १ या २ बीज रहते है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत से इसका फल मीठा, तूरा, शीतल, कामद्दीपक और पौष्टिक होता है। यह भूख को बढ़ाता है, बातको नष्ट करता है, हृदय रोग और जलन में उपयोगी है, यह कफ और पित्तको बढ़ाता और कब्जियत पैदा करता है। इसके फलका मगज पौष्टिक, तेल विरेचक और फलोंकी छाल स्तम्भक होती है।

यूनानीमत—यूनानीमतसे यह पौष्टिक, कामोद्दीपक, पेटके आफरेको दूर करने वाला और कफ निस्सारक है। दिमाग़, हृदय और यकृतके लिये यह लाभदायक है। वायु नलियोंके प्रदाह, बवासीर, आँखसे पानीका निकलना, पागल कुत्तेका विष, रगड़न तथा दादमें यह मुफीद है। इसका तेल कामोद्दीपक तथा,हृदयको पुष्ट करनेवाला होता है। इसके बीजोंसे प्राप्त किया हुआ तेल १से२ औंस तक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

की मात्रामें एक नरम और निश्चित विरेचक है। इससे ३ से लेकर ६ घण्टेके अन्दर दस्त शुरू हो जाती है। इसके प्रभावकी निश्चितामें यह अरंडीके तेलसे मिलता जुलता है। किन्तु यह अरंडीके तेलसे कई बातोंमें उत्तम है। यह दुर्गन्ध पूर्ण और बदज़ायक़ा नहीं होता और इसके विरेचनमें वमनकी प्रवृत्ति नहीं होती।

जंगली झाउ

नाम—

हिन्दी—जंगली झाउ, जंगली सरू, विलायती सरू। बंबई—सरोकाझाड़, विलायती सरो। बंगाल-झाऊ। मराठी–जंगली सरू, सरोवा, सारपूला, सुरु। मैसूर—कसेरिकी। तामील—सिववर्सी, सड़कू। लेटिन—Casuarina Equisetifolia (केसुरिन इक्विसेटिफोलिया)।

वर्णन—

यह वनस्पति बंगालकी खाड़ीके पूर्वमें चिटगांवसे दक्षिणके तरफ होती है। यह एक सुन्दर वृक्ष होता है। इसकी शाखाएं सीधी और सुन्दर होती हैं। यह झाड़ बहुत नाजुक रहता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

कर्नल चोंपराके मतानुसार इसकी छाल और लकड़ी पुराने अतिसार और पेचिशमें लाभदायक होती है। इसके पत्ते उदर शूलमें काममें आते हैं। इनमें केसूरिना नामक तत्व पाया जाता है।

जंगली गाजर

नाम—

हिन्दी, मराठी—जंगली गाजर। सिंध–लुनुक। तेलगू–बुदाकेरू। लैटिन—Portulaca Tuberosa (पोर्चुलेका ट्युबरेसा)।

वर्णन—

यह वनस्पति सिंध, गुजरात, कर्नाटिक और ट्रावनकोरके खुश्क भागोंमें पैदा होती है। इसकी जड़ गाजरके समान मोटी रहती हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण दोष और प्रभाव,—

मुरेके मतानुसार इसके ताजे पत्ते विसर्प रोग और मूत्र रोगोंमें लाभदायक हैं।

जंगली सूरण (मदन मस्त)

नाम—

संस्कृत—अरण्य सूरण, वज्रकंद। हिन्दी—मदनमस्त, जंगली सूरण। लेटिन—AmorphoPhallus Sylveticus (एमोर्फ़ोफेलस सिलवेरिकस)।

वर्णन—

यह सूरणकी एक जंगली जाति है। इसकी छाल निकालकर उसके टुकड़े करके उनको डोरीमें पिरोकर मदन मस्तके नामसे बेचा जाता है। ये टुकड़े खाकी रंगके होते हैं और पानीमें डालनेसे फूलकर नरम हो जाते हैं। इनका स्वाद कुछ कड़वा और तीखा होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वस्तु अत्यंत वाजिकरण और कामोद्दीपक होती है। इसकी २० से लेकर ३० रत्ती तक की मात्रा दूध और शक्करके साथ देनेसे मूत्र मार्गमें बहुत उत्तेजना होती है। कामेंद्रियमें खुजली छूटती है और उसमें बहुत ज़ोरसे उद्दीपन होता है। इस वस्तुके साथ चिकने और पौष्टिक पदार्थ पथ्यमें खानेको देना चाहिये नहीं तो कभी २ बड़ा त्रास होता है। सुज़ाक, पथरी, उपदंश इत्यादि मूत्रपिंडके रोगियों को यह औषधि नहीं देना चाहिये।

कोंकणमें इसके बीजोंको पानीके साथ पीसकर वार २ ग्रन्थियोंके बढ़ने पर लगानेके काममें लेते हैं। चोपराके मतानुसार यह दंत रोग और ग्रन्थियोंके बढ़ने पर काममें ली जाती हैं।

एक और जंगली सूरनकी जाति जिसे मराठीमें बज्रमूत, गोआ में उजोमूत और लेटिन में Synantherias Sylvatica कहते हैं, होती है। यह तिक्त, कृमि नाशक और गरम होती है। देशी वैद्य इसके कुचले हुए बीजोंको दांतोकी पीड़ा दूर करने के लिये रुइमें रखकर पोले दांतमें भर देते हैं इस वनस्पतिसे स्नायु सम्बन्धी पीड़ा तत्काल शान्त हो जाती है। इसी पीड़ा नाशक गुणके कारण यह रगड़ या मोच लगने पर वाह्य उपचारमें भी काममें ली जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जंगली हलदी

नाम—

संस्कृत—बन हरिद्रा। हिन्दी—जंगली हल्दी, बन हल्दी। बंगाल—बनहल्द। बंबई—कोंचीन हलद, जंगली हलद। मराठी—वेठी हलद, राण हलद। तामील—कस्तूरी मंजल। तेलगू—कस्तूरी पसुलु। लेटिन—Curcuma Aromatica (करक्यूमा एरोमेटिका)*

वर्णन—

यह हल्दी ही की जातिका एक क्षुप होता है इसके क्षुप प्रायः जंगलोंमें लगते हैं। कोचीन और मेसूर प्रांतमें यह बहुत पैदा होता हैं। इसके पत्ते कोमल होते हैं। बरसात के पूर्व इसके नवीन पत्ते फूटते हैं और उनके साथही फूल आते हैं। इसकी जड़की गठाने खाद और पानी देने पर मुट्ठी के बराबर मोटी हो जाती हैं। इसकी साधारण मध्यमश्रेणी की गठान अण्डाकृति और २ इंच से अधिक मोटी होती है। इस गठान के आसपास बहुतसी पतली जड़ें भी रहती हैं। जो नारंगी रंगकी होती हैं। मुख्य गठान का भीतरी हिस्सा हलदीके समान गहरे नारंगी रंगका होता है। इसकी खुशबू हलदी की अपेक्षा अधिक उग्र और कपूरकी तरह होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे वन हलदी रुचिकारक, कड़वी, अग्नि दीपक तथा कुष्ट और रक्तवातको नष्ट करने वाली है।

सर्प विषके अन्दर इसको कूट, अपामार्ग और मेंसिलके साथ देनेसे लाभ होता है। विस्फोटक, खुजली, मोच, सूजन, इत्यादि पर इसका लेप किया जाता है। यह शक्तिदायक और शान्तिदायक भी मानी जाती है।

कोकण के अन्दर विस्फोटक ज्वरके फोड़े फुन्सियों पर इसका लेप किया जाता है। चोट और रगड़ पर भी दूसरे संकोचक द्रव्यों के साथ इसको लगाया जाता है। गीली खुजली पर और माताके दानों पर भी इसका लेप किया जाता है।

मुसलमान हकीम सर्पदंशके कुछ निश्चित केसों में इस बनस्पति को एक बहुमूल्य औषधि मानते हैं।

केस और महस्कर के मतानुतार यह वनस्पति सर्पदंश में उपयोगी नहीं है।

---

*नोट—इस ग्रन्थके पहले भागमें आंबी हल्दी के प्रकरण में आबीहलदी का लेटिन नाम करक्यूमा एरोमेटिका छप गया है। उस जगह करक्यूमा एमेडा पढ़ना चाहिए। करक्यूमा एमेड़ा आंबीहलदी को और करक्यूमा एरोमेटिका जंगली हलदी को कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जंगली अदरख

नान—

नाम— संस्कृत—बनार्द्रकम्, पेऊ, अरण्याद्रका। हिन्दी–जंगली अद्रक, बन आदा। गुजराती—बन आदूं। मराठी—रान आलें, मालाबारी हलद। पंजाब—जंगली अदरक। तेलगू—करपुप्पू। लेटिन–Gingibar Cassumunar (झिंझीबार केस्यूमनर)।

वर्णन—

जंगली अदरक का पौधा बड़े कुलिंजन के पौधे की तरह होता है पर इसके पत्ते उससे बड़े होते हैं। इसकी गठानें अदरक या हलदी की गठानों के समान होती हैं। इसमें कपूर के समान तीव्र गंध आती है। इसका स्वाद चरपरा और कुछ कड़वा होता है परन्तु सूख जाने पर ये सब बातें कम हो जाती हैं। यह असाढ़ सावन में फूलता है और कातिक अगहन में फलता है।

गुण दोष और प्रभाव—

कोकण के वैद्य इस बनस्पति को सर्पविष को दूर करने के प्रयोग में लेते हैं। थोड़ी २ देरके अन्दर वे कई दफे इसे पेट में पिलाते हैं और दंशस्थान पर लगाते हैं। पुराने चर्मरोगों में इसको अरीठे और गोमूत्र के साथ उबालकर लगाते हैं और उसके बाद स्नान करवा देते हैं। इस लेप को आंखों के अन्दर जानेसे बचाया जाता है। कॉलिक उदरशूल और अतिसारके अन्दर भी इसका उपयोग किया जाता है।

स्त्रियों का आवेश रोग मिटाने के लिए इसके रस में नमक मिलकार पिलाना चाहिये। शरीर का अगर कोई अंग संज्ञाशून्य होजाय तो उसपर काली मिरच के साथ इसका लेप करना चाहिये। पेट का अफारा मिटाने के लिए इसके कंद को भोबल में भूनकर छीलकर नमकके साथ खिलाना चाहिये। धनिये के साथ इसका क्वाथ बनाकर पिलाने से अतिसार मिटता है। इसके रसमें गुड़ मिलाकर सुंघाने से अपस्मार रोग मिटता है।

जंगली जायफल

नाम—

हिन्दी यूनानी—जंगली जायफल। मराठी—रान जायफल। संस्कृत—कामुक, मलाटी। तामील—कट्टुचेदी। मलायलम—पनम पल्क। लेठिन— Myristica Malabarica (मिरिस्टिका मलाबारिका)।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

जङ्गली जायफल का वृक्ष कोंकण कर्नाटक और उत्तरी मलाबार में पैदा होता है। इसके फल को जंगली जायफल, रामफल के नामों से पहिचानते है। इसीप्रकार इसकी पत्तियों को रामपत्री या बम्बई की जायपत्री कहते हैं। जंगली जायफल दूसरे जायफल की अपेक्षा लम्बा और मोटा होता है। असली जायफल की अपेक्षा इसमें सुगन्धि और तेल थोड़ा पाया जाता है। इसकी जायपत्री पीलापन लिए हुए लालरंग की होती है। इसमें असली जायपत्री की अपेक्षा खुशबू और स्वाद की कमी रहती है।

गुण दोष और प्रभाव—

जंगली जायफलके साधारण गुण असली जायफलकी तरह मगर उनसे कुछ हलके दर्जेके होते हैं। इसके तेल की मालिश करने से गठिया मिटता है। इसको पीसकर लेप करनेसे बादीका दर्द मिटता है। इसको भूनकर पीसकर दिनमें २।३ बार देने से आंव के दस्त बंद हो जाते हैं। इसको पीसकर शहदमें चाटने से नींद आ जाती है।

जंगली प्याज

इस बनस्पतिका वर्णन कोलीकाँदाके प्रकरणमें अन्दर इस ग्रंथके दूसरे भागमें देखिये।

जंगली मदनमस्त

नाम—

हिन्दी—जंगली मदन मस्त, मलयालम—तोदमरम। तामील—पहन्दु। लेटिनः—Cycas Rumphii साइकास रंफी Cy Cas Circinalis साइकास सिरसीनेलिस।

विवरणः—यह एक हमेंशा हरा रहनेवाला खजूरकी भान्तिका वृक्ष होता है। इसके पत्ते वृक्षके सिरे पर ही लगते हैं। ये १५ से लगाकर २५ से० मी० तक लम्बे होते हैं। इसका फ़ल लंब गोल होता है। इसका अकार मुर्गीके अण्डे सरीखा होता है। यह रङ्गमें नारङ्गी पीला होता है।

उत्पत्तिस्थानः—यह ब्रह्मा, मलाया प्रारद्वीप, अण्डमान और निकोबा में होता है। इसे भारतके बगीचोंमें भी बोते हैं यह मोरक्का, न्यूगायना और उत्तरी आस्ट्रेलियामें पैदा भी होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण, दोष और प्रभाव—

गु० दे० प्रभाव:—कुर्जके मतानुसार इसका गोंद दुष्ट व्रणोंपर लगाया जाता है इससे बहुत कम समय में ही मवाद पैदा हो जाता है।

कम्बोडियामें इसकी गठानोंको पानीके या चावलके पानीके साथ पीसकर फोड़ोंपर, सूजी हुई ग्रन्थियोंपर और व्रण वाले घावपर लगाते हैं।

कर्नल चौपराके मतानुसार यह उत्तेजक कामोद्दीपक और निद्रा लानेवाला होता है। इसमें ग्लूकोसाइड्स रहते हैं।

जंगली मेंहदी

इसका वर्णन कुरंड वृक्षके नामसे इस ग्रंथके दूसरे भागके ५७६ पृष्ठ पर देखिये।

जंजबील

नाम—

यूनानी—जंजबील।

वर्णन—

यह खुरपेकी एक जाति है। इसकी डालियोंका रंग लाल होता है और इसका स्वाद सोंठकी तरह तेज़ होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और पहले दर्जेमें खुश्क है। इसको बीजोंके सहित पीसकर मुंहपर मलनेसे चेहरेकी झांईं और पुराने काले दाग मिट जाते हैं। इसके बीजों व पत्तोंको पीसकर सख्त सूजनपर लेप करनेसे सूजन बिखर जाती है।

जंजीदयून

नाम—

यूनानी—जंजीदयून।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

यह एक रोइदगी हैं। इसका पौधा जंगली गाजरसे मिलता हुआ होता है, मगर इसकी डालियां जंगली गाजरसे पतली होती हैं। जंगली गाजरकी अपेक्षा यह अधिक कड़वी होती है। इसकी जड़को काटनेसे भीतरसे वह सफेद निकलती है। यह स्याममें बहुत पैदा होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह पहले दर्जेमें गरम और दूसरे दर्जेमें खुश्क है। इसके खानेसे पेशाब अधिक होता है। यह कब्जियत पैदा करती है।

जटामांसी

नाम—

संस्कृत—जटामांसी, जटी, पेशी, लोमशा, जटिला, मांसी, तपस्विनी, चक्रवर्त्तिनी, भूतजटा, मिसी, मिसिका, मृगभक्षा। हिन्दी—जटामांसी, बालछड़। बंगाल—जटामांसी, मराठी—जटामांसी। गुजराती—जटामांसी, बालछड़। तेलगू—जटामांसी। पहाड़ी—भूतकेश। यूनानी—सुबुल हिन्दी। लेटिन—Nardostachys Jatamansi (नारडोस्टेकीज जटामांसी)।

वर्णन—

जटामांसी का क्षुप छोटा, घने पत्तोंवाला और बहुवर्षजीवी होता है। यह हिमालय पहाड़ पर बरफीले मैदानों में पैदा होती है। कहीं २ तो यह १७ हजार फीटकी ऊंचाई तक भी पैदा होती हुई देखी जाती है। केदारनाथ से लेकर कुमाऊ और सिक्किम तक तथा नेपाल, भूटानमें भी यह पैदा होती है। इसके पत्ते १५ सेटिंमीटर से २० सेटिंमीटर तक लंबे और २ से लेकर ५ सेटिंमीटर तक चौड़े होते हैं। फूल गुलाबी होते हैं जो गुच्छोंमें लगते हैं। इसका फल बड़ा और रुएंदार होता है। इसकी जड़ें रुओंसे ढकी हुई रहती हैं। बाजार में जो जटामांसी बिकती है उसमें बहुतसी नकली मिलावट की रहती है। इसलिये लेते वक्त इसकी जाँचकर लेना चाहिये।

इसकी दो जातियाँ और होती हैं जिनमें एक को आकाशमांसी और दूसरीको गंधमान्सी कहते हैं। यह वस्तु खुशबूदार होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे जटामांसी कड़वी, कसेली, मेधाजनक, कांतिकारक, पौष्टिक, रुचिबर्धक,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शीतल, त्रिदोष नाशक और रक्तविकार, जलन, अग्निविसर्प, चर्मरोग, गलेकी बीमारी और अर्बुदको नष्ट करती है। यह शरीर के सौंदर्य को भी बढ़ाती है।

इसकी दूसरी जाति गंधमांसी कड़वी, शीतल, कफनाशक, रक्तपित्तको मिटाने वाली और विष, भूतबाधा और ज्वरमें लाभ पहुँचाने वाली होती है। यह भी सौन्दर्य वर्धक है। इसके और सब गुण जटामान्सीके तुल्यही है। अन्तर इतनाही है कि इसकी क्रिया मज्जातंतुओं पर विशेष होती है।

इसकी तीसरी जाति आकाशमान्सी शीतल, नाड़ी रोगनाशक, सूजनको मिटाने वाली और सौंदर्य वर्धक है। यह केशों को उज्ज्वल करने वाली, वातनाशक, शीतल तथा भूत बाधा, रक्तपित्त, मसूरिका (शीतला), नाड़ी व्रण (नासूर), और बिस्फोटक रोगमें लाभदायक है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे यह पौष्टिक, उत्तेजक, मूत्र निस्सारक, ऋतुस्राव नियामक, पेटके आफरेको दूर करने वाली, अग्निवर्धक, और विरेचक होती है। यह आँखों की ज्योति को बढ़ाती है, बालोंको काला करती है, खांसी, पुरातन प्रमेह, सीनेके रोग, अन्तड़ियों की सूजन और मूत्राशय तथा कटि सम्बन्धी रोगोंको दूर करती है। यह घावको सुखाती और भूखको बढ़ाती है।

इसकी जड़ें सुगंधित होती हैं। ये कड़वी, पौष्टिक और आक्षेपनिवारक होती हैं। इनका उपयोग प्रायः मृगीकी बीमारीमें किया जाता है। गुल्म वायुमें भी यह उपयोगी सिद्ध हुई हैं। हृदयकी धड़कनमें भी इनका उपयोग किया जाता है।

इस बनस्पतिमें वेलेरिन (Valerien) नामक अंग्रेजी औषधिके सब गुण मौजूद हैं। यह आक्षेप निवारक और उदर शूलमें मुफीद है। इसका सम्मेलन उन औषधियों के साथ किया जाता है, जिनका उपयोग वायुनलियोंके प्रदाहमें धूम्रपान करनेमें देते हैं। कोमानका कथन है कि इसके सतका उपयोग उदर शूल और कब्जियत के अन्दर किया गया और उसमें यह उपयोगी पाई गई।

राबर्टके मतानुसार इसकी जड़ें पानीके साथ पीसकर बेहोशी के अन्दर आँखों पर लगाई जाती है।

हिन्दू चिकित्साशास्त्रमें इस वनस्पतिका प्रयोग बहुत प्राचीन कालसे किया जा रहा है। इस देशमें यह वस्तु सुगंधित द्रव्यके रूपमें काममें ली जाती है। सुश्रुतमें इस औषधि को अपस्मार रोगके उपचारमें बहुत लाभदायक बतलाया है। भारतीय वैद्य इसको स्नायु मंडलके रोगोंमें और पेटके आफरेको दूर करनेके उपयोगमें लेते हैं।

रासायनिक विश्लेषण—

इस औषधिका रासायनिक विश्लेषण करनेपर इसमें एक काला रालके समान पदार्थ ६ प्रतिशत,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गोंद ९ प्रतिशत तथा भीमसेनी कपूरके समान एक प्रकारका कपूर, एक अम्ल द्रव्य और एक प्रकारका उड़नशील तेल पाया जाता है। यह उड़नशील तेल इसमें ½ प्रति सैकड़ा रहता है। यह तेल ही इसमें पाया जानेवाला सबसे प्रधानद्रव्य है। इसका रंग फ़ीका पीला और कुछ हरी झाँईं लिये हुए होता है। इसमें तीव्र गंध आती है।

डॉक्टर वामन गणेश देसाईके मतानुसार जटामांसी भूख बढ़ानेवाली, पाचन क्रियाको दुरुस्त करनेवाली और कब्जियतसे बचानेवाली होती है। इसको पेटमें खानेपर पेटमें कुछ गरमी मालूम होती है, डकार आती है, पसीना छूटता है, पेशाब होता है और नाड़ी सुधर जाती है। अधिक मात्रामें इसको लेनेसे वमन होती है, पेटमें मरोड़ देकर दस्तें होती हैं, मस्तिष्क और मज्जा तंतुओंपर इसकी पौष्टिक और उत्तेजक क्रिया होती है। थोड़ी मात्रामें इसको अधिक दिनतक लेनेसे मन शान्त होता है, काम करनेका हौंसला बढ़ता है और नाड़ीकी गति व्यवस्थित रहती है।

मस्तिष्क और मज्जातंतुओंके रोगोंपर जटामाँसी बहुत लाभ पहुँचाती है।

अतिशय मानसिक परिश्रमकी वजहसे अथवा और किसी कारणसे अगर मन अस्थिर हो गया हो, उसमें थकावट मालूम होती हो, नाड़ी छोटी और शीघ्रता पूर्वक चलती हो तो, ऐसी स्थितिमें जटामाँसी को देनेसे नाड़ी सुव्यवस्थित होकर मन शान्त होता है। किसी भी प्रकारका मानसिक आघात लगनेसे अथवा अत्यधिक मानसिक परिश्रमकी वजहसे पैदा हुए चित्त भ्रममें जटामाँसी बहुत शीघ्रताके साथ असर पहुंचाती है। ऐसे रोगोंमें हींग, कस्तूरी, वगैरह औषधियोंकी अपेक्षा जटामाँसीकी क्रिया अधिक शीघ्र, अधिक सुनिश्चित और अधिक उत्तम होती है। भूत और प्रेतकी बाधामें जटामाँसीको ब्राह्मीके स्वरस बच और शहदके साथ देना चाहिये।

रक्ताभिसरण क्रियाकी खराबीमें भी जटामाँसी बहुत उत्तम औषधि है। मस्तिष्कमें रक्ताभिसरण क्रियाकी अधिकतासे रक्त भरा हुआ सा दीखने लगता है और पागलपनके लक्षण दिखलाई देने लगते हैं। ऐसी स्थितिमें इस वनस्पतिको देनेसे प्रत्यक्ष लाभ दिखलाई देता है। इसी प्रकार रक्ताभिसरण क्रियाकी कमीसे जब चक्कर आना, मूर्च्छा, आँखोंके आगे अँधेरा आना, इत्यादि चिन्ह नजर आने लगते हैं, वैसी हालतमें भी जटामांसीको देनेसे रक्ताभिसरण क्रियाकी गति सुधरकर ये सब लक्षण मिट जाते हैं। मतलब यहकि यह औषधि रक्ताभिसरण क्रियाकी अधिकता और कमी दोनोंको मिटाकर उसको सुव्यवस्थित कर देती है। हृदयकी शिथिलता, हृदयकी धड़कन व हृदय रोगकी वजहसे पेटमें वायुका संचय हो जाता है। ऐसी स्थितिमें जटामाँसीकी रक्ताभिसरणपर होनेवाली यह क्रिया खास हृदयके ऊपर, रक्तवाहिनियोंके ऊपर और मज्जा तंतु और रक्ताभिसरणके केंद्र स्थानपर होती है। इसके सेवनसे रक्त वाहिनियोंका संकोचन होता है, जिससे रक्तपित्त, विसर्प और रक्तश्रावके ऊपर भी इस औषधिसे लाभ होता है।

बालकोंके उदर शूल और पेट फूलनेपर और सुशिक्षित लोगों और नाजुक स्त्रियोंको होनेवाले सूक्ष्म

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उदर शूलपर तथा बदहजमी और पाचन नलिकाके रोगोंपर जटामाँसीको नोसादर और दूसरे सुगंधित द्रव्यों के साथ देनेसे पित्तकी क्रिया व्यवस्थित हो जाती है और पाचन क्रिया सुधर जाती है।

ज्वरमें अथवा शोथज्वरमें जब त्रिदोष कुपित होजाते हैं और सन्निपातके चिन्ह दीखने लगते हैं, ऐसे समयमें जटामांसी मन्त्र शक्तिकी तरह काम करती है। इससे रक्ताभिसरण क्रिया सुधरती है, मज्जातंतुओं को उत्तेजन मिलता है, गलेमें और श्वास नलिकामें कफ छूटने लगता है, शरीर की दाह कम होती है और सूजन बिखरने लगता है। ऐसे समयमें मालूम होताहै कि प्राचीन आचार्योंने इसको जो त्रिदोष जित्की संज्ञा दी है वह कितनी युक्तियुक्त है।

चर्म रोगोंके अन्दर भी इस औषधिको उपयोग करनेका बड़ा रिवाज हैं। जख़्म पर या फोड़ों पर इसका लेप करनेसे दाह और पीड़ाकी कमी होती है। विसर्प, कुष्ट और रक्तपित्त रोगोंमें भी जटामांसी को खिलानेसे और उसका लेप करनेसे रोग दूर होकर त्वचाकी कांति सुधरती है।

कष्टप्रद मासिकधर्ममें जटामांसीको देनेसे कष्टकी कमी होकरके मासिक धर्म शुद्ध होने लगता है। स्त्रियोंका मासिक धर्म बंद होनेके समय या बंद होनेके पश्चात् जो उपद्रव होते हैं, उनको दूर करनेमें जटामान्सी बहुत उपयोगी है।

शरीर की जीवन विनिमय क्रिया बिगड़कर पेशाबमें शक्कर या एक प्रकारका दूसरा मूत्रक्षार जाने लगता है। जटामान्सी को देनेसे पेशाबके अन्दर शक्कर और मूत्रक्षार की कमी होजाती है और जीवन विनिमय क्रिया सुधरकर शरीरका छीजना बन्द हो जाता हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसकी जड़ों का सत गुल्मवायु, आक्षेप, हृदयकी धड़कन और कंपवातमें विशेष रूपसे लाभ दायक होता है।

मात्रा—इसकी जड़की मात्रा १० से लेकर २० रत्ती तक की है।

उपयोग—

रक्त विकार—जटामांसीके शीत निर्यासमें शहद मिलाकर पिलानेसे रुधिर शुद्ध होकर रक्त विकार मिटता है।

दिलकी धड़कन—जटामान्सी को पानी में पीसकर लेप करने से दिलकी धडकन मिटती है।

मस्तक पीड़ा—इसको पानीके साथ पीसकर मस्तक या ललाट पर लेप करनेसे मस्तक पीड़ा मिटती है।

दंत शूल—इसके चूर्णका मंजन करनेसे दन्तशूल मिटता है।

हृदय और कफके रोग—जटा मान्सी का शर्बत बनाकर पिलाने से हृदय और कफ के रोग मिटते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कफकी वमन—पौने चार माशे जटामाँसी को पानीमें पीसकर छानकर पिलानेसे कफकी वमन बन्द होती है।

जलोदर—जटामाँसी और नमकको सिरके के साथ पीसकर लगानेसे जलोदरमें लाभ होता है।

अनेक रोग—इसके सेवनसे बांयठे, अपस्मार, स्त्रियोंका आवेशरोग, मासिकधर्मका कष्ट, मूत्रनलीके रोग, पाचन नलीके रोग, श्वाँस नलीके रोग, कामला, गलेके रोग और विष दोष मिटते हैं।

अपस्मार और गुल्म वायु—जटामाँसीका चूर्ण १० रत्ती, कपूर १॥ रत्ती, दालचीनी २॥ रत्ती इन सब चीजोंका चूर्ण बनाकर भोजनसे पहिले लेनेसे अपस्मार और गुल्म वायुमें बहुत लाभ पहुँचता है। यह औषधि वेलेरिनके मुकाबलेही फायदा करती है। यह इसकी एक मात्रा है।

जतसाल पान

नामः—

हिन्दी—जतसाल पान। गढ़वाल—थापी। मराठी—व्हेलालोठी। मलयलम—कटुमुतेरा। उरिया—जोत्सलपोर्नी। तेलगू—करंतिता, कोदोन्तिता। कनाड़ी—जेनुकदि। संथाली—बिरकाची। टिन—Desmodium Pulchellum (डेस मोडियम पुल चेलम)।

वर्णन—

यह वनस्पति सारे भारतवर्ष, सीलोन और मलायामें पैदा होती है। यह एक झाड़ीनुमा बेल होती है। इसकी शाखाएं नाजुक रहती हैं। इसके पत्ते कटे हुए, अंडाकार और तीन २ के गुच्छोंमें लगते हैं। इसकी फलियाँ या पापड़े ३ से लेकर ६ सेंटिमीटर एक लंबे और रुएंदार होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपराके मतानुसार इसकी छालका काढ़ा अतिसार, रक्तश्राव, विष और नेत्ररोगोंमें लाभदायक है। इसके फूल पित्तके रोगोंमें उपयोगी माने जाते हैं।

जदवार

नाम—

हिन्दी—जदवार, निर्विषी। मराठी—जदवार, निर्वीशी। संस्कृत—अपविषा, अविषा, निर्विशा,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषाभावा, विषहंत्री, इत्यादि। गुजराती—निर्विशी। सिमला—मनीला। नेपाल—नीलोबिक। अरबी, फारसी व उर्दू—जदवार। लेटिन—Delphinium Denudatum (डेलफिनियम डेन्यूडेटम)।

वर्णन—

यह एक क्षुप जातिकी बनस्पति है। इसका पौधा नागरमोथे के पौधे के समान और इसका कंद अतीसके समान होता है। यह नेपाल और तिब्बतमें विशेष पैदा होती है। इसके पत्ते ३ से लेकर ३-७ सेंटिमीटर तक लम्बे होते हैं। इसके फूल वसन्त ऋतुके आरंभ में आते हैं। इसकी जड़ कुछ कालापन लिये हुए खाकी रंगकी होती है। यूनानीमतसे इसकी ६ जातियाँ होती हैं। पहली जाति वह होती है जिसकी जड़ ऊपर से मट मैली और भीतर से कुछ ललाई लिये हुए नीली होती है। इसका स्वाद पहले मीठा और बादमें कड़वा मालूम होता है। इस जातिको जदवार खताइ कहते हैं। यह सबसे उत्तम होती है। दूसरी जाति भीतर और बाहर दोनों तरफ मट मैले रंगकी, पीलापन लिये हुए होती है। यह स्वादमें कड़वी होती है। पहली जातिसे यह गुणोंमें भी कुछ कम होती है। तीसरी जाति बाहर और भीतरसे काली होती है। उसको पानीमें घिसनेसे पानीका रंग नीला हो जाता है। गुणोंमें यह तीसरे नंबर की है। ये तीनों जातियाँ तिब्बत और नेपालके जंगलोंमें पैदा होती हैं। चौथी जाति दक्षिणके पहाड़ोंमें पैदा होती है। इसका स्वाद कड़वा होता है और यह जैतूनके फलके बराबर होती है। पाँचवी जातिको अन्तला कहते हैं। यह एक बालिश्तके बराबर लंबी, काली, नरम और स्वादमें बहुत कड़वी होती है। क्योंकि यह विशेष कर बच्छनागके साथ पैदा होती है। ऐसा कहा जाता है कि इसको पास रखनेसे बच्छनागका जहर असर नहीं करता। जिन स्थानों पर यह पैदा होती है वहाँके लोग इसको पास रखकर ३ रत्ती तक खा लेते हैं। इसकी छोटी जाति सफेद, मीठी और खुशबूदार होती हैं। इसमें थोडीसी तेज़ी भी होती है।

जो जदवार खुरासानके पूर्वके तरफके पहाड़ोंमें पैदा होती है वह छोटी, फीके रंगकी और सफेदी लिये हुए होती है। इसमें विषको नाश करनेकी शक्ति बहुत कम होती है। जो जदवार तिब्बतके पहाड़ोंमें पैदा होती है, वह बड़ी और ताकतवर होती है। इसमें विष को नष्ट करने की शक्ति जदवार खताइके बराबर ही होती है, यह हिन्दुस्तानमें पैदा होनेवाली जदवारसे उत्तम होती है। हिन्दुस्तानकी जदवार खुरासान वगैरह दूसरे देशोंकी जदवारसे उत्तम होती है।

असली जदवारकी पहिचान—जदवारके अन्दर कई प्रकारकी मिलावटें होती हैं। उसमेंसे असली जदवारको छांट लेना बड़ा मुश्किल होता है। कई लोग बच्छनागकी जड़ोंको दूधमें जोश देकर उनका जहर कम करके जदवारके बदलेमें बेच देते हैं। इसलिये जदवारको लेते समय उसकी परीक्षा कर लेनी चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बछनाग और जदवार फरक—

१—बछनाग अक्सर जदवारसे पतला और छोटा होताहै। उसका रंग लाल होता है।

२—अगर बछनागको तोड़कर ज़बान पर रक्खें तो जबानमें जलन और शून्यता पैदा हो जाती है। कभी २ जबान पर छाला भी पड जाता है। जदबारसे ये बातें नहीं होतीं।

३—ज़बान पर बछनागको रखनेसे जो छाला व जलन पैदा होती है उस पर अगर जदवार को मलदें तो बछनाग से पैदा हुई तकलीफ दूर होजाती है।

४—जदवार और बछनागके स्वाद में भी अन्तर है। जदवार में कड़वापन होता है मगर बछनागमें नहीं होता।

५—नकली जदवार ऊपरसे खुरदरी और चरसदार होतीहै, असली जदवार चिकनी और साफ़ होती है।

६—नकली जदवार ऊपरसे रंगीन और भीतर से सफेद होती है। मगर असली जदवार भीतर और बाहर एक रंगकी मटमैली या नीली होती हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक मतसे जदवार कड़वी, शीतल, व्रणको भरनेवाली तथा कफ वात रुधिर विकार और विषको नष्ट करने वाली होती है।

इसको गौमूत्रमें औटाकर सूजन पर लगानेसे सूजन दूर होती है। दाँतों पर मलनेसे दाँतों का दर्द दूर होता है।

यूनानी मत—यूनानीमतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह मूत्रल, शक्तिवर्धक, उत्तेजक और ज्ञानतंतुओं को बल देने वाली है। इसके सेवनसे दिल, दिमाग और जिगरको ताक़त मिलती है, आँख की ज्योति बढ़ती है, कामेन्द्रिय को बल मिलता है, पेशाब अधिक होता है, सूजन बिखर जाती है, मृगी, लकवा, फ़ालिज, इत्यादि ज्ञान तंतुओं से सम्बन्ध रखने वाले रोगोंमें लाभ पहुँचाती है, जलोदर, पीलिया, उदर शूल, और मूत्र कष्टमें भी यह लाभदायक है। जहरीले जानवरों के जहर और बछनागके जहर को भी यह दूर करती है, गुर्दे और मसाने की पथरीको तोड़ देती है, कफ के बुखारमें लाभ दायक है, अगर बच्चा माँ के पेटमें मर गया हो और उसका जहर माँ के शरीर में फैल गया हो अथवा बच्चा पैदा होने के समय जच्चा कमजोर होगई

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हो और उसके खून अधिक गिरा हो तो उस हालतमें जदवार को थोड़ी मात्रामें नीहार मुंह ७।८ दिन तक खिलाने से अच्छा लाभ होता है।

बच्चों को होनेवाली मृगी, धनुर्वात, इत्यादि दिमाग़ सम्बन्धी बीमारियोंमें इसको दूधमें पीसकर देनेसे फायदा होता है। बवासीरके मस्सोंपर इसको लगानेसे वहांकी सूजन उतर जाती है। इसको रुईमें तर करके बच्चोके गुदा द्वारमें रखनेसे गुदाद्वारके सब कीड़े मर जाते हैं और फिर पैदा नहीं होते।

गिलानीके मतानुसार यह औषधि जहरको दूर करनेके लिये एक हुक्मी वस्तु है। इसको सिरकेमें पीसकर लेप करनेसे चेहरेकी झाँई और सफेद दाग दूर हो जाते हैं। हर प्रकारकी सूजन फिर वह चाहे वात, पित्त या कफ किसी भी वजहसे क्यों न हुई हो, इसके भीतरी और बाहरी प्रयोगसे नष्ट हो जाती है। गलेकी हर किस्म की सूजन भी चाहे वह कंठ माला या गलगंडसे हुई हो, चाहे हलक की खराबीसे हुई हो इसके सेवनसे मिट जाती है। सर्दी की सूजनमें इसको काली मिरचके साथ और गर्मी की सूजनमें धनियाँके ताजे पत्तोंके साथ देनी चाहिये।

इसको पीसकर ताज़ा और पुराने जख्मों पर छिड़कनेसे जख्म बहुत जल्दी भर जाता है। हृदय को शांति और शक्ति देनेके लिये भी यह औषधि बहुत कारगर हैं। अगर किसीका हृदय सर्दी की वजहसे कमज़ोर हो तो उसको रोज़ाना ६ रत्तीसे १२ रत्ती तक जदवार, नीलोफ़रके शरबत या गाव जबानके अर्कके साथ देनेसे बड़ा लाभ पहुँचता है। हृदयको शान्ति देनेके सम्बन्धमें यह एक दिव्य औषधि है। अगर इसको ४ रती की मात्रामें प्रतिदिन शिकंजबीनके साथ लिया जाय तो जिगर की ऐसी कमजोरी जिससे कि जलोदर पैदा होनेका अंदेशा रहता है, मिट जाती हैं।

अगर किसीका पेशाब रुका हुआ हो और मसानेमें फोड़ा होगया हो तो जदवारके चूर्णको गोखरू, मकोय, ककड़ीके बीज, और खरबूजे के बीजके साथ शीत निर्यास बनाकर देने से पेशाब खुल जाता है। और गुर्दे का दर्द तथा पथरी नष्ट होजाती है।

काले सर्पके विषमें इसको २। माशेकी मात्रामें देनेसे फायदा होता है ऐसा कहा जाता है मगर इसके लिये कोई विश्वासनीय प्रमाण नहीं है।

मात्रा—इसकी साधारण मात्रा ४ से १२ रत्ती तककी होती है। जलोदरके रोगमें कुछ लोग इसको ३ माशे तककी मात्रामें देते हैं। कामेंद्रियकी शक्ति को बढ़ानेके लिये इसको २ माशे तक की मात्रामें देते हैं। इससे अधिक मात्रामें लेनेसे आँतोंके अन्दर जखम पैदा हो जाता है।

मुज़िर—यह वनस्पति गरम और खुश्क मिजाज़ वालों को हानि कारक है। ऐसे लोगोंके अन्दर यह सिर दर्द पैदा करती है तथा आँतोंमें जख्म भी पैदा कर देती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दर्प नाशक—इसके दर्पको नष्ट करनेके लिये घनियाँ, दूध, कतीरा और शिकंजबीन मुफीद है।

जनबा

नाम—

यूनानी—जनबा।

वर्णन—

यह एक प्रकारकी तरकारी है जो इराक देशके अन्दर बहुत पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव,—

यह बहुत गरम है। इसको खाते रहनेसे हवाकी सरदी और मौसमी सर्दीका बिलकुल असर नहीं होता। इससे सर्दीका सिर दर्द भी दूर होता है। आंखोंकी ज्योति तेज होती है। इसकी धूनीसे विषैले जानवर भाग जाते हैं। गरम प्रकृतिवालोंको यह नुकसान करती है। (ख० अ०)

जनबक

नामः—

यूनाना—जनबक।

कर्णन—

यह एक रोइदगी होती है। इसका पौधा गजभर या उससे कम लंबा होता है इसकी डालियोंके ऊपरके पत्ते आसके पत्तोंकी तरह मगर उनसे कुछ लंबे होते हैं। जड़के पासके पत्ते कासनीके पत्तोंकी तरह मगर उनसे कुछ दबे हुए होते हैं। इसका फूल सफेद और खुशबूदार होता है। इसकी जड़की गांठ प्याजकी तरह होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह बनस्पति पहले दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह दिमाग़को ताकत देती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसको पीसकर बदनपर मलनेसे दाग़ और निशान मिट जाते हैं, इसको पानीमें उबालकर उस पानी से मुंह धोनेसे चेहरा साफ और चमकीला हो जाता है। चेहरेकी झाँई और कालेदागोंपर इसका लेप फायदा करता है। इसके लगानेसे तर और खुश्क खुजली मिटती है। (ख० अ०)

जफ्त बहरी

नाम—

यूनानी—जफ्तबहरी।

वर्णन—

यह एक प्रकारका काले रंगका तरल पदार्थ होता है जो मिट्टीके तेलकी तरह जमीनसे निकलता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह तीसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह वायुको बिखेरता है। सूजनको मिटाता है। लकवा, ग्रंथिवात, अपस्मार और जोड़ोंके दर्दमें लाभदायक है। इसका लेप कुष्टमें फायदा करता है। टूटी हुइ हड्डी पर भी इसका लगाना मुफीद है। यह फेंफड़े को नुकसान पहुँचाताहै। इसका दर्पनाशक कतीरा है। इसकी मात्रा ७ माशेतक है। (ख० अ०)

जफ्ततर।

नाम—

यूनानी—जफ्ततर

वर्णन—

यह जंगली सनम्बरके पेड़से टपकने वाला मद है। इसका रंग काला होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। वात, पित्त और कफके दोषोंको फुलाकर निकाल देता है। गलेको साफ़ करता है। कामेंद्रिय पर इसका लेप करनेसे उसकी मोटाई लम्बाई बढ़ती है। और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उसमें उत्तेजना पैदा होती है। जख्मों पर इसको लगाने से ज़ख़्म भर जाते हैं। शक्करके साथ इसको लेनेसे पुरानी खांसी और कफके साथ खून जानेकी बीमारीमें लाभ होता है। इसको मोममें मिलाकर नाखूनोंमें लगानेसे नाखूनोंकी सफेदी मिट जाती है। जिस दादमें से पीब बहता हो उस दाद पर इसको लगानेसे लाभ होता है। इसको जौ के आटेमें मिलाकर सिरकी गंज पर लगाने से नये बाल जम जाते हैं। हड्डी उखड़ जानेपर या मोच आ जानेपर इसके लेपसे फायदा होता है।

इसको जौ के आटेके साथ बच्चेके पेशाबमें पकाकर लेप करनेसे कंठमाला अच्छी होजाती है। फालिज़ और गठिया पर भी इसके लेपसे फायदा पहुँचता है। इसको जलाकर उससे काजल बनाकर उस काजलको आँखमें आंजनेसे आँखकी ज्योति तेज होती है, आंखसे पानीका बहना बंद हो जाताहै और आँख की जलन मिट जाती है।

कड़वी बादामके तेलमें इसको मिलाकर कानमें टपकाने से कान का दर्द मिट जाता है। कानके कीड़े भी मर जाते है और पीबका वहना भी बन्द हो जाता है। इसको आगपर गरम करके उसमें बराबर वजनका चूना मिलाकर कीड़े से खाये हुए दाँतमें भरदें तो दाँत गिरने से बच जाता है।

इसको शक्कर और बादाम के साथ खानेसे दमा और साँस की तंगी मिट जाती है। छातीमें जमा हुआ कफ निकल जाता हैं। कफके साथ खून और पीबका आना भी रुक जाता है। निमोनियाँ में भी लाभ पहुँचता है। छाती और फेफड़े में अगर कोइ फोड़ा हो तो उसमें भी इससे लाभ पहुँचता हैं।

इसको योनिमें रखनेसे गर्भका बच्चा मरजाता है। स्त्री संभोगके पहिले अगर पुरुष इसको अपनी इन्द्रिय पर लगाले तो स्त्री को गर्भ नहीं रहता और हमेंशा लगाते रहने से स्त्री वंध्या हो जाती है।

इस औषधिमें विषनाशक गुण भी रहता है। अफाइ नामक विषैले सर्पके विषको यह दूर करता है। इसी प्रकार स्थावर विषोंके ऊपर भी यह लाभ दायक है। कीड़े मकोड़ों के काटने की जगह पर इसको नमक के साथ लगाने से फायदा होता है। इसकी मात्रा ३ माशे तक की है। (ख० अ०)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जफ्त आफरीद

नाम—

यूनानी—जफ्त आफरीद ।

वर्णन—

यह एक रोइदगी है । इसका पौधा रेतीके मैदानों में पैदा होता है । इसके पत्ते चनेके पत्तोंसे छोटे और शाखाएँ बारीक तथा घनी होती हैं । इसकी शाखाओं के सिरेपर सनम्बरी की तरह ३ । ४ गिलाफ लगे हुए रहते हैं, जिनकी शकल हरड़िया बादाम की तरह होती है । इनके किनारों पर काँटे होते हैं । हरेक गिलाफके भीतर ३ परदे होते हैं हरएक परदे में मेथीके बीजों की तरह ५ पांच बीज होते हैं । जब ये गिलाफ पकजाते हैं तब इनके सिर फटकर बीज निकल जाते हैं । इस वनस्पति की पैदाइश स्याम और रूममें होती है । वहां के लोग इसे छोटी सालम मिश्री कहते हैं । मगर यह सालम मिश्री से भिन्न वस्तु है । इतना जरूर है कि कामेंद्रिय की शक्ति को बढ़ाने में यह सालम मिश्री से भी ज्यादा ताक़तवर है ।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और तरहै । किसी २ के मतसे गरम और खुश्क है । यह कामेंद्रिय को शक्ति देती है, पेटकी मरोड़ी को मिटाती है, गठिया के रोगमें मुफीद है, इसके बीजों को हलवे के साथ पकाकर लगातार २ हफ्ते तक लेते रहने से हर किस्म के जलोदर में बहुत लाभ होता है । शक्कर और शहद के साथ इसका मुरब्बा भी बनाया जाता है । वह भी बहुत कामोद्दीपक है ।

मात्रा—इसकी मात्रा ७ माशेतक है ।

मुजिर—गुर्दे के लिये यह हानिकारक है ।

दर्पनाशक—इसका दर्प नाशक कतीरा है । (ख० अ०)

जन्ब—अलखरूप

नाम—

यूनानी—जन्ब अलखरूप ।

वर्णन—

यह एक रोइदगी है । इसकी जड़ पतली होती है । डालियां ऊपरसे सफेदी लिये हुए और अन्दरसे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पोली होती हैं। इसके पत्ते दूर २ लगते हैं। ये पत्ते रासनाके पत्तोंकी तरह और फूल सरसोंके फूलकी तरह होते हैं। इसके बीज छोटे २ होते हैं। इसके पंचांग का स्वाद कुछ तेज और कड़वा होता है। इसको तोड़नेसे इसमेंसे कुछ चिकना चेप निकलता है। यह बनस्पति स्याममें बहुत पैदा होती हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। इसके पत्तोके रसको आँखमें लगानेसे आँखकी सफेदी जाती रहती है इसके खानेसे पेटमें होनेवाली वायुकी मरोड़ मिट जाती है और बढ़ी हुई तिल्ली फट जाती है। पागल कुत्तेके विषपर भी यह मुफीद है। (ख० अ०)

जन्ब अलसब्बा

नाम—

यूनानी—जन्ब अलसब्बा।

वर्णन—

यह एक छोटी जातिका पौधा है जो खेतोंमें पैदा होता है। इसकी ऊंचाई २ गज के करीब होती होती है। इसके पत्ते गावजबाके पत्तोंसे मिलते जुलते मगर उनसे कुछ छोटे, रुएंदार और सफेदी लिये हुए होते हैं। इनके किनारोंपर छोटे छोटे कांटे होते हैं। इसके पिंडके नीचेका हिस्सा तिकोना और ऊपरका हिस्सा गोल होता है। इसके पिंड पर भी मुलायम कांटे होते हैं। इस बनस्पतिके अन्दरसे एक प्रकारका दूधिया चेप निकलता है।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह औषधि पहले दर्जेमें गरम और दूसरे दर्जेमें खुश्क है। किसी २ के मतसे यह सर्द है। यह दवा कब्जियत करती है। इसकी ताजा जड़को छीलनेसे जो लुआब निकलता है उस लुआब को शरीरके किसी भी अंगमें होनेवाले दर्दपर मलनेसे दर्द फौरन जाता रहता है। टूटी हुई हड्डीपर इसकी जड़को लगानेसे और ४ माशेकी खुराकमें खिलाते रहनेसे हड्डी जुड़ जाती है। गठियाके दर्दमें भी यह मुफीद है।

मुजिर—इसको अधिक मात्रामें खानेसे यह सिर दर्द पैदा करती है।
दर्पनाशक—इसकी दर्पनाशक मकोय है।

मात्रा—इसकी मात्रा ४ माशे तक है। (ख० अ०)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जन्ब अलकरब

नाम—

यूनानी—जन्ब अलकरब।

वर्णन—

यह बनस्पति ठंडे और खुश्क स्थानोंपर पैदा होती है। इसके पेड़में पत्ते कम और छोटे २ होते हैं। इसका फूल पीला होता है। इसके फलका आकार बिच्छूकी पूँछकी तरह होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

हकीम जालीनूसके मतसे यह तीसरे दर्जेमें गर्म और खुश्क है। जिस व्यक्तिको ऐसे जानवरने काटा हो जिसका जहर सर्द हो या कोई सर्द जहरीली चीज खाई हो उसको यह औषधि देनेसे लाभ होता है।

जम्बेअलखील

नाम—

यूनानी—जम्बे अलखील।

वर्णन—

यह एक हमेशा हरी रहने वाली वनस्पति है जो स्याम और अरबमें तर जमीनके पास और पानीके किनारे बहुत पैदा होती है। इसकी डालियाँ घोड़ेकी पूंछ की तरह होती हैं। इसका स्वाद कड़वा होता है। इसके पत्ते पतले और अजखरके पत्तोंसे मिलते जुलते रहते हैं। इसकी पतली २ डालियाँ पासके पेड़ोंपर चढ़कर ऊपर तक पहुँच जाती हैं और इधर उधर लटक जाती है। इसकी जड़ बहुत कठोर होती है। इस वनस्पतिमें फूल और फल कुछ नहीं आते, किसी २ के मतसे इस पर हलके नीले रंगके फूल आते हैं। इसकी छोटी और बड़ी दो जातियाँ होती हैं।

गुणदोष और प्रभावः—

यह दूसरे दर्जे में सर्द और खुश्क है। कब्जियत और खुश्की पैदा करती है। इसके पत्तों को बारीक पीसकर बड़े २ जख्मों पर लेप करनेसे ज़ख्म भर जाते हैं। कैसा ही खराब फोड़ा हो उस पर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसके पत्तोंको सिरकेमें पीसकर लगानेसे वह सूख जाता है। शरीर किसी जगहसे कट जाय या फट जाय तो इसके पत्तोंको लगानेसे बहुत फायदा होता है। गर्मीकी ऐसी सूजन जिसमें बहुत जलन हो इसके पत्तोंके लेप से मिट जाती है। इसके पत्तोंके रसको नाकमें टपकानेसे और पेशानी पर लेप करनेसे नाक से बहता हुआ खून बन्द हो जाता है। मुंह से आता हुआ खून भी इसके पीनेसे रुक जाता है। इसकी जड़, पत्ते और डालियों को पीसकर पीनेसे गर्मीकी पुरानी खाँसी मिट जाती है। आँतों, गुरदे और मसानोंके जख्मोंमें इसे शराबके साथ पीनेसे बहुत लाभ होता है। स्त्रियों के मासिकधर्म की अधिकतामें भी यह फायदा करती है। मेदा और जिगरकी सूजन व जलोंदरमें भी यह लाभदायक है।

मुजिर—इसको अधिक मात्रामें लेनेसे बात पैदा होता है और गलेमें नुकसान पहुँचता है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नष्ट करनेके लिये शक्कर, बादामका तेल और खभीरा बनफ्शा मुफीद है।

प्रतिनिधि—इसका प्रतिनिधि अंजुवार है।

मात्रा—इसकी मात्रा ३ माशा तक है। (ख० अ०)

जबर जद

नाम—

यूनानी—जबरजद।

वर्णन—

यह जमरुद की किस्मका एक कीमती पत्थर है। और उसीकी खानमें पैदा होता है। कहीं २ सोने की खदान में भी यह निकलता है। यह हरे और पीले रंगका होता है। बढ़िया वह माना जाता है जिसमें हरे रंगकी धारियाँ हो, जो साफ हो और न टूट सके।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मत से यह तीसरे दर्जे में सर्द और खुश्क होता है। यह बहते हुए खून को रोकता है। रुके हुए पेशाब को खोलता है। पथरी को तोड़कर निकाल देता है। आंखों की ज्योति को बढ़ाता है। मिरगीमें लाभ पहुंचाता है। इसकी पीसकर खाने से दिल को ताकत मिलती है। इसको पीनेसे जहर का असर दूर होता है। इसको अंगूठीमें जड़वाकर पहिननेसे प्रेत बाधा, नजर का लगना, क्षय और प्रसव काल का कष्ट दूर होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मुजिर— यह कामेन्द्रिय को नुकसान पहुंचाता है।

दर्पनाशक— इसका दर्पनाशक शहद है।

प्रतिनिधि— इसका प्रतिनिधि जमरुद है।

मात्रा— इसकी मात्रा २ माशे तक की है

जबरा

नाम—

हिन्दी, यूनानी—जबरा।

वर्णन—

यह एक रोइदगी है जो हर साल गर्मीके दिनोंमें पैदा होती है। यह जमीन से ३।४ इंच ऊंची उठती है। इसके पत्ते बालछड़ के पत्तों की तरह होते हैं। जड़ बाल की तरह बारीक होती है और रंगमें सफेद होती है। इसमें न फूल आते हैं और न फल आते हैं। यह घास तीन महीने से अधिक नहीं ठहरती। शहदमें रखनेसे ज्यादा दिन तक ठहर जाती है। इसमें शराब की सी गन्ध आती है। यह अफ्रिका के पहाड़ों की चोटियों पर और ऊंचे स्थानों पर पैदा होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जे में गरम और तर है, दिल को ताकत देती है, चिन्ता को मिटाती है, प्रसन्नता पैदा करती है, खून का साफ करती है, जख्मों को भरती है। इसकी जड़के चूर्ण को ताजा जख्मों पर छिड़कने से वे जल्दी भर जाते हैं, पीलिया के लिए भी यह मुफीद है। इसकी ७ माशे जड़ को शराब के साथ लेनेसे अगर हड्डीमें किसी तरह का फ़रक होगया हो तो वह निकल जाता है। (ख० अ०)

मुजिर— यह गरम मिजाज वालोंमें सिरदर्द पैदा करती है।

दर्पनाशक— इसका दर्पनाशक कड़वे बादाम का मगज है।

प्रतिनिधि— इसके प्रतिनिधि केशर और कंतुरयून है।

मात्रा— इसकी मात्रा ७ माशेसे १४ माशे तक की है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जबरा हींग

नाम—

हिन्दी-यूनानी—जबरा हींग।

वर्णन—

यह एक रोइदगीके बीज हैं। जो तिल की तरह होते हैं। कुछ लोग इनको पीली निसोतके बीज और कुछ लोग काली निसोतके बीज बतलाते हैं। खजाइनुल अदविया के मतानुसार इसका पौधा घास की तरह होता है जो हिन्दुस्तान में ऊँचे स्थानों पर पैदा होता है। इसके फूल सफेद और जड़ पतली होती है। इसके बीजों का स्वाद कड़वा होता है। इसके गुण धर्म खरबक की तरह होते हैं। इसलिए बहुत से लोग इसे खरबक भी कहते हैं।

गुण, दोषऔर प्रभाव—

यूनानी मतसे यह तीसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह एक जहरीली वस्तु है। इसको जख्मों पर रखने से जखम फट जाते हैं। इसको खानेसे दस्त और उलटियां होती हैं। इसको पौने दो माशे की मात्रामें देने से दस्त उलटी होकर फ़ालिजके रोगीको लाभ होता है। साढ़ेतीन माशेकी मात्रामें में यह प्राण घातक होजाती है। इससे दस्त और उलटी होकर आदमी बेहोश होजाता है, गलेके अन्दर सूजन आकर सर्द पसीना शुरू होजाता हैं, शरीर की ताकत नष्ट होजाती है। इसके उपद्रवों को शान्त करनेके लिए दूध पिलाना चाहिये, एनेमा लगवाना चाहिये, पानी को गरम करके उसमें बिठाना चाहिये। तथा घी, जीरा, अनीसून, चिकनी वस्तुएं और ताजा दूध व शहद देना चाहिये। (ख० अ०)

—

जमसत

नाम—

यूनानी—जमसत।

वर्णन—

यह एक किस्म का कम कीमती जवाहिरात होता है। इसका रंग सफेद, लाल और नीला होता है। मगर उसमें लाल सबसे अच्छा होता है। इसको अरबीमें अलमास तुबरी और टर्कीमें जंगूम कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह तीसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। इसके बरतन में शराब भरकर पीनेसे शराब का नशा नहीं आता। इसको तकियेके नीचे रखकर सोने से खराब स्वप्न नहीं आते हैं और न स्वप्नदोष ही होता है। इसका नगीना अंगूठीमें रखकर पहिननेसे मान और प्रतिष्ठा होती है और ग्रंथिवात का रोग भी नहीं होता। इसकी अंगूठी पहिननेसे दिल की धड़कन, बेहोशी, जी का मिचलाना और सुस्ती मिटती है। इसके लेप करनेसे आंख की सूजन और आंखके पोटे की सूजन मिटती है।

मात्रा— इसकी मात्रा एक माशे तक की है। (ख० अ०)

जमना

नामः—

हिन्दी—जमना। पंजाब—चुली, दुदला, जामू, जामना, झाम, झंबू। कुमाऊ—बोंबाली, जमुना। लेटिन—Prunus Carnuta (प्रूनस कॉरन्यूटा)।

वर्णन—

यह बनस्पति कुर्रमकी खाड़ी और हिमालयमें सिंधुके आसपास पैदा होती है। इसके पत्ते रुएंदार होते हैं। ये १० से लेकर १५ सेंटिमीटर तक लंबे, बरछी आकारके होते हैं। इसके फूल सफेद होते हैं। इसका फल लंबगोल होता है। यह पक जानेपर लाल या बैंगनी हो जाता है।

गुण दोष और प्रभाव—

इसके गूदासे एक तेल निकाला जाता है जो कड़वी बादामके तेलकी जगह काम आता है।

जमरासी (भूतकेशी)

नाम—

हिन्दी—जमराशि, वृक्ष। बंगाल—राजेहुल। बंबई—अरन, भूतकेशी, ताम्रज। अलमोड़ा—यूनियाँ, सोनी। बुन्देलखंड—मामरी। मध्यप्रदेश—जमरासी, जम, कलमुखा, रासि, रोहि। गढ़वाल—घेवरी। संघाल—नेवरी। मराठी—अरन, भूतपला, भूतपल तमरज। मुंडारि—निरी, निरखिन। पंजाब—बाकरा, जमोआ, मिरंदू, मोरिन्दू, पादरियम्। तामील—दूरगोलि, चेल्लुपमर, करुपुआ। तेलगू—नीरीजा, भूतम्-कुसानु। कोकण—बुरकास। लेटिन—Elaeodendron Glaucum (इलिओडेण्ड्रोन ग्लोकम)।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

यह वृक्ष हिमालयकी तलहटीमें ६००० फीटकी ऊंचाई तक होता है। इसके अतिरिक्त बुंदेलखंड, बिहार, मध्यप्रान्त, कोकण, पश्चिमी घाट, दक्षिण और कर्नाटकमें भी यह पैदा होता है। यह एक मध्यम आकारका वृक्ष होता है। इसके पत्ते आमने सामने लगते हैं। ये अणीदार, लंबगोल, कटी किनारोंके, दोनों बाजू चिकने तथा ६-३ से १५ सेंटिमिटर तक लंबे और २-५ से ६-३ सेंटिमीटर तक चौड़े होते हैं। इसके फूल पीले, छोटे और झूमर्कोमें लगते हैं। इसके फल पीले, बेरकी तरह, तथा जड़की छाल मोटी, तूरी और कड़वी होती है। औषधि प्रयोगमें इसकी छाल और पत्ते काममें आते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

स्त्रियोंको गुल्म वायु और हिस्टीरियासे जो मूर्च्छा आ जाती है उस मूर्च्छाको दूर करनेके लिये इसके पत्ते और इसकी छाल बहुत उपयोगी है। इसके पत्तोंकी धूनी देनेसे व उनका धुंआँ पिलानेसे अथवा उनको सुँघानेसे साधारण सिर दर्द भी दूर हो जाता है।

इसकी छालको पानीमें उबालकर, पीसकर सूजनके ऊपर उसका लेप करते हैं। जिससे सब प्रकार की सूजन मिट जाती है। इसकी जड़ सर्प विषकी एक उत्तम दवा है। इस कामके लिये देहाती लोग इसकी छालको उपयोगमें लेते हैं। इसकी छाल एक प्रकार का तीव्र विष है।

मुंडा जातिके लोग इसकी जड़का टुकड़ा जो कि उँगलीके समान मोटा होता है, पीसकर पानीमें गला देते हैं। फिर उसको पानीमें छानकर वमनकारक औषधिकी तरह पिलाते हैं जिससे वमन होकर विष दूर हो जाता है। साधारण खुराकसे अधिक मात्रामें होनेपर इस औषधिसे मृत्यु तक होजाती है। इसका लेप छातीपर करनेसे निमोनियामें भी लाभ होता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह औषधि संकोचक और सर्प विषमें उपयोगी है।

केस और महश्कर के मतानुसार यह औषधि सर्प विषमें निरुपयोगी है।

जमाल गोटा

नाम—

संस्कृत—जयपाल, सारक, दन्तीबीज, मलद्रावि, बीजरेचन, कुम्भी बीज, घंटा बीज, शाधनी बीज, चक्रदन्ती बीज। हिन्दी—जमालगोटा, जैपाल। मराठी—जैपाल। बंगला—जैपाल। गुजराती—नेपालो। करनाटकी—जैपाल। अरबी—हब्बुल सलातीन। फारसी—तुख्मे बेदम, जीर खताई। तेलगू—नेपलम्,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नेपलवेमु। अंग्रेजी—Purging Broton (पारजिंग ब्रोटन)। लेटिन—Croton Tiglium (क्रोटन टिग्लियम)।

वर्णन—

जमाल गोटेका झाड़ छोटा होता है। इसके पत्ते गूलरके समान और फूल महुएके समान होते हैं। इसकी छाल राखके रंगकी होती है। इसके बीज अण्डीके बीजकी तरह होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिकमतसे जमालगोटा चरपरा, गरम, कृमि नाशक, विरेचक, दीपन, कफ वात नाशक और अतिसार को दूर करने वाला है। इसके बीजों का तेल उग्र विरेचक, शोथ नाशक और आफरा, उदर रोग, सिरदर्द, सन्यास रोग, धनुस्तंभ, ज्वर, उन्माद आमवात और खाँसी को दूर करता है।

जमाल गोटा यह एक तीव्र विरेचक पदार्थ है। तीव्र रेचक द्रव्योंमें इसका नम्बर सबसे पहिला है। अधिक मात्रामें यह विष है। इसके तेलकी एक बून्द देनेसे ५। २५ पानीके समान दस्तें हो जाती हैं और पेटमें बहुत मरोड़ी चलती है। यहाँ तक कि अन्तडियों की श्लेष्मत्वचामें कुछ सूजन भी हो जाती है।

जिन लोगोंके रक्तमें से पानीका अंश जल्दी निकाल देने की जरूरत होती है अथवा हृदयोदरके समान रोगोंमें पानीका दबाव कम करने की आवश्यक्ता होती है वहां जमाल गोटेका उपयोग किया जाता है।

डॉक्टर बामन गणेश देसाईके मतानुसार जब रक्तमें का पानी कम कराना हो या हृदयोदरमें कोई वक्त पानीका दाब कम कराना हो तो उस वक्त जमाल गोटा देतेहैं। मस्तकमें की शिरा टूटके जो अर्द्धांग वायु होता है तब जमाल गोटा देकर यदि रक्तमेंसे पानी कमी नहीं किया तो मेंदे पर रक्तश्राव ज्यादा बढ़ता रहता है और रोगीके अच्छे होनेकी सम्भावना बिलकुल नही रहती। रोगी बेसुधा होतो इसके तेल (जमालगोटेका तेल)की एकबून्द मक्खनमें मिलाकर जबानपर घिसनाचाहिए। हृदयोदरमें जमाल गोटेसे बहुत फायदा होता तो है लेकिन कभी २ जुलाब जल्द नहीं होता है। यह ध्यानमें रखना चाहिये। ऐसे समयमें इसके दर्पनाशक पदार्थ पानीमें घिसा हुआ कत्था व नींबूका रसदेना चाहिए।

कर्नल चोपराके मतानुसार पागलपन, मृगी, आक्षेप, इत्यादि रोगोंमें जिनमें कि रक्तभार बढ़ जाता है। इसके बीजों को तेज जुलाब देनेके उपयोगमें लेते हैं। ऐसी हालतमें इसकी मात्रा ८ ग्रनसे ज्यादा नहीं होनी चाहिये। इसे शहदके साथ मिलाकर देते हैं। इसका तेल संधिवात, पक्षाघात और अन्य प्रकारके जोड़ोंके दर्दमें उपयोगमें लिया जाता है। यह सन्धिके रोगोंमें लाभदायक है। इससे छाले उठ जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रासायनिक संगठन—इसके तेलमें क्रोटोन ओलिक एसिड, टिगलिक एसिड़, एक उड़नशील तेल और स्निग्ध तत्व पाये जाते है।

मात्रा—इसकी पीसी हुई जड़ १० से लेकर ३० ग्रेन तक कों मात्रामें दी जाती है। इसका तेल एक बून्दकी मात्रामें दिया जाता हैं। इसके शुद्ध किये हुए बीजों का गूदा १ रत्तीसे २ रत्ती तक देना चाहिये।

बाह्यप्रयोग—जमाल गोंटेका तेल चमड़े पर लगाने से जलन पैंदा करता है। इससे चमड़े पर फफोले पैदा होंजाते हैं। यह जोड़ों के दर्द पर, जलन मिटाने के उपयोगमें लिया जाता है मगर आज कल इसको इस उपयोग में बहुत कम लेते हैं क्योंकि इससे जलन बहुत ज्यादा होती है और इससे जो घाव पड़ जाते हैं उनके चिन्ह हमेशाके लिये कायम रह जाते हैं। वे नही मिटते। इन घावोसे मवाद वगैरहके बहुत घृणित दृश्य दिखलाई देने लगते हैं। (सन्याल और घोष)

अंतः प्रयोग—यह मुहँके द्वारा खानेसे पेट और अँतड़ियोंमें जलन पैदाकरता है। इसके तेल की १ बूंद लेनेसे कुछही समय बाद पेटमें दर्द और शूल शुरू होता है और घण्टे दो घण्टेके बाद खूब दस्तें लगना शुरू होती है और दस्त अधिक पतले २ होते जाते हैं। कभी २ ये दस्त खूनके भी होने लगते हैं। अधिक मात्रामें खुराक पहुँचनेपर उपरोक्त हालतके बाद रोगीकी मृत्युतक होसकती है। जमाल गोटेका तेल बहुत कम उपयोगमें लिया जाना चाहिये। संन्यास रोग,रक्तज मूर्च्छा रोग और पागल पनके रोगियोंके लिये यह गुणकारी है। इसकी १ बूँदको मक्खन या शक्करमें मिलाकर जबानपर रखकर तुरन्त निगल जाना जाहिये। जिससे जबानपर यह जलन पैदा न कर सके। कमज़ोर बीमारोंको, गर्भवती स्त्रियों को, बच्चों को, बवासीर के रोगियों को, पाक स्थली के रोगियों को और आन्त्रिक प्रदाह से पीड़ित रोगियों को यह नहीं देना चाहिये।

चरकके मतानुसार इसकी जड़का छिलका ठण्डे पानी या पुराने गुड़के साथ मिलाकर पीलियाके रोगीको दिया जाता है। अगर इसकी जड़के छिलकेको पुल्टिसके रूपमें विद्रधि पर बाँधा जायतो विद्रधि फूट जाती है।

जमाल गोटेको शुद्ध करनेकी विधि—जमाल गोटेका छिलका निकाल कर उसको बीचमें से चीर कर उसमें जो पत्तेकी तरह वस्तु रहती है उसको निकाल देना चाहिये और उसमें आठवाँ हिस्सा सुहागे का चूर्ण मिलाकर दूधके अन्दर डोलायंत्रमें शुद्धकर लेना चाहिये। इसप्रकार तीन बार करने से जमाल गोटा शुद्ध हो जाता है। जिस दूधमें इसको शुद्ध करे उस दूध को ऐसी जगह फेंक देना चाहिये जहां कोई उसे पा नहीं सके।

यूनानी मत—यूनानी मतसे इसके मगज चौथे दर्जेमें गरम और खुश्क है। इसकी जड़ दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। यह वस्तु बहुत तेज़ दस्तावर है। शरीरके अन्दर फैले हुए गर्मीके जहरको

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह निकाल देती है। उपदंश, कोढ़, और दूसरे चर्म रोगोंमें यह लाभ पहुँचाती है। गुर्दे और मसानेकी पथरीको यह तोड़ देती है। कफसे पैदा हुए जलोदर, कमरके दर्द और पीलिया रोगमें भी यह मुफीद है। हिन्दुस्तान की बहुत सी औरतें जब बच्चेको डिब्बा या मृगीकी बीमारी होजाती है तब बच्चे की हैसियत और जरूरत को देखकर जमालगोटे की मगज़को अदरकके रस या मां के दूधमें घिसकर थोड़ा सा पिला देती है, जिससे ३-४ दस्त होकर बच्चा खुल जाता है।

इसका जुलाब दिमाग़, पेट, जोड़, इत्यादि शरीरके दूर २ हिस्सोंमें फैली हुई गंदगीको खींचकर दस्तकी राह निकाल देता है। इससे गठिया और लकवेके समान भयंकर रोगोंमें भी फायदा होता हुआ देखा जाता है। यह मुंहके खराब जख्मोंको भर देता है। इसको पीसकर रोगन खेरीमें मिलाकर कानमें टपकानेसे कानके कीड़े मर जाते हैं इसको दांतोंपर रखनेसे दाँतोंका दर्द भी जाता रहता है।

यह वस्तु गरम मौसिममें, गरम मुकामों पर और गरम प्रकृतिके लोगोंको कभी नहीं देना चाहिये। सर्द मौसिममें, सर्द मुकाम पर व सर्द प्रकृतिके रोगियों पर इसका इस्तेमाल करना चाहिये। देशकालके अनुसार भी इस औषधिके प्रभाव जुदा जुदा होते हैं। कई पहाड़ी लोग इसके बीजोंको चार २ पांच २ की गिनतीमें खाजाते हैं और उनको सिर्फ एक या दो दस्त होते हैं मगर देहली और लखनऊके तरफ रहनेवाले लोग इसका आधा दाना भी खा लें तो उनकी बुरी हालत होजाती है। राजपूतानाके रहनेवाले बहुतसे मजबूत लोग इसको १ से लेकर २ दाने तककी मात्रामें खा लेते हैं और उनको मामूली दस्तें होती हैं। इसलिये इस वस्तुका उपयोग करते समय देश, काल और प्रकृतिका पूरा २ ध्यान रखना चाहिये।

जमालगोटेके पेड़की जड़ बहुत तेज़ गरम होती है, यह खून, पित्त और कफके उपद्रवोंको दूर करती है, जलोदर और सूजनकी बीमारीमें फायदेमंद है, पेटके कीड़ोंको मारती है, चर्म रोग सम्बन्धी बीमारियोंमें लाभ पहुँचाती है। अपस्मार और गठियामें लाभदायक है। ग्रंथिवात (Gout) फोड़े फुन्सी और रक्त विकारमें भी यह उपयोगी है। जमालगोटेकी गिरीको पानीमें घिसकर नारूपर लगानेसे नारू एक दिनमें आराम हो जाता है ऐसा कहा जाता है मगर यह दवा बहुत जलन पैदा करती है। इस लिये लगाने वालेको अपनी सहन शक्तिका अन्दाज करके लगाना चाहिये। बिच्छूके विषपर भी इसके मगजको पीसकर लगानेसे फायदा होता है। साँपके विषपर आधे जमालगोटेको पानीमें घिस कर आँखमें आँजनेसे साँपका जहर ज्यादा असर नहीं करता मगर इस प्रयोगसे आँखको बहुत नुकसान और असह्य वेदना होती है। इस लिये अगर कभी यह प्रयोग कर लिया जाय तो बकरी के दूधमें रुई का फ़ोया भिंगोकर आँखपर बाँधना चाहिये। (ख—अ०)

जमाल गोटेकी विष शान्तिके उपाय—

अगर जमाल गोटेसे नुकसान पहुँचने की नौबत आवे और इसका जहर फैल जावे और शरीर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

में गर्मी व जलन पैदा हो तथा दस्त और मरोडी अधिक आने लगे और वमन होते हों तो दूधमें घी मिलाकर पिलाना चाहिये और तुख्म खुरपा, इसबगोल, बबूलका गोंद, मालतुलसी के बीज इत्यादि किसी भी लुआवदार चीज को पानीमें गलाकर उसका लुआब तैयार करके उस लुआबमें बादामका तेल और रोगन गुल मिलाकर पिलादें। शीरा मग्ज तुख्म कद्दू या शीरा तुख्म खुरपा खिलावें। लुआबदार चीजोंका एनेमा लगावें। कभी ज्यादा दस्तें होने की हालतमें ठण्डे पानीके टबमें बिठानेसे भी लाभ होता है। नींबूके रसमें शक्कर मिलाकर पिलाने से भी इसके विषमें लाभ होता है।

उपयोग—

दमा—जमाल गोटेके मग़ज को चिराग़ की लौ में जलाकर उसका धुआँ नाकके जरिये पीनेसे दमा जाता रहता है। इसकी मग़ज को चिराग़की लौमें जलाकर उसका चौथा हिस्सा पानमें रखकर खिलाने से भी दमा मिटता है।

हिचकी—जमाल गोटेके मगज को हुक्के में भरकर पीनेसे बादी की हिचकी बन्द होती है।

सिरदर्द—जमाल गोटेकी मगजको पानीमें पीसकर कनपटियों पर लेप करने से सिर और आँख का दर्द मिटता है।

सर्प विष—सर्पके काटे हुएको शुद्ध किये हुए जमाल गोटेकी मग़ज खिलाने से तथा उसको घिसकर आँखमें आँजनेसे विषका असर बहुत कम होता है।

बनावटें—

जमालगोटेकी गोलियां—गुलबनफ़शा १७ माशा, गुलाबके फूल १७ माशा, खुरपेके बीज साफ किये हुए १७ माशा, कद्दूके बीजोंकी मग़ज १० माशा, ककड़ी के बीजोंकी मग़ज १० माशा, मग़ज बेदाना १० माशा, गुलनीलोफर १० माशा, कशनीज साफ किया हुआ ७ माशा, मस्तगी ७ माशा, बंशलोचन ७ माशा, कतीरा ७ माशा, मगज़ जमालगोटे का शुद्ध किया हुआ ३ तोला, इन सब चीजोंको पीसकर इसबगोलके लुआबमें मिलाकर चनेके बराबर गोलियां बनालें।

ये गोलियां १ माशेसे दो माशेतककी मात्रामें गुलाबके शरबतके साथ देनेसे अच्छा जुलाब लग जाता है। इन गोलियोंसे जमालगोटेसे होने वाले सब फायदे तो मिल जाते हैं मगर उसकी उग्रता और उसके नुकसानसे रोगी बच जाता है। क्योंकि इसमें जमालगोटेके दर्पको नाश करनेवाली बहुत सी औषधियां मिली हुई रहती हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जम्भीरी

जम्भीरी नीम्बूकी एक जाति है इसलिए इसका पूरा परिचय अगले भागमें नीम्बूके वर्णनके साथमें दिया जावेगा।

ज़मीकन्द (सूरणकन्द)

नाम—

संस्कृत—अर्शोघ्न, बहुकन्द, सूरणकन्द, कन्दुला, स्थूलकन्दक, कन्दी, तीव्रकण्ठ, वातारि, ओला, इत्यादि। हिन्दी—सूरणकन्द, जमीकन्द, कन्द। बंगाल—ओल। मराठी—गोड़ासूरण, खाजेरासूरण। गुजराती—सूरण, बम्बई—सूरण। कच्छ—सूरण। कोंकण—सुमा, सूरण। तेलगू—मचीकन्दा, दोलकन्दा, कन्दगोदा। तामील—करुनइ कलंग। फ़ारसी—ज़मीकन्द, ओल। लेटिन—Amorphophallus Campaulatus (एमरोफ़ो फेलस कम्पेन्यूलेटस)।

वर्णन—

जमीकन्द या सूरण एक मशहूर वनस्पति है जो हिन्दुस्तानके सभी भागोंमें तरकारी बनाने और औषधि प्रयोगमें काममें आती है। इसकी दो जातियाँ होतीं हैं। एक जंगली और दूसरी लगाई हुई। इसका कन्द चपटा और लम्बगोल होता है। यह २० से लगाकर २५ सेंटिमीटरके आकारका होता है। इसका रंग गहरा बादामी होता है। इसके पत्ते फूलोंके बादमें लगते हैं। ये ३० से लगाकर ६० सेंटिमीटर तक चौड़े होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे जमीकन्द रूखा, कसेला, तीक्ष्ण, और खुजलीको पैदा करनेवाला होता है। यह रुचि वर्धक और क्षुधावर्धक होता है, कफको नष्ट करता है, बवासीरमें बहुत लाभ पहुँचाता है, प्लीहा और गुल्म रोगों को नष्ट करता है, वायु नलियों के प्रदाह, वमन, पेटकी पीड़ा, रक्त रोग और श्लीपद में यह लाभदायक है।

इसके बीज जलन पैदा करते हैं। संधिबातकी सूजन और उसके दर्पको मिटानेके लिये इसके कन्द और इसके बीजोंका लेप लाभ दायक होता हैं। इसके कन्दका मुरब्बा या आचार पेटका आफरा उतारनेवाला और शान्तिदायक माना जाता हैं। इसके कन्दमें कुछ कसेला और जहरीला रस रहता हैं जो गर्मीके द्वारा इससे अलग किया जा सकता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसकी जड़ चक्षुरोगमें उपयोगमें ली जाती है।

इसे फोड़ों पर भी लगानेके काममें लेते हैं। ऋतुस्राव नियामक वस्तुकी तौर पर भी यह काममें लिया जाता है।

छोटा नागपुरकी मुण्डा जातिके लोग इसके फलको पीसकर तीव्र संधि वात या जोड़ों की सूजन पर लेप करने के काममें लेते हैं।

सूरण की तरकारीसे यकृत की क्रिया सुधरती हैं और दस्त साफ़ होता है। इन दो कारणों से बवासीरके अन्दरसे बहने वाला खून बन्द हो जाता है। इसके प्रयोगसे गुदाके अन्दर रहने वाली रक्त वाहिनियों का संकोचन होता है। इसीसे खूनी बवासीरके अन्दर यह औषधि बहुत हितकारी होती है, और इसी कारण संस्कृतमें रक्खा हुआ इसका नाम अर्शोघ्न सार्थक होता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वस्तु अग्निवर्धक, पौष्टिक, शक्तिदायक और पेटका आफरा उतारने वाली है। बवासीर में भी यह बहुत लाभ पहुँचाती है।

उपयोग—

गठिया—सूरणकंदका गूदा और उसके बीजों को पीसकर लेप करने से गठिया में लाभ होता है।

खूनी बवासीर—सूरण कन्दको इमलीके पानी और धानके तुसोंके साथ उबालकर, धोकर शाग बनाकर खानेसे खूनी बवासीर मिटता है।

(२)—सूरण कंदपर कपड़ मिट्टी करके उसे आगमें भूनकर उसकी कपड़ मिट्टी हटाकर उसमें नमक और तेल मिलाकर खाने से बवासीर मिटता है।

(३)—इसके टुकड़ोंको छायामें सुखाकर उनका चूर्ण बनाकर १० माशेकी मात्रामें प्रातः काल लेनेसे बवासीरमें लाभ होता है।

बिच्छूका विष—सूरण कंदका पुल्टिस बाँधनेसे बिच्छूका और दूसरे जहरीले कीड़ों का बिष उतरता है।

बनावटें—

बृहत् सूरण मोदक—सूखे जमीकंदका चूर्ण १६ तोले, चित्रककी जड़की छाल ८तोले, सोंठ ४तोले, काली मिर्च २ तोले, त्रिफला १२ तोले, पीपलामूल ४ तोला, तालीसपत्र ४ तोला, शुद्ध भिलामा ४ तोला बायबिडंग ४ तोला, मुलेठी ८ तोला, सफेद मूसली ४ तोला, विधायरेके बीज १६ तोले, दालचीनी २ तोले, इलायची २तोले। इन सब चीजोंको कूटपीस छानकर चूर्ण बनालेना चाहिये। जितना चूर्णका वजन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हो उससे दूना पुराना गुड़ मिलाकर आधो २ छटांकके लड्डु बना लेना चाहिये। प्रति दिन सवेरे शाम अपनी शक्तिके मुआफिक इन लडडुओंका सेवन करनेसे और पथ्यमें हलका भोजन करनेसे बिना ऑपरेशन और क्षारकर्मके ही बवासीर जड़से नष्ट हो जाता है। इसके अतिरिक्त इस पाकका सेवन करने वाले मनुष्यकी जठराग्नि, पाचन शक्ति और मैथुन शक्ति भी अत्यंत प्रबल हो जाती है। इसी प्रकार श्लीपद (हाथी पाँव) सूजन, कफ बातकी संग्रहणी, हिचकी, श्वास, खांसी, राजयक्ष्मा और प्रमेहमें भी इससे लाभ पहुँचता है। बवासीरकी यह एक सुप्रसिद्ध दवा है।

जयंती

नाम—

संस्कृत—जया जयन्ती, नदेयी-वेजन्ती। हिन्दी—जयन्ती, जूझन, झीजन, रासिन, जेत। बंगाल—जयन्ती, बंबई—जेत, जंजन, सेवरी, शेवारी। पोरबंदर—जयन्ति। तामील—करुनजेंवी, सगुदई, सेंबई, करुशेवै, चंपेइ। उर्दू—जैत। तेलगू—जतुगु, सोमिन्ता। उरिया—जोयोत्री। मुंडारि—लीलदारू। फ़ारसी—सीसीबन, लेटिन—Sesbania Egyptiana (सेसबेनिया इजिप्सियाना)।

वर्णन—

इस बनस्पतिका मूल उत्पत्ति स्थान अमेरिका है। यह प्रायः सभी गरम देशोंमें बोई जाती है। यह एक छोटा नरम लकड़ीका झाड़ होता हैं। यह बहुत जल्दी बढ़ता है। इसके पत्ते ७-५ से १५ सेंटिमीटर तक लम्बे होते हैं। इसके फूल १-२ से १-५ सेंटिमीटर तक लंबे और पीले होते हैं। इसकी फली या पापड़ा १५ से २३ सेंटिमीटर तक लंबा होता है। इसमें २० से लगाकर ३० तक बीज रहते हैं। इसकी दो जातियां होती है, एक लाल फूलवाली, दूसरी पीले फूल वाली।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतानुसार इसकी जड़ गरम, कड़वी, पेटका आफरा उतारने वाली, धातु परिवर्तक, और कृमिनाशक होती हैं। क्षयजनित ग्रंथियोंमें, ज्वरमें, व्रणमें, मधुमेहमें, धवलरोगमें और गलेके रोगोंमें यह बहुत उपयोगी है। कफ, पित्त और प्रदाहको यह दूर करती है। बिच्छूके काटनेपर यह एक उत्तम दवा है। इसकी छाल संकोचक होती है। प्लीहा और तिल्लीकी वृद्धिमें और अनार्तवमें इसके बीजोंको देनेसे बड़ा लाभ होता है। माताकी बीमारीमें भी इसके बीज लाभदायक हैं। चर्म रोगोंमें इसकी छालका रस पिलानेसे और इसके बीजोंका लेप करनेसे लाभ होता है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे इसके पत्ते विरेचक, कृमिनाशक और शान्तिदायक होते हैं। ये जलार्बुद

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तथा सभी प्रकारके दर्द और प्रदाह में फायदा पहुंचाते हैं। इसके बीज ऋतुस्रावनियामक, उत्तेजक और संकोचक होते हैं। ये पुराने व्रण और फोड़ोंको भर देते हैं। तिल्लीकी बीमारी, अतिसार और अत्यधिक रजः स्रावमें ये लाभदायक हैं।

पंजाबमें इसके बीजोंको आटेके साथ मिलाकर खुजली के ऊपर लेप करते हैं। ढाकामें इसके ताजा पत्तोंका रस कृमिनाशक वस्तुकी तौरपर उपयोगमें लिया जाता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसके बीज और इसका छिलका अतिसारमें लाभदायक है। ये अत्यधिक रजस्राव और चर्मरोगमें उपयोगमें लिये जाते हैं। इसके पत्ते संधिवातमें उपयोगी है।

जरेशक

इस औषधिका विशेष वर्णन आगेके भागमें दारूहलदीके प्रकरणमें देखिये। दारूहल्दी के झाड़के फल को ही जरेशक कहते हैं।

जरनब

नाम—

यूनानी—जरनब।

वर्णन—

इस वनस्पतिके सम्बन्धमें यूनानी ग्रन्थकारोंके अन्दर बड़ा मतभेद है। कोई २ इसे ब्राह्मी और मण्डूकपर्णीका दूसरा नाम बतलाते हैं। किसी २ का मत है कि यह एक जातिका वृक्ष होता है। किसी का मत है कि जरनब का पेड़ १ गजसे छोटा होता है। इसका स्वाद तेज होता है। इसकी डालियाँ बारीक होती हैं और इसमें नींबू की सी खुशबू आती है।

खजाइनुल अदवियाके लेखक लिखते हैं कि मैंने सूखी हुई जरनब को देखा तो वह मूंजकी पत्तियोंके समान दिखाई दी। इसकी शाखाएं गोल, बारीक और सींक की तरह होती हैं और जगह २ छोटी गठानों पर ऐसे निशान होते हैं जैसे पत्तोंकी जड़ें टूट जानेके बाद रहते हैं। इसमें बिजोरे नीबूकी तरह गन्ध आती है और इसका स्वाद दालचीनीसे मिलता जुलता रहता है। यह फारस के पहाड़ोंमें विशेष पैदा होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमतसे यहदूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह वनस्पति हृदयके लिये एक पौष्टिक वस्तु है। मेदा, जिगर व दिमाग को भी यह ताकत देती है, भूख बढ़ाती है, आवाज को साफ करती है, वायु को विखेरती है, बायगोला और बदहजमी को दूर करती है, खांसी, दमा और हिचकीमें मुफीद है, पेशाबको साफ लाती है, कामेंद्रियकी शक्तिको बढ़ाती है, इस औषधिमें विषनाशक गुण भी है।

मुजिर—यह औषधि गरम प्रकृति वाले लोगों के लिये हानिकारक है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नाश करने के लिये धनियां और चन्दन मुफीद है।

प्रतिनिधि—इसके प्रतिनिधि कबाबचीनी और नरकचूर है

मात्रा—इसकी मात्रा १ माशे तक है। (ख० अ०)

Vaidyaraj Zindu Lal Ji
National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
Call No. 001615
Book No.
Acc. No. LX 152

जरर

नाम—

यूनानी—ज़रर।

वर्णन—

यह एक रोइदगी (क्षुप) होती है,। इसका पौधा १ बालिश्त तक का घासकी तरह होता है। इसका फूल पीला और गोल होता है। इस वनस्पतिमें थोड़े मुलायम काँटे भी होते हैं। इसके पत्ते सफेद और छोटे और जड़ १ फुट लम्बी होती है। रंगरेज लोग इसके फूलोंको कपड़े पर पीला रंग चढ़ानेके काममें लेते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह बनस्पति सर्द और खुश्क है, कुछ गरमीकी तासीर भी इसमें होती है, यह कब्जियत मिटाती है, सूजनको बिखेरती है, पेशाब और मासिक धर्मको साफ करती है। चमड़े पर पड़े हुए निशानको मिटाती है। मुनक्काके साथ इसका काढ़ा करके पीनेसे बढ़ी हुई तिल्ली, जलोदर और पीलिया में लाभ पहुँचाता है। इसके काढ़ेमें जौ का आटा मिलाकर गर्मीकी सूजन पर बांधनेसे लाभ होता है। इसकी राखको खुजली, दाद और जखम पर लगानेसे शान्ति मिलती है। इसका प्रतिनिधि मजीठ है।

दर्पनाशक—शिकंजबीन

मात्रा—१ तोलेसे १॥ तोले तक की है जिसका काढ़ा बनाकर देना चाहिये

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ज़रीन

नाम—

यूनानी—ज़रीन।

वर्णन—

यह मझले कदका एक वृक्ष होता है। इसके पत्ते जैतूनके पत्तोंकी तरह और फूल सूरज फूलकी तरह होता है यह ईरानमें पैदा होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमतसे यह गरम और खुश्क होता हैं। इसके पंचांगका रस निकालकर पीनेसे ग्रध्रसी वातमें लाभ होता है। मासिक धर्म की रुकावट और पेशाब को भी यह साफ करता है जहरीले जानवरों के जहर पर भी यह मुफीद हैं।

जरविंद-इ-तवील

नाम—

यूनानी—जरविंद—इ—तवील, जरबिंद दराज। लेटिन–Aristolochia Longa (एरिस्टो लोकिया लोंगा)।

वर्णन—

यह एक पेड़की जड़ है। इसकी दो जातियाँ होती हैं। एक नीली और दूसरी सुनहरी। पहली जाति की जड़ ऊंगलीके बराबर लम्बी और उंगलीसे कुछ पतली होती है। इसका रंग सुर्खी माइल नीला और स्वाद कड़वा होता है। इसके पत्ते इश्कपेंचाके पत्तों की तरह होते हैं। मगर उनसे कुछ चौड़े और लम्बे होते हैं। इसकी डालियां एक २ बालिश्तके बराबर और पतली होती हैं। इसका फूल नीले रंगका और दुर्गन्ध पूर्ण होता है।

इसकी दूसरी जातिका रंग लाल और सुनहरा होता है। यह पहली जातिसे बड़ी होती है। इसकी डालियाँ भी पतली होती हैं। इसके पत्तों की गोलाई पहली जातिके पत्तों से अधिक होती है। इसके फूल सदाबके फूलकी तरह होते हैं। इसकी जड़ मोटी और केसरिया रंग की होती है। उसमें सुगन्ध आती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण दोष और प्रभाव—

यह तीसरे दर्जेमें गरम और दूसरे दर्जेमें खुश्क होती है। इसकी पहिली जाति विषैले जानवरोंके जहर को दूर करती है, सर्दी की सूजनको बिखेर देती है, कफको छांटती है, पथरीको तोडकर निकाल देती है, गालोंके रंगको साफ करती है, वायुको नष्ट करती है, पेशाब और मासिक धर्मको जारी करती है, पेटके कीड़ोंको निकाल देती है, फालिज और कंपवातमें मुफीद है, मृगीमें फ़ायदा करती है। इसकी बत्ती बनाकर योनिमें रखने से मासिक धर्म साफ होजाता है। इसको ७ माशेकी खुराकमें पीसकर शरावके साथ लेनेसे और बिच्छूके डंक पर इसका लेप करने से बिच्छू का जहर उतर जाता है। इसका लेप करनेसे बवासीर की सूजन उतर जाती है, इसके काढ़े से बालों को धोने से जुएं मर जाती हैं, इसे पीसकर दाँतों पर मलनेसे दाँत साफ हो जाते हैं और मसूड़ा का मवाद निकल जाता हैं। इसको ४ माशेकी मात्रामें शरावके साथ लेनेसे मृगी और धनुर्वातमें बहुत लाभ होता है। शिकंजबीनके साथ इसको लेनेसे तिल्लीकी सूजन मिटती है और काली मिरचोंके साथ इसको लेनेसे प्रसवके बाद गर्भाशयमें रही हुई खराबी दूर हो जाती है।

इसकी दूसरी जातिके गुणदोष भी इससे मिलते हुए हैं मगर इससे कुछ प्रभावशाली हैं।

जरविंद-ई-गिर्द

नाम—

यूनानी—जरविंद-ई-गिर्द, । जरविंद मुदहर्ज लेटिन—Artstolochia Rotunda (एरि-] स्टोलोकिया रोटुंडा)।

वर्णन—

यह एक पौधा होता है जिसकी डालियां जमीनसे ही फूटती हैं। इस पौधेके पिंड नहीं होता। इसकी डालियाँ १ गज या इससे कुछ अधिक लंबी होती हैं। इसके पत्ते जरविंद-इ-तवीलके पत्तोंकी तरह मगर उनसे कुछ छोटे और नरम होते हैं। ये खुशबूदार और स्वादमें कुछ तेज होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। वायुकी सूजनको बिखेरती है, बात पित्त और कफके दोषों को मुलायम करती है, सीने और फेफड़ेको साफ करती है, जहरीले जानवरोंके जहरको दूर करनेकी इसमें खास तासीर है। सर्दीकी वजहसे होनेवाला सिरदर्द, आधाशीशी, मृगी, पागलपन, विस्मृति

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हिचकी, इत्यादि रोग जोकि पित्त और कफसे पैदा हुए हों उनमें यह फ़ायदे मंद है। दमा, पुरानी खांसी, सीनेका दर्द, गठिया अग्रसी वात, और ग्रंथिवातमें इसको शहदके साथ देनेसे लाभ पहुँचता हैं। शरीरमें कांटा लग गया हो तो इसका लेप करनेसे बाहर आ जाता है। टूटी हुई हड्डीपर भीं इसका लेप करनेसे लाभ होता है। इसको खानेसे तोतलापन मिट जाता है, पुराने और बदबूदार जख्मोंपर इसे लगानेसे जखम साफ हो जाते हैं और बदबू मिट जाती है। इसके खाने और लगानेसे कुष्ट और सफेद दागों में भी फायदा होता है। दिमाग़ को खराबी और गरदन की अकड़न को दूर करनेके लिये इसको चाटते हैं। इसके काढ़े को कानमें टपकाने से बहरापन मिट जाता है और कान की फुन्सियां साफ होजातीं हैं। इसको पीसकर गायके घीमें मिलाकर साढ़े तीन माशे की टिकिया बनाकर उसमें से १ टिकया हुक्केमें रखकर पीनेसे दमे का दौरा फौरन आराम होजाता है। तिल्ली, जिगर, ग़र्भाशय की खराबी, और और बिच्छूके बिष पर इसको जरविंद-ई-तवील की तरह ही दिया जाता है।

दर्पनाशक— इसका दर्पनाशक शहद, जरेशक और बनफ्शा का तेल है।

प्रतिनिधि— इसका प्रतिनिधि जरविन्द-ई-तवील और नरकचूर है।

मात्रा—इसकी ४ माशे से ७ माशे तक की है।

जरमीलक

नाम—

यूनानी—जरमीलक।

वर्णन—

यह एक रोइदगी है। इसके पत्ते जबानकी शकलके होते हैं। इसका रंग हरा और नीला होता है। इसकी डालियाँ १ गजके करीब लम्बी होती हैं। इसका फूल नीले रंगका, नीलोफर के फूलसे बहुत छोटा होता है। इसकी जड १ बालिश्त लम्बी ऊंगली के बराबर मोटी, कुछ सख्त, स्वादमें मीठी तथा ऊपरसे काली और भीतर से सफेद होती है। औषधि प्रयोग में इसकी जड़ ही काम आती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसकी जड़को पीसकर दाँतों पर मलने से दाँतोंकी बदबू चली जाती हैं और दांतों की जड़ें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मजबूत होती हैं। हड्डीके टूट जाने पर भी इसके लेपसे फ़ायदा होताहै। इसको लगाने से हर क़िसमका जख़्म भर जाता है। इसके खानेसे आँतों के जख़्म और आँतों की सूजनमें लाभ पहुँचता है।

(ख० अ०)

जरायुप्रिया

नाम—

संस्कृत—जरायुप्रिया, मक्षिकविषा, पालिता। लेटिन Erigeron Canadensis (एरीजिरोन केनेडेसिस)

वर्णन—

यह एक बहुशाखी छोटा झाड़ होता है। इसके पत्ते २-५ से ७-५ सेंटिमीटर तक लम्बे और रुएंदार होते हैं। फूल पीले, फूलोंकी डण्डी गुलाबी और उनकी खुशबू पोदीनेकी तरह रहती है। इसका स्वाद तूरा और कुछ कड़वा होता है। यह वनस्पति पश्चिमी हिमालय, पंजाबके मैदान, उत्तरी गंगाके मैदान और सभी गरम देशोंमें पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतानुसार यह वनस्पति रक्तश्राव रोधक, मूत्रल और संकोचक होती है। इसकी क्रिया गर्भाशयके ऊपर विशेषरूपसे होती है।

यह औषधि आमातिसारके ऊपर उपयोगी है। कफरोगोंमें इससे बहुत लाभ होता है। गर्भाशय से बहनेवाला खून भी इसके प्रयोगसे बंद हो जाता है। रक्त प्रदर और वस्तिशोथमें भी यह लाभ दायक है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति अतिसार, पेचिश और गर्भाशयके रक्तश्रावमें लाभदायक है। इसका तेल नज़लेमें जिसके साथ वायु नलियोंका प्रदाह भी हो, लाभदायक है। मूत्राशयके प्रदाहमें भी यह लाभ पहुँचाता है। इसमें उड़न शील तेल पाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जरूल

नामः—

हिन्दी— जरूल । बंगाल—जरूल । आसाम—अजहार । बंबई—तामण, बोंदरा । कोंकण—तामण । मराठी—बुन्द्रा, मोटा बुन्द्रा, तामण । मुन्डारी—गरसेकरी,कुइरी । संथाल—सेकरा । तेलगू—बरगोबू । तामील—पोदले मुक्की । लेटिन— Lagerstroemia Flosreginae (लेगस्ट्रीमिया फ्लोसरेजिनी) ।

वर्णन—

यह एक बड़ी जाति का वृक्ष है । इसकी डालियां बहुत फैलाने वाली होती हैं । इसकी छाल फिसलनी और फीके रंग की रहती हैं । इसके पत्ते १० से लेकर २० सेन्टीमीटर तक लम्बे और ३.८ से ७.५ सेन्टीमीटर तक चौड़े रहते हैं । हर एक पत्तेमें १० से लेकर १३ तक नसें रहती हैं । इसके फूल ५ से लगाकर ७.५ सें० मीटर तक लंबे होते हैं । इसका फल लंबगोल लाल रंगका और बीज फीके बादामी रंगके रहते हैं ।

गुण दोष और प्रभाव—

इसकी जड़ उत्तेजक और बुखार को दूर करनेवाली मानी जाती है यह एक संकोचक वस्तु की तरह काममें ली जाती है । इसकी छाल और इसके पत्ते विरेचक होते हैं । इसके बीज नींद लाने वाले होते हैं ।

अंडमान में इसके फल को मुंह के छालों पर लगानेके काममें लेते हैं ।

कर्नल चोपरा के मतानुसार इसके बीज, पत्ते और छाल नींद लाने वाले होते हैं ।

यूनानीमतसे यह पहले दर्जेमें खुश्क और दूसरे दर्जेमें सर्द है । यह पित्तके विकारको शान्त करता हैं । खूनकी गर्मी को मिटाता है । शरीर को मोटा करता है । भूख पैदा करता है । पीला जरुर कफ की बीमारियां पैदा करता है और देरसे हजम होता है । मगर लाल रंग का जरुर मेदा और जिगर को ताकत देता है । कबजियत पैदा करता है । बूंद २ पेशाब आने के मर्ज को दूर करता है और कामेन्द्रियको शक्ति देता है । इसका दर्पनाशक सोंफ और गुलकन्द है । इसका प्रतिनिधि खट्टी सेव है । इसके रसकी मात्रा ७ तोले तक और चूर्ण की मात्रा १ माशे से ४ माशे तक है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जगबूल

वर्णन—

यह एक बूटी है। इसका जितना भाग जमीनके ऊपर रहता है उसका रंग हरा और स्वाद खट्टा होता है तथा जितना भाग जमीनमें होता है उसका रंग सफेद और स्वाद मीठा होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसके पत्ते मनुष्यकी काम शक्तिको नष्ट करते हैं। इसकी जड़ काम शक्तिको बढ़ाती हैं। यह पित्तकी तेजीको शान्त करती है।

जफरा

नाम—

यूनानी—जफरा।

वर्णन—

यह एक प्रकारका घास है जो जमीनपर बिछा हुआ रहता है। इसकी डालियाँ नरम और पतली पत्ते गोल, ऊपरसे हरे तथा नीचेसे लाल होते हैं। इसका छोटा पत्ता नाखूनके बराबर और बड़ा पत्ता उससे कुछ बड़ा होता है। फूल पीला और जड़ ऊंगलीके बराबर मोटी होती हैं।

गुणदोष और प्रभावः—

यूनानी मत—यूनानीमतसे यह चौथे दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह एक बहुत जहरीली बनस्पति है। इसका लेप जख्मों के बदगोश्तको काट देता है। छाले, मस्से और नासूरपर इसको लगानेसे फायदा होता है। इसे खानेके काममें कभी नहीं लेना चाहिये।

जरी

वर्णन—

यह एक बूटी है जो प्रायः समुद्री किनारोंपर पैदा होती है। इसके पत्ते गोल, हलके पीले और स्वादमें कड़वे होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह ग़रम और खुश्क है। इसका बफारा देनेसे जोड़ोंका दर्द दूर होता है। इसके गरम २ काढेकी धार देनेसे अथवा इसके काढ़ेसे टबको भरकर उस टबमें बैठनेसे गठियाके रोगमें फायदा होता है। नहाते समय इसको शरीरपर मसलनेसे सूखी और गीली दोनों प्रकारकी खुजली नष्ट हो जाती है। यह वनस्पति केवल बाहरी प्रयोगके काम आती है। खानेके काममें नहीं आती। (ख० अ०)

जल

नाम—

संस्कृत—सलिल, नीर, अम्बु, तोय, वारि, उदक, इत्यादि। हिन्दी—जल, पानी। बंगला—जल। मराठी—उदक, पाणी। गुजराती—पाणी। तेलगू—नीरू। फारसी—आब। अरबी—माय। अंग्रेजी—Water (वाटर)। लेटिन— Aqua (एक्वा)।

वर्णन—

जल या पानी प्राणी मात्रके दिनरात काम आनेवाली चीज है। आयुर्वैदिक दृष्टिसे यह दो प्रकार का होता है। एक दिव्य और दूसरा भौम। दिव्य जलके फिर ४ भेद होते हैं। धाराजल, कर्काजल, तौषार और हेम। इनमें धारा जल सबसे अधिक गुणकारी होता है। धारा जल स्वच्छ, पथरीली या बालुकामय भूमिका होना चाहिये। यह धाराजल दो प्रकार का होता है। पहला गंगाजल और दूसरा समुद्रजल। इसकी परीक्षा करनेका तरीका यह है कि सोने, चांदी अथवा मिट्टीके पात्रमें चाँवल डालकर उनमें जल भरदे। यदि उन चाँवलोंका रंग न बदले और वे नहीं बिगड़े तो उसको गंगाजल समझना चाहिये और अगर वे चाँवल सड़ जावें या उनका रंग बदल जावे तो उसको समुद्रजल समझना चाहिये। गंगाजल सर्व दोषनाशक, हलका, शीतल, रसायन, तृप्तिजनक, आनन्दवर्धक, पाचक, बुद्धि वर्धक और मूर्च्छा, तंद्रा, दाह, श्रम, और तृषाको नष्ट करता है। समुद्र जल सर्व दोषकारक, खारा, नमकीन, शुक्र, दृष्टि और बलको नष्ट करनेवाला, दुर्गन्ध युक्त, दोष कारक और सब कामोंमें अहितकर है। किन्तु आश्विनके महिनेमें इसके दोष कम होजाते हैं।

करका जल—दिव्य वायु और बिजलीके संयोगसे ताड़ित हुआ जो जल ओलोंके रूपमें आकाशसे गिरता है वह करका जल कहलाता है। ओलों का जल शीतल, श्रमनाशक, रूखा, वात, कफ कारक और मूर्च्छा, मोह, सिरकी पीड़ा और हिचकी को दूर करता है। यह सूजन तथा व्रण रोगियोंके लिये अहितकर है और पित्तकी प्रकृति वाले मनुष्योंको हितकारी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तौषार जल—तुषारका जल हलका, शीतल, श्रमनाशक, पित्तकी पीड़ाको शान्त करनेवाला, दोष निवारक, जलके रोगोंको हरने वाला तथा कुष्ट, श्लीपद, मकड़ीका विष, पामा और विसर्प रोगको नष्ट करने वाला है। यह क्षीण, क्षत रोगी और शोष रोगियोंके लिये विशेष हितकारी है।

हिमजल—हिमके समान शीतल पर्वतों से जो बर्फ गल २ कर जल टपकता है उसको हिमजल कहते हैं। हिम जल—घन, मधुर, कफ कारक, और मूर्च्छा, श्रम, भ्रम, रक्तपित्त, रक्त विकार और क्षत रोगोंको नष्ट करता है।

भौमजल—जाँगल, आनूप और साधारणके भेदसे तीन प्रकारका होता है। जिस देशमें थोड़ा जल और थोड़े वृक्ष हों और जहाँ के प्राणी पित्त तथा रुधिरके रोगी अधिक हों उस देश को जांगल देश कहते हैं और वहाँके जलको जांगल जल कहते हैं। जिस देशमें बहुत जल और बहुत वृक्ष हों उसदेश को अनूप देश कहते हैं और वहाँके जलको आनूप जल कहते हैं। इन दोनोंके मध्य वर्त्ती देशको साधारण देश और वहाँ के जलको साधारण जल कहते हैं।

जांगल जल—रूखा, नमकीन, हलका, पित्तनाशक, जठराग्निको प्रबल करने वाला और अनेक प्रकारके विकारोंको दूर करने वाला होता है। आनूप जल स्वादिष्ट स्निग्ध, भारी, जठराग्नि नाशक, वृष्य और अनेक प्रकारके विकारोंको पैदा करने वाला होता है। साधारण जल—मधुर, दीपन, शीतल हलका और तृषा, दाह, मद, वमन और त्रिदोषको नष्ट करने वाला होता है।

इन भेदोंके अतिरिक्त नदीका जल, कुएँ का जल, तालाब का जल, सरोवरका जल, बावड़ी का जल इत्यादि जलोंके गुण, धर्ममें भी थोड़ा २ फर्क है। नदीका जल—मधुर, हलका, रूखा, गरम, वातको शान्त करनेवाला, अग्निदीपक, बलकारक और पथ्य होता है। ये गुण शीघ्र बहने वाली नदियोंके जलमें ही समझना चाहिये। इस जलको शीत ऋतुके प्रारम्भमें और शिशिर ऋतुमें ही सेवन करना चाहिये।

झरनेका जल—पहाड़ोंमेंसे जो जल झरकर बहता है उसको झरनेका जल कहते हैं। झरनेका जल रुचिकारक, कफ नाशक, दीपन हलका, मधुर, कटुपाकी, बातजनक और पित्त नाशक होता हैं।

चौंड्य जल—जो गड्ढा चारों ओरसे शिलाओंसे घिरा हुआ हो, जिसका जल नील अंजनके समान निर्मल हो, उसको चौंड्य जल कहते हैं। चौंड्य जल जठराग्नि बढ़ानेवाला, रूखा, कफ नाशक हलका, मधुर, पित्त नाशक, रुचिकारक, और पाचक होता है।

कुएंका जल—कुएंका जल मीठा त्रिदोष नाशक, पथ्य और हलका होता है। कुएंका खारा जल कफ बात नाशक, दीपन, और पित्त कारक होता है।

तालाबका जल—तालाबका जल स्वादिष्ट कसेला, कटुपाकी, वातवर्धक, मल और मूत्रको बांधने वाला तथा रक्तपित्त और कफका नष्ट करनेवाला होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सरोवरका जल—सरोवरका जल बलकारक, तृषानाशक, मधुर, हलका, रोचक, कसेला, रूखा और मल तथा मूत्रको बांधनेवाला है ।

आयुर्वेद और जल चिकित्सा—

ऊपर हम आयुर्वेदकी दृष्टिसे सब प्रकारके जलोंके भेद और उनके साधारण गुण दोषोंका वर्णन कर चुके हैं। मगर इसके सिवाय जलके द्वारा अनेक रोगोंको दूर करनेकी पद्धति बहुत प्राचीनकालसे इसदेशमें चली आ रहा है और प्राचीन शास्त्रोंमें इसका विशद विवेचन किया गया है। उनमेंसे १।२ पद्धतियोंका नीचे वर्णन किया जाता है ।

आठ कटोरी जलका प्रयोग—

आजकल के पाश्चात्य रसायन शास्त्रियों का खयाल है कि प्राणी मात्र का जीवन एक प्रकार के रासायनिक फेरफार का ही परिणाम है । इस रासायनिक फेरफारके लिए शरीरमे एक निश्चित परिमाणमें गर्मीका होना आवश्यक है। शरीरके अन्दर पाई जानेवाली यह कुदरती गर्मी जब कम हो जाती है तब कई प्रकारकी व्याधियां खड़ी होती हैं। यह गर्मी जब बिलकुल नष्ट होजाती है तब जीवधारी की मृत्यु होजाती है । इसलिए जीवन को सुरक्षित रखने के लिए शरीरमें इस गर्मी कों संचित रखने वाले पदार्थों की आवश्यकता होती रहती है। ऐसे पदार्थों में जल सबसे उत्तम पदार्थ है क्योंकि इससे किसी भी प्रकार का नुकसान न होते हुए शरीर को जितनी गर्मी की आवश्यकता होती है उतनी ही गर्मी उसे दी जा सकती है ।

हमारे प्राचीन आचार्यों ने भी इस विज्ञान को बहुत प्राचीनकाल से समझाहुआ था और इसके लिए उन्होंने पानी का एक बहुत सादा उपचार निर्माण किया था। यह उपचार आठ कटोरी पानी के प्रयोग के नाम से प्रसिद्ध है । जब मनुष्य को भयंकर रीतिसे ज्वर चढ़ रहा हो, वायु बहुत बढ़ गया हो, मूर्छा आगई हो, दस्त-उल्टी वगैरह होते हों, शरीर ठण्डा पड़ गया हो अथवा इसीप्रकारके जिन्दगी को जोखम में डालने वाले दूसरे लक्षण दिखाई देते हों और केशर कस्तूरी, स्प्रिट एमोनिया एरोमेटिक, हेमगर्भ, हिरण्यगर्भ, चन्द्रोदय. इत्यादि बहुमूल्य औषधियां जवाब दे चुकी हों ऐसी हालत में यह आठ कटोरी जलका प्रयोग काम कर देता है ।

इस आठ कटोरी जल को बनाने की रीति इस प्रकार है— एक मिट्टी के बरतन में आठ कटोरी भर पानी डालकर उसमें सूंठ, मिरच पीपर, तज, लौंग बायबिडंग प्रत्येक डेढ़२ माशा और तुलसी तथा बेलके पत्ते दो २ तोला डालकर आँचपर चढ़ाना चाहिये । जब जलते २ एक कटोरी पानी शेष रहजाय तब उसको उतारकर छानकर रोगीको पिलादेना चाहिये । इस प्रकार दिनमें ३ बार पानी तैयार करके रोगीको पिलानेसे चाहे जैसा ज्वर रोगीको चढ़ा हो तो उतर जाता है। अगर ज्वरका वेग बहुत ज्यादा हो और आठ कटोरी पानीके प्रयोगसे शान्ति न पड़ती हो तो आठ कटोरीकी जगह उस मिट्टीके

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बर्तनमें १६, ३२ अथवा ६४ कटोरी पानी डालकर उबालते २ जब एक कटोरी पानी रह जाय तब उसको छानकर पिलाना चाहिये। यह और भी अधिक गुणकारी सिद्ध होता है। कभी २ बिलकुल असाध्यावस्था में प्राप्त हुए रोगीके शरीरमें भी इससे ऐसी गर्मी पैदा हो जाती है कि वह एक बार तो मरण शय्यासे उठकर बात करने में समर्थ हो जाता है।

उषा जलपान—

शरीरमें पैदा हुई अनेक व्याधियोंको नष्ट करने के लिये जिस प्रकार गरम जलका प्रयोग उपयोगी होता है उसी प्रकार शरीरमें बढ़े हुए दोषों को समानता पर लानेके लिये और प्रकृतिको स्वस्थ बनानेके लिये उषाः काल या बड़े सबेरे ठंडा जल पीनेसे बड़ा लाभ होता है। वह जल कैसे और कितना पिया जाय इस विषयका विवेचन करते हुए निघंटुरत्नाकरमें लिखा है कि प्रातः काल रवि मंडलके उदयके पहिले अरुणोदयके समय अर्थात् डेढ़ घंटा रात शेष रहने पर पेशाब करनेके पहिले बिछोने पर ही बैठे हुए जो मनुष्य रात्रिको तांबेके बर्तनमें भरकर रखा हुआ आठ अंजलो जल पीता है उस मनुष्यके बढ़े हुए वात, पित्त और कफ तीनों दोषोंकी शान्ति हो जाती है और उसमें अनेकों स्त्रियों के साथ रमण करनेके योग्य बल आ जाता है।

जल और आधुनिक चिकित्स विज्ञान —

आधुनिक चिकित्सा शास्त्रमें भी सिर्फ जलके द्वारा मनुष्य शरीर में होने वाली तमाम व्याधियोंकी चिकित्सा करनेकी पद्धतिने बहुत महत्व धारण किया है। इस पद्धतिका मूल जन्मदाता विन्सेंज प्रिसनिज (Vincenz Priesntz) नामक एक अशिक्षित किसान था। उसने सन १८२६ में ग्रेफेनबर्ग में एक चिकित्सागृह की स्थापना की। वह एक बड़ा सूक्ष्मदर्शी और अन्तर दृष्टि सम्पन्न व्यक्ति था। वह पहले स्वयं अस्वस्थ रहा करता था और अपने को पुनः स्वस्थ बनानेके लिये प्रयत्न शील हो रहा था। इसी सिलसिलेमें उसने ठंडे जलमें रोगोंको दूर करनेकी अद्भुत शक्तिका अनुसंधान किया। इसका उसने अपने सेनेटोरियमके रोगियों पर भीतरी और बाहरी दोनों तरहका प्रयोग किया। कुछही समयमें उसका स्वास्थ्यगृह रोगियों और पीड़ितों के लिये तीर्थस्थान बनगया। उपचार के लिये दूर २ से झुण्डके झुण्ड लोग वहाँ पहुँचने लगे। उसके पश्चात् जे० स्क्राथ नामक चिकित्सकने जल चिकित्सा पद्धति को अपनाकर शुरूमें प्रबल विरोध और अन्तमें महान् कीर्तिको संपादित किया। सन् १८४६ में विंटमबर्गके ड्यूकका पैर बुरी तरहसे जख्मी होगया और उनकी हालत नाजुक होगई। तत्का लीन डॉक्टर उसको अच्छा नहीं कर सके और उन्होंने उसका पैर काटडालनेकी व्यवस्था देदी। तब डयूक स्क्राथकी संस्थामें पहुँचे और वहांसे कुछ ही महिनोंके पश्चात् वे अपना चंगा पैर लेकर घर लौटे। इसके पश्चात् फादर नीप, अर्नाल्ड रिकली, डाक्टर हेन्रिच् लेमेन, इत्यादि लोगोंने इस पद्धतिको अपना कर इसका विकास किया। मगर यह निस्सन्देह रूपसे कहा जा सकता है कि जल चिकित्साके

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सबसे बड़े आचार्य जर्मनीमें डाक्टर लुइ कुने हुए। सिर्फ २० सालकी अवस्थामें ही उनका स्वास्थ्य बिलकुल नष्ट होगया और उन्होंने डाक्टरोंकी चिकित्सासे ऊबकर प्राकृतिक चिकित्साकी शरणली। जिससे उनका स्वास्थ्य शीघ्रही सुधर गया और वे इस पद्धतिके भक्त बनगये। उन्होंने कई वर्ष तक इस पद्धतिका अध्ययन करके सन १८८३ में लिपजिगमें एक स्वास्थ्य गृहकी स्थापना की और वहाँ से हजारों असाध्य रोगियोंको उन्होंने सिर्फ़ जल और धूपकी चिकित्साके द्वारा स्वास्थ्य प्रदान किया। उन्होंने रोगोंको नष्ट करनेके लिये कुछ स्नानों की व्यवस्थाकी। इन स्नानोंका विशेष वर्णन जल चिकित्साके किसी स्वतन्त्र ग्रन्थमें देखना चाहिये। यहाँपर उनकी अत्यन्त प्रिय ३।४ स्नानोंका संक्षिप्त वर्णन किया जाता है।

वाष्पस्नान—(Steam Bath) मिट्टी अथवा ताम्बे के ४ या ५ ऐसे बर्तन जिनमें १०।१५ सेर पानी समा सके, लेकर उनमें स्वच्छ ताजा जल भरकर औटाना चाहिये। जब पानी खूब खौलने लगे और उसमें आवाजके साथ भाफ निकलने लगे तब रोगीके सब वस्त्र उतारकर उसको एक ऐसी चारपाईपर जिसमें चारों तरफ छेद हों और जिसमें भाफ आसानीसे जासके सुला देना चाहिये। उसके पश्चात् चार-पाईको चारों तरफ कम्बल से इस प्रकार ओढ़ा देना चाहिये कि वह कम्बल उस चारपाइ के चारों ओर जमीन तक टिक जावे और उसमें से बाहर भाफ निकलनेकी गुञ्जाइश न रहे। उसके पश्चात् खौलते हुए पानीके बर्तनोंमें से दो बर्तन लेकर उन बरतनों को चारपाईके नीचे इस प्रकार रखना चाहिये कि एक बर्तन रोगीकी पीठके नीचे और दूसरा बर्तन रोगीके सिरके नीचे रहे। उसके पश्चात् उस कम्बलके चारो कोनों को ऐसे दबा देना चाहिये जिससे भाफको बाहर जानेकी गुञ्जाइश न रहे। पानीके बरतनों पर ढक्कन की सुविधा भी रहना चाहिये। जिससे अगर कभी भाफको कम ज्यादा करने की ज़रूरत हो तो की जा सके। रोगी को जितनी भाफ सहन हो उतनी ही देना चाहिये। १०।१५ मिनटमें रोगीका सारा शरीर पसीनेसे तर बतर हो जायगा। अगर उसमें कुछ कमी मालूम हो तो उन बरतनों को निकाल कर उनके बदलेमें दूसरे ताजे बरतन रख देना चाहिये। जिससे सारे शरीर का विजातीय द्रव्य पसीने की राह बाहर निकल जायगा और रोगीको परम शान्ति का अनु-भव होगा।

जिन लोगोंके पेटमें विकृत पदार्थ एकत्रित होगये हों, आमाशय खराब हो गया हो, आँतें कमजोर पड़गई हों, हमेंशा कब्जियत रहती हो, उनलोगोंको सिर्फ पेट और पीठके भागपर यह स्नान देना चाहिये। जिन लोगोंकी छातीमें दर्द रहता हो, हृदय कमजोर पड़ गया हो, फेंफड़ोंमें विकार हो गया हों, उनको सिर्फ छाती और पीठपर यह स्नान देना चाहिये। मूत्राशयकी बीमारी और प्रदर तथा प्रमेहके समान रोगवाले रोगियोंको पेड़ूके ऊपर और मस्तक, कान, नाक, वगैरहके रोगियोंको सिरके ऊपर बाष्प स्नान लेना चाहिये। जिस अङ्गपर बाष्प स्नान लेना हो उसी अङ्गको कम्बल ले ढँककर उसके नीचे भाफका बरतन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रखकर उसको चारों तरफ से बंद कर देना चाहिये। शेष अंगोंको खुले रखना चाहिये। बाष्प स्नानके बाद प्रत्येक व्यक्तिको कटिस्नान लेना आवश्यक होता है। उसकी विधि इस प्रकार है।

कटिस्नान—कटिस्नानके लिये ठंडे पानीसे भरे हुए एक लंबे टबकी आवश्यकता होती है। इस टबमें स्वच्छ ठंडा जल इतना भरा हुआ होना चाहिये जिसमें मनुष्यका नाभिसे नीचेका भाग और उसकी जंघाएं उसमें डूब सके। नाभिसे ऊपरका शरीरका भाग और जंघाओंसे नीचेका पैरोंका भाग पानीसे बाहर रहना चाहिये। टबके बाहर एक ऐसी तिपाई रखना चाहिये जिससे टबके बाहर वाला पैरोंका भाग आसानीसे उस तिपाई पर रक्खा जासके। जल कुएंका स्वच्छ और ताज़ा होना चाहिये। वह इतना ठंडा न हो कि सहन न होसके। उसकी गर्मी ६८ से लेकर ८१ डिग्री फॉरेनहाइट तक होना चाहिये। कुएं का तज़ा जल प्रायः इसी गर्मी वाला होता है। जिस जगह यह स्नान लेनाहो वह जगह साफ़, हवादार और एकान्त होना चाहिये। पेट भरकर भोजन कियेके बाद या बिलकुल भूखे पेट यह स्नान नहीं लेना चहिये। शरीरके वस्त्रोंको दूर करके टब में बैठकर पैरोंको बाहरकी तिपाई पर रखदेना चाहिये। पैरोके सूखे भाग पर और सिरपर ऊनके गरम वस्त्र ढंक लेना चाहिये।

टब में बैठनेके पश्चात् खादीका एक भींगा हुआ टुवाल लेकर उससे नाभिके नीचे वाले पेडूके भागको जल्दी २ भली प्रकार घिसना चाहिये। जिससे वहांके रोमकूप खुलकर जलके परमाणु उनके अंदर आसानीसे जासके। सारे शरीरमें ठंडकका संचार होने तक यह स्नान लेना चाहिये। शुरु २ में ५ से १० मिनट तक यह स्नान कॉफी होता है। अभ्यास होने पर धीरे २ आधा घण्टा या उससे भी अधिक समय तक यह स्नान किया जासकता है। कमजोर मनुष्योंके लिये ३।४ मिनटका ही स्नान काफी होता है। इस स्नानके पश्चात् शरीर कुछ ठंडा पड़ जाता है। इसलिये पुनः गर्मीका संचार करनेके लिये मनुष्यको खेल कूद या हलके व्यायाम करना चाहिये और निर्बल मनुष्यको कपड़े पहिनकर, ओढ़कर कुछ देर बिछौनेमें सो जाना चाहिये।

शरीरका बलाबल और ऋतुका विचार करके दिनमें १।२ या ३ बार यह स्नान लिया जा सकता है। इस कटिस्नानके लेनेसे ढोलके समान फूला हुआ पेट कुछ दिनोंमें पतला पड़ जाता है। जलोदर, कब्जियत, मंदाग्नि, अतिसार, हैजा, शूल, संग्रहणी, इत्यादि उदर और आँतों से सम्बन्ध रखने वाले रोगोंके भयंकर आक्रमणके समय यह कटिस्नान जितना फायदा पहुंचाता है उतना कोई दूसरी दवा नहीं पहुँचा सकती। कमरका दर्द, मूत्राशय और मलाशयके रोग और पथरीमें भी इससे बड़ा काम होता है। अगर किसीका पेशाब बंद हो गया हो या सुज़ाककी असहय जलन हो रही हो तो मामूली गरम पानीमें इस प्रकार १० मिनट बैठनेसे पेशाब साफ होकर जलन कम हो जाती है।

मेहनस्नान—यह स्नान मनुष्यकी गुह्येन्द्रियका स्नान है। मूत्राशय और गर्भाशयके रोग इस स्नानसे बहुत जल्दी आराम होते हैं। यह स्नान मासिक धर्मके समय नहीं लेना चाहिये। बल्कि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मासिक धर्मसे शुद्ध होनेके पश्चात् इसको लेना चाहिये। ऊपर बताये हुए कटिस्नानके टबमें एक छोटी तिपाई रखकर उसमें इतना पानी भरना चाहिये कि उस तिपाई की बैठक की जगहके बराबर वह पानी आजाय। उसके पश्चात् रोगीको उस तिपाई पर बैठा देना चाहिये और खादीका एक मुलायम टवाल पानीमें भिंगोकर उससे योनिके मुखको बहुत धीमे २ मलना चाहिये। बार २ टवालको पानीमें भिंगोकर उसको मलते रहना चाहिये। इस स्नानमें गुह्याँग के सिवाय मनुष्यका सारा भाग पानीके बाहर रहता है। सबेरे पहला पेशाब करनेके बादही यह स्नान शुरू कर देना चाहिये। १० मिनिटसे लेकर १ घंटे तक यह स्नान किया जा सकता है। इस स्नानसे सिर्फ बाहरी शुद्धि ही नहीं होती परन्तु अन्दरके सब रोग भी दूर हो जाते हैं। योनिकी खुजली, योनिकन्द, योनिभ्रंश, वगैरह रोग शीघ्र दूर हो जाते हैं। जो स्त्रियाँ गुह्याँगके रोगों से अत्यन्त पीड़ित हैं और जो सन्तान पैदा होने की आशा छोड़ चुकी हैं वे अगर नियमित रूपसे इस स्नानका प्रयोग करें तो कुछ दिनोंमें अवश्य रोग मुक्त होकर सन्तान सुखको प्राप्त कर सकती हैं।

स्त्रियो ही की तरह पुरुषों के लिय भी यह स्नान बड़ा उपयोगी है। ऊपर बतलाये अनुसार टबमें पानी भरकर उसमें तिपाई रखकर उसपर पुरुषको बैठना चाहिये। फिर बायें हाथमें कामेंद्रियको लेकर उसका चमड़ा आगे खींचकर सुपारीका हिस्सा ढक देना चाहिये। फिर कामेंद्रियका अगला भाग पानीमे डूबा हुआ रखकर दाहिने हाथमें एक मुलायम कपड़ा लेकर पानीमें भिंगोंकर उससे धीरे २ कामेंद्रियके अगले हिस्से को मलना चाहिय। यह क्रिया शुरू में १० मिनिट से लेकर बढ़ते २ पचास मिनिट तक की जा सकती है। उसके पश्चात् १० मिनिट तक क्रिया बन्द करके कामेंद्रियको पानीमें डूबी हुई रखना चाहिये। इस स्नानमें कामेंद्रियको छोड़कर मनुष्यका सारा शरीर सूखा रहता है।

इस प्रकार यह स्नान करने से लिंगेंद्रिय की निर्बल हुई नसोंमें शक्तिका संचार होता है। कुसंग की वजहसे जो लोग अपने जीवनको नष्ट कर चुके हैं। अथवा हस्त मैथुनके द्वारा जो अपनी नसोंको बेकार कर चुके हैं उनके लिये यह स्नान आशीर्वाद स्वरूप है। लगातार एक महिने तक यह स्नान करते रहनेसे नपुँसकता, इन्द्रियका टेढ़ापन, धातुश्राव, वगैरह रोग नष्ट होकर आनन्दमय जिन्दगी प्राप्त होती है।

निद्रा दायक स्नान—अगर किसी रोगीको अच्छी तरहसे नींद न आती हो तो सोनेके कुछ समय पहले उसके दोनों पैरोंको साधारण गरम जलमें रखकर सिरके ऊपर ठण्डे जलकी धार देना चाहिये। ऐसा करनेसे रक्तकी गति सिरकी तरफसे नरम पड़के पैरोंके तरफ जाती है। जिससे उसे थोड़ी देरमें सुखमय निद्रा आ जाती है।

गीले कपड़का स्नान—अच्छे गरम जलमें बन्नातके एक बड़े टुकड़ेको डुबोकर भिगो लेना

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चाहिये। उस समय उसमें से गरम २ भाफ निकलती है। उस कपड़े को शरीर पर लपेट लेना चाहिये। और उसके ऊपर एक और सूखा गरम कपड़ा लपेटकर रोगीको सुला देना चाहिये। आधे घण्टेके बाद इन सब कपड़ों को दूर कर देना चाहिये। इस समय रोगीको हवा नहीं लगने देना चाहिये और साफ कपड़ेसे उसके शरीरको पोंछ देना चाहिये। ज्वर चढ़ने को बहुत समय होने पर भी अगर वह नहीं उतरता हो अथवा त्रिदोष इत्यादि व्याधियोंसे फेंफड़ेमें वरम आगया हो तो यह क्रिया लाभ दायक होती है।

इसी प्रकार सनके कपड़ेको ठंडे पानीमें भिंगोकर एक कम्बल अथवा रजाइके ऊपर फैला दिया जाता है। और उस पर रोगीको सुला देते हैं। उसके पश्चात् उसके हाथ ऊँचे करके नीचे बिछे हुए गीले कपड़ेका आजू बाजूका भाग उसके शरीर पर लपेट देते हैं। उसके बाद रोगीको रजाई ओढ़ाकर सुला देते हैं। जिससे भीतर गर्मी पैदा होकर पसीना आने लगता है। आधे घंटेके पीछे इन सब कपड़ों को दूर कर दिया जाता है। यह सब प्रयोग करते समय खूनका जोश मस्तिष्कमें न चढ़ जाय, इसके लिये रोगीके सिरके ऊपर ठण्डे पानीमें भींगा हुआ रुमाल रक्खा जाता है। उत्तप्त ज्वर वाले रोगीके लिये जिसका सारा शरीर जल रहा हो और जिसको ओढ़ना बिलकुल न सुहाता हो, यह बहुत लाभ दायक है।

सारे शरीर पर यह पट्टा न बाँधते हुए अगर शरीरके खास खास अंगों पर इसको बाँधा जाय तो कई बीमारियोंमें बड़ा लाभ होता है। विशेष अंगो पर बांधते समय पट्टे की २।३ तह करके बाँधना चाहिये और उसके ऊपर सूखा गरम कपड़ा लपेट देना चाहिये। अगर पेटके ऊपर ऐसा पट्टा बाँध कर रातको रोगीको सुला दिया जाय तो टाइफाइड ज्वरमें बहुत लाभ होता है। कब्जियतके रोगियों पर यह प्रयोग करनेसे उनको साफ दस्त आने लगता है। धातुश्रावके रोगियों पर इस पट्टे को चढ़ाने से स्वप्नमें होने वाला वीर्यश्राव बन्द हो जाता है। गर्भाशय और मूत्राशयके रोग भी इससे मिट जाते हैं।

गलेके आस पास इस प्रकारका पट्टा बाँधनेसे टाँसिल और गलेकी सूजन दूर हो जाती है। छाती के ऊपर ऐसा पट्टा चढ़ानेसे फेफड़ेकी सूजनमें लाभ होता है। इसके अतिरिक्त हथियारसे पड़े हुए घाव, दूसरे जख़्म, गरमीकी सूजन, कमर का दुखना, संधियोंकी सूजन, मोच, लचक, इत्यादि रोग भी दूसरी दवाइयों की अपेक्षा ऐसे पट्टोंसे जल्दी आराम हो जाते हैं।

बरफके प्रयोग—कुछ रोग ऐसे होते हैं कि जिनकी शांतिके लिये अत्यन्त शीतल जलकी आवश्यकता होती है। ऐसे टाइम पर पानीके बदले बरफका उपयोग किया जाता है। अगर रोगीके शरीरके किसी भी भागसे रक्त श्राव होता हो तो उसको बन्द करनेके लिये बरफका प्रयोग एक आश्चर्य जनक उपाय हैं। मुँह, गला, नाक, योनि, गुदा मार्ग, इत्यादि शरीरके जिस किसी भी अंगसे खून गिरता हो। उस समय एक रबरकी थैलीमें बरफ भरकर रखनेसे फौरन रक्त प्रवाह बन्द हो जाता है। फेंफड़े से कभी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२ ऐसा रक्त श्राव होने लगता है कि रोगी एक दम खूनकी उल्टियां करने लगता है। ऐसे समय उसकी छाती पर बरफ रखकर उसको २।४।५ टुकड़े बरफके निगलवा देना चाहिये। पेटमें उन टुकड़ों के पहुँचतेही खूनका गिरना बन्द होजायगा। क्योंकि रक्त वाहिनी नलियों में जो छेद हो जाते हैं। वे बरफ की ठंडक की वजहसे बहुत सिकुड़ जाते हैं।

गर्भाशयके द्वारसे अगर बहुत खून बहता हो तो उसको बंद करनेके लिये भी बरफके टुकड़े निगलवाना चाहिये और गुदा तथा योनिके ऊपर भी बरफ रखना चाहिये।

जठरके ऊपर पड़ेहुए घावोंकी वजहसे अगर रोगीको बहुत उल्टियाँ होती हों तो एक आइसबेग में बरफके टुकड़े भरकर उस बेगको पेड़ूके ऊपर रखनेसे रोगीको तत्काल शांति मिलती है।

मस्तिष्क या मस्तिष्कके अन्दरकी पतली झिल्लीपर पड़े हुए छिद्रों या सूजनको नष्ट करनेके लिये अथवा दीर्घकालके ज्वरसे मगजमें संचित हुई गर्मीकी वजहसे पैदा हुए भयंकर मस्तक शूलमें भी बरफसे भरा हुआ आइस बेग सिरपर रखनेसे बड़ा काम होता है। कभी २ तीव्र ज्वरकी वजहसे गलेमें बहुत गर्मी पैदा होकर कंठमाला से लक्षण दिखाई देने लगते हैं। ऐसे समयमें गलेकी सूजन और दर्दको कम करनेके लिये बरफ एक सफल दवा है। इसी प्रकार अण्डकोषके ऊपर बरफ रखनेसे उसमें उतरी हुई आँत फिरसे ऊपर चढ़ जाती है और अण्डकोषकी सूजन तुरन्त दूर हो जाती है।

बरफका उपचार करते समय यह खयाल रखना चाहिये कि अत्यन्त निर्बल, वृद्ध, बिलकुल शक्तिहीन और बिलकुल निर्बल मनुष्योंपर यह उपचार नहीं किया जाय।

औषधि मिश्रित बाष्प स्नान—

नीम अथवा द्रोण पुष्पीके पत्तोंको पानीके अन्दर खूब उबालकर उस पानीसे ऊपर बतलाई हुई रीतिसे बाष्प स्नान देनेसे साधारण बाष्प स्नानको अपेक्षा अधिक लाभ होता है, भयंकर बुखार, सन्निपात और संधिवातमें भी इस प्रकारका स्नान बहुत अधिक लाभ बतलाता है।

यह खयाल रखना चाहिये कि जल चिकित्सामें उपयोग करनेके लिये बहुत शुद्ध और साफ जल काममें लेना चाहिये। जलाशयमें सड़ी हुइ चीजें डालनेसे अथवा वृक्षोंके पत्ते खिरनेसे पानी खराब हो जाता है। ऐसे पानीका उपयोग नहीं करना चाहिये। पानी भरनेके पात्र भी बहुत साफ होना चाहिये। अगर बरतनमें पानी भरे १२ घंटेसे अधिक होगये हों तो उसे स्नान चिकित्सामें नहीं लेना चाहिये। बरसाती नदियोंका पानी भी इस कार्यके लिये बिलकुल वर्जनीय है। जल चिकित्सा करनेवालेको खानपान के सम्बन्धमें पूरी सावधानी रखना चाहिये। हलका, सात्विक और शुद्ध भोजन करना चाहिये। मिठाई नमक और मसाले बिलकुल नहीं खाना चाहिये। ताजे फल अधिकसे अधिक देना चाहिये। कंद, मूल फलको बिलकुल छोड़ देना चाहिये।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जलकुम्भी

नाम—

संस्कृत—कुम्भिका, वारिपर्णी, वारिमूलि, आकाशमूलि, कुमुदा, जलवल्कल, जलकुम्भी इत्यादि। हिन्दी—जलकुम्भी। बंगाल—पाना, ताकापाना। गुजराती—जलकुम्भी, जलशृंखला। मराठी—गोंडाल जल मंडवी, शेरवल। मलयालम—नीरचीर। कनाड़ी—अन्तर्गङ्गा। तेलगू—अन्तदमिर। तामील—आकाशतामरे। यूनानी—सतरअतयुतिस। अरबी—फारिसअलमा। अंग्रेजी—The wester lettuce (दी वेस्टर लेट्यूस) लेटिन—Pistia stratiotes (पिस्टिया स्ट्रेटिओटस)।

वर्णन—

यह वनस्पति जलके ऊपर पैदा होती है इसका स्वरूप कांईकी तरह होता है जो प्रायः सब दूर तालाबों में और रुके हुए पानी पर छाई हुई रहती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे जलकुम्भी शीतल, कड़वी, हलकी, स्वादिष्ट, सारक, चरपरी, त्रिदोषनाशक और रूखी होती हैं। ज्वर, रक्तविकार और क्षय रोग जनित ग्रन्थियोंके बढ़ने पर यह लाभदायक है।

इसकी राखको पानीमें गलाकर उससे एक प्रकारका क्षार तैयार किया जाता है। इस क्षारमें पोटास क्लोराइड, और पोटास सल्फेट, जवाखारकी तरह ही पाया जाता है।

गलेकी सूजनमें जलकुम्भी और नागर वेलके पानका स्वरस देनेसे लाभ होता है। मूत्राघात या पेशाबकी जलन बन्द करनेके लिये जलकुम्भीका काढ़ा पिलाते हैं और इसको पेडू पर बाँधते हैं।

इसके पत्तोंका पुल्टिस बनाकर खूनी बवासीर और रक्तस्रावके ऊपर लगाया जाता हैं। चावल और नारियलके दूधके साथ इसको मिलाकर पेचिशकी बीमारीमें देते हैं। खांसी और स्वाँसमें इसको गुलाब जल और शक्करके साथ मिलाकर देते हैं इसकी राखको कपालके दाद के ऊपर लगानेसे दाद नष्ट हो जाता है।

मुण्डाजातिके लोग इस वनस्पतिको कर्णशूलके लिये काममें लेते हैं।

चीनके चिकित्साशास्त्रमें यह वनस्पति बहुत प्राचीन समयसे लोक प्रिय रही है। वहाँ पर इसे घाव, उपदंश रोग जनित फ़ोड़े और अन्य चर्म रोगोंमें काममें लेते हैं।

लॉरियूनियनमें इसका काढ़ा मूत्रनालीके रोगोंमें उपयोगी माना जाता है। इसके पत्तोंकी गोलियाँ बनाकर उन्हें उपदंशकी बिमारीमें देनेके काममें लेते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कोमानके मतानुसार इसके पत्तों के रसको नारियलके तेलमें सिद्ध करके पुराने चर्म रोगों पर लगानेके काममें लिया गया और इससे बहुतसे बीमारोंको बड़ा लाभ हुआ।

पूनानी मत—हकीम जालीनूसने जलकुम्भीकी दो जातियां बताई हैं। एक जलमें पैदा होने वाली और दूसरी जंगली।

यूनानी मतसे इसकी तबियत सर्द और तर है। इसको गरमीकी सूजन पर लगानेसे सूजन बिखर जाती है। पेशाबकी जलनको यह दूर करती है। शरीरके किसी भी हिस्सेसे होने वाले रक्तश्रावको यह बन्द कर देती है। नासूरको भरती है। इसकी जड़के चूर्णकी मिश्रीके साथ फंकी लेनेसे और ऊपर से गुलाबका अर्क पीनेसे खाँसी दूर हो जाती है। इसकी जड़की काढ़ेमें शहद मिलाकर पीनेसे दमा जाता रहता है। इसकी राखको गायके मूत्रमें पकाकर छान कर पीनेसे गलगंडमें लाभ होता हैं। इसको खानेसे सिरकी गंज भी मिटती है।

जलकुतरा

नाम—

हिन्दी—जलकुतरा, विषखोपटा। लेटिन—Primula Reticulata (प्रायमूला रेटिक्यूलेटा)

वर्णन—

यह वनस्पति मध्य और पूर्वी हिमालयमें ११ हजारसे १५ हजार फीटकी ऊंचाईतक होती हैं। यह एक बहुवर्षजीवी वनस्पति है।

गुण, दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति वेदना शून्यता लानेवाली होती है। यह ढोरोंके लिए एक प्रकारका विष है।

जल जंबुआ

नाम—

हिन्दी—जल जम्बुवा। मराठी—कंचेरी। गुजराती—जल जाँबवो, । काठियावाड़—जर भँगरो, जरमाजी। कनाड़ी—दोना वोनी। लेटिन—Alternanthera Sessiles (आल्टरनेथेरा सेसिकिस)।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

यह वनस्पति भारतवर्षके सभी उष्णभागोंमें पैदा होती है। इसके पौधे ज़मीनपर फैले हुए रहते हैं। और ज्यों २ इनकी डालियाँ जमीनपर आगे बढ़ती जाती हैं त्यों २ वे अपने तंतु छोड़कर जमीनमें अपनी जड़ें बनाती जाती हैं। इसके पत्ते आमने सामने लगते हैं। ये १-३ से लेकर ५ सेंटिमीटरतक लंबे और .३ से २ सेंटिमीटर तक चौड़े होते हैं। इसके फूल सफेद या कुछ गुलाबीरंगके होते हैं इसका फल दबा हुआ होता है। यह वनस्पति पानीके किनारे भीने स्थानोंपर ज्यादा पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव,—

यह वनस्पति मूत्रल, ग्राही और शीतल होती है। इसके खानेसे दूध बहुत बढ़ता हैं। सीलोन और मेडागस्करमें इसका उपयोग दुग्धवर्धक औषधिकी तरह होता है। इसकी छाल या पत्तोंका रस गायके घी के साथ सर्पदंशपर पिलाया जाता है। जलन करनेवाले फोड़ोंपर इसके पत्तोंका लेप करनेसे शांति होती है।

—

जलकन्दरा

नाम—

हिन्दी, यूनानी—जलकन्दरा।

वर्णन—

यह वनस्पति प्याजकी तरह सफेद होती है और तालाबों के किनारों पर पैदा होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमत से यह तीसरे दर्जे में गरम और दूसरे दर्जे में खुश्क है। यह तिल्ली को फ़ायदा पहुँचाती है। जोड़ों के दर्द को मिटाती है इसका अर्क कानमें डालने से कानका दर्द मिटता है। इसका तेल फालिज में लाभ पहुँचाता है। इसका काढ़ा वमन कारक होता है।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जलकेशर

नाम—

हिन्दी, यूनानी—जलकेशर।

वर्णन—

यह एक बड़ा और तनेदार पेड़ होता है। इसकी डालियां बड़ी २ होती हैं। इसके पत्ते इमलीके पत्तों की तरह बहुतायतसे होते हैं। इसमें हमेंशा फूल खिले हुए रहते हैं। हर फूलमें ५ पँखड़ियाँ होती हैं। इन फूलोंमें किसी का रंग सन्दली, किसी का पीला और किसी का सफेद होता है। इन फूलोंके बीच में लाल रंगके केशर की तरह रेशे होते हैं। इन रेशोंकी नोकपर चांवलों की तरह एक वस्तु लगी हुई रहती है। इसकी फली करीब २।३ इञ्च लम्बी और चपटी होती होती है। इस फली में बीज होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क होती है। मलको फुलाने वाली और दस्तावर है। गठिया, ग्रन्थिवात, और सूजनके लिये इसको पीना और इसकी धूनी देना मुफीद है। इसका फूल खुशबूदार होता है यह कब्ज पैदा करता है और दिलकी धड़कन को मिटाता है। इसके पत्तों को खानेसे औरतों के स्तन बढ़ जाते हैं। इसके पत्ते सुजाक और प्रमेह में अच्छा लाभ रहुंचाते हैं।

सुजाक—जलकेसर के पत्तोंका स्वरस १ तोला, लहसुनकी १ गठान, गायका घी ६ तोला। इन सब चीजोंको मिलाकर प्रातःकाल चाट लें और भोजनमें नमक खाना छोड दें। इस औषधिके सेवनसे एक ही दिन में सुजाक में लाभ होता है

—

जलनीम

नाग—हिन्दी—यूनानी—जलनीम।

वर्णन—

खजाइनुल अदवियामें लिखा है कि जिस जगह पर पानी भरा रहता है उस जगह पर यह पेड़ पैदा होता ह। इसके पत्ते छोटे खुरपे के पत्तोंकी तरह होते हैं। इसकी शाखाएं बहुत पतली होती हैं। स्वादमें यह बहुत कड़वा होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह खूनको साफ़ करता है। वात संबंधी बीमारियों को मिटाता है। कोढ़, आतशक और खुजलीमें लाभ दायक है। कफ और वातके विकारों को दस्तकी राह निकाल देता है। इसको तेलमें मिलाकर मालिश करनेसे तर खुजलीमें लाभ होताहै। हरे जलनीमका रस निकाल कर उसको तिल्लीके तेलमें सिद्ध करके अगर सिरकी गंज और खुजली पर लगायाजाय तो बड़ा फायदा होता है।

जल पिप्पली

नामः—

संस्कृत—जल पिप्पली, शार्दी शकुलादनी, मत्स्यगन्धा, लांगली, महाराष्ट्री, तोय वल्लरी, अग्नि ज्वाला, चित्रपत्री, प्राणदा, तृणचीता, बहुशिखा। हिन्दी—जल पिप्पली, भुइओकरा, पनसिगा, गंगतिरिया। बंगाल—पानी कंचिरा, कांचड़ाघास, पनिसिगा। मराठी—जल पिप्पली, रतवेल। गुजराती—रतवेलियां। मलयालम—काटू तिप्पली। तामील—पोट्टूदले। तेलगू—बोक्केन। फारसी—पीपल आबी। अरबी—फिलफिल अलमा। अंग्रेजी—Purple Lippia (परपल लीपिया) Lippia Nodiflora (लीपिया नोडीफ्लोरा)।

वर्णन—

यह क्षुद्र जाति की बनस्पति सब दूर पानीके आश्रय से पैदा होती है और बारहों महीने ताजी मिल सकती है। इसके पौधे जमीन पर फैले हुए रहते हैं। इसके पत्ते नीचे से संकड़े और ऊपरसे चौड़े रहते हैं। इसके फूल पीले, सफेद, गुलाबी और कुछ बैंगनीपन लिये हुये रहते हैं इसके फल पीपल की तरह मगर उनसे कुछ छोटे होते हैं। हर एक फलमें हरे बीज रहते हैं। इसके पत्ते चनोंके पत्तों की तरह होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वैदिक मत— निघंटु रत्नाकर के मतानुसार जल पीपल हृदय को हितकारी, नेत्रोंके लिए लाभदायक, कड़वी, शीतल, मूत्रल और ज्वरनाशक तथा स्तम्भक होती है। यह शुक्रजनक, हलकी रूखी, तीक्ष्ण, कसेली, मुंहको शुद्ध करनेवाली, रुचिकारक, अग्निदीपक और वातकारक होती है। यह रुधिर विकार, रसदोष, कृमि, दाह, व्रण, श्वास, कफ, चित्तभ्रम, मूर्छा, तृषा तथा पित्तज्वर को दूर करती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इस वनस्पति को पीसकर सूजन पर बांधनेसे जलन कम होजाती है। इस वनस्पति को जरा भूनकर और उसकी फांट बनाकर देने से बच्चों की सरदी और स्त्रियों के प्रसूति रोग दूर होते हैं। जहरीले फोड़े फुन्सियों पर इसको पीसकर लगानेसे बड़ा लाभ होता है इसके पत्तों का रस निकालकर उसको गरम करके शहद के साथ चटाने से बच्चोंके पेट का बोझ कट जाता है।

यूनानी मत— यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। काली मिरचसे इसकी गर्मी और तेजी कम है। यह पेशाब अधिक लाती है। वात, पित्त और कफ की खराबी को दस्त की राहसे निकाल देती है। आतशक (गर्मी) और खारिश में भी यह मुफीद है। इसको ६ माशेकी मात्रामें पानीके साथ पीसकर लेनेसे अच्छा जुलाब हो जाता है। दिल और आंखके लिए यह फायदे मंद है। इसके सेवन से कामेन्द्रिय की शक्ति बढ़ती है। सीने की जलन और रक्त विकार को यह दूर करती है। इसके लेपसे बादी का दर्द और कफ की सूजन मिट जाती है। मुंह की झाईं, दाद और आंखों परके काले दाग इसके लेपसे मिट जाते हैं।

इसकी लाल फूल वाली जाति के बीजों को जीरेके साथ देने से वमन, प्यास की अधिकता और जी की मिचलाहट मिट जाती है। इसकी जड़ को दांतमें रखनेसे दांतका दर्द मिट जाता है। मगर ज्यादा टाइम तक रखनेसे दांत गिर जाते हैं।

मात्रा— यूनानी मतसे इसकी मात्रा ७ माशे तक है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति पेचिश और पागलपन में उपयोगी है।

जलबेंत

नाम—

संस्कृत—जलबेतस, वानीरः, नादेयः, परिव्याधः। हिन्दी—जलबेंत। गुजराती—जलवेतस। मराठी—जलवेतस। बंगाली—जलवेत। तेलंगी—प्रब्बहब्बे। द्राविड़ी—नीरवजि। लेटिन—Calamus Fasciculatus (केलेमस फेसकिक्यूलेटस)।

वर्णन—

वर्णन—जलबेंतके झाड़ बंगाल, उड़ीसा, चटगाँव, बरमा, आदिमें पैदा होते हैं। इसका पौधा जब छोटा रहता है तबतक खड़ा रहता है और जब ज्यादा बड़ा होता है तब दूसरे वृक्ष और झाड़ियों के आसरेसे बढ़ता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण, दोष और प्रभाव—

जल वेंत शीतल, कड़वी, कसेली, बातकारक, ग्राही और रूक्ष होती हैं। यह व्रणको शुद्ध करने वाली और पित्त, धिर रुधिकार और कफको नष्ट करनेवाली होती है।

जलब्राह्मी

नाम—

हिन्दी—जलब्राह्मी।

गुण—

यह वनस्पति सिलहट और बंगालके पूर्वी हिस्सेमें काश्तकी जमीन में पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानीमतसे यह सर्द, कड़वी और दस्तावर होती है। पित्त और चर्मरोग सम्बन्धी बीमारियोंमें यह मुफीद है। इसके पत्तोंके स्वरसको बकरीके दूधके साथ पिलाने से पेशावकी जलन बंद होजाती है और सुज़ाकमें लाभ होता है। इसके पत्तोंको पीसकर पेशानी(ललाट)पर लेप करनेसे सिरकी गर्मी निकल जाती है। पाचन शक्तिकी कमजोरी और पित्तसे पैदा हुए उपद्रवोंमें भी यह लाभदायक है। इसके रसमें शहद मिला कर पिलानेसे छोटी चेचकमें बहुत लाभ होता है।

जल महुआ

नाम—

संस्कृत—जलमधुकः, मंगल्यः, दीर्घपत्रकः, गोरिकाख्य। हिन्दी—जलमहुआ। गुजराती—जलमहुड़ो। बगाल—जलमौल। लेटिन—Bssia Longifolia (बेसिया लॉंगिफ़ोलिया)।

वर्णन—

जल महुएके वृक्ष दक्षिण हिन्दुस्तान, सीलोन और कनाड़ामें होते हैं। इसके वृक्ष महुएके समान होते हैं। इसमें एक किस्मका गोंद लगता है। इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाता है। यह तेल आधा जमा हुआ और पीले रंगका होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे जलमहुआ मधुर, व्रण नाशक, वीर्यवर्धक, शीतल, बलवर्धक और रसायन है। इस महुएका तेल चर्मरोग सम्बन्धी बीमारियों में काममें आता है। इसके फूल हलके और दस्तावर होते हैं। इसके पत्ते और इसकी छालका रस कब्जियत करता है। इसके दूसरे गुण साधारण महुएके समान होते हैं।

जलसिरस

नाम—

हिन्दी—जलसिरस, ढाढोन, हेते मुरिया। संस्कृत—अम्बुशिरीसिका, शिंवदिनिका, दुर्बला, झिंगी, झिंगिनी। मराठी—जल शिरसि। मुण्डारी—तिरुपसिंग। तेगेलाग—मबुलो। लेटिन—Trichodesma Zeylanicum (ट्रिकोडेस्मा झेलेनिकम)।

वर्णन—

यह वनस्पति गुजरात, कोकण और मद्रास जिलेके सभी खुश्क स्थानों पर पैदा होती हैं। यह एक वर्ष जीवी वनस्पति है। इसका वृक्ष ३० से लगाकर ६० सेंटिमीटर तक ऊंचा होता है। इसका पिंड मोटा और बैंगनी रंगका रहता है। इसके पत्ते ५ से लगाकर १० सेंटिमीटर तक लम्बे और १.३ से २.५ सेंटिमीटर तक चौड़े होते हैं। इसके फूल हलके नीले रंगके होते हैं। इसका फल पकने पर भूरे रंगका हो जाता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतानुसार यह वनस्पति धवलरोग, बवासीर, विषके उपद्रव और त्रिदोषमें लाभदायक है। इसके पत्ते स्नेहन और मूत्रल होते हैं।

जलाधारी

नाम—

संस्कृत—अश्वघ्न, अतितेजनी, लघु वल्कला, पारिजाता, तिक्ता। हिन्दी—जलाधारी, पेफली, बुद्रुङ्ग। बम्बई—चिहफल, कोकली, सेसल, टेफल, तैसूल। गुजराती—तेजबला। मराठी—तेजबल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आसाम—ओजोनली। बंगाल—बाक्कीनली। कनाड़ी—झुमिना, जिमी। नेपाल—तिमूर। तामील—इरतचेंई। तेलगू—रचा। लेटिन—Zanthoxylum Budrunga (झैंथोक्सिलम बद्रुङ्गा)।

वर्णन—

यह वनस्पति कोकण, ट्रावन कोर, म्हैसूर, मलाबार, उड़ीसा, सिलहट, खासिया पहाड़ियां, चिट गांव, पेगू, इत्यादि स्थानों पर पैदा होती है। इसकी छाल फीके पीले रंगकी और काँटेदार होती है। इसके फूल चार पँखड़ी वाले रहते हैं। इसका फल गोल, बीज लम्ब गोल, नीले और काले रंगके, चिकने व चमकीले रहते हैं।

गुणदोष और प्रभावः—

आयुर्वेदके मतानुसार इसका फल गरम, पाचक, कडुआ और क्षुधावर्धक होता है। यह कफको नष्ट करके दमा और वायु नलियोंके प्रदाहमें फायदा पहुँचाता है। हृदयरोग, कुक्कर खाँसी, बवासीर और मुँह, दांत तथा गलेके रोगोंमें भी यह मुफीद है।

यूनानीमत—यूनानी मतसे यह गरम, सुगान्धत, खुश्क, उत्तेजक संकोचक, और पाचक गुण—वाला होता है। अग्निमांद्य और अतिसारमें यह लाभ पहुँचाता है।

गोआमें इसकी जड़की छाल गुर्देके लिये जुलाबका काम करनेवाली मानी जाती है। हैजेकी बीमारी में इसके फलको अजवायनके साथ पीसकर रोगीको पिलाया जाता है। सन्धिवातमें इसके फलको शहदके साथमें दिया जाता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह संकोचक, उत्तेजक और अग्निवर्धक है। इसमें '२४ प्रति सैकड़ा उपक्षार रहते हैं।

जलमदास

नाम—

हिन्दी—जलमदास कनाड़ीज—अनाऊ, हुलेतलास। मलयलम—अतुवन्नि। तामील—अतुगंजि। लेटिन—Sarcocephalus Missionis सारकोसेफेलस मिसियानिस—

ब० विवरणः—यह एक छोटा वृक्ष होता है। इसके पत्ते १० से लगाकर १५ सें०मी० लम्बे और ३-८ से ५-७ सें० मीटर चौड़े होते हैं। ये अण्डाकार और नुकीले होते हैं। पत्ते ऊपरकी तरफ चमकीले रहते हैं। इनकी खास नसें १०से लगाकर १२तक होती हैं। इसके पत्रवृन्त १३ मीली मीटर लंबे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होते हैं। इसके फूलोंका आकार २·५ से ३·२ सें० मी० होता है। इसकी पुष्पकटोरी रुएंदार रहती है। इसका फूल गोल होता है। इसके बीज मोटे और काले रहते हैं।

उत्पत्तिस्थान—यह वनस्पति उत्तरी कनाड़ा और मद्रास प्रेसिडेंसीके समुद्री किनारेपर होती है। यह मलाया और त्रावनकोरमें भी १५०० फीट की ऊंचाईतक होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

इसका छालको चूर्णके रूपमें दिया जाय या काढ़ेके रूपमें दिया जाय तो कोढ़,व्रण, संधिवात और कब्जियतमें उपयोगी होता है।

क० चौपराके मतानुसार—इसका पिसाहुआ छिलटा या काढ़ा कोढ़, व्रण, संधिवात और कब्जियतमें उपयोगी होता है।

जलूर

वर्णन—

हिन्दी—जलूर, मालजन, मालघन, महुल, मालो, मालू, मउलैन, मउरैन। मराठी—चंपल चांविल, चंबुल, चंबुरा, चरबोर, मालजिन। पंजाब—तउर। बंगाल—चेतुर। कनारी—अनेपादु, कंविहु। मध्यप्रदेश—महालन, मडल, सिहार। डेकन— चंबोलि। गुजराती—चंबेलि। गढ़वाल—मालु। मलयलम—मोतनोवल्लि। मुंडारि— रोरुंगनारि। नेपाल— बोरला। तामिल—मंदारि। तेलगू—अदत्तिगे, मदादु, मुदुपु। उरिया—सिआली। लेटिन—Bauhinia Vahlli (बौहिनिया वाहलि)

उत्पत्ति स्थान— यह वनस्पति सारे भारतवर्षमें पहाड़ी भागोंमें होती है। यह एक पराश्रयीलता है। इसका छिलका कुछ खुरदरा और लाल बादामी अथवा काले रंग का होता है। इसके कोमल हिस्से रुएंदार रहते हैं। इसके पत्ते कटे हुए रहते हैं। ये २.५ से ८ सें० मीटर तक लंबे होते हैं। इसका पत्र वृन्त ७.५ से १५ सेंण्टि मीटर लंबा और मोटा होता है। इसके फूल ३·८ से ५ सें० मीटर तकके आकारके होतेहैं। इसके पापड़े २३ से ३० सें० मीटर तक लंबे और ५ से लगातार ७.५ सें० मीटर तक चौड़े होते हैं। इनमें ६ से लगाकर १२ तक बीजे होते है। ये चपटे और गहरे बादामी रंगके रहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण दोष और प्रभाव—

इसके बीज पौष्टिक और कामोत्तेजक गुण वाले होते हैं। इसके पत्ते शान्तिदायक और लुआबदार होते हैं।

क० चौपराके मतानुसार इसके बीज पौष्टिक और कामोद्दीपक होते हैं। इसके पत्ते शांतिदायक और लुआबदार होते हैं।

जवासा

नाम—

संस्कृत—अधिकंटक, अनंत, बहुकंटक, बालपत्रा, दुर्लभा, दीर्घमूला, कचूरा, त्रिपर्णिला। विषघ्ना, यवासा, यवसका, कंटकी, गांधारी, गिरिकर्णिका। हिन्दी—जवासा, जुनवासा, यवासा। बंगाल—दुर्लभा, जवासा। बंबई—जवासा। गुजराती—जवासा। मराठी—जवासा, करटे चुम्बका। सिंध—कशखेंदरो, उश्तुरखार। उर्दू—जवासा, फरकीयून। फ़ारसी—खरेबुज, खारीशुतर, उश्तर खार। अङ्गरेजी Camel phorn (केमल फोर्न)। लेटिन—Alhagi mawrorum (अलहगी मारोरुम)।

वर्णन—

जवासेके छुप काँटेदार होते हैं इसमें दूर २ पर बारीक २ पत्ते लगे हुए रहते हैं। इसके फूलोंका रंग ललाई लिये हुए होता है। कलियाँ भी ललाई लिये हुए चमकदार तीखी नोकवाली होती है। इन कलियोंमें १ से लेकर ८ तक बीज निकलते हैं। इस पौधेपर गर्मीके दिनोंमें पत्ते और फूल आते हैं। इसलिए ढोरोंके लिये गर्मीमें यह हरे घासका काम देता है। यह वनस्पति गुजरात, सिंध, उत्तरी हिन्दुस्तान, पंजाब, इत्यादि प्रान्तोंमें नदी, नाले और तालाबोंके किनारेपर बहुत पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे जवासा स्वादिष्ट, कड़वा, कसेला, शीतल और हलका होता है। यह शांतिदायक पाचक, ज्वर निवारक, पौष्टिक, मृदुविरेचक, मूत्रल तथा वात और कफको नष्ट करता है। शरीरके मोटेपन को भी यह दूर करता है। मस्तिष्ककी पीड़ा, कोढ़, चर्मरोग, वायुनलियों का प्रदाह, प्यास और नाकसे होनेवाले रक्तश्रावमें भी यह लाभदायक है।

इस वनस्पतिमें कफनाशक, स्वेदजनन, मूत्रल और आनुलोमिक ये चार धर्म रहते हैं। इसका आनुलोमिक धर्म बहुत सौम्य है और मूत्रल धर्म भी बहुत थोड़ा है। सिर्फ इसका कफनाशक धर्म बहुत महत्व पूर्ण और प्रभावशाली है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कफ रोगोंकी प्रथम अवस्थामें जवासा बहुत उपयोगी होता है। इससे गलेमें और श्वास नलिकामें तरी आजाती है। जिससे खाँसीका कष्ट कम हो जाता है और कफ पड़ने लगता है। गलेके भिन्न २ भागोंकी सूजन, श्वासनलिककी सूजन तथा श्वास मार्गके दूसरे रोगोंमें जवासेका काढ़ा तथा जवासेके काढ़ेका बफारा देनेसे बड़ा लाभ होता है। इसको कंटेरीके साथ दिया जाता है। दमेके रोगमें जवासेके अवलेहको गरम पानीके साथ देनेसे अथवा जवासेको चिलममें रखकर पीनेसे दमेका वेग कम होजाता है।

जवासेके पौधेपर कुदरती तौरसे एक प्रकारकी शक्कर जमती है। हिन्दुस्तानमें तो यह थोड़ी मात्रामें जमती है मगर ईरान, बुखारा और खुरासानमें अधिक मात्रामें जमती है और वहाँसे इकट्ठी होकर हिन्दुस्तानमें आती है। इस शक्करको संस्कृतमें यास शर्करा और चालू जबानमें तुरंजबीन कहते हैं। यह शक्कर खानेमें मीठी, पचनेमें कड़वी, कफको नष्ट करने वाली और दस्तको लाने वाली होती है।

चरकके मतानुसार जवासा प्यासको मिटानेवाला, हिचकीको बन्द करनेवाला, दमेको नष्ट करने वाला और अर्श नाशक होता हैं।

यूनानीमत—यूनानी मतसे यह वनस्पति स्वादमें कड़वी और खराब रहती है। यह विष नाशक, फोड़ोंको पकानेवाली और मृदु विरेचक होती है। बवासीर, आधा शीशी और नेत्रोंकी अस्वच्छता में भी यह लाभ दायक है। इसके पत्तोंसे प्राप्त किया हुआ तेल संधिवातमें लाभ पहुँचाता है। इसके फूल बवासीरके लिये लाभ दायक हैं। इसका पौधा मृदुविरेचक, पित्तनाशक, कफ़निसारक और मूत्रल होता है। यह कामोद्दीपक, हृदयको शुद्ध करनेवाला और वमनको मिटानेवाला होता है। दमा, बवासीर और छोटी मातामें भी यह लाभ दायक है।

कोकणमें इस वनस्पतिको तम्बाकू, अजवायन और काले धतूरे के साथ चिलममें रखकर पीनेके काममें लेते हैं। इस धूम्रपानसे दमे में बहुत लाभ होता है।

डायमाकके मतानुसार इसके पत्तोंसे जो तेल तैयार किया जाता है। वह संधिवातकी तकलीफको दूर करनेके काममें लिया जाता है। इसके फूलोंको बवासीरकी पीड़ा दूर करनेके काममें लेते हैं। कर्नल चोपराके मतानुसार यह मृदु विरेचक, मूत्रल और कफ निस्सारक होता है।

जस्त

नाम—

संस्कृत—यशदम्, रीति हेतु, श्वेत पटलम्। हिन्दी—जस्त। गुजराती—जश्त। बंगाल—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दस्ता। मराठी—जश्त। पंजाब—जसद। तेलगू—तेलसत्तू। फारसी—रुए तूतिया। अरबी—शबहा। लेटिन— Zincum(झिंकम)।

वर्णन

जस्त यह एक सुप्रसिद्ध धातु है। यह मद्रास, बंगाल, राजपूताना, पंजाब आदि कई स्थानोंमे खानोंसे निकलता है। इसका रंग सफेद होता है। इससे पानीकी बोटलियाँ, गिलास, सुराहियाँ, हुक्के, इत्यादि बनाये जाते हैं। यह पानीसे आठ गुना भारी होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे जस्त कड़वा, कसेला, शीतल, कफ पित्त नाशक, नेत्रोंके लिये लाभदायक और प्रमेह पांडु तथा श्वासको नष्ट करने वाला है।

पुराने घीमें जस्तको घिसकर आँखोंमें लगानेसे आँखों की पित्त सम्बन्धी बीमारियां मिटती हैं। इसकी भस्मको घीमें मिलाकर गर्मीके फोड़े फुन्सियों पर लगाते हैं। बच्चोंके कानोंके पीछे या हाथ पैरों की ऊंगलियोंके बीच जो चांदी पड़ जाती है उसपर इसका सफेदा बुरबुरानेसे बहुत लाभ होताहै। सरसोंके तेलमें जश्तको रगड़कर मलनेसे पित्तसे पैदा हुई सूजन मिट जाती हैं।

यूनानी मत—यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। इसके बर्तनमें रखी हुई अर्क वगैरह चीजें दूसरी धातुओंके बर्तनों की अपेक्षा कम बिगड़ती है। इसके बर्तनमें खाना खाने या पानी पीनेसे दिल और मेदाको शक्ति मिलती है, इससे दिलकी धड़कन भी दूर होती है। इसका सफेदा बनाकर आंखमें लगानेसे आँखका दुखना मिट जाता है।

जस्तको शुद्ध करने की विधि—जो जस्त भारी, सफेद, चमकदार और दाँतों के समान मोटे रवे वालाहो वही उत्तम समझा जाता है। उसीको खाने और अञ्जनके काममें लेना चाहिये। ऐसे उत्तम जस्त को लेकर पहिले दूसरी धातुओंकी तरह सात२बार काँजी, गौमूत्र इत्यादि सातों चीजोंमें बुझाले, उसके पश्चात् उसको २१ बार गला २ कर गायके दूधमें बुझाना चाहिये। यह ख़याल रखना चाहिये कि ऐसी गली हुई धातुएं दूध, गोमूत्र या पानीमें बुझानेसे एक दम उछलती हैं। इसलिये जिस बर्तनमें उसे बुझाया जाय उस बरतनके ऊपर चक्कीका पाट या कोई ऐसा पत्थर रख देना चाहिये जिसके बीचमें छेदहो और उसी छेद की राहसे धातुको उसमें बुझाना चाहिये। इस क्रियाके पश्चात् जस्ता शुद्ध हो जाता है।

जस्तको भस्म करनेकी विधि—१ सेर शुद्ध किये हुए जस्तेको लोहेकी कढ़ाहीमें डालकर "तालादि भस्मकरी" भट्टीके ऊपर तेज़ आंचसे तपावे और लोहेकी कलछीसे चलाते जायँ। जब उसमें आगकी ज्वाला उठने लगे तब उसमें नीमके पत्तोंका स्वरस डाले। जब १ सेर रस उसमें खप जाय तब रस डालना बन्द करदें और अग्नि चालू रक्खें। जब जस्तेकी बिलकुल भस्म हो जाय तब उसको

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ठंडी करके कपड़ेमें छानले। यदि उसमें कुछ अंश कच्चा नजर आवे तो उसको भी कढ़ाहीमें डालकर नीमके रसके साथ पकावें। ऐसा करनेसे सब जस्तकी उत्तम भस्म बन जावेगी। कोई २ वैद्य इस भस्म को घी गुवारके रसमें घोटकर टिकिया बनाकर गजपुटमें फूँक देते हैं। ऐसा करनेसे यह भस्म और भी गुणकारी होजाती है।

इस भस्मका अँजन करनेसे नेत्रोंको बहुत लाभ होता है। आयुर्वेदमें जितने भी नेत्र हितकारी प्रयोग है उन सबमें इसको मिलानेसे वे ज्यादा गुणकारी हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह भस्म श्वास, खाँसी और कफ रोगोंमें भी बड़ा लाभ करती है।

जस्त भस्मकी दूसरी विधी—१सेर शुद्ध जस्तेके चूर्णमें पावभर शुद्ध गंधक मिलाकर लोहेकी कढ़ाही में डाल दे और उसमें अरंडीका तेल इतना डालें कि जिसमें वह चूर्ण डूब जाय। बादमें उस कढाहीको भट्टी पर रखकर तीव्र आँच दे और चूर्णको लोहेकी कलछीसे चलाते जाँय। जब तेल और गंधक बिल कुल जल जाय और जस्तेकी भस्म होजाय तब कढ़ाही ठंडीकर भस्मको छान ले। उसके बाद उस भस्मको घी गुवारके रसमें घोट कर टिकियाएँ बनाकर सुखा ले और उन टिकियाओं को मिट्टीकी हाँडीमें बंद कर उस हांडी पर कपड़ा मिट्टी करके गज पुटमें फूंक दे। जस्तकी उत्तम भस्म तैयार हो जायगी।

मात्रा—जस्त भस्मकी साधारण मात्रा २ रत्तीकी है। इसको पित्तज्वर और रक्तातिसारमें छुहारे और चाँवलके धोवनके साथ, शीतज्वरमें लौंग और अजवायनके साथ तथा अतिसार वमन और जीके मिचलानेमें मिश्री और जीरेके साथ देना चहिये। इस भस्मको पुराने घी के साथ खाने से नेत्रोंकी ज्योति बढ़ती है। पानके साथ खानेसे प्रमेहमें लाभ होता है। पंचकोल (पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक और सोंठ) के साथ खानेसे मन्दाग्नि दूर होती है और त्रिगंधक (इलायची, दालचीनी और पत्रज) के साथ खाने से सन्निपात मिटता है। इसको ६ माशे अद्रकके रस और ६ माशे शहदके साथ चटानेसे खाँसी और दमा मिटजाता है। संदलके साथ इसे देनेसे सुज़ाक मिटता है। गोखरूके शरबतके साथ देनेसे पेशाब साफ होता है। तथा कौंचके बीज और मिश्रीके साथ इसको देनेसे प्रमेह और नपुँसकता नष्ट होती है।

अशुद्धजस्तेसे होनेवाली हानियाँ—अशुद्धजस्तेकी भस्म बनाकर सेवन करनेसे प्रमेह, अजीर्ण, भ्रांति, वमन, वातरोग, इत्यादि उपद्रव हो जाते हैं। जिसको ऐसे विकार पैदा हो जायं उसको २ तोला हरड़ और २ तोला मिश्री मिलाकार ३ दिनतक लेना चाहिये। इससे सब विकार शान्त हो जाते हैं।

जहरत अलमाह

नाम—

यूनानी—जहरत अलमाह।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

यह वस्तु खारे पानीकी झीलोंमें पैदा होती है। कोई २ इसे एक रोइदगी बतलाते हैं। जो बंद और रुके हुए पानीपर पैदा होती है। पानीके सूख जानेपर इसमें से शोरेकी तरह एक पदार्थ पाया जाता है जिसका रंग पीला और स्वाद तेज होता है और जिसमें मछली की तरह बास आती है। असली वह होती है जो जैतूनके तेलमें घुलनशील हो। पानीमें घुल जानेवाली असली नहीं होती।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह बहुत गरम, खुश्क, तेज औ चरपरा पदार्थ है। सूजनपर लगानेसे उसको फौरन बिखेर देती है। खराब, सड़े हुए, और फैलनेवाले जख्मोंको फौरन अच्छा करती है। तेलमें मिलाकर बदनपर मलनेसे थकावटको मिटा देती है। इसको बालोंपर लगानेसे बाल पतले पड़ जाते हैं। बदनपरके फोड़े फुन्सियोंके निशान इसके लगानेसे फौरन मिट जाते हैं। ऐसे कुष्ट रोगमें जिसमें बदनका चमड़ा फट फटकर गिरता हो और दर्द होता हो उसमें यह फायदा करती है। इसको २ रत्तीकी मात्रामें शिकंजबीनके साथ पीसकर चाटनेसे मृगी जाती रहती है। आंखमें लगानेसे आँखका जाला कट जाता है, ज्योति तेज़ होती है और आँखसे पानीका गिरना बंद हो जाता है।

मात्रा—इसकी मात्रा २ रत्ती से १ माशे तक है। ३ माशे की मात्रामें यह प्राणघातक विष हो जाता है।

दर्पनाशक—इसका दर्पनाशक अगर है।

जहरी सोनटक्का

नाम—

बाम्बे—जहरी सोनटका, पीलोकनेर, पिपलीकनेर। कनाड़ी—अरसिंह। मुण्डारि—अशावा। कोकणी—कनगिनी। लेटिन—Allamanda Cat artica एलेमेंडा केथेरेटिका।

उत्पत्तिस्थान—यह बनस्पति भारतवर्षके आम बगीचोंमें बोई जाती है।

विवरण—यह एक रुएंदार वृक्ष होता है। इसके पत्ते ३ या ४ के गुच्छेमें रहते हैं। ये बरछी आकार और तीखी नोक वाले होते हैं। इनकी लम्बाई १२ सें० मी० और चौड़ाई २·५ से ४ सें० मीटर तक होती है। इसका ऊपरी हिस्सा नुकीला रहता है। इसके फूल कुछ पीले रहते हैं। इसकी पुष्प कटोरी बरछी आकर और तीखी नोक वाली होती है। इसका बीज कोष ७ सें० मी० लंबा होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण, दोष और प्रभाव—

इसका छिलका जलोदर रोगमें उपयोगी माना गया है। यह जल शोषक है तथा एक बहुत तेज रेचक पदार्थ है।

इसके पत्ते भी साधारण मात्रामें लिए जाने पर एक अच्छे जुलाबका काम करते हैं।

मुण्डा जाति इसकी जड़को सर्प विषमें उपयोगी मानती है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह विरचक है। इसमें उपक्षार और ग्लूको साइडस रहते हैं।

जहर मोहरा खताई

नाम—

हिन्दी यूनानी—जहरमोहरा। अरबी—फ़ादजहर मादनी। इंग्लिश— Mineral Stone (मिनरल स्टोन) Serpant Stone (सरपंट स्टोन), Blezoar (ब्लेझर)।

वर्णन—

जहर मोहरा कुछ पीला, हरा और ललाइ की झलक लिये हुए साबुनके समान रंगवाला एक पदार्थ होता है। जो यूनानी औषधियाँ बेचने वाले गन्धियोंके यहाँ मिलता है। पानीके अन्दर घिसने पर जिस जहर मोहरेका सफेद रंग उतरता है वही उत्तम माना जाता है। एक हलकी जातिका जहर मोहरा भी आता है जो कुछ काले रंगका और कठिन होना है। वह सिर्फ बाह्योपचारके काम में आता है।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी ग्रन्थोंमें जहर मोहरा एक अत्यंत लोक प्रिय और प्रभावशाली औषधि मानी जाती है। कराबादीन कबीर नामक ग्रन्थमें लिखा है कि जहर मोहरेका अग्निमें रखनेसे उसमेंसे एक तरहका पसीना छूटता है। वह पसीना जीर्ण ज्वरके रोगीको खिलानेसे उसका ज्वर तत्काल दूर होजाता है। इसके अतिरिक्त यह औषधि जीर्ण ज्वर, अजीर्ण, वमन, अतिसार तथा हृदय, यकृत, पाचन क्रिया, मूत्रनाली और विषके उपद्रवोंको दूर करने के लिये बहुत प्रभाव शाली मानी जाती है। इसके सेवनसे मनुष्यके शरीरमें बल, वीर्य और कान्तिकी बहुत वृद्धि होती है।

यद्यपि यह वस्तु स्वयम् जहरीली नहीं है, लेकिन इसमें जहरको दूर करनेकी अद्भुत शक्ति पाई जाती है। साँप, बिच्छू अफीम, इत्यादि किसी प्रकारके जंगम स्थावर विषोंके उपद्रवमें इसको पानीमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

घिसकर पिलानेसे लगातार वमन होकर जहरका प्रभाव मिट जाता है। प्लेग, हैजा, मलेरिया, माता, इत्यादि रोगोंके हमले जब चल रहे हों उस समय जहर मोहरा ३।। रत्ती, जहरी टोपरा ३।। रत्ती, और निर्मली १।। रत्ती। इन तीनो चीजों को पीसकर गुलाब जलके साथ खिला देनेसे इसमेंसे किसी भी रोगके आक्रमण का भय नही रहता। अगर किसी पर हैजेका आक्रमण होजाय तो उसको यह औषधि दो २ घण्टेके अन्तरसे बराबर दीजावे तो दूसरे उपायोंकी अपेक्षा इससे जल्दी और अच्छा लाभ होता है।

यह औषधि अधिक गरम भी नहीं है और अधिक शीतल भीन हीं है। बल्कि समशीतोष्ण है। इस लिये यह हर प्रकृतिके मनुष्यके काम आ सकती है। फिर भी बालकोंके अजीर्ण, वमन, अतिसार और शोष रोगमें यह विशेष रूपसे लाभदायक है।

देश विदेशके जल और हवाके लगनेसे मनुष्य शरीरमें जो विकृति पैदा हो जाती हैं और उससे जीर्ण ज्वर, अतिसार, संग्रहणी, सूजन, निर्बलता, इत्यादि उपद्रव पैदा होते हैं उन उपद्रवोंको शान्त करनेमें यह एक प्रभावशाली औषधि है। इसी प्रकार हृदय, मस्तिष्क, लीवर और पाचन इन्द्रियको बल देनेमें भी यह आश्चर्य जनक कार्य करती है। इसको २ से ४ रत्ती तककी मात्रामें प्रतिदिन लंबे समयतक लेने से यह बहुत समयके लिये शरीरकी नींवको मजबूत कर देती है।

गर्मीके फोड़े-फुन्सी, जहरी सूजन, विस्फोटक, वगैरह रोगोंपर इसको गुलाबजल, चंदन अथवा नीमकी अन्तर छालके घसारेके साथ लगानेसे बहुत जल्दी लाभ होता है।

शीतलाकी बीमारीमें जहरमोहरा खताइ १ माशा, अनविधे मोती १ माशा, संगेशब १ माशा और कहरवा १ माशा इन सब चीजोंको गुलाब, केवड़ा और वेदमुश्कके अर्कमें एक दिन, और हल्दीके रसमें एकदिन घोटकर १ रत्तीकी गोलियाँ बनाकर प्रतिदिन १ गोली संध्या या सबेरे गायके दूधके साथ लेनेसे बड़ा लाभ होता है और माताके दाने बिना उपद्रवके निकल जाते हैं। अगर इसको नियमपूर्वक सेवन कराया जाय तो माता निकलनेका डर भी नहीं रहता।

बालकोंके सूखा रोगपर भी यह एक बड़ी चमत्कारिक औषधि है। उत्तम मोतियोंकी गुलाब जलमें घुटी हुई पिष्टी, बंशलोचन, केशर, इलायची और जहर मोहरा खताइ, इन पाँचों चीजोंको समान भाग लेकर गुलाबजलमें घोटकर मूंगके बराबर गोलियाँ बना लेना चाहिये। इन गोलियोंमें से प्रतिदिन सबेरे शाम और दुपहर एक २ गोली गायके दूधके साथ देनेसे बालकोंको होनेवाला सूखा रोग जिसको अंग्रेजीमें रिकेट कहते हैं. बिलकुल मिट जाता है। सूखा रोगके लिये यह प्रयोग बहुत उत्तम हैं।

इसी प्रकार यूनानी चिकित्साके अन्दर इस औषधिके मेलसे और अनेकों प्रभावशाली योग तैयार होते हैं। कामोद्दीपन के लिये भी इसके प्रयोग बनते है जिनका वर्णन यूनानी ग्रंथों के अन्दर देखना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बाजारके अन्दर नकली जहरमोहरा भी बहुत मिलता है। इस लिये यह वस्तु खरीदते समय इस बातका पूरा ध्यान रखना चाहिये कि असली चीज ही खरीदी जाय।

जाकूट

नाम—

यूनानी—जाकूट।

वर्णन—

यह एक प्रकार की रोइदगी है। इसका स्वाद कुछ खारापन लिये हुए मीठा होता है। इसका आकार प्रकार पालक से कुछ मिलता जुलता होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

यह बात और कफ के लिये लाभदायक है। जलोदर, सूजन, कुष्ट, शरीर की जलन, मसानेके रोग और बवासीर में यह मुफीद है। कब्जियत को भी यह दूर करती है। इसका अधिक सेवन करने से जिगर और मेदे को नुकसान पहुँचाता है।

जादा

नाम—

यूनानी—जादा।

वर्णन—

यह एक छोटी जाति का क्षुप होता है। इसकी २ जातियां होती हैं। एक पहाड़ी और दूसरी बस्तानी। पहाड़ी का पेड़ सफेद होता हैं। इसकी लम्बाई १ बालिश्त भरकी होती है। पत्ते छोटे २ होते हैं जो जमीन पर बिछे हुए रहते हैं। पत्तों के ऊपरी हिस्से पर रूआँ रहता है। किनारों पर बारीक २ कांटे होते हैं। डालियों के सिरों पर घुण्डिया रहती हैं। जिन पर बाल की तरह सफेद और बारीक तार लटकता रहता है। इन घुण्डियों में बीज भरे हुए रहते हैं। इसके फूल का रंग सफेद और पीलापन लिये हुए होता है। इसमें एक प्रकार की असह्य और खराब गन्ध आती हैं। इसका स्वाद कुछ कड़वा होता है। इसको फारसी में गुलअरबा या गुलअरनद कहते हैं।

इसकी जाति दूसरी बस्तानी होती है। जो बस्तियोंके आसपास गीली जमींनोंमें पैदा होती है। कुछ

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लोगोंके मतसे यह बाल छड़की एक जाति है। कुछ लोग इसको भांगरा बतलाते हैं और कुछ लोगोंके मतसे यह जंगली हंसराज और जंगली धनिये का दूसरा नाम है। इसके पत्ते पहाड़ी जादा के पत्तोंसे बड़े होते हैं और गन्ध भी कम होती है। यह वसन्त ऋतु में पैदा होती हैं और शरद ऋतु तक रहती हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी मत से यह दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। यह जहर के प्रभाव को नष्ट करनेवाला है। विरेचक, मूत्रनिस्सारक और मासिक धर्म नियामक है। यह वायुको बिखेरती है, खूनको साफ करती है, स्मरण शक्ति को बढ़ाती है। ताजा जखम पर इसके पत्ते को पीस कर लेप करने से बड़ा फायदा होता है। इसको ३॥ माशा की मात्रा में प्रतिदिन खाने से हर एक बात भूल जाने की आदत छूट जाती है। इसकी राख को सिरके और रोगन जैतून में मिलाकर सिर की गंज में लगाने से बहुत फायदा होता है। इसके पत्तोंका रस आँख में लगाने से आंखों की धुन्ध जाती रहती है और ज्योति बढ़ती है। इसके सेवन करनेसे शरीर का दूषित वात और कफ दस्त की राह निकल जाता है।

इसकी बड़ी जाति तिल्ली की सख्त सूजन को मिटाकर कामला और पीलिया को नष्ट करती है। तिल्ली की सूजन पर इसको सिरके में मिलाकर लेप करने से भी लाभ होता है। पेटके कृमि भी इसके खाने से नष्ट हो जाते हैं। सर्दी से पैदा हुआ जलोदर, गर्भाशय की खराबियां, मसानेकी पथरी और गृध्रसी बातमें भी यह वनस्पति लाभदायक है। बिच्छूके विष पर इसको ४ माशेकी मात्रामें पिलाने से और पीसकर काटी हुई जगह पर लगा देने से अच्छा फायदा होता है।

मुजिर—इसको अधिक मात्रा में लेने से यह सिर दर्द करती है और मेदेको नुकसान पहुंचाती है।

दर्पनाशक—इसके दर्प को नष्ट करने के लिये धनियाँ और बनफ़शा मुफीद है।

प्रतिनिधि—इसका प्रतिनिधि पहाड़ी पोदीना और अनार के बृक्षकी छाल हैं।

मात्रा—इसके पंचांगके चूर्ण की मात्रा ४ माशे तक है और काढ़े की मात्रा ८ तोला तक है।

जामुन

नाम—

संस्कृत—जम्बू, सुरभिपत्रा, नीलफला, श्यामला, महास्कंधा, मेघ मोदिनी, राजफला, शुक प्रिया।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हिन्दी—जामुन, जामन, कालाजामन, फलाँदा, फलिन्दा। बंगाल—जामगाछ, छोटाजाम, कालाजाम। बंबई—जांभूल, जाँबू, जाँबूड़ा। गुजरात—जामू, जाँमूड़ी, जांबो। आसाम—जाँबू। मैसूर—नरेली। कनाड़ी—जामूनरेली। पोरबन्दर—जाँबू। तामोल—अरुगदम्, कोटेनरूम। तेलगू—नेसदू। उर्दू—जामन, फलेंदा। लेटिन—Eugenia Jambolana (यूजेनिया जाम्बोलेना)।

वर्णन—

जामुनके वृक्ष हिन्दुस्तानमें प्रायः सब दूर पैदा होते हैं। इसकी ३।४ जातियाँ होती है। एक जाति नदीके किनारे होती है। उसके पत्ते कनेरके पत्तों की तरह और फल बहुत छोटे होते हैं। उसको जल जामुन कहते हैं। दूसरी जातिके पत्ते आमके पत्तोंकी तरह और फल मध्यम क़दके होते हैं इस जातिको जामुन कहते हैं। तीसरी जातिके वृक्ष बहुत ऊंचे और फैले हुए होते हैं। इनके पत्ते पीपल के पत्तों की तरह बड़े, चिकने और चमकदार होते हैं। इसके फल भी २ से २॥ इंच तक लम्बे और १ से १॥ इंच तक मोटे होते हैं। इस जातिको रायजामुन कहते हैं। यद्यपि इन तीनों जातियोंके गुण धर्म मिलते हुए है। फिर भी औषधि प्रयोगमें रायजामुनकी जाति विशेष गुणकारी होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे जामुनकी छाल कसेली, मलरोधक, मधुर, पाचक, रूक्ष, रुचिकारक तथा पित्त और दाहको दूर करने वाली होती हैं। इसके फल कसैले, मधुर, शीतल, रुचिकारक, रूखे, मलरोधक, वात वर्धक और कफ, पित्त तथा आफ़रेको दूर करने वाले होते हैं।

जामुनकी गुठली मधुर, मलरोधक, और मधुमेहको नष्ट करने वाली होती है। इसके अंकुर शीतल, रूखे, ग्राही, और आफरेको पैदा करने वाले होते हैं।

राय जामुन—मधुर, गरम, कसैली, स्वरशोधक, मलरोधक तथा श्वास, श्रम, मुखकी जड़ता अतिसार, कफ और खाँसी को दूर करती है। इसका फल रुचिकारक, मधुर, स्तम्भक, भारी, दोष नाशक और स्वादिष्ट होता है।

जल जामुन—कसेली, शीतल, कड़वी, भारी, पाकमें मधुर, पुष्टि कारक तथा दाह, अतिसार, रुधिर विकार, कफ, पित्त और श्रमको दूर करनेवाली होती हैं।

यूनानीमत—यूनानीमत से इसका फल तूरा, कसेला, मीठा और पौष्टिक होता है यह यकृत को पुष्ट करता है, दाँतों और मसूड़ों को मजबूत करता है, रक्तवर्द्धक है, पित्तके अतिसार को दूर करता है। इसके पत्तों की राख दाँत और मसूड़ों को मजबूत करने के काममें ली जाती है। स्वर भंग रोग में और गले के छालों में इसके पानी से कुल्ले किये जाते हैं। सिरके दर्द में इसका रस लगाने के काम में लिया जाता है। इसके फलका सिरका पौष्टिक, संकोचक, पेटके आफरे को दूर करनेवाला और शान्ति दायक होता है। इसका बीज संकोचक होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दस्तूर अल-तिब्ब नामक ग्रंथमें लिखा है कि जामुन आवाजको साफ करता है। थकावट, कफके दस्त, दमा, खांसी, मुंहकी ग्लानि, गलेकी बीमारियाँ और मेदेके कीड़ोंको नष्ट करता है।

यह दिलकी धड़कनको मिटाता है, रक्त विकारको दूर करता है, इसके खानेसे फोड़े फुन्सियोंका होना बंद हो जाता है। इसके शरबतसे वमन, जी मिचलाना, खूनी दस्त और बवासीरमें लाभ होता है। मधुमेहके रोगमें जामुनके सूखे बीजोंका चूर्ण २॥ रतीसे १ माशेतककी मात्रामें दिनमें ३ बार लेनेसे पेशाब के साथ शक्करका जाना बन्द हो जाता है। ऐसा देखा गया है कि इसके बीजोंके चूर्णको ५ ग्रेनकी मात्रामें दिनमें ६ बार देनेसे २४ घंटेके अन्दर ३।४ सेर पेशाब कम होने लगता है और पेशाबकी ग्रेविटी भी कम हो जाती है। जामुनके १ तोला मूलको साफ करके पावभर पानीमें पीसकर २ तोले मिश्री डालकर पीनेसे भी मधुमेहमें लाभ होता है। जामुनके २॥ पत्ते पानीमें पीसकर जहरीले जानवरके काटे हुए आदमीको पिलानेसे शांति मिलती है। जामुनके पत्ते, काली मिर्च और गुलदाउदी के फूल (अगरफूल न मिले तो पत्ते) तीनों को बराबर वजन लेकर पानी में पीसकर मोतीजरा और पानी झराके बीमार को पिलाने से उसकी बेचैनी मिट जाती है और शान्ति मिलती है।

जामुनके नरम और ताजा पत्तों को पानी में पीसकर उनसे कुल्ले करनेसे मुंह के खराबसे खराब छाले भी मिट जाते हैं। १ तोला जामुनके पत्तों को पावभर गायके दूधमें घोटकर ७ दिन तक पीनेसे बवासीरसे गिरने वाला खून बन्द हो जाता है। १ तोला जामुनके पत्तों को पीसकर पीने से अफीम का जहर उतर जाता है।

जामुनके बीज कब्जियत पैदा करते हैं। इसके बीजोंको आमकी गुठली और काली हरड़ के साथ बराबर वजन लेकर भूनकर पीसकर खाने से पुराने दस्त बंद हो जाते है। इसके बीजों के चूर्ण में बराबर शक्कर मिलाकर लेनेसे पेट से खून का आना बन्द हो जाता है। तंग जूतोंसे अगर किसीके पांव में जखम होजाय तो जामुन की गुठली को पानीमें पीसकर लगानेसे अच्छा हो जाता हैं।

कुचलेके जहर को उतारने के लिए इसकी सूखी गुठली का चूर्ण १० माशे की मात्रामें देना चाहिये। तिल्ली का बरम बिखेरने के लिए इसका रस १। तोले की मात्रामें देना चाहिये। अशुद्ध पारा या रस कपूर के खानेसे किसी का मुंह आजाय तो इसकी छाल के काढ़े से कुल्लियां करसे से अच्छा होजाता है। पथरी के रोगमें पकी हुई जामुनका फ़ल खिलानेसे लाभ होता है।

जामुन का सिरका— पके हुए जामुन के सिरके से पेटमें होनेवाला वायु का दर्द मिट जाता है। तिल्ली के बीमार को पकी हुई जामुन का सिरका ३ माशे से ७॥ माशे की मात्रामें देनेसे बढ़ीहुई तिल्ली आराम हो जाती है।

मधुमेह रोग और जामुन—

आधुनिक खोज के अन्दर इस वनस्पति ने मधुमेह रोग को नष्ट करने के अन्दर तथा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पेशाब के साथ जानेवाली शक्कर की मिकदार को कम करनेके सम्बन्ध में बहुत ख्याति प्राप्त की है। सबसे पहले डाक्टर सी० ग्रेसरने इस विषय में कई परीक्षण किये और उन्होंने इसका वर्णन भी दिया है। उन्होंने सबसे पहले कुत्तोंके अन्दर कृत्रिम रीति से मधुमेह रोगको पैदा कर उसको नष्ट करनेके लिए अनेक प्रयोग किये और अन्तमें अत्यन्त संतोषके साथ में उन्होंने यह सिद्ध किया कि जामुन के फलों की गुठली पेशाबके अन्दर जानेवाली शक्कर को थोड़े समय में ही कम कर डालती है।

इसके पश्चात् डॉक्टर आर० एल० दत्तने उग्र मधुमेहके २ केसोंमें इसकी गुठलीको देकर यह बतलाया कि इसकी गुठलीको देनेसे बार २ उतरने वाला पेशाब और उसमें जानेवाली शक्करकी मिकदार सिर्फ १ सप्ताहकी मियादमें ही कम होगई और रोगी स्वस्थ मनुष्यकी तरह होगये।

इसे शिअलस् ऑफ माडर्न ट्रीटमेंट आफ डिसीजेस नामक ग्रन्थमें लिखा है कि जामुनके फलोंकी मग़ज मधुमेहके रोगमें औषधिकी तरह दी जाती है. और इस रोगमें सरेसकी तरह चिपकनेवाले पदार्थकी उत्पत्ति और उसको शक्करके रूपमें परिवर्तित होने से यह रोकती है। इस कार्यके लिए इसकी गुठलीसे बनाया हुआ एक्स्ट्रैक्ट जांबोलिन लिक्विड विशेष अनुकूल पड़ता है। इसकी मात्रा आधे ड्रामसे २ ड्राम तककी होती है और इसकी गुठलीके चूर्णकी मात्रा २॥ रत्ती से १५ रत्ती तककी होती है।

बम्बईके इण्डियन मेडिकल डिपार्टमेंटके सर्जन डी०एन० पारिखका मत है कि इसके फलोंकी सूखी गुठलियोंका चूर्ण अगर मधुमेह रोगमें दिया जाय तो वह पेशाबमें जानेवाली शक्करके परिमाण को बहुत शीघ्रतासे रोक देता है।

गुजरातीके सुप्रसिद्ध मासिकपत्र वैद्य कल्पतरुके सन १९३२ के अगस्त मासके अंकमें वैद्यराज बलवंतरायने मधुप्रमेहके ऊपर अपने अनुभवसे एक लेख लिखा था उसमें उन्होंने बतलायाथा कि मधुप्रमेह अथवा पेशाबके साथ शक्कर जानेका रोग अक्सर हमेशा एक ही स्थानपर बैठे रहनेवाले कितने ही लोगों को लगभग ४० वर्षकी उमरके पश्चात् होता हैं। इस रोगसे धीरे धीरे रक्त दूषित होता है, शक्ति घटती है, पाचन क्रिया विपरीत हो जाती है। शरीरके अवयव बराबर काम नहीं करते, जिससे शरीर शिथिल होजाता है। इस रोगसे पीड़ित बहुतसे रोगी डॉक्टरोंकी औषधियाँ करके, वैद्योंकी भस्में खाकर तथा बहु मूल्य पेटेंट दवाइयोंसे निराश होकर हमारे परिचयमें आये हैं। ऐसे रोगियोंके ऊपर अनेक प्रकारके प्रयोगोंकों अजमानेके पश्चात् एक सादा किन्तु प्रभावशाली प्रयोग हमारे अनुभवमें आया है। जो वैद्य वसन्त कुसुमाकर और स्वर्ण बंगके समान मूल्यवान औषधियों को देनेके पश्चात्भी अपने रोगियोंको आराम न कर सके हों और जो डॉक्टर इन्स्यूलीन और ट्राइप्सोजनके समान औषधियों को देनेके पश्चात् भी पूर्ण सफलता प्राप्त न कर सके हों उनको इस सादे प्रयोगकी परीक्षा अपने रोगियोंपर करनेकी मैं सूचना देता हूं। वह प्रयोग इस प्रकार है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बड़े राय जामुन के वृक्षकी छालको लाकर उसको सुखाकर, जला डालना चाहिये। जिससे सफेद भूरे रंगकी भस्म तैय्यार होगी। इसको खरलमें घोटकर कपड़ेमें छानकर शीशीमें भर लेना चाहिये।

मधुमेह रोगके प्रारंभमें रोगीके पेशाबका विश्लेषण करने पर उसकी स्पेसिफिक ग्रेविटी १०२५ से लेकर १०३५ तक बढ़ती है। इस समय १ औंस पेशाबमें लगभग ५ से १० रत्तीतक शक्करका तत्व जाता है। ज्यों २ रोग पुराना होता है त्यों २ पेशाबकी ग्रेविटी बढ़कर १०५० तक चली जाती है। उस समय १ औंस पेशाबमें २५ रत्ती तक शक्कर जाने लगती है और इसके सिवाय अलब्यूमेन और दूसरे कई जीवन पोषक तत्व पेशाबके साथ बहने लगते हैं।

रोगीके पेशाबकी परीक्षा करनेपर जिनके पेशाबकी ग्रेविटी १०२० से १०३० तक हो उनको इस भस्ममें से १० रत्ती भस्म १ औंस पानीके साथ सवेरे भूखे पेट तथा १० रत्ती भस्म दुपहर और शामको भोजनके १ घंटे पश्चात् देना चाहिये और तीन २ चार२ दिनके अन्तरसे पेशाबकी ग्रेविटी और शक्कर के परिमाणको जाँचते रहना चाहिये। यह विश्वास किया जा सकता है कि इस प्रयोगसे अधिकांश रोगियोंका रोग १।। महीनेमें चला जाता है।

अगर रोगियों की स्पेसिफिक ग्रेविटी १०३५ से १०५० तक हो तो इस भस्म को २० से ३० ग्रेन तक की मात्रामें दिनमें तीन बार देना चाहिये और रोगी की जनरल प्रकृति का विचार करके अगर कोई उपद्रव मालूम हो तो दूसरा सहायक औषधियोंके द्वारा मिटाना चाहिये।

मधुप्रमेहके रोगियोंके लिये औषधि प्रयोगकी अपेक्षा भी उनके खान पान पर लक्ष्य देना विशेष आवश्यक है। इस लिये जिन पदार्थोंके खानेसे शरीरमें शक्कर का तत्व बढ़ता है उनको बिलकुल बन्द कर देना चाहिये। गेहूँके बदले जौके आटेकी रोटी, बाजरीकी रोटी, मूँगकी दाल, टामेटा, परवल, लौकी इत्यादि का शाग देना चाहिये। गाय भैंस अथवा बकरीका उत्तम दूध दे सकते हैं मगर उसमें शकर नहीं डालना चाहिये, इस भस्मके साथ रोगीकी प्रकृतिको देखकर गिलोय सत, प्रवाल भस्म अथवा चंद्रप्रभा इत्यादि औषधियोंमें से कोई औषधि मिलाकर दी जा सकती है।

वैद्यराज सुखरामदास ओझा का कथनहै कि जामुनकी गुठलीका चूर्ण १ हिस्सा, सूंठ १ हिस्सा और गुड़मार बूटी २ हिस्सा इन तीनों चीजोंका कपड़छन चूर्ण करके उसको घींगुआरके रसमें तर करके मोटे बेरके समान गोलियाँ बनाना चाहिये। दिनमें ३ बार इनमें से एक २ गोली शहदके साथ लेनेसे मधु प्रमेह रोगमें पेशाबमें जाने वाली शक्कर १ महिने में बन्द हो जाती है। इतनाही नहीं बल्कि मधुमेहसे होने वाली प्रमेह पीठीकाएँ तथा कार बंकल इत्यादि उपद्रव भी मिटजाते हैं। इस औषधिको देते समय खान पानका ऊपर लिखे अनुसार ही खयाल रखना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

महर्षि चरकका मत है कि जामुनके वृक्षकी पीसी हुई गुठलियाँ मधुमेह रोगमें देनेसे काफी फायदा होता है।

डायमॉकके मतानुसार मधुमेह रोगमें जामुनकी क्रिया किस प्रकार होती है यह अभी तक पूरी तरहसे समझमें नहीं आया।

के० एल० डे के मतानुसार जामुनकी गुठलीने मधुमेह रोग को मिटानेमें बड़ी प्रशंसा प्राप्तकी है। यह प्रत्येक अनाजमें पाये जाने वाले श्वेतसार और स्टार्चको शक्करमें परिणित नहीं होने देती। लेकिन अभी तक इसकी जितनी तारीफ है वह पूरी तरह सिद्ध नहीं हो सकी है।

जामुन और यकृत, तिल्ली तथा पेटके रोग—

मोरके पंखोंमें जिस प्रकार ताँबेका अंश रहता है, पीपलके झाड़में जिस प्रकार सीसेका अंश पाया जाता है, नीमके अन्दर जिस प्रकार ताँबा और गन्धक मिलता है, अपामार्गमें जिस प्रकार तांबेका भाग पाया जाता है उसी प्रकार जामुनके अन्दर लोहेका अंश पाया जाता है जामुनके अन्दर रहने वाला लोह सौम्य होनेसे दूसरे लोहेकी तरह उससे किसी प्रकारका अनिष्ट होनेका भय नहीं रहता और वह रुधिरकी अशुद्धतासे होने वाले तिल्ली और यकृतकी वृद्धिमें और दूसरे उदर रोगोंमें बहुत अच्छा लाभ बतलाता है।

डॉक्टर नारायन मिश्रका कथन है कि तिल्ली और यकृतकी वृद्धिमें जामुनका सिरका देनेसे बहुत जल्दी लाभ होता है। इसके पके हुए फलका रस अग्निवर्धक, मूत्रल और शांतिदायक होता है। इसके पत्ते, बीज और जड़ संकोचक गुण वाले होते हैं।

चक्रदत्तका मत है कि बच्चोंके पुराने अग्नि मांद्य और अतिसारमें इसकी छालका ताज़ारस बकरी के दूधके साथ देनेसे बड़ा लाभ होता है।

सिविल सर्जन एन्सली का कथन है कि इसकी अन्तर छालका काढ़ा मरोड़ी और अतिसारके रोगमें उपयोगमें लिया जाता है।

सर्जन डब्ल्यू० एफ० थाम्सनका कथनहै कि जामुनके बीजोंके चूर्णमें जहरी कुचलेके जहरको नष्ट करनेकी अद्भुत शक्ति पाई जाती है। इस चूर्णको ६ माशाकी मात्रामें लेनेसे कुचले का जहर चाहे जितना चढ़ गया हो, एक दम उतर जाता है।

सिविल सर्जन बांकेबिहारी गुप्त का मत है कि लम्बे समय तक पारे का सेवन करनेसे अथवा दूसरे किसी कारण से दांतोंके मसूढ़े सूज गये हों, उनमें बहुत वेदना होती हो और बहुत लार बहती हो तो इसकी छाल के काढ़े से कुल्ले करनेसे बड़ा सन्तोष जनक परिणाम नजर आता है।

पं० शालिग्राम शर्मा का कथन है कि जामुनके फल की मगज का तेल एक २ बूंद सवेरे शाम

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कानमें डालनेसे कान का बहना बन्द होजाता है। इसकी मगज का चूर्ण शहदमें घोंटकर तीन २ माशे की गोलियां बनाकर प्रतिदिन सवेरे शाम एक २ गोली खानेसे और उस गोली को शहदमें घिसकर आंखों में आंजनेसे मोतियाविंद का नया रोग मिट जाता है।

उपयोग—

आमातिसार— इसकी छालके चूर्ण की फक्की देनेसे आमातिसार मिटता है।

(२)—इसका ताजा रस बकरी के दूधके साथ पिलाने बच्चों का अतिसार मिटता है।

(३)—इसकी गुठली और आम की गुठली के चूर्ण की फक्की देनेसे आमातिसार मिटता है।

बवासीर— इसकी कोपलों के २ तोले रस में थोड़ीसी शक्कर मिलाकर पीनेसे बवासीरसे बहने वाला खून बन्द हो जाता है।

मधुमेह— इसकी गुठली के चूर्ण को सेवन करनेसे मधुमेह रोग मिटता है।

बनावटें—

डायबिटीज़ मिक्श्चर—एक्स्ट्रेक्ट जाम्बुलीनीलिक्विड १ ड्राम, ग्लेसरीन ग्लिसेरो फ़ाल्फ़ेट १ ड्राम इनफ्यूजन जेन्शन १ औंस एलीकम्फीर कोड़िया फोसफिस ½ ग्रेन। इन सब औषधियों को मिलाकर इनके तीन हिस्से कर दिनमें ३ बार लेना चाहिये। इससे मधुमेह रोग में बहुत जल्दी लाभ होता है।

तिल्ली रोग नाशक सिरका— शुद्ध आंवलासार गन्धक ७ तोला, नौसादर १ तोला, कलमी शोरा १ तोला, हीराकसी ३ माशे, कुनेन ६ माशे। इन सब चीजों को पीसकर एक शीशी में भर देना चाहिये और उस शीशीमें जामुन के पके हुए फलों का रस भर करके शीशी का मुंह मजबूत काग से बन्द कर देना चाहिये और उस काग के ऊपर भींगी हुई चिकनी मिट्टी का लेप करके ४० दिन तक धूपमें रखना चाहिये। उसके बाद उस शीशी का काग खोलकर काम में लेना चाहिये। इस औषधि में से प्रतिदिन सबेरे शाम २० से ४० बूंद तक औषधि १ औंस पानीके साथ मिलाकर देनेसे बढ़ीहुई तिल्ली का रोग चमत्कारिक ढंगसे आराम हो जाता है। यह प्रयोग जब चालू हो तब घीका सेवन अधिक मात्रामें करना चाहिये और तेल, मिरच, खटाई, दही, इमली, इन चीजोंका बिलकुल त्याग कर देना चाहिये।

(२)—अच्छे पके हुए ताजा जामुनका रस निकालकर उस रसमें जितना समासके उतना सेंधा निमक डालकर एक मज़बूत काग वाली शीशीमें बन्दकर ४० दिन तक पड़ा रखना चाहिये। इस औषधिमेंसे एक दिनके अन्तरसे आधा चम्मच औषधि देनेसे कामला और लीवरके रोग नष्ट हो जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जाँबवारिष्ट—जामुनकी अंतर छाल ८० तोला, जामुनके हरे पत्ते ८० तोला, जामुनके फल ८० तोला, जामुनकी गुठली ८० तोला। इन सब चीजोंको लेकर, कूटकर १२८ सेर पानीमें औटाना चाहिये। जब १६ सेर पानी रहजाय तब उतार कर छान लेना चाहिये। इस क्वाथमें जामुनके फलों का रस ८० तोला, धावड़ीके फूलोंका चूर्ण ४० तोला, नाग केशरका चूर्ण २० तोला और शहद १० तोला मिलाकर चीनी मिट्टीकी बरनियोंमें भरकर उनका मुँह बन्द कर एक महिने तक पड़ा रखना चाहिये। यह औषधि प्रति दिन सवेरे शाम २ से ४ तोले तक की मात्रामें दूने पानीके साथ मिलाकरके पीनेसे मधुप्रमेह, रक्त प्रदर, खूनी बवासीर, रक्तातिसार, मूत्रदाह, उदर रोग और पित्त विकारोंको दूर करती है।

जामुनका अर्क—गजवेलका चूर्ण २० तोला लेकर लोहेकी कढ़ाईमें डालकर उसको हलकी आँच पर चढ़ाना चाहिये। उसके पश्चात् उसमें गंधकका तेज़ाब २० तोला डालकर लोहेके खुरपेसे अच्छी तरह मिला देना चाहिये। जब वह तेज़ाब सूख जाय तब उसमें २ सेर नींबूका रस डालकर सुखा देना चाहिये। उसके बाद फिर २० तोला गंधकका तेजाब डालना चाहिये। जब तेजाब जल जाय और धुआँ निकलना बंद हो जाय तब उस कढ़ाहीको नीचे उतार लेना चाहिये और ठंडी होनेपर उसमें जामुनका रस ८ सेर डालकर आठ दिनतक उस कढ़ाहीको वैसे ही धूपमें रख देना चाहिये और दिन में २।३ बार खुरपेसे हिलाते रहना चाहिये। आठ दिनके पश्चात् उसमें ४ तोला चोवचीनी, ४ तोला उन्नाब, ४ तोला कबाब चीनी, २ तोला बंशलोचन, २ तोला इलायची, २ तोला बनफशा, ४ तोला कासनी, ४ तोला तज, ४ तोला मकोय, ५ तोला सफेद चन्दन, ५ तोला लाल चंदन, ५ तोला दारू हलदी, ८ तोला चिरायता, ८ तोला शीशमका बुरादा ८ तोला आबनूसका बुरादा, ४ तोला कासनीकी जड़, ४ तोला काली मिरच, २ तोला कतीरा, १२ तोला पित्त पापड़ा, ४ तोला सरपंखा, ४ तोला हरड़, ४ तोला बेहड़ा, १२ तोला गोरखमुडी, ६ तोला अमर बेल, ६ तोला गिलोय, ६ तोला जवासा, १० तोला नीम के फूल, ८ तोला चित्रककी जड़, ६ तोला नीमकी निबोरी, ६ तोला अनंतमूल, १० तोला अजवायन, १० तोला मुनक्का, ४ तोला अक्षीर, ८ तोला हिमज, ५ तोला आँवला, ५ तोला खारक, ५ तोला गूंदी, ४ तोला निसोथ इन सब चीजोंको कूटकर डाल देना चाहिये और ऊपरसे १५ सेर कुएं का जल डालना चाहिये। तीनदिनतक इन सबको पड़े रहने देना चाहिये। उसके पश्चात् भपका या अर्क निकालनेके यंत्रसे इनका अर्क खींच लेना चाहिये। इस अर्कको २५ से ३० बूंदतककी मात्रामें २ तोले गुलाबजलके साथ सबेरे शाम पीना चाहिये तथा तेल, खटाई, कुष्माण्ड, उड़द, इत्यादि चीज़ोंसे परहेज करना चाहिये। ४० दिनतक इस प्रकार इस औषधिका सेवन करनेसे धातुकी निर्बलता दूर होती है। चेहरेपर गुलाबी आभा आ जाती है। जठराग्नि बहुत प्रबल हो जाती है। यकृत और तिल्लीकी खराबी, पांडु, कामला, जीर्ण ज्वर, जलोदर, मधुमेह तथा वृद्धावस्थासे होनेवाली कमजोरियाँ नष्ट हो जाती है।

(जंगलनी झाड़ी बूटी)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रासायनिक विश्लेषण—

इसके बीजोंके अन्दर ज़म्बोलिन नामक ग्लुकोसाइड पाया जाता है। यह तत्व स्टार्चको शक्करके रूपमें बदलनेमें रुकावट डालता है। इसके अतिरिक्त इसमें क्लोरोफिल, चर्बी, रेज़िन, एलब्यूमिन, गेलिक एसिड और कई रंगदार पदार्थ पाये जाते हैं। इसमें उड़नशील तेल भी होता है।

मुज़िर-इसका पका हुआ फल अधिक खानेसे मेदे और सीनेको नुकसान पहुंचाता है, देरसे हजम होता है, कफ बढ़ाता है, फेंफड़ेको नुकसान पहुँचाता है और उसमें वायु पैदा करता है। इसको ज्यादा खानेसे बहुधा तहसीसका मर्ज हो जाता है। इसको अधिक खानेसे बुखार भी आने लगता है। इसका कच्चा फल आंतोंमें छिलाव पैदा करता है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नाश करनेके लिये आँवला, अजवायन और सोंठ प्रधान हैं। जामुन में नमक मिलाकर खानेसे भी उसका दर्प नाश हो जाता हैं।

मात्रा—इसकी गुठलीके चूर्णकी मात्रा ३ रत्ती से १५ रत्ती तक और इसकी छालकी राखकी मात्रा भी १० रत्तीसे १५ रत्ती तक है।
दायक है।

जांबू (इरुल)

नामः—

संस्कृत—कान काकुली। हिन्दी—जाँबू। मराठी—जम्बा, जांभा, सूरिया। बम्बई—जांबा, किरुल। बरमा—पोइ कन्दो। कनाड़ी—अरउतकू, वेतदावरीकि होमावरिकी, जाँवे, ताकू, तिरुवा। कूर्ग—सिरवी। मलयालम—इरुल, काला, पान्हाल। तामील—इरुल, इरेवल। तेलगू—बोजा, तंगे दुमानू। लेटिन Xylia Dolabriformis (क्सीलिया डोलेब्रिफार्मिस)।

वर्णन—

यह पनस्पति पंजाब, बरमा, मलाया प्रायः द्वीप और फिलिपाइन्स में पैदा होती है। यह एक ऊँची जातिका वृक्ष होता है। इसके कोमल हिस्से रुएँदार होते हैं। इसके पत्ते २·५ से ५·७ सेंटि मीटर तक लम्बे होते हैं। इसकी फलियाँ १० से लगाकर १५ सेंटिमीटर तक लम्बी और २.५ से ६·३ सेंटि मीटर तक चौड़ी होती हैं। इनमे ६ से लगाकर १० तक बीज होते हैं। ये बीज अंडाकार, चपटे, बादामी रंगके और चिकने होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपराके मतानुसार इसकी छालका काढ़ा कृमि, कोढ़, वमन, अतिसार, सुज़ाक और व्रणमें उपयोगी माना जाता है। इसके बीजोंका तेल संधिवात, बवासीर और कोढ़ में लाभ दायक है।

—

जामू

नाम—

तेलगू—जामू, जाँबू, दब्बू जाँबू। लेटिन—Typha Angustata (टायफा अंगुस्टेटा)।

वर्णन—

यह वनस्पति प्रायः सारे भारतवर्षमें पैदा होती है। इसके पौधे का तना १.५ से ३ मीटर तक ऊँचा होता हैं। इसमें नर पुष्प और नारी पुष्प दोनों लगते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

इस वनस्पतिका पातालीं धड़ संकोचक और मूत्रल होता है।

—

जायफल

नाम—

संस्कृत—जातिफल, जाति, जातिशा, जायफल, सगा, कोषा, कोषक, मधुशोन्दा, मालतीफला, राजभोग्या, सुमनफल, शालुका, इत्यादि। हिन्दी—जायफल। बंगाल—जायफल। गुजराती—जायफल। करनाटक—जायफल। तेलगू—जाजिकाया, जादिफ़ला। तामोल—अदि परभम्, कोसम्, सालुगमो। सीलोन—सादिकइ। अरबी—जोजऊलतिब, जौजवावा। कनाड़ी—जाजि। फ़ारसी—जेजबोय। लेटिन—Myristica Fragrans (मायरिस्टिका फ्रेगरेन्स)।

वर्णन—

जायफलका वृक्ष जावा, मलाया प्रायः द्वीप, और मलायाद्वीपमें पैदा होता है। यह एक बड़ी जातिका वृक्ष है। इसकी शाखाएँ नाजुक रहती हैं। इसका फल लम्बगोल होता है। इसकी छालके भीतर एक लाल गुच्छा होता है। जिसको जायपत्री कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे जायफल कड़वा, तीक्ष्ण, गरम, रोचक, हलका, चरपरा, अग्निदीपक, मलरोधक, स्वरको सुधारने वाला तथा कफ, वात, मुखकी दुर्गन्ध, खाँसी, वमन, शोथ, पीनस और हृदय रोगको नष्ट करनेवाला है।

जायफल का तेल उत्तेजक, अग्निदीपक और पुराने अतिसारको नष्ट करनेवाला, होता है। यह आफरा, शूल, आम वात तथा व्रणके रोगोंको दूर करता है।

जायफल सुगन्धित, दीपक, वायुनाशक, उत्तेजक, पौष्टिक और वाजिकरण है। यह आमाशय को उत्तेजना देकर आमाशयमें पाचक रसको बढ़ाता है। जिससे भूख बढ़ती है और अन्न पचता है। जब यह आँतोंमें जाता है तब वायुको गुदा की राहसे खारिज करता है। आमाशयके ऊपर इसकी क्रिया कपूरके समान होती है।

यूनानी मत—यूनानीमतसे यह दूसरे दर्जेके आखिरमें गरम और तीसरे दर्जेमें खुश्क है। यह सर्दीकी बीमारियोंको दूर करता है। कामेंद्रियकी शक्तिको बढ़ाता है। अधिक मात्रामें उपयोग करनेसे नशा पैदा करता है। शरीरकी स्वाभाविक गरमीकी रक्षा करता हैं। मेदे और जिगरके लिए लाभदायक है तिल्ली और यकृतकी सूजन तथा जलोदर, गठिया, लकवा, फ़ालिज और अनैच्छिक मूत्र स्रावमें भी यह लाभदायक है। यह मुँहमें खुशबू पैदा करता है। इसके लगानेसे आंखकी खुजली और धलका मिट जाता है और आँख की ज्योति तेज होती है।

स्तम्भन सम्बन्धी औषधियोंमें यह एक प्रधान औषधि है। इससे वीर्य स्तम्भन सम्बन्धी कई नुसखे तैय्यार होते हैं।

सर्द और तर मिजाजवालोंके लिये जायफ़ल एक बहुत मुफीद वस्तु है। जिस बीमारीमें कब्जियत गर्मी और मुलामियतकी जरूरत हो उसमें यह अच्छा काम करता है। इससे मुँहकी फुन्सियां और बदबू मिट जाती है। इसके छिलकेको बनफ़शाके तेलमें पीसकर नाकमें टपकानेसे आधा शीशी मिट जातीं है। इसको तेलमें पीसकर कानमें टपकानेसे बहरापन मिट जाता है। इसके सेवनसे खाना हजम होता है, पेटकी वायु बिखर जाती है। अतिसारके अंदर भी यह औषधि बहुत मुफीद है। इसको खानेसे सर्द मिजाजवालोंकी कामशक्ति बढ़ती हैं। इसको अफसंतीन या शहदके साथ मिलाकर चेहरेपर लगानेसे चेहरे की झाँई मिट जाती है। कामेंद्रियपर इसको मालिश करनेसे कामेंद्रियकी सुस्ती दूर हो जाती है। गठिया या जोड़ोंके दर्द पर इसके तेलकी मालिश करनेसे बहुत लाभ होता है।

मुज़िर—इस वस्तुको अधिक मात्रामें लेनेसे जिगर व फेफड़ेको नुकसान पहुँचता है। यह सिर दर्द भी पैदा करता है और गरम प्रकृतिवालोंके लिये हानिकारक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दर्पनाशक—इसके दर्पको नष्ट करनेके लिये धनियाँ, चंदन और बनफ़शा देना चाहिये।

मात्रा—इसके तेलकी मात्रा १ बूंदसे ३ बूंद तक है और इसकी मात्रा १ माशे तक है।

उपयोग:—

मन्दग्नि—जायफल के चूर्ण को शहद के साथ देने से मन्दाग्नि मिटती है और हृदय को बल मिलता है।

मुँह के छाले—ताज़े जायफल के रसको पानी में मिलाकर कुल्ले करने से मुँह के छाले मिटते हैं।

त्वचा की शून्यता—त्वचा की शून्यता मिटाकर उत्तेजना पैदा करने के लिये जायफल के उड़न शील तेलकी मालिश करना चाहिये।

अतिसार—५ रत्ती से १ माशा तक जायफल खिलाने से मन्दाग्नि, आफरा, शूल और अतिसार मिटता है।

विशूचिका (हैजा)—जायफल को ठंडे पानी में घिसकर पिलाने से हैजे के रोगी की प्यास मिटती है।

अतिसार—बड़े जायफल में एक छोटा छेद करके उस में अफीम भरकर उस छेदको बुरादे से बन्द कर उसपर गीला आटा लपेट कर भूमल में दाब देना चाहिये। उसके पश्चात् उसका आटा हटाकर उसे पीसकर गोलियाँ बना लें। उन गोलियों को २ रत्ती से ३ रत्ती तक की मात्रा में देने से अतिसार मिटता है।

कर्ण मूलकी सूजन—जायफल को पीसकर कानके पीछे लेप करने से कर्णमूलकी गठान बिखर जाती है।

विशूचिका (हैजे) के बाँयँठे—जायफल को तेल में घिसकर मालिश करने से विशूचिकाके बायंठे मिटते हैं।

जी मिचलाना—जायफल को ठण्डे पानी में घिसकर पिलाने से जीका मिचलाना बन्द होता है।

बनावटें—

जाति फलादिवटी—जायफल ६ माशे, छुहारा ६ माशे, और शुद्ध अफीम ६ माशे। इन तीनों को खरल में डालकर नागरबेल के पान के रसके साथ खूब घोटना चाहिये। घुटजाने पर रत्ती २ भरकी गोलियाँ बना लेनी चाहिये। इनमें से एक २ गोली दिन में २ ३ बार मट्ठे के साथ लेने से भयंकर अतिसार भी ७ दिन में आराम हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्तम्भन योग—एक बड़ा जायफल जो ७ माशेसे कम न हो लेकर खोखला (पोला) करके उसके अन्दर १।। माशे अफीम भरदें। फिर उसके मुँहको आटेसे बन्द करके ऊपरसे आटा लगाकर गोली बनाकर आगपर सेकें। जब सुर्ख होजाय तब ऊपरसे आटा छुड़ाकर सारे जायफल को पीसकर शहदमें मिलालें और झरबेरी के बेरके बराबर गोलियाँ बनालें। इनमें से १ गोली स्त्री सम्भोगके पूर्व दूधके साथ लेनेसे बहुत स्तम्भन होता है।

जाति फलादि चूर्ण—जायफल, लौंग, इलायची, काली मिर्च, तेजपान, दालचीनी, नागकेशर, वंशलोचन, कपूर, सफेद चन्दन, काले तिल, तगर, हरड़, तालीस पत्र, आँवला, पीपल, कलौंजी, स्याह जीरा, चित्रकमूल, सोंठ, बायविडंग इन सब औषधियोंको एक २ तोला लेकर अलग २ कूटकर कपड़ेमें छानकर मिलादें। फिर जितना सब चूर्णका वजनहो उतनाही शुद्ध भंगका चूर्ण उसमें मिलादें। उसके पश्चात् सबको तौलकर जितना वजन निकले उतनेही वजनकी सफेद मिश्री पीसकर उसमें मिलादें। इस चूर्णको २। माशे से ३ माशे तककी मात्रामें शहदके साथ चटानेसे संग्रहणी, श्वास, खांसी, अरुचि, क्षय, वात और कफके विकार तथा पीनस रोग नष्ट होते हैं।

जाति फलादि वटी—(मधुमेहके लिये) जायफल, जावित्री, लौंग, केशर, शुद्ध धतूरेके बीज और शुद्ध अफीम ये वस्तु एक २ तोला। शुद्ध शिलाजोत ६ तोला, लोह भस्म ३ तोला। इन सब चीजों को कूट पीस छानकर शिलाजीतके जलमें घोटकर एक २ रत्ती की गोलियां बनावें। इनमेंसे एक २ गोली सबेरे शाम गुड़ मारके रस और गायके दूधके साथ सेवन करनेसे मधुमेह, मधुमेहकी प्यास, बहुमूत्र, मूत्रपिंडों की निर्बलता, प्रमेह पीठिका, पेशाब के साथ शक्कर जाना इत्यादि रोग दूर होते हैं और शरीर, मन तथा इन्द्रियोंको बल मिलता है।

जाति फलादि वटी—(खूनी बवासीरके ऊपर) जायफल, लौंग, पीपर, सेंधा निमक, सोंठ, धतूरेके बीज, शुद्ध हिंगलू, सुहागे की फूली। इन सब औषधियों को समान भाग लेकर इनक बारीक चूर्ण करे फिर उस चूर्णको जंभीरी नींबूके रसमें खरल करके एक २ रत्तीकी गोलियाँ बनालें। इनमें से १ से लेकर २ गोली सबेरे शाम, ६ माशे तिल और १ तोला मक्खनके साथ लेनेसे बवासीर से गिरता हुआ खून बन्द होता है और कुछ दिनों तक लगातार लेते रहने से बवासीर के मस्से मुरझा कर झड़ जाते हैं।

जायपत्री

नाम—

संस्कृत—जातिपत्री, जाति कोषा, जातिफलत्वक, हिन्दी—जायपत्री, जावित्रों। मराठी—जायपत्री

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बंगाल—जायत्री। पंजाब—जावित्री। तेलगू—जाजिपतिरी। द्राविड़ी—जायत्री। अरबी—बिसवासाह। फारसी—बज़वाज। लेटिन—The Aril of myristica Fragrans (दी एरिल आफ मायरिस्टिका फ्रेग्रेसं)।

वर्णन—

जायफलके वृक्षकी छाल फटकर उसके नीचेसे लाल छिलके सा पदार्थ निकलता है। उसीको जायपत्री कहते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वैदिकमत—आयुर्वैदिकमतसे जायपत्री हलकी, चरपरी, कड़वी, सुगंधित, स्वादिष्ट, रुचिकारक, सौंदर्यको बढ़ानेवाली, मुखको स्वच्छ करनेवाली, अग्निवर्धक, तथा कफ, खांसी, वमन, श्वास, तृषा, कृमि और विषको नष्ट करनेवाली होती है।

कफकी वजहसे पैदा हुए दर्दमें जावित्रीको पानमें रखकर खिलानेसे शाँति मिलती है। क्षयरोगमें भी यह एक लाभदायक वस्तु हैं। पुरुषार्थ बढ़ानेवाली औषधियों और पाकोंमें इसको डालनेसे औषधिका जायका और गुण दोनों बढ़ जाते हैं। शरीरको कृश करनेवाले आँतोंके पुराने रोगोंमें इसको ६ से लेकर १० रत्ततककी मात्रामे देनेसे लाभ होता है। इसको आगपर सेककर खिलानेसे विशूचिकाके दस्त मिटते हैं।

इसको अधिक मात्रामें नहीं देना चाहिये। ३।४ माशेसे अधिक मात्रामें देनेसे यह नशा और मूर्च्छा पैदा करती हैं। अगर इसको अधिक मात्रामें लेनेसे कुछ अनिष्ट हो जाय तो मक्खनमें चंदन और मिश्री मिलाकर चटाना चाहिये।

जालनीम

नाम—

काश्मीर—जालनीम, गन्दम् गुण्ड्र। लेटिन—Lycopus Europaeus (लायकोपस यूरोपेयस)

वर्णन—

यह वनस्पति पश्चिमी हिमालय, काश्मीर और पंजाबके मैदानोंमें ७ हजार फ़ीट की ऊंचाई तक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पैदा होती है। इसका एक सीधा वृक्ष होता है। इसकी जड़ें जमीन पर फैलती हैं। इसके पत्ते कटी हुई किनारोंके, फूल छोटे और सफेद तथा बैंगनी दाग वाले होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसके पत्तोंका पुल्टिस बाँधने से खराब घाव साफ होकर भर जाते हैं।

जालीदार

नाम—

पंजाब—जालीदार, कसकूसरी, थमथेर। अजमेर—धोवन किनाड़ीज—बुत्ति गरगलि, गरकलि, सान्नुदिवि। कच्छ—लुसकाना। गुजराती—पदेखड़ो, परेखड़ी। मराठी—खरमटी। मेरवाड़ा—धोकेलन। संथाल—तरसेकालफ। तामील—कुल्लई। तेलगू—चनता, चेनुना। लेटिन—Grewia Villosa ग्रेविया कुलोसा।

ब० विवरण—इसका वृक्ष १·८ मीटर ऊंचा होताहै। इसकी शाखाएं भूरे रंगकी होतीहै। इसके पत्ते ३·७ से ७·५ सेण्टि मीटर लंबे होते हैं। इनकी नोक तीखी रहती है। ये पत्ते ऊपरके बाजू रुएदार रहते हैं, नीचेके बाजू मखमली होते हैं। इसके फूलोंकी पंखडियां भद्दे और पीले रंगकी होती है। इसका फल पीला लाल और गोल रहता है। इसके फल का गूदा खाने लायक होता है।

उत्पत्तिस्थान—यह बनस्पति सिंधु की तलहटी, पंजाब, राजपूताना, सिंध, कच्छ, काठिया बाड़, डेकन, कर्नाटक, मद्रास प्रेसिडेंसी और दक्षिणी अफ्रिकामें होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

इसके ताजे छिलटेका रस शक्कर और पानीके साथमें सुजाक और मूत्र सम्बधी शिकायतों में दिया जाता है। यह मूत्राशय की जलन में भी उपयोगी है।

कैंप बेलके मतानुसार इसकी जड़ छोटा नागपुरमें अतिसारके काममें ली जाती है।

क० चोपरा के मतानुसार इसकी जड़ अतिसारमें काममें ली जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जावशीर

नाम—

हिन्दी यूनानी—जावशीर, जवाशीर । बंगाली—जवेशी । बाम्बे—जुआशुर । लैटिन—Opopanax Chironium (ओपोपेनेक्स चिरोनियम)

बर्णन—

जावशीर का पेड़ मध्यम आकार का होता है । इसके पत्ते अंजीरके पत्तोंकी तरह मगर उनसे कुछ छोटे और खुरदरे होते हैं । इनका रंग गहरा हरा होता है । इसके पेड़की शाखाएं मुलायम होती हैं । और उन पर रूआँ होता है । इनका रंग बाहरसे काला और भीतर से सफेद होता है । इसका फूल पीला और खुशबूदार होता है । इसके बीज काले और अनीसून के बराबर होते हैं । इसकी जड़में यहुत खराब गन्ध आती है ।

इसकी एक जाति और होतीहै उसकी डालियाँ पतली और गज भर के करीब लम्बी होती हैं । इसके पेड़ का झावा सौफ के पेड़ का सा होता है । इसके पत्ते अकलकरे के पत्तों की तरह होते हैं । इसके फूल का रंग सुनहरी होता है । इसको यूनानीमें असकेलूसक कहते हैं । इन दोनों जातियों में इसको पहली जाति ज्यादा प्रभावशाली होती है । इसकी वह जड़ उत्तम मानी जाती है जो सफेद हो, जिसप्रर झुर्रियाँ नहीं हो और जिसमें तेज़ गन्ध आतो हो और इसका वह फल उत्तम माना जाता है जो एक डालीपर एकही आया हो ।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमत से इसकी जड़ और फल दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क होते हैं । इसकी जड़ शरीर में गर्मी और खुश्की पैदा करतो है । इस वृक्ष का पंचांग गरम, तेज तथा कब्जियत को दूर करने वाला और पेट को मुलायम करने वाला होता है । इसका फल रुके हुए मासिक धर्मको जारी करता है । इसकी जड़को पीसकर और शहद में मिलाकर जिस जगह का गोश्त उड़ गथा हो उस जगह पर लगाने से नया गोश्त पैदा हो जाता है । इसके रसको जैतून के तेल में मिलाकर शरीर की सुन्नता पर लगाने से शरीर की सुन्नता मिट जाती है । निमोनियाँ में इसके पत्तों को गरम करके सोनेपर बाँधने से शान्ति मिलती है । इसके पत्तों का रस निचोड़कर सिरके के साथ पीने से तिल्ली की सूजन मिट जाती हैं । गर्भवती स्त्री को इस औषधि से बचना चाहिये । क्योंकि इसको पीनेसे और इसकी जड़ को गर्भाशयमें रखने से बच्चा मरकर निकल पड़ता है । हिस्टीरियामें भी यह औषधि बहुत लाभ दायक है । इसको शराब के साथ पिलाने से हिस्टीरियाके रोगमें बहुत लाभ होता है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जावशीरका गोंद

इस वृक्षमें से एक प्रकार का गोन्द निकलता है जो जावशीर का गोंद कहलाता है।

गुण दोष और प्रभाव—

हक़ीम जालीनूस के मतसे जावशीरका गोंद तीसरे दर्जेमें गरम और दूसरे दर्जेमें खुश्क होता है। यह जावशीरके पंचाँगसे हर बातों में अधिक प्रभावशाली और अधिक उग्र है। यह वायुको बिखेरता है। सूजनकी सख्तीको मुलायम कर देता है, कमजोर पट्ठोंको ताकत देता है। सरदीकी वजह से पैदा हुए ज्ञान तन्तुओंके रोग जैसे—लकवा, मृगी, कम्पवात, सिरदर्द इत्यादि रोगोंमें बहुत मुफीद है। वायु सम्बन्धी तमाम बिमारियों में जो सरदीकी वजहसे पैदा हुई हो यह हुक्मिया औषधि है। अगर हड्डीपर चोट आ जाय तो जावशीरको शराबके साथ देनेसे लाभ होता हैं।

लकवे के रोग में यह एक प्रथम श्रेणी की औषधि है। स्त्री सम्भोग की अधिकता से मनुष्य शरीर में जो बीमारियाँ पैदा होती है उनमें भी यह लाभदायक हैं।

इसको आंखोंमें लगाने से मोतियाबिन्द में लाभ होकर आंखों की ज्योति तेज होती है। इसको कानमें डालने से कानका बहरापन दूर होता है। दाँत पर मलने से दंतशूल आराम होता है। कीड़ेसे खाये हुए दांतके सुराखमें इसको रखनेसे फायदा होता है। इसको ३ या ३॥ माशा की मात्रामें गरम पानीके साथ लेनेसे रुका हुआ मासिकधर्म और रुका हुआ पेशाब चालू होता है। सरदीसे पैदा हुए जलोदर और पीलियामें भी यह लाभ करता है। बूंद २ पेशाव आने की बीमारी को यह दूर करता है। वायु और कफसे पैदाहुए कालिक उदरशूल में भी यह मुफीद है। इसको शहदमें मिलाकर लेप करनेसे गर्मी के जख्म और जैतून के तेलमें मिलाकर लगानेसे गठिया, गृध्रसीवात और पागल कुत्ते के विषमें लाभ होता है। सांप और बिच्छूके विषपर इसको ३½ माशे की मात्रामें खिलाने से और काटी हुई जगह पर पीसकर लगानेसे फायदा होता है। प्रसूता स्त्री का बच्चा होनेके पश्चात् गर्भाशय में अगर कुछ खराबी रह जाय तो इसके इस्तेमालसे साफ हो जाती है। इसको अकरकरेके साथ पीसकर, तिल्लीके तेलमें मिलाकर, लिंगेन्द्रिय पर लेप करने से बहुत तेजी पैदा होती है।

यह बात ख्याल रखना चाहिये कि यह औषधि जहां बीमार पट्ठों को तन्दुरुस्त कर देती है वहां तन्दुरुस्त पट्ठोंको नुकसान भी पहुँचाती है।

मुज़िर— यह गर्भवती स्त्रीके गर्भ को गिरा देती है और पुरुषोंके अण्डकोष नुकसान पहुँचाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दर्पनाशक— कौंचके बीजोंका काढा बनाकर उस काढ़ेमें जावशीर को रातभर भिगोकर इस्तेमाल करनेसे किसी प्रकार की हानि नहीं होती।

प्रतिनिधि— इसके प्रतिनिधि अंजीर का दूध, गन्धा विरोजा और जैतून का तेल है।

मात्रा— इसकी मात्रा २ माशेसे ४ माशे तक है।

जेठीमद

नाम—

कच्छ— जेठीमद। गुजराती—जेठीमद। लेटिन— Teverniera Nummularia (टेवेरनिअ्रेरा न्यूमूलेरिया)।

वर्णन—

यह एक प्रकार की नकली मुलहटी है जो कच्छ गुजरात, सिन्ध और बलूचिस्तान के जंगलोंमें बहुत पैदा होती है। इसके पौधे २ से लेकर ३ फीट तक ऊंचे होते हैं। इसके पत्ते मेथी के पत्तों के समान होते हैं। फूल गुलाबी रंगके पतंगे की तरह होते हैं। ये गुच्छोंमें लगते हैं। इसकी फलियां छोटी होती हैं। हर एक फली में २।४ तक बीज होतेहैं। यह पौधा दूरसे जवासेके पौधे की तरह दिखाई देता है। असली जेठीमद या मुलहटी का वर्णन आगेके भाग में मुलहठी के प्रकरण में देखना चाहिये।

गुण दोष और प्रभाव—

मुरेके मतानुसार इसके पत्ते कठिनाईसे आराम होनेवाले घाव पर बांधनेसे बड़ा लाभ होता है। कर्नल चोपराके मतानुसार इसके पत्ते घावपर बांधनेके काममें लिये जाते हैं।

जैतअलसूदान

नाम—

यूनानी— जैतअलसूदान।

वर्णन—

यह एक फलदार वृक्ष है। इसके फल छोटे बादाम की तरह होते हैं। इसकी दो जातियां होती हैं। एक छोटी और एक बड़ी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण, दोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जेमें गरम और पहले दर्जमें तर है। यह फ़ालिज, सुन्नवात और आफरे का मिटाता है। पागलपन, बहम और रक्तदोष की बीमारियोंमें फायदा पहुँचाता है। यह मूत्रल भी है। इसके सेवनसे अच्छा खून पैदा होता है। इसके रस को कानमें टपकाने से कानका बहरापन और कान का बहना मिटता है।

जैतून

नाम—

हिन्दी—यूनानी—जैतून। कनाड़ी—जुलिये। तामील—सेदून। तेलगू—जैतून। लेटिन—Olea Europaea ओलिया यूरोपिया।

वर्णन—

इस वनस्पतिका मूल उत्पत्तिस्थान भूमध्यसागर है बलूचिस्तानमें भी यह पैदा होती है। यह एक बड़ी जातिका वृक्ष होता है। इसके फल अण्डाकार और कलमी बेरकी तरह होते हैं। इसके फल कच्ची हालतमें हरे, पकनेपर लाल और आखिरमें काले पड़ जाते हैं। इस फलकी गुठली पौन इञ्च लंबी और आधा इञ्च मोटी होती हैं। इसके पत्ते अमरूदके पत्तोंकी तरह मगर कुछ गोल होते हैं। इसकी दो जातियाँ होती हैं। एक जंगली और दूसरी बागी।

गुणदोष और प्रभावः—

यूनानीमतसे इसकी डालियाँ और पत्ते दोनों सर्द, खुश्क और काबिज हैं। इसका पका हुआ फल गरम और कच्चा फल सर्द है। इसके कच्चे फलको पीसकर लगानेसे चेचक और दूसरे फोड़े फुन्सियोंके निशान मिटते हैं। खराब जख्मोंपर इसका लेप करनेसे यह उन जख्मोंको फैलनेसे रोकता है। अग्निस अगर शरीर जल जाय तो उसपर कच्चे जैतूनके फलको पीसकर लगानेसे छाला नहीं पड़ता है। इसके कच्चे फलको जलाकर उसकी राखको शहदमें मिलाकर सिरकी गंज और फुन्सियोंपर लगानेसे लाभ होता है। बागी जैतूनका फल स्मरणशक्तिकी कमजोरीको मिटाता है मगर इसको अधिक मात्रामें खानेसे सिर दर्द और अनिद्रा रोग होनेका भय रहता है। इसका पका हुआ काला फल आँखोंके लिये हानिकारक वस्तु है। इसको खाने और लगानेसे आँखोंकी ज्योति खराब होती है। इसके कच्चे फलको पानीमें औटाकर उस पानीसे कुल्ले करनेसे दांत और मसूड़े मजबूत होते हैं और उनके रोग मिटते हैं। मुंहके छाले भी इससे मिट जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शेखका का कथन है कि जैतूनका फल मैदेके लिये हानिकारक है। यह मेदेको ढीला करता है और उसमें वातकी तासीर पैदा कर देता है।

जैतूनके फलका मुरब्बा मृदु विरेचक है। इसको गरम पानीके साथ खिलानेसे खूब दस्त लगते हैं। इसका आचार भूख बढ़ाता हैं, आमाशयको ताकत देता हैं, लेकिन कुछ कब्ज भी करता है। इस आचारको अगर सिरकेमें डालकर खाया जाय तो वह जल्दी हजम हो जाता है।

जैतूनके पत्ते जंगली और बागीके भेदसे अलग २ गुणवाले होते हैं। जंगली जैतूनके पत्तोंको सुखाकर पीसकर बदनपर मलनेसे पसीनेका आना बंद हो जाता है। इसके पत्तोंके चूर्णको शहदमें मिला कर जख्मोंपर लगानेसे जख़्म जल्दी भर जाते हैं। जंगली जैतूनके पत्तोंका लेप पित्ती, खुजली, दाद और गर्मीके ख़राब जख्मोंपर भी फायदा पहुंचाता है। इन पत्तोंका रस कानमें डालनेसे कान के दर्द, पीब और सूजनमें फायदा होता है। इसके पत्तोंके रस को लेकर उसमें बराबरकी शहद मिलाकर कुनकुना करके कानमें डालनेसे कानका बहरापन और कानकी फुन्सी मिट जाती है। बाग़ी जैतूनके पत्ते नेत्र रोगोंमें बहुत लाभदायक है। इनसे मोतियाबिंद में भी लाभ होता है। इसके पत्तोंके पानीको नाकमें चढ़ानेसे बच्चोंकी आँखोंका ढेरापन (तिरछा देखना) मिट जाता है। इसके पत्तोंको सिरकेमें औटाकर कुल्ले करनेसे दांतोंका दर्द और मुँहके छाले मिटते हैं। इसके पत्तोंको पीसकर जौ के आटेमें मिलाकर कुछ पानी डालकर नाभिपर लेप करनेसे पुराने दस्त बंद हो जाते हैं।

जैतून का तेल—

जैतूनमेंसे एक प्रकारका हलके पीले रंगका सफेदी लिये हुए तेल निकलता है। जिसको अंग्रेजीमें ओलिव आइल (Olive Oil) कहते हैं।

शेखके मतसे जैतूनका तेल दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। इसका ताजा तेल गरम और तर होता है। कच्चे फलोंका तेल पहले दर्जेमें सर्द और खुश्क होता है। जालीनूसके मतानुसार हर किस्मका जैतूनका तेल दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क होता है। इसकी खली पहले दर्जेमें गरम और खुश्क होती है।

इस तेलकी मालिशसे पट्ठोंकी सर्दी दूर होकर उनमें ताकत आती है। यह सूजनको दूर करता है। इसके खिलानेसे पेटके कीड़े मरकर बाहर आजाते हैं। इसके तेलकी मालिश सर्दीके रोगोंमें अच्छा फायदा करती है। इसका तेल बातको दूर करता है, सुद्दोंको बिखेरता है और कफ़को घटाता है। फालिज और सुन्नावातमें भी यह लाभ दायक है। इसको आंखमें लगानेसे आंखकी ज्योति बढ़ती है, नजलेका पानी नहीं उतरने पाता और अगर आँखमें जाला हो तो वह भी कट जाता है। जङ्गली जैतूनके तेलकी मालिश से टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती हैं। इसके तेलको पीबदार फोड़ोंमे लगानेसे फ़ायदा होता है। घुले हुए जैतूनके तेलको मुंहपर मलनेसे चेहरेकी रौनक बढ़ जाती है। इसको आंखमें लगानेसे आँखकी खुजली, जाला, पानीका बहना और नजला साफ हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जैतून का गोंद—

जैतूनके वृक्षसे एक प्रकारका गोंद भी निकालता है जो कुछ पीला, स्याह, सुर्खी माइल और मीठा होता है। इसको कुछ देर तक हाथमें रखकर मसलनेसे यह पिघलकर शहद सरीखा हो जाता है।

यह पहले दर्जेमें गरम और खुश्क होताहै। कोई २ दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क मानतेहैं। यह जुक़ाम, नजला, सर्दी और खाँसीमें फायदा पहुँचाता है और आवाजको साफ़ करता है। इसको योनिमें रखनेसे गर्भाशयकी सूजन दूर हो जाती है। इसको मरहममें मिलाकर लगानेसे दादके जख़्म और तर खुजलीमें फायदा होता है। यह मेधाशक्तिको भी फायदा पहुँचाता है। इसको आँखमें लगानेसे पुतलीके रोग, जाला और बामनी रोगमें फायदा होता है। जंगली जैतूनका गोंद कीड़ा खाये हुए दांतमें भर देनेसे बहुत फायदा पहुँचाता है। इसके सेवनसे पुरानी खांसी मिट जातीहै और कफ निकल जाताहै। इसका गोंद मूत्रल है और योनिमें रखनेसे मासिक धर्मको जारी कर देता है। यह गर्भ को भी गिरा देता है।

कर्नल चोपराके मतसे जैतूनका तेल औषधियोंमें बहुत काममें लिया जाता है। अन्तः प्रयोग और बाह्यप्रयोग दोनोंही में यह उपयोगी है। इससे कई प्रकारके लेप और मरहम बनाये जाते हैं। यह एक प्रकारका पौष्टिक खाद्य भी है। कई ऐसी बीमारियोंमें जिनमें शक्तिका ह्रास होता हो यह देनेके काममें लिया जाता है।

मुज़िर—इस वनस्पतिके अधिक सेवनसे अनिद्रा, कमजोरी और दुबलापन पैदा होता है। और फेफड़ों को नुकसान पहुँचाता है। इसका गोंद वरम और सिरदर्द पैदा करता है और गर्भको गिरा देता है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नष्ट करनेके लिये बादाम, अखरोट, शहद और शरबत नीलोफर या खमीरा बनफ्शा मुफीद है।

मात्रा—इसके गोंदकी मात्रा ३ माशा से ५ माशे तक और तेलकी मात्रा ढाई तोले तक की हैं।

जोटो जोटिया

नाम—

उरिया—जोटो जाटिया। संथाल—सिकुअर। लेटिन—Urena Repanda (यूरेना रेपेंडा)।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

यह वनस्पति पंजाब, देहरादून और मध्यप्रदेशमें पैदा होती है। यह एक हमेशा हरी रहने वाली बहुशाखी वनस्पति है। इसके पत्ते गोल डंठलदार और ऊपरकी तरफ से खुरदरे होते हैं। इसके बीज फिसलने होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

संथाल जातिके अन्दर इस वनस्पतिकी जड़ और इसका छिलका पागल कुत्तेके विषको दूर करने के लिये काममें लिया जाता है।

जोड़तोड़

वर्णन—

यह एक जातिका घास है। इसकी बेल तालाब, झील और पानीके किनारों पर पाई जाती है। इसका जोड़तोड़ नाम इस लिये पड़ा है कि इसके डंखल को तोड़कर अगर फिरसे जोड़ दिया जाय तो जुड़ जाता है। इसका आकार प्रकार तुलसी की तरह होता है। इस पौधेके पत्ते नहीं होते। इसके डखलोंमें बहुत गांठे होती हैं। यह वनस्पति रुहेल खंडमें बहुत पाई जाती है।

गुण दोष और प्रभाव,—

३।४ माशे जोड़तोड को ३।४ काली मिरचीके साथ पीस छानकर उसमेंसे ढाई सींक भर कर पिलाते रहनेसे शीतला का जोर बहुत कम हो जाता है। इसके सेवनसे रोगी एक रात भर मूर्छित अवस्था में पड़ा रहताहै और दूसरे दिन शीतलाके बड़े २ दाने निकल आते हैं।

जोड़ तोड़को उबालकर भुरता बनाकर कामेंद्रिय पर बाँधने से सुज़ाक नष्ट हो जाता है। १॥ तोला जोड़ तोड़को ३।४ तोला पानीमें रातको भिगोकर सुबह उस पानीको मल छानकर पिलानेसे कामला रोग मिटता है। (ख० अ०)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जोजुलमरज

नाम—

यूनानी—जोजुलमरज ।

वर्णन—

इस वनस्पति के पत्ते जौ के पत्तोंकी तरह होते हैं । इसका डंठल हाथ भरसे भी अधिक लंबा होता है । इसके ऊपर गोल छत्री की तरह सफेद फूल आता हैं । इसकी जड़ ठोस और मुलायम होती है । किसी २ मतसे यह काकनजकी एक जाति है । यह अधिकतर स्याम में पैदा होती है ।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है । इसके खाने से पेटके कृमि नष्ट होजाते है । गोखरूके काढ़ेके साथ इसको देने से यह पथरी को तोड़कर निकाल देती है । पिंडलियों पर होने वाले कफज शोथ पर अगर इसका लेप किया जाय तो एकही रातमें अच्छा हो जाता है ।

जोला बदेसा

नाम—

लेटिन— Humboldtia Valiana (हंबोल्दतिया) वालिएना । मलयालम— कुरुपुन्नू, कुराति तामील—अत्तुवंजि ।

उत्पत्तिस्थान—नीलगिरी

वर्णन—

विवरणः—यह एक बगैर शाखावाला सीधा वृक्ष है । इसके पत्ते पत्रवृन्त वाले होते हैं । ये तीखी नोक वाले और बरछी आकार के होते हैं । इनकी दोनों बाजू रुएंदार होती हैं । इसकी फली १५ सेंटि मीटर लम्बी और ३.८ सेंटि मीटर चौड़ी होती है । इसकी नोक तीखी होती है ।

गुण दोष और प्रभाव—

इसका छिलटा पित्त कोढ़, व्रण और विसर्प रोगमें उपयोगी होता है ।

क० चौपराके मतानुसार—इसका छिलटा पित्त, कोढ़ व्रण और विसर्प रोगमें उपयोगी है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जौ

नाम—

संस्कृत—यव, मेध्य, सितशूक, दिव्य, धान्यराज, पवित्र धान्य। हिन्दी—जौ। बंगला—यव। मराठी—जव। गुजराती—जव। नेपाल—तोस। भूतान—नस। पंजाब—जव। अंग्रेजी—Barley (बार्ली)। लेटिन Hordeum Vulgar (होरडियम व्हलगेट)

वर्णन—

जौ एक मशहूर अनाज है जो हिन्दुस्तानमें सब दूर पैदा होता है। आयुर्वेदिके मतानुसार यह शूक, निःशूक और हरित वर्णके भेदोसे तीन प्रकारका होता है। शूक यव गुणोंमें सबसे अधिक होता है। निःशूक यव उससे हीन गुणवाला होता है और हरित वर्ण उससेभी हीन गुणवाला होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिके मतसे जौ कसेला, मधुर, शीतल, मृदु, व्रणरोगमें तिलके समान लाभदायक, रूखा बुद्धिवर्धक, अग्निवर्द्धक, पाकमें कडुआ, स्वरको शुद्ध करने वाला, भारी, बलकारक, वातको पैदा करने वाला, कांति वर्धक और गलेके रोग, चर्मरोग, कफ और पित्तके रोग, मेद रोग, पीनस तथा श्वास, खाँसी, उरु स्तंभ, रक्त विकार और तृषाको दूर करनेवाला होता है।

जौका सत्व निकालने की विधि—जौको कुनकुने पानीमें गला देना चाहिये। जब उनमें बारीक २ अंकुर फूटते नजर आने लगें तब उनको निकालकर अच्छी तरह सुखा लेना चाहिये। उसके बाद उनका चूर्ण कर लेना चाहिये। इस चूर्णको बराबर वजनके ठंडे पानीमें मिट्टीके बरतनमें ६ घंटेतक भिगोना चाहिये। फिर उसमें चौगुना गरम पानी मिलाकर १ घंटेतक पड़ा रहने देना चाहिये। उसके बाद उसे आंचपर एक जोश दे देना चाहिये। जोश आनेके बाद उसको साफ कपड़ेमें साफ बरतनके अन्दर छान लेना चाहिये। उस बरतनको गरम पानीसे भरे हुए एक दूसरे बरतनमें रखकर हलकी आंचसे औटाना चाहिये। कुछ देरके बाद शहदके समान गाढ़ा सत्व तैय्यार हो जायगा। उसको ढक्कनदार शीशीमें बंद करके ठंडी जगहमें रख देना चाहिये। इस सत्वको भोजनके ३ घंटे पश्चात् ६ माशेसे लेकर १ तोले तककी मात्रामें लेना चाहिये।

जौका यह सत्व पाचक और पोषक होता है। यह गेहूँके सत्वसे जल्दी हजम होता है। इसको प्रति दिन खानेसे मधुमेहके अन्दर जाने वाली शक्कर नष्ट हो जाती है क्योंकि इसकी सहायतासे अन्न हजम होता है और अन्नका रक्त बनने तक जितनी विनिमय क्रियाएं होती हैं वे सब सुधर जाती हैं। पाचन क्रियाकी खराबीमें और फुफ्फुसके रोगोंसे पैदा हुई कमजोरी में भी जौ का सत्व दिया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इस सत्वको कम मात्रामें लेना चाहिये। क्योंकि इसको अधिक मात्रामें लेनेसे दस्तें लगने लगती हैं। जिन बीमारियोंमें शरीरसे पीब बहता हो उन बीमारियोंमें यह बहुत अच्छा पथ्य है।

जौकी खीर बनानेकी रीति—जौ को रातमें गरम पानीमें भिंगोकर सुबह उसमें दूध, शक्कर डालकर मन्दी आँचसे औटाना चाहिये और उसमें थोड़ासा नमक डालकर पिलाना चाहिये। कमजोर बच्चे इससे पुष्ट होजाते हैं।

जौका खार बनाने की विधि—जौ के पंचांगको उखाडकर सुखाकर जला देना चाहिये। फिर उसकी राखको पानीमें खूब घोल लेना चाहिये। उसके बाद उस बरतनको २।३ घंटे तक स्थिर पडा रहने देना चाहिये। जब राख नीचे बैठ जाय तब पानीको ऊपरसे निकाल लेना चाहिये। उसके बाद उस पानीको आग पर चढ़ा देना चाहिये। औटते २ जब रबडी सरीखा हो जाय तब उसको उतारकर सुखा लेना चाहिये। इस प्रकार सफेद रंगका उत्तम क्षार तैयार हो जाता है।

जवाखारके गुणदोष—जवाखार यह एक दिव्य वस्तु है। भोजनके पहिले लेनेसे यह अग्निको दीपन करती है और आमाशय की श्लेष्म त्वचामें रहनेवाले मज्ज तंतुओं की पीड़ाको कम करती है। इन्हीं दो गुणोंकी वजहसे अजीर्ण, आमाशय की पीड़ा और वमनमें यह पदार्थ दिया जाता है। भोजनके पश्चात् लेनेसे यह आमाशय की अम्लताको कम करता हैं। खूनके अन्दर मिलनेके पश्चात् यह रक्त कणोंके रंग और संख्याको बढ़ाता है। रक्त शुद्धि के लिये जौ खार और दूसरे सुगन्धित पदार्थों के साथ दिया जाता है। जौखार मूत्रपिंड को भी उत्तेजना देता है जिससे पेशाब की मात्रा बढ़ती है। मूत्रपिंडों की सूजन की वजह से जब पेशाब की मात्रा कम हो जाती है तब जवाखार को देने से लाभ होता है। इससे पेशाब में होने वाली जलन फौरन मिट जाती है। सुजाक में भी जवाखार को देने से शांति मिलती है। जवाखार त्वचाको भी उत्तेजित करता है। इसलिये यह पसीना लानेके लिये ज्वरमें नीमके रसके साथ दिया जाता है। जवाखारके लेनेसे कफ पतला होकर छूटता है, श्वास मार्गकी सूजन कम होती है, इसलिये श्वास नलिका की नवीन सूजनमें और सूखी खाँसीमें इसको देनेसे फायदा होता है। यह पित्तको भी पतला करताहै और पित्तवाहिनी नलियोंकी सूजनको मिटाता है। इसलिये यकृतकी सूजन वगैरह रोगोंमें भी यह दिया जाताहै। जवाखार अम्लता नाशक, दीपन, रक्त शोधक, पांडु रोग नाशक, मृदुस्वभावी, मूत्रल, पसीना लाने वाला, कफको नष्ट करनेवाला, पित्त क्रियाको सुधारने वाला और अत्यन्त सौम्य होता है। जवाखारकी अपेक्षा जौकी राख विशेष अच्छी रहती है। फुफ्फुस रोगोंमें जौकी राखही काममें लेनी चाहिये।

रासायनिक विश्लेषण—जौकी राखमें सिलिसिक एसिड २६ प्रतिशत, फास्फोरिक एसिड़ ३२॥ प्रतिशत, पोटास २२॥ प्रतिशत और चूना ३॥ प्रतिशत रहता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यूनानी मत—यूनामी मतसे जौ दूसरे दर्जे में सर्द और पहले दर्जे में खुश्क होता है। यह कब्जियत करता है, खूनके जोशको ठंडा करता है, पित्त और गर्मी के बुखारकी तेजीको कम करता है। क्षय, निमोनिया और खाँसीमें मुफीद है, प्यासको बुझाता है, जौ की गरम २ रोटीके टुकड़े करके, उसको मिट्टीके बरतनमें रखकर उसमें थोड़ा पानी भर दें और एक हफ्ते तक जमीनमें गाड़दें। फिर निकालकर उसका साफ़ पानी लेकर शीशीमें भरदें। इसमेंसे २ से ५ तोला तक पानी अर्क गाव जबाँके साथ बुखारके मरीजको देनेसे तसल्ली मिलती है। जौके आटेको पानीमें पकाकर कुनकुना होने पर लेप करनेसे झाँई और खुजलीमें फायदा होता है। पीली फुन्सियों वाली खुजली पर इसको सिरके के साथ पकाकर लगाना चाहिये। जौके आटेमें तिलका तेल और मट्ठा मिलाकर लगानेसे सूखी खुजलीमें बहुत लाभ होता है। कंठमालामें धनियेके हरे पत्तोंके रसके साथ जौके आटेका लेप करनेसे कंठमाला की सूजन बिखर जाती है। जौके आटेको अञ्जीरके साथ लगानेसे कफकी वजहसे पैदा हुई सूजन बिखर जाती है और सिरके और इसबगोलके साथ इसका लेप करनेसे पित्तसे पैदा हुई सूजन बिखर जाती है। खासकर कानके पीछेकी सूजनमें यह बहुत फायदा पहुँचाता है। अजवायन खुरासानीके साथ इसके आटेको लेप करनेसे हड्डीके टूटने पर और मोच आने पर फायदा होता है। सिरके के साथ जौके आटेका पेशानी पर लेप करनेसे गर्मी का सिर दर्द दूर होता है। जिनकी तबियतमें गर्मी चढ जाय या गर्मी की वजहसे घबराहट पैदाहो उनको जौका सत्तू और शक्कर पानीमें घोलकर देनेसे बड़ी शान्ति मिलती है। गरम प्रकृति वालोंके लिये यह एक अच्छा पथ्य है। इसके आटेको इकलिलुल्मुल्क और खस २ के दानोंके साथ लेप करनेसे निमोनिया और ग्रंथिवातमें लाभ होता है। अलसीके बीज, मेथीके बीज, सद्दाब और जौ के आटेको पानीमें मिलाकर पेट पर लेप करने से ज़बरदस्त पेटका फुलाव भी मिट जाता है।

जौखार—यूनानी मतसे जौखार गरम और खुश्क होता है। यह वायु और कफको बिखेरता है। कॉलिक उदर शूलको दूर करता है। कफकी खाँसीमें लाभ पहुँचाता है। अन्नकी रुचिको बढ़ाता है। मसाने की पथरीको तोड़ता है। गलेको बीमारियाँ, मेदेकी खराबी, बवासीर, बायगोला, तिल्ली और यकृतकी सूजन में फ़ायदा पहुँचाता है। बदहजमीमें जब कि मेदेके अन्दर बहुत खट्टापन हो जाता है तब इसको देनेसे लाभ होता है। उपदंश और गठियाकी बीमारीमें भी इसका प्रयोग किया जाता है।

मुज़िर—जौ का अधिक मात्रामें प्रयोग ठंडी प्रकृति वालोंको नुकसान पहुँचाता है और पेटमें फुलाव पैदा करता है। इसको हमेशा खाते रहनेसे पेटमें मरोड़ी और वायु पैदा होती है और मेदा तथा आँते कमजोर हो जाती हैं।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नाश करनेके लिये घी, मक्खन, मिसरी, गरम मसाला और मस्तगी मुफीद है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मात्रा—जवाखारकी मात्रा १ माशे से ३ माशे तक की है और जौके सत्वकी मात्रा आधेसे १ तोले तक की है।

जियापोता

नाम—

संकृत—पुत्र जीवा, गर्भकरा, गर्भदा, अर्दसादका, कुमार जीवा, पवित्रा। हिन्दी—जियापोता, जीवपुत्रक, ज्योति। बंगाल—जियापोता, पुत्रजीवा। बंबई—जीवपुत्रक, पुत्रजीवा। मराठी—जीवपुत्रक, पुत्रजुआ। पंजाब—जियापुत्ता, पातजन। तामील—इरुपोलि, करुपलि। तेलगू—कद्रजीवी, महापुत्र, पुतजन, पुत्रजीविका। लेटिन—Putranjiva Roxburghii (पुत्रंजिवा राक्सबर्गी)।

वर्णन—

जियापोता के वृक्ष सारे भारत वर्षकी पहाड़ी जमीनमें कुदरती तौरसे पैदा होते हैं। इनकी कहीं २७ खेतीभी की जाती है। यह हमेशा हरा रहने वाला वृक्ष होता है। इसकी छाल फीके रंगकी, पत्ते कटी हुई किनारोंके, गहरे हरे रंगके, चमकीले अंडाकार और ६.३ से १० सेंटिमीटर तक लम्बे तथा २-२ से ३.८ सेंटिमीटर तक चौड़े होते हैं। इसका फल लंबगोल और कुछ तीखी नोक वाला होता है। इसकी गुठली तीखी और बहुत कठोर रहती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेद के मतानुसार यह वनस्पति शीतल, सुगंधित, तीक्ष्ण, कामोद्दीपक, मूत्रल, और विरेचक होती है। यह आंखोंके लिये लाभदायक है तथा पित्त, प्यास, जलन, विसर्प और श्लीपदमें लाभ पहुँचाती है। यह वात और कफ पैदा करती है। इसके फल तथा इसकी गुठली ज्वरके अन्दर दी जाती है।

इस बनस्पतिका नाम संस्कृत तथा हिन्दुस्तानकी प्रायः सभी भाषाओंमें पुत्रजीवक पाया जाता है। इससे यह मालूम होता है कि इस वनस्पतिके इस नामके अन्दर कुछ सार्थकता अवश्य है। सिद्ध नित्यनाथ कृत रसरत्नाकर नामक ग्रंथमें लिखा है कि पुत्रजीवकके बीज, पत्ते और जड़को दूधके साथ पीनेसे जिस स्त्रीके बच्चे हमेशा मरजाते हों वह स्त्री दीर्घ आयुष्यवाले पुत्रको जन्म देती है।

जङ्गलनी जड़ी बूटी नामक ग्रंथके कर्ता लिखते हैं "कि इस वनस्पतिके सम्बन्धमें इस प्रकारकी बातें तो बहुत सुनते थे मगर इसका अनुभव लेनेका अवसर हमको नहीं मिला था। एक बार रणासणकी तरफ एक रोगीकी दवा करनेके लिये हमें जानेका अवसर आया और वहांसे कुछ दूरीपर चौमुख महादेवके दर्शनके लिये जाते हुए पुत्र जीवकके २ वृक्ष नजर आये और हमने उनकी थोड़ीसी जड़ें निकलवा ली।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जिस रोगीकी चिकित्सा करने हम गये थे वह एक स्त्री थी उसे हमेशा गर्भपात होनेकी बीमारी थी। अगर कोई बालक पूरा हो भी जाता तो थोड़े ही दिनोंमें मर जाता था। क्योंकि उसका दूध बिलकुल पानीके समान और अत्यंत दुर्गंधपूर्ण रहता था। यदि कोई दूसरी स्त्री बालकको दूध पिलानेकी इच्छा करती तो भी उसकी इच्छा सफल नहीं होने पाती थी। क्योंकि प्रत्येक बालकको जन्मके साथ ही ऐसा रोग पैदा होजाता था जिससे वह दूध पी ही नहीं सकता था इसके अतिरिक्त इस स्त्रीको प्रदर और योनिदाहकी बीमारी भी हमेशा रहा करती थी।

इस नवीन औषधि (पुत्रजीवक) को अजमानेकी लालसासे हमने अपने साथ लाई हुई एक भी औषधिका उपयोग न करते हुए पुत्र जीवककी जड़ोंको ही देना निश्चय किया। प्रति दिन सबेरे शाम एक २ तोला जड़ उसमेंसे दूधमें घिसकर देना शुरू किया और खट्टे, खारे, तीखे और गरम पदार्थोंसे सख्त परहेज करने की हिदायत कर दी। रोगीको इस औषधिपर अविश्वास नहीं होजाय इसलिये उसका विश्वास जमानेको दूसरी औषधिकी तौर पर सिर्फ सुहागेकी पुड़िया देदीं थी। इस प्रयोग को शुरू करनेके पश्चात् धीरे२उसका रोग कम होनेलगा और उसे२।३ महीनेके पश्चात् गर्भ रहा। उसके पश्चात् भी प्रसूति होने तक यह औषधि चालू रक्खी गई। परिणाम यह हुआकि नियत समयपर उसको एक बिलकुल स्वस्थ और सुन्दर पुत्र हुआ। उसका दूध भी सुधर गया और उसके बाद अभी तक वह ५ स्वस्थ संतानोंकी माता है।

इस घटनाके पश्चात् गर्मी, प्रसूति रोग, कंठमाला, प्रदर, विस्फोटक, इत्यादि रोगोंकी वजहसे बंध्यत्व भोगनेवाली लगभग २५ स्त्रियोंपर इस वनस्पतिके फलके गर्भका उपयोग किया गया जिसका परिणाम यह हुआ कि इनमें से करीब २० स्त्रियों पर सन १६२३ की साल तक अत्यंत संतोष जनक परिणाम नजर आया।

इससे पता चलता है कि स्त्रियोंके गर्भाशयके रोगोंको दूर कर उनको गर्भाधानके योग्य बनानेकी इस औषधिमें अच्छी शक्ति है।

सर्प विष तथा दूसरे विषोंके ऊपर भी इस औषधिका अच्छा प्रभाव होता है। रस रत्नाकर ग्रन्थमें लिखा है कि पुत्र जीवकके फलोंकी मगज ४ माशेकी मात्रामें ठंडे पानीके साथ पीसकर पीनेसे तथा आँखमें आँजनेसे और लेप करनेसे स्थावर, जंगम सब प्रकारके विषोंका नाश होता है। अगर साक्षात् काल स्वरूपी नागने भी डंक मारा हो तो भी रोगी बच जाता है।

मगर केस और मश्कर के मतानुसार सर्पविषमें यह औषधि अपना कोई भी प्रभाव नहीं रखती।

रस रत्न समुच्चय नामक ग्रंथमें इस औषधिके लिये लिखा है कि पुत्र जीवकके फलोंके गर्भको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे जलन युक्त गठान, प्लेगके समान जहरी गठान, तथा और चाहे जिस

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

देष और चाहे जिस कारण से पैदा हुई गठान उसकी वेदनाके साथ तत्काल नष्ट हो जाती है। बगलमें होनेवाली गठान, गलेकी गठान और बद गठानको भी इसका लेप नष्ट कर देता है।

मकोयके पत्ते, मेनसिल और मुलेठी। इनसबको समान भाग लेकर अथवा सिर्फ पुत्रजीवक के फलोंके गर्भको गायके दूधके साथ पिलानेसे प्लेगके समान असाध्य रोगोंकी जहरीली गठान भी मिट जाती है।

इन सब बातोंसे यह मालूम होता है कि यह औषधि उपदंश, फिरंगवात, इत्यादि रोगोंके द्वारा शरीरमें फैले हुए जहरको दूर करनेके लिये भी बहुत उपयोगी हैं।

बनावटें—

पुत्रदावटी—जियापोताके फलका गर्भ ४ तोला, शिवलिंगीके बीज ४ तोला, पारस पीपलके बीज ४ तोला, नागकेशर ४ तोला, असगंध ४ तोला, सरपंखाकी जड़ ४ तोला, हरड़ ४ तोला, बहेड़ा ४ तोला, आंवला ४ तोला, देवदारू ४ तोला, उलट कम्बल की जड़ ४ तोला, कमलगट्टा ४ तोला, बलबीज ४ तोला, सफेद चन्दन ४ तोला, लाल चन्दन ४ तोला, दारूहलदी ४ तोला, बंशलोचन ४ तोला, बंग भस्म ४ तोला, लोह भस्म ४ तोला, सोनामुखी भस्म ४ तोला। इनमेंसे सबसे पहिले काष्ट औषधियों का चूर्ण करके तीनों धातु भस्में उसमेंमिला देना चाहिये। उसके पश्चात् सारे चूर्णको १ भावना भोरिंगणीके क्वाथकी, १ भावना अशोक की छालके क्वाथकी, १ भावना पुत्र जीवकके फलोंके गर्भके क्वाथकी और १ भावना शतावरीके रस अथवा क्वाथकी देना चाहिये। उसके पश्चात् इसकी छै २ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लेना चाहिये।

इनमेंसे प्रति दिन सबेरे शाम ३ से लेकर ४ गोली तक दूधके साथ लेना चाहिये। कुछ समय तक इसको सेवन करनेसे सभी जातिके ऋतु दोष दूर होकर स्त्रियोंका बंध्यत्व मिट जाता हैं। जिन स्त्रियोंका गर्भ हमेशा गिर जाता हो, रजोदर्शन के समयमें कष्ट होता हो, मासिक धर्म कम आता हो, गर्भ धारण न होता हो, ऐसी स्त्रियोंके सब विकार इस औषधिसे दूर हो जाते हैं। जन्म् बंध्या, काक बंध्या और मृत वत्सा औरतों के लिये यह एक उत्तम औषधि है। (जंगलनी जड़ी बूटी)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जिकलक(तुर्की)

नाम—यूनानी—जिकलक ।

वर्णन—

यह एक फल होता है जिसका रंग लाल, स्वाद खट मीठा और गन्ध खरबूजे की तरह होती है ।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह सर्द और तर है । यह हृदय को शक्ति देता है । पित्तकी तेजीको कम करता है। शरीर की खुश्कीको दूर कर तरी पैदाकर हैं। सूखी खांसी में यह लाभदायक है। वातकी वजहसे पैदा हुए पागलपनमें यह मुफीद है। खुजली, चेचक और बवासीर में भी यह फायदा पहुँचाता है ।

जिंगन

वर्णन—

संस्कृत—जिंगिनी, झिंगनी, झिंगी, सुनिर्यासा, प्रमोदिनी, कुल मंजरी, पार्वती, । हिन्दी—जिंगिनी, जिंगन, । मराठी—मोई, मोख, शिम्पटी । गुजराती—मवेड़ी, मालेड़ । काठियावाड़—मवेड़ा । सिंध—भुइ । काश्मीर—गन्धबल, कैमेल । कनाड़ी—उडीमर । तामील—ओदीयमरम् । तेलगू—ओड्डीमानु । लेटिन—Odina wodeir (ओडीना बोडियर) Lamnnea Grandis (लेनिया ग्रेंडिस)

वर्णन—

जिंगिनीका वृक्ष जब पत्ते और फूलोंसे लदा हुआ रहता है तब बहुत सुन्दर दिखलाई देता है। मगर जाड़ोंमें जब इसके पत्ते खिर जाते हैं तब इसके वृक्ष भस्मी रंगके ठूंठकी तरह दिखाई देते हैं। इसके लिए ब्रांडिसने लिखा है। कि "A Handsome Tree when in Full foliage an eyesore when leafless"

इस वृक्षकी साधारण ऊंचाई ३०।४० फुट और इसके पिंडकी गोलाई ४।५ फुटकी होती है। इसके बड़ी और फैली हुई डालियां लगती है। इसके पत्ते लंबी सलियोंके ऊपर जोड़ेसे लगते है । वे बहुत चमकते हुए और सुन्दर होते हैं। शाखाओंके किनारेके पास २ आकर इनका आकार गुम्बजकी तरह हो जाता है। इसके आमके मोरकी तरह सूक्ष्म पीलास लिये हुए लाल रंगके फूल आते हैं जो खूशबूदार होते हैं। बसंतऋतुमें इस वृक्षसे कुछ पीला और सफेद रंगका गोंद निकलता है। जो आधा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पानीमें गलता है और आधा नहीं गलता . यह वृक्ष काठियावाड़, मद्रास प्रान्त और हिन्दुस्तानके गरम भागोंमें कई स्थानों पर होता है। दुष्कालके समय यह ढोरोंके घासकी जगह बहुत उपयोगी सिद्ध होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वैदिक मतसे जिंगनी मधुर, गरम, कसैली, योनिशोधक, चरपरी, तथा हृदयरोग, बात और अतिसारको दूर करनेवाली होती है। इसका गोंद स्नेहन और संग्राहक हैं। इसकी छाल संग्राहक, पौष्टिक और व्रणरोपक होती है।

दस्तों को बन्द करने के लिये इसका गोंद दिया जाता है। मोच और चोट की पीड़ा मिटाने के लिये इसके गोंद को नारियल के रसमें पीसकर लेप करते हैं। इसकी छालका काढ़ा, अजीर्ण, अतिसार और शरीर की शिथिलता को दूर करनेके लिये दिया जाता है। इस काढ़ेसे कुल्ले करनेसे गलेकी खराबी मिटकर खाँसीमें लाभ होता है। दांतों का दर्द मिटता है और मसूड़ों का ढीलापन दूर होता है। इसकी छालके काढ़ेको तेलमें सिद्ध करके उस तेलको पुराने और न भरनेवाले व्रणोंपर लगानेसे लाभ होता है। इसके पत्तोंको गरम करके सूजनके ऊपर बाँधते हैं। दर्दके रोगमें इसके पत्तोंका क्वाथ बनाकर पिलाया जाता है। स्त्रियोंके हृदयका बल बढ़ानेके लिये भी इसके पत्तोंका क्वाथ मुफीद है। अफीम या दूसरे किसी प्रकारके विषसे अगर मूर्च्छा आगई हो तो उसको मिटानेके लिये इसके ताज़े पत्तोंके १० तोले रसमें ५ तोले इमली को मसलकर पिलाना चाहिये। जिससे वमन होकर मूर्च्छा दूर हो जायगी। पुराने और भरेनीगले फोड़ों पर इसकी छालको नीमके तेलमें पीसकर लगाने से लाभ होता है।

इसकी छालका लोशन बनाकर दुष्ट व्रणोंके ऊपर लगानेके काममें लिया जाता है। यह चर्मप्रदाह, कुष्टके व्रण और पीले रंगकी फुन्सियों पर भी लाभ पहुँचाता हैं।

बंगालमें अफीम या दूसरे निद्रा लाने वाले पदार्थों की वजहसे पैदा हुई बेहोशी को मिटाने के लिये इसका ताजा रस १० तोले लेकर उसमें ५ तोला इमलीको मसलकर पिलाते हैं। जिससे बेहोशी मिट जाती है।

आर० एन० खोरीके मतानुसारे पाँडेचेरीमें इसकी छाल सन्धिवात और पेचिशके ऊपर उपयोगमें ली जाती है। इसका गोंद स्त्रियोंके लिये दुग्ध वर्धक माना जाता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसका रस आँखोंके रोग और दुष्ट व्रणों पर लगाने के काममें लिया जाता है।

रासायनिक विश्लेषण—इसकी छालमें टेनिन पाये जाते हैं। इसकी छालकी राखमें पोटे-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शियम कारब्रोनेट रहता है। यह वनस्पति नेत्र रोग, कठिनाईसे आराम होने वाले व्रण, विस्फोटक और मुँहके छालो और मसूड़ों पर बहुत उपयोगी है।

—

जिंगना (जोंकमारी)

नाम—

हिन्दी—जिंगना, जोंकमारी, जंगमानि। काश्मीर—काला चंग्र। पंजाब—धब्बर। अरबी—अंधसिरा, परिजानेह। गुजराती—काली फुलड़ी, गोलो फुलड़ी। सीमान्त प्रदेश—जोकमारी, जेंधानी। लेटिन—Anagallis Arvensis (अनेगेलिस अरवेनसिस)

वर्णन—

यह वर्ष जीवी क्षुद्र बनस्पति नेपाल, कुमाऊँ, खासिया पहाड़ और काश्मीर में पैदा होती है। इसकी दो जातियाँ होती हैं। एक लाल फूलवाली दूसरी नीले फूलवाली। इसका पौधा छोटा और जमीन पर फैला हुआ होता है। इसके पत्ते डंठल रहित, अंडाकृति, और बहुत नसोंवाले होते हैं। ये हरेरंगके होते हैं और इनपर पीले धब्बे रहते हैं। इसके फूल किरमिजी रगके होते हैं। इसकी फली मटरकी फलीकी तरह होती है और उसमें छोटे छोटे बीज होते हैं। यह बनस्पति मच्छियों और कुत्तोके लिये जहरीली होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

जोंकमारी—कड़वी, तीखी, आनुलोमिक, वेदना नाशक, व्रणरोपक, सूजनको नष्ट करनेवाली, अवसादक और विषनाशक होती है। इस औषधिको बहुत छोटी मात्रामें देना चाहिये। अधिकमात्रा में देनेसे यह अपना जहरीला असर बनाती है। जिससे आमाशयमें प्रबल दाह पैदा होती है। इसका जहरीला तत्व अरीठा और शिकाकाईमें पाये जाने वाले जहरीले तत्वके समान ही होता है।

उन्माद, उदासीन वृत्ति और अपस्मारके रोगमें इस वस्तुको जुलाब लानेके लिये दिया जाता है। पागल कुत्तेके विषमें इसको खिलाते भी हैं और काटे हुए स्थानपर इसका लेप भी करते हैं। सर्पके विषमें इसको शराबके साथमें देते हैं। क्षार युक्त संधिशोथ, जलोदर, जलशोथ, यकृतशोथ, मूत्रपिंडके राग और फुफ्फुसके रोगोंमें इसको देनेसे विरेचन होकर सूजनकी कमी हो जाती है। सूजनकी कमी होनेके लिये, शरीरमें धुसे हुए कांटे निकालने के लिये और दांतोंकी वेदना रोकनेके लिए इसका बाहरी लेप भी अच्छा काम करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यूनानी मत—यूनानी मतके अनुसार यह वनस्पति प्रदाह, फोड़े और यकृत तथा गुर्दे के रोगोंमें लाभ पहुचाती है। नेत्र रोगोंमें और जलोदरमें भी यह लाभदायक है। यह नेत्रोंकी ज्योतिको सुधारती है और नेत्र कनीनिकाकी वेदनाको दूर करती है। इसके रसको सूंघनेसे नाकसे बदबू आना बन्द हो जाता है और नाक बहकर शिरो विरेचन हो जाताहै। मस्तिष्क की पीड़ा, कुष्ट, पागल कुत्ते का विष, जलोदर, उन्माद और अपस्मार में भी यह लाभदायक है।

यूरोपमें पहले यह वनस्पति मृगी, उन्माद, मूर्च्छा, हिस्टीरिया, यकृत और तिल्लीके रोग, जलोदर, पथरी, सांप और पागल कुत्ते के विष इत्यादि कई बीमारियों पर उपयोगमें लीजाती थी मगर अब इससे अच्छी दूसरी औषधियोंका आविष्कार हो जानेसे इसका उपयोग कम हो गया है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह औषधि गठिया, जलोदर और सर्पविष पर उपयोगी है। इसमें सेपानिन और एंक्मिम नामक दो पदार्थ पाये जाते हैं। यह वनस्पति मछलियों के लिये जहर है।

जिम

नाम—

संस्कृत—ग्रीष्म सुन्दर, फणिजा। हिन्दी—जिम, जिमशाग। बंगाल—ज़िमसाक। कनाड़ी—पर्पटक। तामील—कच्छंतरै। तेलगू—चेन्तारा शियाक। मलयालम—कैपजिर। मराठी—झरम। सिंहाली—हिम्पला। लेटिन— Mollugo Oppoositifolia. M. Spergull (मोल्यूगो आपोक्सिटीफोलिया और मोल्यूगो-स्पेरग्यूला)।

वर्णन—

यह एक तरकारी है। जो गुजरात, दक्षिणी उत्तरी कनाड़ा, कर्नाटक, सीलोन और बरमा में पैदा होती है। यह एक फैलनेवाली वनस्पति है। इसकी कई जातियां होती हैं। इसके पत्ते आधा इंच से १ इच तक लंबगोल, शल्याकृति होते हैं। इसके फूल सफेद और फलियां लबगोल होती हैं जिनमें गहरे बादामी रंगके बीज रहते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे यह वनस्पति कड़वी, दीपन, आनुलोमिक और मासिकधर्म नियामक होती है। प्रसूतिकाल में इसकी तरकारी बनाकर देने से या इसकी फाँट बनाकर देनेसे प्रसूता स्त्री के शरीर की सब

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्रिया सुधर जाती है। चर्मरोगों में इसकी तरकारी बनाकर देने से और इसके पचांग को पीसकर लेप करनेसे लाभ होता है। इसको गरम करके अरंडीके तेलके साथ मिलाकर कानपर बाँधनेसे कानका दर्द आराम होता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति अग्निवर्द्धक, कृमिनाशक, और मृदु विरेचक होती है।

जिउन्दली

नाम—

गढ़वाल—जिउन्दली, गदचिराना। मराठी—अतकी। कुमाऊं—नगपधेरा। कनाडी—मंदेन, गुदेहगीं। मलयालम—किरीटी। लेटिन—Maesa Indica (मेहसा इंडिका)

वर्णन—

यह एक बहुशाखी बड़ी झाड़ी होती है। इसकी शाखाएं नाजुक और फिसलनी होती हैं। इसके फूल छोटे, हलके और सुगन्धित रहते हैं। इसका फल लंबगोल और सफेद होता है इसके बीज काले होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

इसकी जड़ गरमीकी बीमारीमें लाभदायक मानी जाती है। इसका फल कृमिनाशक होता है।

जिमजिम

नामः—

यूनानी—जिमजिम।

वर्णन—

यह एक वनस्पतिकी जड़ है जो शकाकुल मिश्रीके समान होती है। इसमें खुशबू आती हैं। इसकी ताजी जड़ जंगली गाजरसे मिलती जुलती होती है। इसका रंग, ऊपरसे कुछ पीलापन लिये हुए सफेद होता है और भीतरसे बिल्कुल सफेद होता है। यह खुशबूदार और स्वादमें कुछ कड़वापन लिये हुए मीठी होती है। इसकी गाजर मूशान भी कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति दमा, पसलीका दर्द, फेफड़ेकी सूजन, निमोनिया, कफमें खूनका जाना और गलेकी सूजनमें लाभदायक है। इसको २ माशेसे ४ माशे तक की मात्रामें किसी दस्तावर औषधिके साथ देनेसे दिलकी धड़कनमें फौरन फायदा होता है। इसकी ताकत बहमन सफ़ेदकी ताक़तके बराबर है। यह शरीरको मोटा करती है और कामेंद्रियको ताक़त देती है तथा वीर्यके दोषोंको दूर करती है।

मुज़िर—यह तिल्लीके लिये हानिकारक है।

दर्पनाशक—इसका दर्पनाशक बबूलका गोंद है।

प्रतिनिधि—इसका प्रतिनिधि शिकंजबीन है।

मात्रा—इसकी साधारण मात्रा १ माशा और दिलकी धड़कन वाले रोगीके लिये ४ माशेतक है।

जियान

नाम—

यूनानी—जियान।

वर्णन—

इसकी बेल इश्क पेंचाकी बेलके समान होती है। इसके फूल बहुत खुशबूदार होते हैं। फूल चमेलीके फूलसे कुछ छोटा होता है। कई लोग इसको चमेलीकी ही एक जंगली जाति मानते हैं। इसकी जड़ काली और पतली होती है और उसमें कई बारीक तंतु होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमतसे यह वनस्पति तीसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। इसके फूलको सूंघनेसे सरदीका सिर दर्द और आधा शीशी जाती रहती है। यह मस्तिष्कमें जमे हुए कफको छांट देती है। इसकी डालियां और पत्तोंका सिरकेमें औटाकर कुल्ले करनेसे दांतोंका दर्द जाता रहता है। इसको सिरकेमें पीसकर लेप करनेसे श्वेतकुष्ठमें फायदा होता है। इसकी १ तोला जड़को २८ तोला पानीमें औटाकर उसमेंसे आधे पानीको पीनेसे लकवा, फालिज, पुरानी खाँसी और दमेके रोगमें बहुत लाभ होता है। इसकी जड़ोंको तेलमें औटाकर मालिश करनेसे अर्धाङ्ग, फालिज, गृध्रसी, कंपवात आदि सर्दीसे होनेवाले वातरोगोंमें बहुत लाभ होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसकी मात्रा १।। माशेसे ४।। माशेतक है।

मुजिर—इसको अधिक मात्रामें लेनेसे दस्त, उल्टी, मरोड़ इत्यादि उपद्रव होते हैं। इन उपद्रवोंको दूर करनेके लिये बादामका तेल और इसबगोलका लुआब देना चाहिये।

ज़ीरा

नामः—

संस्कृत—जीरक, दीप्यक, जरना, दीर्घका, अजाजिका, कांजिरा, मगधा, मितदिप्या, दीर्घकणा, मिताजाजी, शुक्लजाजी। हिन्दी—जीरा, सफेद जीरा। बंगाल—जीरे, साधाजीरे। मराठी—जीरे, पांढरे जीरे। गुजराती—जीरुं। मलयालम—जीरकम्। तेलगू—जिलकारा, जीरका। तामील—सीरूगम। फ़ारसी—ज़ीरा। अरबी—कमुना। उर्दू—ज़ीरा। यूनानी—खामुन। लेटिन—Cumminnm cyminum (कमिनम सायमिनम)।

वर्णन—

जीरा हिन्दुस्तानके सब प्रान्तोंमें मसालेकी तरह शागमें खाया जाता है। इसको सब कोई जानते हैं। इसलिए इसके विशेष वर्णनकी आवश्यकता नहीं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे जीरा शीतल, रुचिकारक, चरपरा, मधुर, अग्निको दीपन करने वाला, विषनाशक, नेत्रोंको हितकारी और पेटके आफरेको दूर करनेवाला होता है। यह किंचित् उष्ण प्रकृति है। जठराग्नि, को दीप्त करता है, गर्भाशयको शुद्ध करता है, ज्वरनिवारक होता है, तथा क्षय आफरा, वात, कुष्ट, विष विकार, ज्वर, अरुचि, रक्त विकार, अतिसार, कृमि, पित्त और गुल्मरोगका नाश करता है।

जीर्ण ज्वरके अंदर जीरेका व्यवहार करनेका बहुत रिवाज है। इससे भूख बढ़ती है और बल सुरक्षित रहता है। नवीन ज्वरमें इसको देनेसे शरीरकी जलन और पेशाबकी वेदना कम होती है। जीरेको उबालकर उस पानीसे स्नान करनेसे खुजलीमें लाभ होता हैं। पेटका फूलना, उल्टी, दस्त, संग्रहणी और अजीर्ण सम्बन्धी रोगोंमें जीरा लाभदायक है। बालकोंके लिये यह विशेष उपयोगी है। बवासीर की वेदना पूर्ण सूजनमें इसको मिश्री के साथ देने से तथा पानी में पीस कर अर्श पर लेप करने से शान्ति मिलती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मुज़ाक, पथरी और मूत्रावरोधमें जीरेको मिश्रीके साथ बड़ी मात्रामें देते हैं। जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोगोंमें भी इसका उपयोग लाभदायक माना जाता है।

यूनानीमत—यूनानीमतसे जीरा दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह पेटके आफरे को मिटाता है, वायु को शान्त करता है, यकृत और आंतों को ताकत देता है, गुर्देको शक्ति देकर उसमें गर्मी पैदा करता है और उसकी सूजनको मिटाता है, कफ को छांटता है, कब्जियत को मिटाता है, कामशक्ति को बढ़ाता है, इसका हिम रतौंधी, आंखोंके जख्म, नाखूना (एकप्रकार का नेत्ररोग) और आंखोंसे पानी बहनेको रोकता है, मसाने और गुर्दे की पथरी को तोड़ता है। सिरकेके साथ इसको देने से हिचकी बंद होती है। मेदेके कृमियों को यह नष्ट करता है, पित्त को शान्त करता है, गर्भिणी स्त्री की जी की मिचलाहटको दूर करता हैं। यह सफेद जीरे का हलवा खिलाने से स्त्रियों का दूध बढ़ता है। जीरे को घी में चुपड़कर चिलममें रखकर इसका धूम्रपान करने से हिचकी मिटती है। इसका तेल बीच्छू के जहर को उतारता है। भुना हुआ जीरा दहीके साथ खिलाने से अतिसारमें फायदा होताहै। जीरे को कचनार की छाल के रस का पुट देकर खिलानेसे वात, पित्त और कफ के ज्वर शान्त होते हैं। इसको गुड़के साथ खानेसे विषमज्वर में लाभ पहुँचता है। सोंठ और जीरे को पानी के साथ पीसकर लगाने से मकड़ी का जहर उतर जाता है। इसके लेपसे अंडकोष की सूजन भी दूर हो जाती हैं।

चरकके मतानुसार जीरेके बीज सर्पविष को दूर करनेमें सहायता पहुँचाते हैं। वाग्भट्टके मतानुसार यह विच्छूके विषमें उपयोगी है।

केस और महश्कर के मतानुसार यह साँप और बिच्छू दोनोंही के बिष पर निरुपयोगी है।

कर्नलचोपराके मतानुसार यह अग्निवर्द्धक, पेटके आफरे को दूर करनेवाला, शान्तिदायक और सर्पविष पर उपयोगी है। इसमें एक उड़नशील तेल पाया जाता है।

थाइमल नामक पदार्थ जो विशेषकर अजवायन से प्राप्त किया जाता है, जीरेमें भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। जीरेमें पाया जाने वाला मुख्य तत्व क्यूमिक अल्देराइड है। इसी से थायमल प्राप्त किया जाता है।

सन्याल और घोषके मतानुसार इसके बीजोंको पीसकर उनका पट्टा जलन व शूल को दूर करने के लिए चढ़ाया जाता है।

आर० एन० खोरीके मतानुसार यह वस्तु स्वरभंग रोग को दूर करनेके लिए काममें ली जाती है।

उपयोग—

गर्भवती स्त्री का जी मिचलाना— जीरे को नींबूके रसमें भिगोकर नमक मिलाकर खटाई का

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जीरा बनाते हैं। यह जीरा गर्भवती स्त्री को देनेसे उसका जी मिचलाना और होबड़ आना बंद होजाता है।

हिचकी—जीरे को घीमें चुपड़कर चिलम में रखकर उसका धूम्रपान करने से हिचकी मिटती है।

बिच्छू का विष—जीरे और नमक को पीसकर घी और शहद में मिलाकर थोड़ा सा गरम करके बिच्छू के डंकपर लगाने से बिच्छूका विष उतरता है।

पामा खुजली—४ तोला जीरा और २ तोले सिंदूर को ३२ तोला कड़वे तेलमें पकाकर लगानेसे खुजली मिटती है।

अतिसार—दही में जीरेका चूर्ण मिलाकर खिलाने से अतिसार मिटता है।

वात पित्त के रोग—जीरे और धनिये की लुग्दीसे सिद्ध किये हुए घी को सेवन करने से मन्दाग्नि और वात पित्त के रोग मिटते हैं।

विषम ज्वर—इसके चूर्ण को गुड़में मिलाकर खिलाने से मन्दाग्नि, विषम ज्वर और बातके रोग मिटते है।

मकड़ी का विष—सोंठ व जीरेको पानीके साथ पीसकर लगाने से मकड़ी का विष उतरता है।

कुत्ते का विष—जीरा और काली मिर्च को घोट छानकर पिलाने से कुत्तेका विष उतरता है।

अंडवृद्धि—जीरा और काली मिरचों को पानी के साथ पीसकर औटाकर मालिश करनेसे अंडकोष की सख्ती मिटती है।

जीरास्याह

नाम—

संस्कृत—कृष्ण जीरक, कृष्णजाजी, जरणा, कालजीरकः, बहुगन्धा, भेदनीका, भेदिनी, ऋद्य, कालमेषी, कश्मीरजीरक, इत्यादि। हिंदी—स्याहजीरा, कालाजीरा। गुजराती—स्याजीरूं। पंजाब—स्याह जीर। काश्मीर—गुनियान, गनियून। बंगाल—जीरा, शियजीरा। तेलगू—शिमाइसपू. नक्कजीर। तामील—केकूविराइ, पिल्लपू, शिरगम। लेटिन—Carum Carui (केरम केरुइ)।

वर्णन—

स्याह जीरा काश्मीर, हिमालय, अफ़गानिस्तान और ईरान में पैदा होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वैदिकमत—आयुर्वैदिक मत से स्याह जीरा चरपरा. गरम, नेत्रोंके लिये लाभ दायक, रुचिकारक, सुगन्धित, रूखा, दीपन तथा जीर्णज्वर, कफ, सूजन, मस्तक रोग और कुष्टको दूर करनेवाला होता है।

इसके बीज तीक्ष्ण, चरपरे, गरम, आँतोंके लिये संकोचक, पार्यायिक ज्वरों को दूर करने वाले, अतिसारनाशक और पेट के आफ़रेको मिटाने वाले होते हैं। ये कफ की वजह से पैदा हुई सूजन को नष्ट करते हैं, सिर दर्द में लाभ पहुँचाते हैं। अतिसार धवलरोग, और उदर सम्बन्धी फोड़ोंमें भी यह लाभदायक है। नेत्र रोगोंके लिये भी यह एक उत्तम वस्तु हैं।

यूनानी मत—यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। यह प्रकृतिमें गरमी पैदा करता है, कफ़को मिटाता है, पेटके आफरे को दूर करता है, भूखको खोलता हैं, मूत्रल और रजः प्रवर्तक है, पेटके कृमियोंको नष्ट करता है, इसको मुँहमें चबाकर इसके रसको आँखमें डालनेसे आँखका जमा हुआ खून पिघल जाताहै। इसके काढ़ेसे कुल्ले करनेसे दाँतका दर्द दूर होता हैं। इसको सिरके के साथ देने से हिचकी मिटती है। इसका शरबत गर्भाशयकी सूजनको दूर करता है। इसके धुएंसे जुकाम और पीनसका रोग मिटता है। इसका बफारा देनेसे बवासीरके मस्से हलके पड़ जाते हैं।

बवासीरके मस्से गुदाके बाहर आकर सूज गये हों तो स्याह जीरेको पानीमें उबाल कर उस पानीसे सेक करनेसे अच्छा लाभ होता है। गर्भाशयकी सूजनमें इसके काढ़ेमें स्त्रीको बिठानेसे लाभ होताहैं। जीर्ण ज्वरके समान भयंकर रोगके अन्तमें भूख बढाने के लिये इसका उपयोग किया जाता है। प्रसूति कालमें दूध बढ़ानेके लिये इसको देते हैं। पेटका फूलना, उदर शूल, शिथिलता प्रधान अजीर्ण और मरोड़ीके रोगों में यह एक अच्छी औषधि है।

यूरोपके अन्दर इसके बीज एक शांति दायक और मस्तिष्क को उत्तेजना देने वाले पदार्थ की तरह उपयोगमें लिये जाते हैं। इग्लैंडमें ये बच्चों को होने वाले कोष्ट वायु और पेट सम्बन्धी गड़बड़ीको दूर करनेके लिये दिये जाते हैं।

जर्मनीमें इसके बीज हिस्टीरियाके आक्रमणको दूर करनेके लिये और कॉलिक उदर शूलमे काममें लिये जाते हैं।

—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जीउन्ती

नाम—

संस्कृत—मत्कुणारि । पंजाब—जीउन्ती । अंग्रेजी—Bugbane बग्बेन । लेटिन—Cimicifuga felida (सिमिसि फूना फिलिडा) ।

वर्णन—

यह बहु वर्षायु लोम युक्त बनस्पति भूटानसे कश्मीर तक ७ हजार फीटसे १२ हजार फीटकी ऊँचाई तक पैदा होती है । इसका पौधा २॥ से ३ फीट तक ऊंचा होता है । पत्ते जोड़ेसे लगते हैं । इसके फूल सफेद होते हैं । इसके डोडियाँ लगती हैं जिसमें बीज रहते हैं । इसकी जड़ें ही औषधिमें काम में आती हैं ।

गुण दोष और प्रभाव—

इस वनस्पतिकी शरीरके ऊपर कूट और सुरंजानके समान क्रिया होती है । यह सूजनको नष्ट करती है, ज्वरमें लाभ दायक है, वेदना नाशक, शक्ति वर्धक, कफ निःसारक और आमवात नाशक है । इसकी मात्रा १० स १५ रत्ती तककी है । बड़ी मात्रामें इसको देनेसे वमन होने लगती हैं, चक्कर आते हैं, कम्पन होता है और नाड़ीकी गति कमहो जाती है । इससे बच्छनागके समान हृदयमें अशक्ति आ जाती है । छोटी मात्रामें यह कटु पौष्टिक, हृदयको बल देने वाली और गर्भाशयका संकोचन करने वाली है । इसके ताज़ा पत्तोंको पीसकर सन्धियोंकी सूजन पर बाँधा जाता है । नवीन आम वातमें यह बहुत उपयोगी है । गृध्रसी, कमर का अकड़जाना और कष्ट प्रद मासिक धर्ममें भी यह उपयोगी है ।

यूरोपमें इसकी जड़ मृदु विरेचक और वामक मानी जाती है । चीन और इंडो चायनामें यह ज्वर निवारक और पसीना लाने वाली मानी जाती है । सन्धिवातकी पीड़ा, जलोदर, क्षयकी प्रारंभिक अवस्था और बायु नलियोंके प्रदाहमें इसको उपयोगमें लेते हैं ।

साइबीरियामें इस वनस्पतिकी जड खटमल और मच्छरोंको भगाने के काम में ली जाती है ।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वस्तु स्नायु मण्डलमें अवसन्नता पैदा करती है । इसमें उपक्षार और सिमिरि फुगाइन नामक तत्व पाया जाता है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जीवन्तो (सोमलता)

नाम—

मलयालम—जीवन्ती, जीवती। कनाड़ी—कानेड़वल्ली, सोमा, सोमवल्लि। मराठी—रानशेर। तामील—कोड़िकलि। तेलगू—पुलतिगे, सोमलता। लेटिन— Sarcostemma Breistigma (सारकोस्टेमा ब्रिविस्टिग्मा)।

वर्णन—

यह एक लता होती है जो दूसरे झाड़ोंके आसरेसे चलती है। इसके पत्ते लंबगोल होते हैं। इसकी फलियां ८।१० सेंटिमीटर तक लबी रहती हैं। इसके बीज लबगोल होते हैं इसकी डंडियोंमें कई संधियाँ रहती हैं। इस झाड़में बहुत अधिक मात्रामें एक प्रकारका दूधके समान रस निकलता है।

गुण दोष और प्रभाव—

ऐसा कहा जाता है कि यह वनस्पति आर्य लोगोंकी सुप्रसिद्ध सोमलता ही है। मगर सोमलता की जा पहिचान और जा लक्षण बेदोंमें लिखे हुए हैं वे इस वनस्पतिके लक्षणोंसे बिल्कुल नहीं मिलते।

ऐसा कहा जाता है कि इस वनस्पतिके गुण सोमलताके गुणोंसे ही मिलते जुलते होते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति नशीले पदार्थ बनानेके काममें लीजाती है।

जीवन्ती

नाम—

संस्कृत—जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवदा, सुखंकरी रक्तांगी, प्राणदा, भद्रा, मंगल्या, जीवपृष्टा, कांजिका, शशिशिंविका, सुपिंगला, मधुवासा, जीववर्द्धिनी। हिन्दी—जीवंती। बंगाल—जीवई, जियाति जीवन्ती। मराठी—जीवंती। गुजराती—राड़ारुड़ी, वाछंटी। करनाटक—हिरिया हिल। लेटिन–Desmotrichum Fimbriatum (डेस्मोट्रिकम फिम्बिएटम) Dendrobium macraei (डेन्ड्रोबियम मेकेरेइ)

वर्णन—

जीवन्तीकी लतायें जमीनपर फैलनेवाली होती है और उनमें जगह २ पर गांठें पड़ी हुई रहती

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हैं। इसके फूल रंग विरंगे होते हैं। इसके पत्ते १० से लगाकर २० सेंटिमीटर तक लंबे और २ से लेकर ५ सेंटिमीटरतक चौड़े होते हैं। यह बनस्पति हिमालय, नीलगिरी और कोकणमें पैदा होती है। इसकी ४ जातियां होती हैं। १ जीवन्ती २ दूसरी बृहद् जीवन्ती ३ स्वर्ण जीवन्ती और ४ तिक्त जीवंती।

गुण, दोष और प्रभाव—

राजनिघंटुके मतानुसार जीवन्ती मधुर और शीतल, होती है। यह रक्तपित्त श्वास, खांसी, वात, क्षय, दाह और ज्वरको नष्ट करती है, कफ और वीर्यको बढ़ाती है, यह आंतोंका संकोचन करती है, कफ निःस्सारक है। इसका फ़ल मीठा और कामोद्दीपक होता है। यह पारेको बाँधनेवाली है।

सुश्रुतके मतानुसार यह औषधि दूसरी औषधियोंके साथमें सांप और बिच्छूके विषपर दी जाती है।

इसके पंचागका काढ़ा दूसरे सुगंधित द्रव्योंके साथ त्रिदोषके अन्दर दिया जाता है। धातुपतनसे पैदा हुई कमजोरीमें भी इसका काढ़ा लाभदायक होता है।

क० चोपराके मतानुसार यह शांतिदायक, पौष्टिक और सर्प विष पर उपकारी है।

जीवंती बड़ी

नाम—

संस्कृत—बृहद् जीवन्ती, पुत्रभद्रा, प्रियंकरी, मधुरा, जीवपुण्या, यशस्करी। हिन्दी—बड़ी जीवन्ती। बंगाल—भड़जवी। गुजराती—मोटी खरखोड़ी, तृणधारणी।

वर्णन—

यह जीवन्तीकी एक बड़ी जाति होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

बड़ी जीवंतीक रस, बीर्य और विपाकमें जीवंतीके समान है। यह पारेको बांधने वाली है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जीवंती पीली

नाम—

संस्कृत—हेमपूर्णा, स्वर्णलता, स्वर्ण जीवंतिका, हेमवल्ली, हेमलता, सुमंगला, इत्यादि। हिन्दी पीली जीवन्ती। मराठी—हरणवेल, हेम हरणवेल। गुजराती—खरखोड़ी, मोटी खर खोड़ी। लेटिन—Dregea Volubilis ड्रेजिया व्होल्यूबिलिस।

वर्णन—

यह जीवन्ती की पीली जाति होती है। इसका दूध पीले रंगका होता है। कीर्तिकर और वसूने इसका हिन्दी नाम नकछिकनी लिखा है मगर नकछिकनीको लेटिन में Centipeda Orbicularis सेंटि पेड़ा आर्बी क्यूलेरिस कहते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे स्वर्ण जीवन्ती वीर्य वर्धक, शीतल, मधुर, नेत्रोंको लाभदायक, वात नाशक जलन को दूर करनेवाली और अग्निसे जले हुएमें लाभ पहुँचाने वाला होती है।

जीवन्ती कड़वी

नाम—

संस्कृत—तिक्त जीवंतिका, तिक्त भद्रा, विष मुष्टि, केशमुष्टि दौड़ोत्पु। हिन्दी—डौड़ी। मराठी—विष दौड़ी। गुजराती—कड़वो खरखोड़ो।

वर्णन—

यह पीली जीवन्तीका एक भेद है जो कड़वा होता है।

गुणदोष और प्रभावः—

आयुर्वेदिक मतसे तिक्त जीवंती कड़वी, अग्निदीपक, मलस्तम्भक, ग्राही, पित्त जनक, गरम, रक्त पित्त नाशक, हलकी, कामोद्दीपक, रुचिकारक, दाहपैदा करने वाली, कफनाशक और कंठरोग, बात, गुल्म, बवासीर. कृमि, कुष्ट, विष, श्वास, प्रमेह, और चूहेके बिषको नष्ट करने वाली है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसके पत्तोंका लेप फोड़े, फुन्सी विस्फोटक रोग और घावों पर लाभ दायक होता है। इसका पौधा और कोमल कोंपलें वमन कारक तथा कफ निस्सारक मानी जाती हैं। इसका पौधा सरदी और नेत्र रोगोंके लिये भी बहुत उपयोगी है।

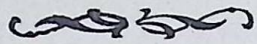

जुआर

नाम—

संस्कृस—दीर्घमला, इक्षुपत्रका, रक्तखुमा, व्रततांदुला, यवनाला। हिन्दी—जुआर। बंगाल—ज़ोआर, जुआर। बम्बई—जेाइंला, जेाआरी, कांगरा। मध्य प्रदेश—जेाआर, फ़ाग थुथेरा। गुजराती—जुआर। लेटिन— Sorgum Vulgare (सोरगम व्हलगेर) Holeus Sorghum (होलेस सोर गम)।

वर्णन—

जुआर एक प्रसिद्ध अनाज है जो प्रायः सारे भारतवर्षमें खाया जाता है। इसे सब कोई जानते हैं इसलिये इसके परिचयकी आवश्यकता नहीं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे जुवार शीतल, कामोद्दीपक, कब्जियत करनेवाली और, कठिनतासे पचनेवाली होती है। यह रुचि और भूखको बढ़ाती है तथा कफ, पित्त, रक्तरोग, बवासीर, व्रण और अर्बुदमें लाभदायक है। इसके दाने मूत्रल और शांति दायक होते हैं।

अमेरिकाकी निग्रो जातिके लोग इसके बीज़ों का काढ़ा गुर्दे और मूत्रपिंडोंकी बीमारी में काममें लेते हैं।

क० चोपरा के मतानुसार ज्वार कामोद्दीपक होती है। इसमें ग्लुकोसाइड और धुरिन नामक तत्व पाया जाता है।

उपयोग—

आमातिसार—ज्वार की गरम रोटीको दहीमें चूरकर ढक दें जब बिलकुल ठंडी हो जावे तब खिलादें। इससे आमातिसार मिटता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अंतर्दाह—ज्वारके आटे की रबड़ी रातमें बनाकर रखदें। सबेरे उसमें कुछ सफेद जीरा और मट्ठा मिलाकर पीनेसे अन्तर्दाह मिटती है।

मलेरिया—मलेरिया ज्वरके ऊपर अथवा शरद ऋतुमें होने वाले पित्त ज्वर पर जिसमें दस्त और उल्टियां भी होती हों उसमें गूगली जातिके जुआरके सांटोंको गन्नेकी तरह चूसनेसे तुरंत शांति मिलती है। २।४ दिनतक इन गले हुए सांटोंको बराबर चूसनेसे एकाँतरा, तिजारी, चौथिया, वगैरह मलेरिया ज्वरके सभी लक्षण शांत हो जाते हैं।

शीत पित्त—अगर किसीके शरीरमें शीतपित्त (पित्ती या बद्दल) उछल जाय तो जुआरके साँठेके रसमें गलजीभी का रस मिलाकर १ तोलेकी मात्रामें पीनेसे और शरीरपर मालिश करनेसे लाभ होता है।

धतूरेका विष—जुआरके साँठेका रस, शक्कर और दूध तीनोंको समान भाग मिलाकर उसमेंसे तीन २ तोला घंटे २ भरके अन्तरसे पिलानेसे धतूरेका विष शान्त होता है।

सर्प, विच्छूका विष—चासटिया जुआरकी जड़ और यदि वह न मिले तो दूसरी किसी भी जुआर की जड़ २॥ तोला लेकर उसे गौमूत्रमें पीसकर उसको नाक, कान तथा आँखमें टपकानेसे और विष अधिक चढ़ गया हो तो पेटमें पिलानेसे लाभ होता है। इस दवा को पिलाकर सर्पके काटे हुए मनुष्य के सिरपर ५० घड़े पानी डालना चाहिये।

नेत्ररोग—आँखोंमें होनेवाले मोतियाबिंद, झाँक, खील इत्यादि रोगोंपर जुआरके अन्दर होने वाले कायमाके काले आटेको शहदमें मिलाकर अंजन करनेसे बड़ा लाभ होता है।

संधि बात और पक्षाघात—जुआरके दानोंको पानीमें भाफकर उनको पीसकर उनका रस निकाल लेना चाहिये। उस रसको समान भाग अरंडीके तेलमें मिलाकर गरम करके जहां बात व्याधि हो वहां लेप करना चाहिये और ऊपरसे पुरानी रूई बाँधकर सेंककर देना चाहिये। १ सप्ताहतक इस प्रयोगको करनेसे अच्छा लाभ होता है।

कारबंकल—कारबंकल, भगन्दर, दुष्टकेंसर और अच्छे न होने वाले फोड़ों पर जुआरके भुट्टे का हरा, ताजा और दूधिया रस साफ करके लगानेसे और उसकी बत्ती बनाकर फोड़ेमें भर देनेसे घाव जल्दी भर जाता है।

गर्मी, प्रदर और प्रमेह—जुआरके दो सांठेका रस प्रति दिन प्रातः काल चूसनेसे पुराना प्रदर और प्रमेह दूर होता है। यह रस गुर्दे और मूत्राशय को साफ करता है। इसके साँठेके रसमें ऐसा कुदरती क्षार रहता है जिसके सेवनसे भूख बहुत अच्छी लगती है। इसके सेवनसे मूत्राकृच्छ्र और गुर्दे के सब रोग आराम होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पाण्डु और कामला रोग—जुआर का भुट्टा आग पर सेंककर खाने से पाण्डु और कामला रोग में लाभ होता है। इसी प्रकार दूसरे उदर रोगोंमें, लीवरी की सूजन में, तिल्ली की वृद्धिमें और आंतों की बीमारियोमें यह एक उत्तम पथ्य है।

रक्त विकार—जुआरके हरे पत्तों को पत्थर पर पीसकर शरीर पर मसलने से रक्त विकारके कई दोष दूर होते हैं।

आधा शीशी और मस्तक रोग—मस्तकके जिस हिस्सेमें दर्द होता हो नाकके उस हिस्सेमें जुआरके पत्तों या सोंठ का रस टपकाने से तुरन्त लाभ होता है।

कर्णरोग—कान से अगर पीब बहता हो तो जुआरके रसको गरम करके कानमें टपकाना चाहिये।

घाव—चाकू या हथियार का कहीं घाव लग गया हो तो उसमें जुआरके सांठे पर जो सफेद रंगका अस्तर होता है उस अस्तर को पीसकर घावमें भर देना चाहिये।

खुजली—खसरे और खुजली पर जुआरके हरे या सूखे साँठों को लेकर उनको पीसकर उसमें बकरी की मेंगनियों की आधी जली हुई राख और अरंडी का तेल समान भाग मिलाकर लगाने से लाभ होता है।

फोड़े को पकाना—जो फोड़ा पकता और फूटता न हो उसपर जुआरके दानों को भाफ कर उनमें धतूरे का रस मिलाकर पुल्टिस लगाने से फोड़ा पक कर फूट जाता है।

मुंहासे और कीलें—जुआर को कच्ची पीसकर उसमें थोड़ा चूना और कत्था मिलाकर चोपड़ने से शीघ्र लाभ होता है।

दन्त रोग—जुआरके बीजों को जलाकर उनकी राख से दाँतों को मलने से दाँतोंका हिलना, दाँतों का कष्ट और कष्टदायक पीढ़ियोंकी सूजन मिट जाती है।

बद्धकोष्ट—जुआर की थूलीको दूधमें मिलाकर लगातार एक मास तक खानेसे पुरानी कब्जियत भी दूर हो जाती है।

जुल पापड़ा

नाम—

संस्कृत—पर्पटका। बंगाल—जुलपापड़ा। बम्बई—म्हारस, खरस। मराठी—खरस। करनाटकी—परपाटक। तेलगू—परपाटकमू। लेटिन—Mollugo Stricta मोल्यूगो स्ट्रिक्टा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

यह छोटी जाति की वनस्पति हिन्दुस्तानमें सब दूर पैदा होती है। इसका पौधा बालिश्त भर ऊंचा होता है। इसके बहुतसी डालियाँ रहती हैं। इसके पत्ते १.३ से ३.८ सेंटिमीटर तक लम्बे और ३ से लेकर ६ मिलि मीटर तक चौड़े होते हैं। इसके फूल सफेद, फली लम्ब गोल और बीज चपटे और गहरे बादामी रंगके रहते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति अग्नि वर्धक, मृदु विरेचक, कृमिनाशक और ऋतुस्राव नियामक होती है। मासिक—धर्मकी अनियमिततामें इसके पत्तोंका शीत निर्यास बनाकर देनेसे रजकी मात्रा बढ़ जाती है।

प्रसूति कालमें प्रसूता स्त्री को इसकी तरकारी बनाकर देनेसे दस्त साफ़ होता है। भूख बढ़ती है और गर्भाशय शुद्ध हो जाता है। विषम ज्वरके अन्दर भी इसकी तरकारी बनाकर दी जाती है।

जुनबेदस्तर

नाम—

यूनानी—जुनबेदस्तर। लेटिन—Castoreum केस्टोरियम।

वर्णन—

यूनानी हकीमों के मतसे एक समुद्री जानवर जिसे ऊदबिलाव कहते हैं और जो कुत्तेकी तरह होता है उसके अण्डकोषको जुनबेदस्तर कहते हैं। यह जानवर अधिकतर पानीमें रहता है और कभी २ मैदानमें निकलकर धूपमें सो जाता है तब शिकारी लोग इसे मारकर उसके अंडकोष निकाल लेते हैं। कुछ लोगोंका यह कहना है कि इसके अण्डकोष निकालनेके लिये इस जानवरको मारनेकी जरूरत नहीं होती। शिकारी लोग तरकीबसे इसके अंडकोषों को निकालकर इसे जिन्दाही छोड़ देते हैं।

इसके अंडकोषोंके अन्दर एक प्रकारका खून की तरह जमा हुआ पदार्थ रहता है। जो शहदकी तरह होता है और उसमें चर्बी के समान गन्ध आती है। इसके अण्डकोष ३ इंच लम्बे अञ्जीरके आकारके, मज़बूत, वजनदार और खाकी रंगके होतेहैं। इसका बहुत बड़ा हिस्सा ईथरके अन्दर घुल जाता है।

उत्तम जुनबेदस्तर वह होता है जो पीले या लाल रंगका हो, जल्दी टूट जाता हो, खुशबूदार और वजनदार हो। काले रंगका जुनबेदस्तर जहरीला और घातक होता है। यह औषधि १५ वर्ष तक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खराब नहीं होती मगर उत्तम वह मानी जाती है जो ३ सालसे ज्यादा पुरानी न हो। इस औषधिमें भी केशर और कस्तूरी की तरह नकली चीजें मिलाई जाती हैं। इसलिये इसे लेते समय भी असलियत का ध्यान रखना चाहिये।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतानुसार यह तीसरे दर्जे में गरम और दूसरे दर्जेमें खुश्क होता है। गरम और खुश्क होने पर भी इसमें मुलामियत पैदा करनेकी ताक़त बहुत अधिक है। यहाँ तक कि इस काममें कोई दवा इसकी बराबरी नहीं कर सकती।

इस औषधिको खानेसे जितना फायदा हासिल होता है उतनाही फायदा इसको पुराने जैतूनके तेल के साथ मालिश करनेसे भी हाँसिल हो जाता, है लेकिन यह ख़याल रखना चाहिये कि बुखार की हालतमें इसका प्रयोग न किया जावे।

सर्दी और वायुसे पैदा हुइ मिरगी, आधाशीशी वगैरह दिमागी बीमारियोंमें इसका धुआँ नाकमें पहुँचानेसे अच्छा फायदा होता है।

सर्दीकी वजहसे पैदा हुए माली खोलिया और लकवेमें भी इसको पिलाने और नाकमें टपकानेसे अच्छा फायदा होता है। कंपन, ऐंठन, धनुर्वात और लकवेमें इसको ३ माशेकी मात्रामें प्रति दिन सबेरे ७ दिनतक खिलानेसे बहुत लाभ होता है। सिरकेके साथ इसको मिलाकर नाकमें टपकानेसे स्मरण शक्ति बढ़ती है। इसका रोगन गुलमें मिलाकर मस्तक पर लगानेसे सर्दी और वायुका सिर दर्द मिट जाता है। इसको नाकमें टपकानेसे छींकें आती हैं और दिमागमें जमी हुई वायु बिखरकर दिमाग हलका होजाता है। इसको किसी तेलमें मिलाकर कानमें टपकानेसे सर्दीसे पैदा हुआ कानका दर्द मिट जाता है, बहरापन जाता रहता है और कानकी वायु बिखर जाती है। इसको चिलममें भरकर तम्बाकूकी तरह इसका धुआँ पीनेसे सर्दीसे पैदा हुई दिलकी धड़कन और सर्दीकी बीमारियाँ दूर हो जाती हैं। इसको सिरके और पानीके साथ घोटकर पिलानेसे कफ और वायुसे पैदा हुई हिचकी बंद हो जाती है।

जुलाबकी औषधियोंके साथ इसको मिलाकर देनेसे कई फायदे होते हैं। पहला—तो जुलाबी दवाइयोंकी उग्रता कम हो जाती है। दूसरा—शरीरके अन्दर जमी हुई गंदगीको बाहर निकालनेमें मदद मिलती है। तीसरे—कफ फ़िसलकर दस्तकी राह निकल जाता है। इसके साथही एनेमा देनेसे वायु और कफसे पैदा हुए कॉलिक उदर शूलमें भी बहुत लाभ होता है।

अगर किसी स्त्रीके पेट में मरा हुआ बच्चा हो या उसका मासिक धर्म रुका हुआ हो तो जुनबेदस्तर को बड़ी मात्रामें खिलानेसे सब खराबियाँ ताकतके साथ बाहर निकल जाती हैं। इसको ऊनमे तर करके गर्भाशयमें रखनेसे गर्भाशयकी सरदी दूर हो जाती है और वायु बिखर जाती है। इससे गर्भ गिरनेका भी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

धोखा रहता है। सरदीकी वजहसे अगर किसीको ग्रंथिवात (Gout) हो तो इसको काली मिरच और शहद के साथ देने से लाभ होता है। इसमें सब प्रकार के स्थावर और जंगम विषोंको दूर करने की शक्ति भी है।

आधुनिक वैज्ञानिक लोग इस औषधिको इतनी प्रभावशाली नहीं समझते हैं।

मुजिर—इस औषधिको अधिक मात्रामें लेनेसे यह अपना विषैला प्रभाव शरीरपर दिखाती है। ३ मांशासे अधिक मात्रामें यह जहरीली हो जाती है। इससे मुंह सूखजाता है जबान पर दाने निकल आते हैं, छातीमें दर्द होता है। गलेमें सूजन आ जाती है और रोगी बेचैन हो जाता है।

दर्पनाशक—इसके इस विषैले प्रभावको नष्ट करनेके लिये पोदीना और सपिश्ताको शहदके साथ देना चाहिये। बिजोरे नींबूका रस, सिरका और गधीका दूध भी इसके विषको नष्ट करता है।

मात्रा—इसकी साधारण मात्रा ६ रत्तीसे १ माशेतक की है। कई हकीम ३ माशेसे ७ माशेतककी मात्रा तजबीज करते हैं मगर इसकी इतनी मात्रा ख़तरनाक होती है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वस्तु ज्ञान तंतुओंको उत्तेजना देती है, कृमिनाशक है। इसमें एक प्रकारका उड़नशील तेल, एक प्रकारकी चिड़चिड़ी कड़वी राल और एक प्रकारका चर्बीके समान पदार्थ पाया जाता है।

जूकश्ता

वर्णन

यह एक बूटी है। इसके पत्ते चनेके पत्तोंके समान होतेहैं। इसका पौधा १ बालिश्त ऊंचा, ऊपरसे गोल और काँटेदार होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति ऐसी खुजलीमें जिसमें जख्मोंसे पानी वहताहो, लाभदायक है। इसके काढ़ेसे बाल धोनेसे जुएं मर जाती है। (ख० अ०)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जूट

नाम—

संस्कृत—कालशाक, चंचू, क्षेत्रसंभव, कोष, सुशाक। हिन्दी—नरचा, जूट, पाट। बंगाल—पाट, कोष्ट, कुष्टा। गुजराती—छूंछ, बोरछूंछ। मराठी—चौंचे। बम्बई—सण। कनाड़ी—चुंचल। अंग्रेजी—जूटप्लेंट jute plant लेटिन—Corchorws Capsularis (कोरकोरस केपस्यूलेरिस)।

वर्णन—

संसारके औद्योगिक क्षेत्र में रेशेदार पदार्थों के अन्दर रूईके बाद जूटका स्थान ही उत्तम माना जाता है। इसका पौधा ३ से ४ फीट तक लम्बा सनके पौधेकी तरह होता है। इसके फूल पीले होते हैं और इसके ऊपर फलियाँ लगती हैं।

चिकित्सा शास्त्रकी दृष्टिसे इस वनस्पतिका जितना महत्व है उससे बहुत अधिक परिमाणमें इसका औद्योगिक महत्व है। अंग्रेजी राज्यका सूत्रपात होने के साथ २ इस वस्तु की उपयोगिता का महत्व संसारको मालूम हुआ और बंगालमें इसकी खेती दिन प्रतिदिन उन्नति करने लगी। सन् १८२८ में जहाँ सिर्फ ३६४ हंडरवेट माल भारतवर्षसे विदेश को गया था वहाँ ५० वर्षोंके बाद सन् १८७८ में ५३६२२६७ हंडरवेट माल भारतवर्षसे विदेश गया और जहाँ सन् १८५५ में बंगालके अन्दर एक जूट मिल था वहां सन्१६२८ में बंगालके अन्दर जूट मिलोंकी संख्या८४ होगई। सन्१८८५में बंगालकी मिलों में ९८४१ करघे काम करते थे मगर सन् १६२७ में इन करघों की संख्या ५०३५४ थी। इन मिलोंमें ४८०० टन माल प्रतिदिन तैयार होता है जिसकी लंबाई ८००० मीलसे अधिक लंबी होती है। इन सब बातोंसे इसके व्यापारिक महत्व का अंदाजा किया जा सकता है।

जूट की जातियां— जट की साधारणतया दो जातियां होंती हैं। १ जंगली और दूसरी शहरी। शहरी जूट की करीब आठ नौ जातियां होती हैं। एक सबसे बड़ी जाति होती है जिसको लेटिनमें कोरकोरस ओलिटोरियस (Corchorus Olitorius) कहते हैं। दूसरी जाति को कोरकोरस केपस्यूलेरिस (C. Capsularis) कहते हैं इसी प्रकार थोड़े २ भेद से इसकी ५।६ जातियां और होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत— आयुर्वेदिक मतसे चंचु मधुर, कसेला, मलशोषक तथा गुल्म, उदर रोग, विबंध, बवासीर और संग्रहणी रोग को दूर करता है।

बड़ा चंचू चरपरा, गरम, कसेला, मलरोधक, रसायन, और गुल्म, शूल, उदर रोग, बवासीर और विषका नाश करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चंचुशाक शीतल, सारक, रुचिकारक, स्वादिष्ट, त्रिदोषनाशक, धातुवर्धक, पौष्टिक, बलकारक और बुद्धिवर्धक है।

चंचुके बीज—चरपरे, गरम तथा गुल्म, शूल, बिष, और त्वचाके दोषको दूर करते हैं।

रासायनिक विश्लेषण—इसके रासायनिक विश्लेषणका परिणाम इस प्रकार है।

Water (Hygrosiopic)	9-93
Aqucous Extract	.36
Fat aud wax	.68
Irerustingand Pigment matter	24-41
Cellulose	64.24

बहुतसे लोग जूट और सनके रासायनिक तत्वोंको एक समान ही समझते हैं मगर वास्तवमें इन दोनोंके रासायनिक तत्वोंमें बहुत भेद है और इनका नैसर्गि वर्ग भी जुदा २ है।

डॉक्टर कनाइलाल डे० इसके चिकित्सा सम्बन्धी महत्वका वर्णन करते हुए लिखते हैं:—

"Medicinal uses—The leaves of the jute plants are used as a cheap domestic medicine in Hindu households. especially in The districts where they are cultivated. The dried leaves are also obtainable in the Bazars of Bengal. An infusion with corianderand amseed Constitutes a simple bitter used like chiretta as a stomachic and tonic, but having the advantage over that herb in being milder and not so heating

The fine lycarded fibere has been used as a basis for antiseptic surgical dressing. It is highly absorptive aud admirobly suited for this purpose"

'औषधि सम्बन्धी उपयोगिता—जूटकी पत्तियाँ हिन्दू घरानोमें एक सस्ती घरेलू औषधिकी तरह उपयोग में लाई जाती हैं, ऐसा विशेषतः उन जिलों (प्रान्तों)में होता है जहां जूटकी खेती होती है। इसकी सुखाई गई पत्तियां भी बंगालके बाजारोंमें उपलब्ध होती हैं। धनियां और सरसों के साथ इसका मिश्रण करनेसे एक साधारण कड़वी औषधि तैयार होती है। जिसका व्यवहार चिरायतेकी तरह पेटकी दवा तथा पौष्टिक औषधिके रूपमें किया जाता है परन्तु यह दवा उस औषधि (चिरायते) से यह विशेषता रखती है कि यह काम कड़वी होती है तथा उतनी गर्म भी नहीं होती।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसका (जूटके) बारीकी से साफ किया हुआ रेशा उन डाक्टरी पट्टियोके बांधनेमें भी आधारत: व्यवहृत होता है जो घाव को सड़नेसे सुरक्षित रखती हैं। यह ऊँचे दर्जे का शोषक पदार्थ है तथा प्रशंसनीय रूपसे इस कार्य्यके लिये उपयुक्त है।

जूफरा

नाम—

यूनानी—जूफरा।

वर्णन—

यह एक पहाड़ी जातिकी वनस्पति है। इसके पत्ते सोंफके पत्तोंकी तरह किन्तु उनसे कुछ बड़े और रुएंदार होते हैं जिनमें छत्र लगे होते हैं। इसमें सुनहरी रंगके फूल लगते हैं। इसके बीज बारीक, लाल रंगके, स्वादमें कुछ तेजी लिये हुए और सुगन्धित होते हैं। इसके सब अङ्ग प्रत्यङ्ग कड़वे स्वादके होते हैं। इसकी ३ जातियां होती हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसकी प्रकृति पहले दर्जे में गरम और खुश्क है। कोई २ तीसरे दर्जे में गरम और खुश्क वतलाते हैं। यह पेटके आफरेको दूर करती है और बदनके पीलेपन को नष्ट करती है। इसके पत्तों और फलोंको पीसकर सूखी और गीली खुजली, व्रण, फोड़े-फुन्सी और छालों पर लेप करनेसे बहुत फायदा होता है। गुलाबके तेलमें इसको पीसकर सिरमें डालने से सिरके दाद और जूएँ नष्ट हो जाती हैं। इसकी जड़के खानेसे मनुष्य की कामशक्ति नष्ट हो जाती है। यह औषधि मूत्रल और रज प्रवर्तक है। बिच्छूके विषमें भी यह लाभ दायक है। इसकी मात्रा ७ माशे की है।

जूफा

नाम—

हिन्दी—यूनानी—जूफा, जूफाए खुश्क, जूफाएबिस। फारसी—जूफाए खुश्क। उर्दू—जूफा। लेटिन—Hyssopus Officinalis (हायसोपस आफिसिनेलिस)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

यह एक जातिका घास है। जो काश्मीरसे कुमाऊं तक ८ हजार फीट से ११ हजार फीट की ऊंचाई तक पैदा होता है। इसके पौधेकी ऊंचाई १ हाथ के करीब होती है। इसके पत्ते खुशबूदार और कड़वे होते हैं। इसके कोई २ पत्ते मेंहदीके पत्ते सरीखे होते हैं। इसकी प्रत्येक डालीकी गठान पर, पीला फूल लगता है।

गुण दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति कड़वी, कृमि नाशक, कफनिस्सारक, पेटके आफरेको दूर करने वाली, मूत्रल और मृदु विरेचक होती है। यह प्रदाह, पक्षाघात वायुनलियोंका जीर्णप्रदाह, फेंफड़ोंका प्रदाह, दमा, मज्जाओंकी तकलीफ और सीना तथा यकृतके रोगोंमें लाभदायक है।

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है यह कफ़को मुलायम करके दस्तकी राह निकाल देती हैं, सूजन और जमेहुए खूनको बिखेरती है, पेटके कृमियोंको नष्ट करती है। फालिज़, पुरानी खांसी, फेफ़ड़ेकी सूजन, छाती, पसली और मेदेका दर्द, कालिक उदर शूल, नज़ला, साँसको रुकावट तथा यकृत और जाँघोंके दर्दमें यह लाभदायक है। कफकी वजहसे पैदा हुए दमा और खांसीको यह दूर करती है। जलोदर की सूजनमें लाभ पहुँचाती है। यकृतके सुद्दे, आँतोंके ज़ख्म, पेचिश और गर्भाशय, गुर्दे तथा मसाने की सूजनमें यह लाभदायक है।

इसके काढ़े को शरीर पर मालिश करनेसे त्वचाके दाग दूर होते हैं। अंजीरके साथ इसका काढ़ा देनेसे तिल्ली की सूजन और डिफथीरियामें फायदा होता है। इसके चूर्णको शहदके साथ चटानेसे पेटमें कृमि पैदा नहीं होते।

इसका शीत निर्यास खांसी और दमेमें लाभ पहुँचाता है। दाँतोंके दर्द और गर्भाशय के रोगोंमें भी यह लाभदायक है। इसके पत्ते उत्तेजक, अग्निवर्धक, ऋतुस्राव नियामक और पेट के आफरे को दूर करने वाले माने जाते हैं। इसका पुल्टिस बनाकर आँखोंपर बाँधनेसे नजलेका पानी आना रुक जाता है। इसके पत्तोंके रसका शर्बत गोल कृमियों को नष्ट करनेके काममें लिया जाता है।

कोमानके मतानुसार इस बनस्पतिके फूलोंका काढ़ा दमा और पुरानी खाँसीके बीमारोंको दिया गया और इससे काफी लाभ हुआ। फारसकी यह वनस्पति इन रोगोंमें लाभदायक सिद्ध हुई है।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसके पत्ते उत्तेजक, अग्निवर्धक, कफ निस्सारक, ज्वर निवारक और ऋतुस्राव नियामक होते हैं। इनमें ग्लुकोसाइड और उड़नशील तेल रहता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मात्रा—खजाइनुल अदवियामें इसकी मात्रा १०॥ माशेकी लिखी है। मगर डॉक्टर देसाईने इसकी मात्रा १० रत्तीसे २० रत्ती तक बतलाई है।

जूही

नाम—

संस्कृत—यूथिका, गणिका, अम्बष्ठा, वासंती, बालपुष्पी, मागधी, बालपुष्पीका इत्यादि। हिन्दी—जूही, जाई। बंगाल—जूई, स्वर्ण जूई मराठी—जाई, श्वेतजुई। गूजराती—जुई। पंजाब—जूही तेलगू—नंदी वट्ट, जुई पुष्पालु। लेटिन—Jasminum Auriiulatum (जेसमिनम एरिक्यूलेटम)।

वर्णन—

जूहीकी लता वन, उपवन और पुष्पवाटिकाओं में होती है। इसके फूल सफेद रंगके, छोटे २, अत्यन्त सुन्दर और अत्यन्त सुगन्धित होते हैं। इसकी सफेद और पीलीके भेद से दो जातियाँ होती हैं।

गुण दोष और प्रभाव,—

आयुर्वेदिक मतसे दोनों प्रकारकी जूही शीतल, कड़वी, पचनेमें चरपरी, हलकी, मधुर, कसेली, हृदयको हितकारी, पित्तनाशक, कफ और वात कारक तथा चर्मरोग, मुखरोग, दन्तरोग, नेत्ररोग, और विषको नष्ट करने वाली होती है। इसके गुण धर्म चमेली से मिलते जुलते होते हैं।

मुँहके छालोंमें जुहीके पत्तों को चबानेसे फायदा होता है अथवा जूहीके पत्तों, दारूहल्दी और त्रिफला का काढ़ा बनाकर उससे कुल्ले करनेसे भी मुखपाक रोगमें फायदा होता है। कर्णशूल और कानके पकने पर इसके स्वरसमें सिद्ध किये तिल्लीके तेलको कानमें डालनेसे बड़ा लाभ होताहै। पैरोंमें फटी हुइ बिवाइ पर इसके पत्तोंको पीसकर बाँधना चाहिये। यह वनस्पति अपना असर बहुत जल्दी बतलाती है।

पीली जूही की जड़को पीसकर दाद पर लेप करनेसे दाद मिट जाता है। इसकी छालमें छेद करनेसे जो दूध निकलता है उसको पुराने नासूर, बिगड़ी हुइ हड्डी या खराब जख्मोंके किनारों पर लगाना चाहिये। इसके फूलों को पीसकर योनि पर लगानेसे योनिका ढीलापन मिटकर वह तंग हो जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यूनानी मत—यूनानी मतसे यह पहले दर्जे में सर्द और तर है। इसका रस जख्मोंपर लगाने से फायदा होता है। इसका लेप करनेसे आधाशीशी, माली खोलिया, और पागलपनमें फायदा होता है। इस वनस्पति का नीचे लखा प्रियोग रतौंधी और आँखों की बीमारी के लिये बहुत मुफीद है:—जूहीके फूल ५०, भांगरे के पत्ते ५०, सहँजना के पत्ते ३०, काली मिरच १६, लौंडी पीपल ३। इन सब चीजोंको बारीक पीसकर इनकी बत्ती बना ले और उसको सुखा लें। जब जरूरत हो तब इस बत्तीको पानी में या काँजोमें घिसकर आंखमें लगा लें। इससे आंखका सब पानी निकल जाता है और आँखें साफ हो जाती हैं।

जेबुरेंडी

नामः—

यूनानी—जेबुरेंडी।

वर्णन—

यह एक वृक्ष होता है। इसके पत्ते करीब ४ इंच लंबे, अंडाकार और हलके हरे रंग के होते हैं। इनकी ऊपर की सतह साफ और नीचे की सतह पीली, रूएंदार और नसों वाली होती है। इन पत्तोंके मसलनेसे एक प्रकार की गंध आती है। इनका स्वाद बहुत कड़वा और चरपरा होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

इसके पत्तों से एक प्रकार का क्षार निकाला जाता है। जिसे पायलोकारपीन नाइट्रेट कहते हैं। इसके पत्ते बहुत पसीना लाने वाले होते हैं। इसके सत्व को सेवन करनेसे ५।१० मिनिट के भीतर ही मुंह से लार का बहना शुरू हो जाता है और खूब जोरसे पसीना आता है। यह प्रभाव २ से लेकर ५ घण्टे तक रहता है। बच्चों की अपेक्षा जवान आदमियों पर इसका प्रभाव कम होता है। पसीने के साथ २ आँख, मुंह और नाक से भी पानी निकलता है। पेटमें कुछ बेचैनी मालूम होती है। इस वनस्पति का लोशन बनाकर आंखमें डालने से यह आँख की पुतली को सिकोड़ता है। इसका यह प्रभाव एट्रोपीन के प्रभाव से बिलकुल विरुद्ध होता है। एट्रोपीन के कारण जब पुतली फैल गई हो तो तब उसे सिकोड़ने के लिये यह दिया जाता है। एट्रोपीन और बेलेडोना के जहर का यह एक खास एंटीडोट (दर्पनाशक) है। जुकाम और दमेमें इसकी एकही खुराक से काफी लाभ होता है। इसकी मात्रा ५ ग्रेन से ६० ग्रेन तक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

झड़बेर

नाम—

संस्कृत—भूबदरी, सूक्ष्म बदरी, बल्लि बदरी, अजाप्रिया, सूक्ष्म फला इत्यादि। हिन्दी—झड़बेर, झड़बेरी, जालीबोर। गुजराती—चणियां बोर। मराठी—भुइबोर। बंगाल—मेटोकुल, कुलगाछ। राजपूताना—बोर, जालीबोर। बुन्देलखण्ड—कांटाबेर। पोरबन्दर—पलेटन। पंजाब—बेर, बिरोता, झारबेरी। फारसी—शबारका, कुनार, दश्ती। अरबी—झिरियाब। लेटिन—Zizyphus Nummularia (झिझिफस नुमूलेरिया)।

वर्णन—

झड़बेरीके झाड़ पंजाब, सिन्ध, गुजरात, दक्षिण, राजपूताना, मालवा और प्रायः सारे भारतवर्ष में बहुतायतसे पैदा होते हैं। इसके पौधे ६ से लेकर १० फुट तक ऊंचे बढ़ते हैं। ये पौधे झाड़ी की तरह होते हैं। इसका फल गोल, कच्ची हालतमें हरा और पकने पर लाल और चमकदार हो जाता है। इसकी गुठली बहुत कठोर होती है और एक २ गुठली में दो २ मगज होते हैं। इसके काँटे बहुत तीखे और तेज होते हैं। इसके फूल गुच्छों में लगते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतानुसार इसका फल मीठा, तूरा, कफनाशक, अग्निवर्धक, पाचक, रुचिकारक और रक्त पित्तको कुपित करने वाला है। इसकी गुठली कसेली, मीठी, कामोद्दीपक, वीर्य वर्धक और खाँसी, श्वांस, तृषा, वात, वमन, दाह और पित्तको दूर करती है।

यूनानी मत—यूनानी मतके अनुसार इसके पत्ते, फोड़े फुन्सी और खुजलीमें लाभ पहुँचाते हैं। इसका धुआँ जुकाम और नाकके बहनेमें उपयोगी है। जोड़ोंके दर्दमें इसके काढ़ेसे स्नान करनेसे लाभ होता है। मुंहके छालों और मसूड़ोंसे खून बहने पर इसके काढ़े से कुल्ले करते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह शीतल और संकोचक होता है। पित्तकी तकलीफोंमें यह उपयोगी माना जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

झाऊ

नाम—

संस्कृत—झाउका, बहुग्रंथिका, पिचुलः, अफलः। हिन्दी—झाऊ। गुजराती—झाऊ। मराठी—झाऊ, बड़ीमुइ। बंगाल—झाउ गाछ। पंजाब—झाऊ, कोआ, लई, पिलची। तामील—अत्तलरी, अत्तु-चौकू। तेलगू—इरुसारू। फारसी—गझ, गझसाकर। अरबी—तरफा। लेटिन—Tamarix Gallica (टेमेरिक्स गेलिका)।

वर्णन—

यह एक बड़ा और झाडीनुमा वृक्ष होता है। ठंडे और समशीतोष्ण कटिबंधमें और उत्तरी हिन्दुस्तानमें गंगा और यमुना नदीके किनारे पर तथा उत्तरी गुजरातमें यह बहुत पैदा होता है। इस वृक्ष का दिखाव साधारणतया सरूके वृक्षकी तरह होता है। इसमें पतली २ अनेकों शाखाएं निकली हुई होती हैं। इसकी शाखाएं बहुत नीचे झुकी हुई और मुलायम होनेकी वजहसे जरासी हवासे ही हिलती रहती हैं। इसकी नरम २ डालियोंके ऊपर बहुत छोटे २ बारीक पत्ते आते हैं। उन पत्तोंके ऊपर सूक्ष्म, गुलाबी, हलके बैंगनी रंगके फूलोंकी कलंगियाँ आती हैं। ये बहुत ही सुन्दर दिखलाई देती हैं। इसके फल तीन धार वाले, लाल रंगके, चमकदार, नीचेसे चौड़े ऊपरसे तीखे, तीन पड़वाले होते हैं। इसके बीज भूरे रंगके होते हैं।

ईरान और अफ़गानिस्तानमें यह वृक्ष बहुत पैदा होता है। वहाँपर इस झाड़के ऊपर एक जातिकी मक्खी बैठकर अपना घर बनाती है। इस घरको ही लोग फल समझते हैं यह घर तिकोना, गाँठदार और पोला होता है। ईरानमें इस झाड़मेंसे एक प्रकारकी शक्कर भी निकाली जाती है। यह शक्कर बंबईमें गझंझबीन और इरानमें गीझोके नामसे बिकती है। ताजी हालतमें यह सफेद और रवेदार होती है मगर यहांकी हवामें यह पतली पड़ जाती है। बम्बईके बाजार में गझंझबीन शहदके समान गाढ़ा और पीले रंगका मिलता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे झाऊकी छाल ग्राही, स्तम्भक और कड़वी होती हैं। इसका फल संकोचक होता हैं। इसकी शक्कर अथवा गझंझबीन आनुलोमिक और कफघ्न होती है। इससे दस्त पतला होकर आसानीसे निकल जाता है और आँतोंको किसी प्रकारकी तकलीफ नहीं होती। इसके पंचांगकी राख मूत्रल और पंचागका क्वाथग्राही और शीतल होता है। इसमें कई प्रकारके कषाय अम्ल पाये जाते हैं माजू फलमें जितने कषाय अम्ल रहते हैं वे इसमें भी पाये जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बच्चों की कब्जियतको दूर करनेके लिये गम्झंबीन दिया जाता है। इसका फल माजूफलके बदलेमें भी काममें लिया जाता है। अतिसार, आँव, अत्यार्त्तव तथा गले और छातीसे होने वाले रक्त श्रावमें इसको देते हैं। इसकी फाँट दुष्ट व्रण और बद गाँठमें बहुत लाभ देती है।

काठियावाड़में इसके पंचांगसे तैयार किया हुआ घन क्वाथ झावके नामसे विकता है। यह काले रंगका होता है। सूखी खाँसी और गलेकी शिथिलतामें इसको चटाया जाता है।

झाऊके चूर्णकी मात्रा १५ से ३० रत्ती तक और गम्झंजबीन की मात्रा ३ माशे तक होती है।

यूनानीमत— यूनानी मतसे इसके फल और पत्ते कड़वे, तूरे और संकोचक होते हैं। पेचिश, पुराने अतिसार, तिल्लीके रोग और धवल रोगमें यह उपयोगी है। मसूड़ोंकी सूजनमें इसके काढ़ेसे कुल्ले करनेसे लाभ होता है। इसके पत्तोंको उबाल कर उनका बफारा लेनेसे बवासीर, व्रण और घावोंमें लाभ होता है। इसका फल संकोचक होनेकी वजहसे अतिसार और पेचिशमें दिया जाता है। इस वृक्षका रस मृदु विरेचक और कफ निस्सारक माना गया है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति मृदु विरेचक और कफ निस्सारक मानी जाती है। यह माजूफलके प्रतिनिधि स्वरूप काममें ली जाती है।

उपयोग—

सांघातिक फोड़ा—बिगडे हुए फोड़ों और उपदंश सम्बन्धी गठानों पर इसके गाढ़े किये हुए क्वाथ का लेप करनेसे लाभ होता है।

तिल्ली— इसके पत्तोंके चूर्ण को ३॥ माशे की मात्रा में समान भाग मिश्री मिलाकर लेने से तिल्ली कट जाती है।

बालों की सफेदी— इसकी हरी जड़ को जौकुट करके उसमें समान भाग तिल का तेल और दुगुना जल डालकर आग पर औटाना चाहिये। जब पानी जलकर तेल मात्र शेष रहजाय तब उसको छान लेना चाहिये। इस तेल को सिरमें लगाने से सफेद बाल काले हो जाते हैं।

जुकाम— इसके पत्तों का बफारा लेनेसे जुकाम मिटता है।

कुचों का ढीलापन— झाऊ की छाल और अनार की छालको महीन पीसकर दूधमें मिलाकर दिनमें २ बार स्तनों पर लेप करनेसे ढलके हुए स्तन कठोर होजाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

झाऊ लाल

नाम—

संस्कृत—रक्तझाऊ। हिंन्दी—लाल झाऊ। गुजराती—लालझाऊ। मराठी—तामड़ी सिरनाटी। लेटिन—Tamarix Articulata (टेमेरिक्स आर्टिक्यूलेटा)।

वर्णन—

लालझाऊ के वृक्ष सिन्ध, रुहेलखण्ड, आदि स्थानों पर बहुत होते हैं इसके झाड़की ऊंचाई ६० फीट तक होती है। इसकी छाल सफेद और कुछ भूरी होती है। इसके पत्ते छोटे होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति ग्राही, स्तम्भक और रक्तश्रावरोधक होती है। इसकी छाल कड़वी और संकोचक होती। इसकी राख मूत्रल होती है। साधारणतया यह कहा जा सकता है कि इस बनस्पतिके गुण धर्म माजूफलसे मिलते जुलते होते हैं। इसके चूर्ण की मात्रा १५ से ३० रत्ती तक की है। इसके काढ़े से कुल्ले करने से मुंह के छाले मिटते है।

झामरवेल

नामः—

कच्छी—झामरवेल, टोपरावेल। गुजराती—भींतगरियो। लेटिन— Ipomea Tridentata (इपोमिया ट्राइडेण्टेटा)।

वर्णन—

इस वनस्पति की बेलें बहुत पतली और छोटी होती हैं। ये वरसातमें ऊगती है। इनमें छोटी २ पतली शाखाएं बहुत सी निकलती हैं। इसके पत्ते बहुत छोटे और फूल पीले रंगके होते हैं। इसका फल गोल, चिकना, चमकदार और ४ बीज वाला होता है। यह वनस्पति पुरानी दीवालों पर और पहाड़ों पर पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति ग्राही और रक्त शोधक होती है। इसकी लुग्दी से सिद्ध किया हुआ तेल चर्म रोगों पर लगानेके काममें लिया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कच्छके अन्दर इसका रस झामरा नामक रोग पर लगाया जाता है। खूनी दस्तोंके ऊपर इसका ताजा रस अथवा इसका सूखा हुआ चूर्ण ३ माशे की मात्रामें देनेसे बड़ा लाभ होता है।

इस वनस्पति में रेचक और ग्राही ये दोनों परस्पर विरोधी गुण एक साथ पाये जाते हैं। यह जहाँ खूनी दस्तों को रोकनेमें सफल होती है वहाँ कब्जियत को मिटानेमें भी इसका उपयोग किया जाता है।

झिंझेरी (कचनार भेद)

नाम—

संस्कृत—अश्मन्तकः, इंद्रकः, कुद्दालः, श्वेतकंचनः, वनराजा, यमालपत्रका। हिन्दी—झिंझेरी, झिंझोरा, कचनार भेद, पापड़ी। गुजराती—आसुन्द्रो। काठियावाड़—आसोंद्रो। मराठी—आपटा, वनराजा। सहारन पुर—झिंझोरा, पापड़ी। पंजाब—कोसुन्द्रो। अजमेर—झिंझा। तामील—अरई, अराम, अरिका। तेलगू—मंजियारी। लेटिन—Bauhinia Racemosa (बोहिनिया रेसीमोसा)।

वर्णन—

यह कचनार की ही एक जाति होती है। इसका झाड़ सीधा होता है। इसकी शाखाओं पर रुएँ होते हैं। इसकी छाल सफेद होती है। इसके पत्ते कचनारके पत्तोंकी तरह जुडे रहते हैं। इसके फूल छोटे और सफेद रंगके होते हैं। इसकी फलियोंका स्वाद कसेला और मीठा होता है। प्रत्येक फलीमें १२ से लगाकर २० तक बीज निकलते हैं। ये बीज दबे हुवे चपटे और काले होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति कृमि रोग, यकृत रोग, प्रमेह, दाह, तृषा, मूर्च्छा, विषमज्वर, चातुर्थिकज्वर, भूत बाधा, शर्कराष्मरी, कुष्ट, गुदा भ्रंश, गँडमाल, व्रण, कंठरोग, रक्तविकार, विष, अतिसार, और कफ पित्तके रोगोंको दूर करती है। इसकी छाल और इसके पत्ते मीठे और कसेले होते हैं। ये ज्वर नाशक, संकोचक, कृमिनाशक और पित्तको नष्ट करने वाले होते हैं। मूत्र सम्बन्धी रोग, भगन्दर, क्षय जनित ग्रंथियाँ, चर्म रोग, गलेका दर्द, अर्बुद, यकृत के रोग और रक्त रोगोंमें यह लाभदायक है। इसका फल कसेला, मीठा, ज्वर और प्यासको बुझाने वाला और सकोचक होता है। इसके तन्तु घावों पर टाँके लगानेके काममें आते हैं।

इसके पत्तोंका रस काली मिर्च और प्याजके साथ अतिसार और आममें देते हैं। इसकी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छालका काढ़ा अतिसारमें बहुत लाभ पहुँचाता है । इसके कोमल पत्तों को पीसकर लेप करनेसे ज्वरके साथ होने वाला सिर दर्द मिट जाता है। इसके कोमल पत्तोंका रस दूधके साथ देनेसे पेशावके अन्दर होने वाली जलन मिट जाती है । इसके पत्तोंका रस बायगोले पर भी लाभ पहुँचाता है। यकृत की सूजनमें इसकी जड़का काढ़ा दिया जाता है। इसकी छालको कुचल कर सूजन व जखम पर बाँधनेसे जख़म जल्दी भर जाता है। इसकी छालका काढ़ा बनाकर उससे कुल्ले करनेसे मुंहके छाले मिटते हैं और दाँत मज़बूत होते हैं। इसके बीजोंको सिरकेमें पीसकर जहरीले जानवरोंके डंक पर लगानेसे शान्ति मिलती है ।

इसके पत्तोंका काढ़ा सिर दर्द और मलेरिया ज्वरको मिटानेके लिये काममें लिया जाता है।

झिंझा

वर्णन—

यह बबूलकी तरह एक वृक्ष होता है इसके पत्ते शीशमके पत्तोंकी तरह होते हैं। इसकी लकड़ीसे बंदूकका तोड़ा बनाते हैं । इसकी छालका स्वाद मीठा और कसेला होता है ।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसकी छालको कुचलकर पानीमें भिगोंकर २।३ बार पीनेसे आँव और खूनके दस्त बंद हो जातें हैं ।

झिंटि

नाम—

संस्कृत—झिंटी, कुटज, रक्त पुष्पा, शोन झिंटका, सुमना । हिन्दी—झिंटी । बंगाल—झंटी, सदाजाति । पंजाब—तध्रेलू । सीमा प्रदेश—गोटपजिवा, फलवंसा । आसाम—झिनली । तामील—नील चेमुली, उद्मुली । तेलगू—एत्त पुलबेद गौरंता, कोड़ी कन्नू, नेरुगोरंता । लेटिन—Barleria Cristata (बारलेरिया क्रिस्टेटा) ।

वर्णन—

यह वनस्पति सारे भारतवर्षमें पैदा होती है । इसका तना रुएंदार होता है। इसके पत्ते ६-३ से

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१० सेंटिमीटर तक लंबे और २-५ से ४-५ सेंटिमिटर तक चौड़े होते हैं। ये लंबगोल और तीखी नोक वाले होते हैं। इनके दोनों तरफ रुआं रहता है। इसकी फली १-६ सेंटिमीटरतक लंबी होती है। हरएक फलीमें चार २ बीज़ निकलते हैं। ये बीज दबे हुए और नरम रुएंवाले होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे यह वनस्पति कड़वी, गरम और प्रदाह, ज्वर, खांसी और रक्त रोगोंमें उपयोगी होती है। सुश्रुतके मतानुसार इसकी जड़से सर्प और बिच्छूके विषपर लाभ होता है।

केस और महश्करके मतानुसार सर्प-बिच्छूके विषपर यह निरुपयोगी होती हैं।

कर्नलचोपराके मतसे यह वनस्पति साँपके काटनेपर लाभदायक है। इसका काढ़ा स्त्रीके दूधके बदलेमें काममें लिया जाता हैं।

झिंती नीली

नाम—

संस्कृत—दासि, नील कुसुमा, सहचरी, निलझिंती, अर्तगला, बला, बना, नील पुष्पी, इत्यादि। हिन्दी—झिन्ती। बम्बई—वाहिति। बंगाल—दासि। संथाल—रेल बहा। तामील—नीलबां। तेलगु—नीलं बरमू। लेटिन Barleria Strigosa (बारलेरिया स्ट्रिगोसा)।

वर्णन—

यह वनस्पति उत्तरी गंगाके मैदान, बंगाल, आसाम, सिक्किम और बरमामें पैदा होती है। यह एक प्रकारकी बिना शाखावाली झाड़ी है। इसका तना कुछ रुएंदार और खुरदरा रहता है। इसके पत्ते ११-५ से १५ सेन्टिमीटर तक लम्बे होते हैं। ये अण्डाकार और तीखी नोक वाले होते हैं। इसकी फली २ सेटिंमीटर तक लम्बी होती है। प्रत्येक फलीमें चार २ बीज निकलते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति कड़वी और तीखी होती है। व्रण, चर्मरोग, धवलरोग, शूल, खुजली, वायुनलियों का प्रदाह और दांतोंके रोग पर यह मुफीद है।

संथाल जातिके लोग इसकी जड़को खाँसीकी बीमारीके उपयोगमें लेते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार आक्षेप युक्त खाँसी की बीमारीमें इसकी जड़ विशेष रूपसे फ़ायदा पहुँचाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

झिल

नाम—

संस्कृत—झिल्ला, मृदुपत्रका, निला, रक्तपला, सुझिल्ला । तामील—कटुकचमथी । हिन्दी—झिल, झिल्ला । गुजराती—झिल । लेटिन—Indigofera Pausifolia(इंडिगोफेरा पोसिफोलिया) ।

वर्णन—

यह पौधा काठियावाड़, कच्छ और राजपूतानामें जत्था बन्द पैदा होता है । इस पौधेका आकार प्रकार सर पंखा और नीलके पौधेकी तरह होता है। औषधिमें इसकी जड़ और पंचांग काम में आते हैं ।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे इसकी जड़ शीतल और भूखको बढाने वाली होती है । यह वातरक्त और सन्धिबातको दूर करती है । इसके पत्ते घाव पूरक होते हैं । ये पेचिशकी बीमारीमें लाभदायक होते हैं । इसके सभी हिस्से तिल्ली और यकृतके बढ़ानेपर लाभ दायक हैं । इस औषधिमें विषनाशक गुणभी माना जाता है । इसकी जड़का काढ़ा लारके गिरने पर उपयोगी माना जाता है । इसके गुण नीलके गुणोंसे मिलते जुलते हैं ।

डॉक्टर देसाइके मतानुसार जंगली नील भेदन, यकृतके लिये उत्तेजक, शोथघ्न और आम नाशक है । यकृतके ऊपर इसकी उत्तेजक क्रिया स्पष्ट होती है । इसको छोटी मात्रामें देनेसे दस्त साफ़ होता है । पुरानी कब्जको मिटानेके लिये इसको छोटी मात्रामें प्रतिदिन देना चाहिये ।

आमवात और हड्डीके पड़देकी सूजन (Periostitis) में इसको देनेसे और दर्दके स्थानपर इसकी जड़को उबालकर लगानेसे लाभ होता है । शरीरका दुखना, संधियोंकी सूजन और बादीके दर्दपर इसके पंचांगके काढ़ेसे सेंक करना चाहिये और २॥ तोला जड़को २५ तोला पानीमें औटाकर आधा पानी रहनेपर उसमें से २॥ तोलेसे ५ तोलेतक की मात्रामें पिलाना चाहिये । यकृत और तिल्लीकी वृद्धिपर भी यह औषधि अच्छा काम करती है । इसके गुण धर्म साधारण नीलकी अपेक्षा अधिक उग्र है ।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह कृमिनाशक और घाव पूरनेवाली है । यह प्रदाहको भी नष्ट करती है । इसे संधिवातमें और सभी प्रकारके विषोंमें उपयोगमें लेते हैं ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

झीपटा

इस वनस्पतिका वर्णन इस ग्रंथके तीसरे भागमें पृष्ठ ६०८ पर चिरपोटीके प्रकरणमें दे दिया गया है।

झुन झनियाँ

नाम—

संस्कृत—शणपुष्पी, घंटा, शणघंटिका, पीत पुष्पी, स्थूल फला, सूक्ष्मपुष्पा, क्षुद्रशणपुष्पिका, वृहत्पुष्पी, घावनी। हिन्दी—झुन्झुनियाँ, बनसन। मराठी—धागरी, खुड़खुड़। बंगाल—बन सनुइ, झन् झनियाँ। गुजराती—घुगरा। मलयालम—पेतंदल कोट। तामील—वेल कुलप्पै। लेटिन—Crotalaria Verrucosa (क्रोटेलेरिया व्हेरुकोसा)।

वर्णन—

यह मजबूत और बहुशाखी पौधा रेतीली ज़मीनमें ज्यादा पैदा होता है। इसके पत्ते अंडाकृति, ५ से लगाकर १५ सेंटिमीटर तक लम्बे होते हैं। इसके फूल हलके नीले रंगके होते हैं। इसकी सूखी फलियोंको हिलानेसे खुड़ खुड़की आवाज होती है। इन फलियोंमें २० से लेकर ३० तक बीज रहते हैं। इसके पत्तोंका रस कुछ कड़वा होता है। इसकी २ जातियाँ होती हैं। एकको लेटिनमें "क्रोटोलेरिया व्हेरुकोसा" और दूसरीको "क्रोटोलेरिया सीरिसिया" कहत हैं। दोनों जातियों के गुण धर्म प्रायः समान हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे इसके पत्ते गरम, तीखे, कडवे, वमनकारक, कफको नष्ट करनेवाले, कफ निस्सारक, और अजीर्ण, ज्वर, रुधिर विकार, कंठरोग, मुखरोग और हृदय रोगमें लाभदायक है।

इसके पत्तेका रस औषधिके काममें आता है। तामीलके वैद्य इसको गीली खुजली, कंडु और चर्म प्रदाह तथा पीली फुन्सियों पर खाने और लगानेके काममें लेते हैं।

यूनानीमत—यह गरम और खुश्कहै। श्वेत कुष्ट और चर्मके झाँई रोगको दूर करता है। कफ और वायुको शान्त करता है। इसके पत्तोंको पीसकर लेप करने से जहाँ बदनमें बन्दूककी गोली वगैरह रह गई हो वह निकल आती है और तलवारका गहरा जखमभी शीघ्र भर जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टंकारी

नाम—

संस्कृत—टंकारी। हिन्दी–टंकारी, टिपारी। मराठी–फ़ोपटी, टंकारी। बंगाल–टेपारी। अंग्रेजी–Cape Gooseberry (केप गुसेबेरी)। लेटिन—Physalis Peruviana (फ़िसेलिस पेरूविएना)

वर्णन—

टंकारीके वृक्ष हिन्दुस्तानमें कई बगीचोंमें बोये जाते हैं। इसके पत्ते लंबगोल होतेहैं। फूल लाल और गुलाबी तथा कई रंगोंके लगते हैं। इसके फल छोटे झूमकों में लगते हैं। ये चमकदार, कइरवे के रंगके और बहुत स्वादिष्ट होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे टंकारी बातनाशक, कड़वी, कफ नाशक अग्निदीपक, हलकी, विसर्प रोगको दूर करनेवाली और सूजन तथा उदररोगमें लाभदायक है।

लारि यूनियनमें इसका पौधा मूत्रल औषधिकी तरह काममें लिया जाता है। दक्षिणी अफ्रिकामें इसके काढ़ेका एनिमा बच्चोंकी पेटकी खरावीको दूर करनेके लिए दिया जाता है।

यूरोपके अन्दर इसके गरम पत्तोंका पुल्टिस सूजनके ऊपर बांधा जाता है।

टंडी झकनी

नाम—

संथाल— टण्डीझकनी, बिरमोच। मलयालम—नेलममारि, हवसा। लेटिन—Zornia Diphylla (झोरानिया डिफ़ला)

वर्णन—

यह एक वर्षजीवी बहुशाखी बनस्पति है जो प्रायः सभी गर्म स्थानोंमें पैदा होती है इसकी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ऊंचाई २ से ३ फ़ीटतक होती है, इसकी शाखाएं नीचेकी ओर फैलती हैं। इसके पत्ते भिन्न २ आकार के, फूल छोटे और फलियां चपटी होती हैं।

गुणदोष और प्रभावः—

कर्नल चोपराके मतानुसार इसकी जड़ घिसकर बच्चोंको नींद लानेके लिए दी जाती है।

टमाटर

नाम—

हिन्दी—टमाटर, विलायती बेंगन। अंगरेजी—Tomatto।

वर्णन—

टमाटरका उपयोग भारतवर्षमें आजसे करीब ६० वर्ष पहिलेसे विदेशियोंके द्वारा प्रचलित हुआ है। इस वनस्पतिका इतिहास भी बड़ा मनोरंजक है। सबसे पहिले सन १६२८ में सर वाल्टर रेलेको यह फल अमेरिकाके रोलको नामक द्वीपमें प्राप्त हुआ। वहाँके लोग इसे जहरीला पदार्थ मानते थे। यह जब यूरोपमें लाया गया तब यूरोप वासियोंने इसे केवल शोभा की दृष्टिसे बागोंमें बोना शुरू किया। वहाँके लोग इसे "लव्ह एपल" कहते थे। आजसे केवल ६० वर्ष पूर्व इसका समावेश वहाँपर खाद्य द्रव्योंमें किया गया। फिर भी वहाँके लोग इस वनस्पतिसे बहुत डरते थे और उनका ख़याल था कि इसके सेवनसे केन्सर, उपदंश, इत्यादि रोग पैदा हो जाते हैं मगर थोड़े ही दिनोंमें उनका यह भ्रम मिट गया। अनुभवोंसे यह बात मालूम हुई कि यह फल एक दम निर्दोष है और इससे कोई रोग होनेकी सम्भावना नहीं है। तबतो इसका प्रचार खूब धड़ाकेसे यूरोप, अमेरिका और भारतवर्ष में हुआ और आज तो भारतवर्षमें शाग सब्जियोंमें आलूके बाद इसका ही नंबर है।

इसका पौधा बैंगनके पौधेकी तरह होता है। इसके फल शुरूमें हरे और पकने पर लाल हो जाते हैं।

इस वनस्पतिको प्रायः सभी लोग जानते हैं। इसलिये इसके विशेष परिचय की आवश्यकता नहीं है।

गुण, दोष और प्रभाव—

टमाटर कुछ खट्टा, मीठा, रुचिवर्द्धक, अग्निदीपक, पाचक, क्षुधावर्द्धक और शक्तिबर्द्धक है। इसका सेवन शरीरकी स्थूलता, उदर रोग, अतिसार, अपेंडिसाइटिस आदि रोगों पर भी लाभदायक सिद्ध हुआ है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मनुष्यकी जीवन रक्षाके लिये जिन२ तत्वोंकी आवश्यकता होती है वे सब तत्व प्रायः इसमें पाये जाते हैं। इसमें लोहेका तत्व बहुत अधिक परिमाणमें रहता है। लोहेकी तादाद इसमें दूधकी अपेक्षा दुगुनी और अण्डेकी अपेक्षा पांचगुनी पाई जाती है। प्याज, मूली, शकरकंद, बैंगन, गाजर, गोभी, केला, शलगम, सेव, नारंगी, मोसम्बी, अंगूर, तरबूज, खरबूजा, इत्यादि फलोंकी अपेक्षा इसमें लोहेका परिमाण डेढेसे ज्यादा रहता है।

लाइम या चूना भी इस शागमें दूसरे फलों और शागोंकी अपेक्षा अधिक परिमाणमें पाया जाता है। मांसकी अपेक्षा यह पदार्थ इसमें तिगुनेसे भी अधिक पाया जाता है। इसलिये माँसभक्षियोंको चाहिये कि मांसके बदले वे इसका ही सेवन करें। चूनेका यह तत्व शरीरकी हड्डियोंको मजबूत करनेवाला होता है। इसके अतिरिक्त इस वस्तुमें पोटीन, प्रोटास, फास्फोरस, गंधक, क्लोरिन, इत्यादि द्रव्य दूसरी तरकारियोंकी अपेक्षा अधिक तादादमें पाये जाते हैं। इसके अन्दर जो खट्टापन है कई लोग उसको आँक्सेलिक एसिड मानते हैं मगर यह उन लोगोंका भ्रम है। इसका खट्टापन सामुद्रिक एसिडका है जो कि नीबू और नारंगियोमें पाया जाता है।

001615

शरीर पोषक सूक्ष्म द्रव्य जिनको अंगरेजीमें विटामिन्स कहते हैं टमाटरमें बहुत अच्छी मात्रामें पाये जाते है। इसमें विटामिन A. B. C. तीनों ही काँफी मात्रामें पाये जाते हैं। इसमें पाये जाने वाले विटामिन्समें यह विशेषता है कि जहाँ दूसरे पदार्थोंमें पाये जानेवाले बिटामिन्स जरा सी आंच लगनेसे ही नष्ट हो जाते है। वैसे इसमें पाये जाने वाले विटामिन्स साधारण अग्निसे नष्ट नहीं होते। डॉक्टर क्रिनसनने यह सिद्ध किया है कि जो विटामिन्स ताजे टमाटरमें होते हैं वे ही सूखे हुए तथा डिब्बोंमें बंद और आचार, मुरब्बे या चटनीके रूपमें सुरक्षित रखे हुए टमाटरोंमें भी पाये जाते हैं।

इससे सिद्ध होता है कि यह एक बहुतही लाभदायक तरकारी है। इसके सेवनसे दस्त साफ़ होता है, रक्त विकार दूर होता है और बेरी बेरी गठिया और एक्झिमा की हालतमें बहुत फ़ायदा होता है। बच्चोंके सूखा रोगमें लाल टमाटरका रस देनेसे अच्छा लाभ होता है। लाल और पके हुए टमाटरको कच्चाही खाना चाहिये। शाग बनाकर खानेमें इसके गुण कुछ कम हो जाते हैं।

टमाटर हमेंशा बड़ी जातिका और सुडौल देखकरही लेना चाहिये। छोटे २ गोल टमाटर लाभ दायक नहीं होते। वात प्रधान या बात पित्त प्रधान व्यक्तिके लिये इसका सेवन लाभदायक नहीं होता। ऐसे व्यक्तियोंमें यह खुजली पैदा करता है। विशेषकर उस हालतमें जब कि वे इसे बेसनमें मिलाकर, तेलमें छोंककर पकाकर खाते हैं। इसको बेसन और तेलके साथ नहीं खाना चाहिये।

उपयोग—

चर्मरोग—रक्त दोषके कारण जब त्वचापर लाल २ चट्टे उठें हों, मुँहकी हड्डियाँ सूज गई हों

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दांतोसे रक्त निकलता हो और स्कर्वी रोगका अन्देशा हो तब लाल टमाटर का दो २ तोले रस दिनमें ४ बार पीनेसे अच्छा लाभ होता है।

दुर्बलता और कमजोरी—लाल टमाटरका रस पीनेसे दुर्बलता और कमजोरी मिटती है। थकावट दूर होती है, भूख बढ़ती है और पाण्डु रोगमें लाभ होता है।

ज्वर—टमाटरका रस या क्वाथ बनाकर सेवन करनेसे ज्वरके प्रकोपकी वजहसे रक्तमें जो हानिकर पदार्थोंकी वृद्धि होती है, वह शीघ्रही दूर हो जाती है और रोगीको शान्ति मिलती है।

मधुमेह—मधुमेह ग्रस्त रोगीके लिये टमाटरका सेवन विशेष लाभ प्रद है। डॉक्टर पी० जे० केंग्ब्रेजने लंदन रिपोर्टमें लिखा है कि मधुमेहीके लिये टमाटर से बढ़कर विशेष लाभ दायक कोई खाद्य पदार्थ नहीं है। इससे खूनकी कमी या रक्ताल्पता दूर होती है। मूत्रमें शकरका परिमाण भी धीरे २ कम होकर मधुमेह अनायास ही दूर हो जाता है।

नेत्रविकार—अल्पदृष्टि, रतौंधी इत्यादि जो नेत्र विकार, शरीरमें विटामिन की कमीसे होतेहैं वे टमाटरके रससे शीघ्रही नष्ट हो जाते हैं।

जीभ का मैलापन—जीभपर सफेदी छागइ होता उसे १ या २ टमाटर नित्य सेंधे निमकके साथ खाना चाहिये।

टरमेरा

नाम—

संस्कृत—भूतघ्ना, बिंबटा, ग्रहघ्न, दुर्धर्ष, कदम्बक, राजिका, कंतुभा, तुवेरिका, उग्रगंधा। हिन्दी—टरमेरा। अफ़गानिस्तान—मंदऊ। बंगाल—श्वेतशुरशा, सफ़ेद शोरशी। कुमाऊं—चर। सीमा-प्रदेश-टरमेरा, शाहबन। फारसी—जम्बे। पंजाब—असु, जमनिया, तारा, ऊसन। लेटिन—Eruca Sativa (एरुका सोटिवा)

वर्णन—

हिन्दुस्तानके कई भागोंमें इस बनस्पति की खेती की जाती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे यह अग्नि प्रवर्द्धक, पित्त निस्सारक और कृमिनाशक है। यह कफ़ और बात

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

को नष्ट करती है, खुजली और धवल रोगमे लाभदायक है, बवासीर, प्रदाह, व्रण, विसर्प और दांतोंकी पीड़ामें यह उपकारी है। इसके प्रयोगसे वमन करनेकी प्रवृत्ति रुक जाती है।

इसके बीज और यह सारी वनस्पति कामोद्दीपक मानी जाती है। यूरोपमें इसके पत्ते अग्निवर्द्धक। मूत्रल और शीतादिरोग प्रतिशोधक माने जाते हैं। कर्नल चोपराके मतानुसार इसके बीज चिड़चिड़े होते हैं इनका गुण धर्म सरसोंकी तरह माना जाता है।

टरारा

नाम—

हिन्दी—टरारा, रूंगरु, हेजा। पंजाब—हेजा, रुंगरू, ताम्रा। कुमाऊं—बकल पत्र, पत्र कोरई। नैपाल—हतोकनि। लेटिन—Kalanchoe Spathulata (केलेनचाई स्पेथुलेटा)

वर्णन—

यह वनस्पति हिमालयके गरम हिस्सोंमें और बरमा चीन तथा जावामें पैदा होती है इसके पत्ते लम्बगोल और चिकने तथा इसका फल फिसलना होता है इसकी ऊंचाई ·३ से लेकर १-२ मीटर तक होती है

गुणदोष और प्रभाव—

स्टैवर्टके मतानुसार लाहौरमें इसके पत्ते खास तौरसे हैजेकी बीमारीमें उपयोगमें लियेजाते हैं। कांगड़ामें इन पत्तोंको जलाकर फोड़ेपर लगाया जाता है। यह वनस्पति बकरियोंके लिए जहर है।

टिकचना

नाम—

वंगाल—टिकचना। संथाल—बिरमल्ला। लैटिन—Launaea Asplenifolia (लउनेइया एस्प्लेनिफोलिया)।

वर्णन—

यह वनस्पति पंजाव, उत्तरी गंगा और बंगाल के मैदानोंमें पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

संथाल जाति के लोग इस बनस्पति की जड़ को द्रुग्धवर्धक वनस्पति की वतौर काम में लेते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टिटा

नाम—

पंजाब—टिटा । लेटिन—Gentiana Tenalla (जेन्शिएना टेनेला ।

वर्णन—

यह वनस्पति काश्मीर और पश्चिमी हिमालय में १० हजार से १४ हजार फीटकी ऊंचाई तक पैदा होती हैं । यह एक सीधी और जमीन पर फैलने वाली वनस्पति होती है । इसके पत्ते गोलाकार ओर फूल सफेद और मैले बैंगनी रंग के होते है इसके छोटी २ फलियां लगती हैं ।

गुण, दोष और प्रभाव—

एटकिन्सन के मतानुसार इसके पत्तों और डालियों का काढ़ा दूसरी औषधियों के साथ ज्वर को दूर करने के लिये दिया जाता है ।

टीएडसी

नामः—

संस्कृत—डिंडिश, रोमशफल, । हिन्दी—टीण्डसी, टिण्डेका साग ।

वर्णन—

यह एक मशहूर तरकारी होती है । इसके फल गोल, टेढ़े मेढ़े, टमाटर की तरह और रुएंदार होते हैं ।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वैदिक मतसे टीण्डसी रुचिकारक, भेदक, पित्त कफ नाशक, शीतल, वात कारक, रुक्ष, मूत्रल और पथरी को दूर करने वाली है ।

यूनानीमत—यूनानीमतसे यह पहले दर्जे में सर्द और तर है । यह काम शक्ति वर्धक,पथरीनाशक, मस्तिष्ककी शक्ति कों बढ़ाने वाली, कफ पित्त वर्धक तथा देरसे हजम होने वाली होती है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उपयोग—

पथरी—टीण्डसी के ३ तोले रसमें १ माशा जवाखार मिलाकर गरम करके ६।७ दिन तक पीने से पथरी निकल जाती है और पेशाब साफ होता है।

टेलाजुमिकी

नाम—

तेलगू—टेलाजुमिकी। तामील—सिरुपुनइकलि। कनाड़ी—कुकिबालि। मलयालम—लंगबुल। लेटिन—Passiflora Foetida (पेसिफ्लोरा फोइटिडा)।

वर्णन—

यह वनस्पति भारतवर्षमें बहुत अधिक तादादमें बोई जाती है। यह एक पराश्रयी लता होती है। इसके पत्ते २.८ से ६-३ सेन्टिमीटर तक लम्बे होते हैं। इसके फूल हरे रहते हैं। इसका फल छोटे हरे बेरकी तरह होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके पत्ते सिरके भारीपन और सिर दर्दमें लगानेके काममें लिये जाते हैं। इसका काढ़ा पित्तनाशक और दमे में लाभदायक होता है। इसका फल वमन कारक होता है।

लाँरियूनियनमें इसके पत्ते ऋतुस्राव नियामक माने जाते हैं ये हिस्टीरिया और गुल्म वायुके उपयोगमें लिये जाते हैं।

ब्राझीलमें यह वनस्पति विसर्प रोग और प्रदाह युक्त चर्मरोगों पर पुल्टिसके रूपमें लगाई जाती है।

टेल्लेउसिरिका

नाम—

तेलगू—टेल्लेउ सिरिका। लेटिन—Sauropus Quadrangularis (साउरोपस क्वाण्ड्रेगुलेरिस)।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

यह वनस्पति बिहार, छोटा नागपूर, बरमा और मद्रास में पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

इसके सूखे पत्ते गले की बीमारियों को दूर करने के काम में लिये जाते हैं। इनका धूम्र पान करने से गलग्रंथि के प्रदाह और दूसरे गले के रोगों में फायदा होता है।

टोरकी

नाम—

हिन्दी—टोरकी, तोरकी। मराठी—भाँगरा, तोरकी, बुरबुर। बंगाली—भाँगरा। बम्बई—बुरबुरा गुजराती—झीणकीगली, नानीगली। लेटिन—Indigoafera Linifolia (इण्डिगोफेरा लिनिफोलिया)।

वर्णन—

यह नीलकी एक जाति है। नील की जातिकी करीब ४० प्रकार की वनस्पतियाँ होती हैं। उसमें यह सबसे छोटी होती है। इसका पौधा १ फुटके करीब लम्बा होता है। इसकी डालियाँ बहुत पतली होती हैं। पत्ते भी बहुत पतले और लम्बे होते हैं। फूल बहुत सुन्दर, छोटे, लाल रंगके, पतंग की तरह होते हैं। इसके पापड़े में एक बीज रहता है।

गुण दोष और प्रभाव—

हानिग्बरगरके मतानुसार यह वनस्पति विस्फोटक ज्वरमें लाभ दायक है। संथाल जातिके लोग इसको छोटी दूधीके साथ मिलाकर नष्टार्तव की बीमारी में देते हैं।

डाया

नाम—

हिन्दी—डाया। बंगाल—मथरा, मथरंजा। चिनाव—सुभाली। देहराइन—दाया। गढ़वाल दाया। कुमाऊ—दाया, शिवाली। लेटिन—Callicarpa Maerophylla(केली कारदा मेक्रोफिला)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

यह वनस्पति उत्तरी गंगाके मैदान, बंगालके मैदान और पूर्वी हिमालयमें पैदा होती है। यह एक सीधी झाड़ी होती है। इसके पत्ते १२ से लेकर २३ सेंटिमीटर तक लम्बे होते है। इसका फल सफेद होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसकी जड़से प्राप्त किया हुआ तेल पेटके विकारोमें लाभदायक है। इसके पत्तोंको गरम करके सन्धि वात पर बांधनेसे वेदना दूर होती है।

डिकामारी

नाम—

संस्कृत—नाड़ीहिंगू, पलाशाख्य, जंतुका, वेणुपत्री, हिंगुनाड़िका, पिंडा, शिवादिका, सुवीर्या। हिन्दी—डिकामारी, बीकामारी। बंबई—डेकामारी। मध्यप्रदेश—कोकिता, कोदमंगा, कुरू। गुजराती—डेकामारी, डिकामाली॥ बंगाल—हिंगुविशेष। काठियावाड़—मलन, मालाती। कच्छ—भालदी, भालन। तेलगू—बिक्की, गेरी बिक्की। तामील—कुंबे। लेटिन—Gardenia Gummifera (गारडेनिया गुमिफेरा) G. Lucida (गारडेनिया लुसिडा)।

वर्णन—

यह एक बड़ी जातिका वृक्ष होता है। जो पहाड़ी प्रदेशोंमें पैदा होता हैं। इसका वृक्ष अमरूदके वृक्षकी तरह दिखाई देता है। इसके पत्ते अमरूदके पत्तोंके समान होते हैं। इसके फल भी अमरूदके समान ही दिखलाई देते हैं। इसके बीजकोषमें बहुत बीज होते हैं। इसकी शाखाओंके मूलपर एक प्रकारका गोंद ज़मता है। इसी गोंदको डिकामारी कहते हैं। इस गोंदका रंग कुछ हरापन लिये पीला होता है। इसमें पेशाबके समान दुर्गन्ध आती है। इस औषधिमें मिलावट भी होती हैं। असली डीकामारी बहुत कठिनतासे पीसी जाती है। औषधि प्रयोगमें शुद्ध डीकामारी को ही लेना चाहिये।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे डिकामारी चरपरी, तीक्ष्ण, ऊष्ण, अग्निदीपक, संकोचक और कफ, बात, कब्जियत, बमन और वायुनलियोंके प्रदाहमें लाभदायक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसका गोंद ऐसे अग्निमांद्यमें जिसके साथ कब्जियत भी हो अन्तः प्रयोगमें लिया जाता है। इस गोंदका उपयोग आम तौरसे चर्मरोगोंके ऊपर किया जाता हैं। इसको घावके ऊपर लगानेसे उस घावमें कीड़े नहीं पड़ते और मक्खियाँ वगैरह भी नहीं बैठतीं। यह वनस्पति आक्षेप निवारक और पेटके आफरेको दूर करनेवाली है। बाह्य प्रयोगमें लिये जानेपर यह अपना उत्तेजक और कृमिनाशक असर बतलाती है। यह गोल कृमियोंको नष्ट करनेके लिये बहुत सफल औषधि मानी जाती हैं।

इसका पिसा हुआ गोंद कफ निःसारक और पसीना लानेवाला होता है। इसको उचित मात्रामें खिलानेसे नारूकी बीमारीमें बहुत लाभ होता है।

दुष्ट व्रणों को दूर करनेके लिए इसे संकोचक औषधि की तरह काममें लेते हैं। इससे मसूड़ों की जलन भी मिटती है। बच्चों को दांत निकलनेके समयमें जो दस्त लगते हैं उनमें भी यह औषधि लाभ पहुंचाती है।

डाक्टर देसाई के मतानुसार डिकामारी संकोच विकास प्रतिवन्धक, कोष्ट वायुशामक, कृमिघ्न मलेरिया ज्वरनाशक, पसीना लानेवाली, कफ निस्सारक और चर्मरोग नाशक है।

आँतोंके रोगोंके ऊपर डिकामारी की क्रिया बहुत उत्तम होती है। आँतोंमें घुसीहुई वायु को यह निकाल देती है। पेटमें पड़नेवाले गोल जंतुओं को नष्ट करनेके लिए यह एक उत्तम औषधि है। अजीर्ण और पेटके फुलाव पर यह कड़वे और सुगन्धित पदार्थों के साथमें दी जाती है। बच्चोंके दांत निकलनेके समय में ज्वर, दस्त, वमन, इत्यादि जितने भी उपद्रव होते हैं उन सबमें डिकामारी बहुत गुणकारी वस्तु है। बच्चों के ब्रेंकोनिमोनियां अथवा डिब्बे की बीमारी में डिकामारी और एलुए का लेप किया जाता है और इसको पेटमें भी खिलाई जाती है। इससे पेट का फुलाव तुरन्त उतर जाता है।

प्राचीन चर्मरोगोंमें भी डिकामारी को देने से अच्छा लाभ होता है। नारू की बीमारीमें इसको ५ रत्ती की मात्रामें देनेसे नारू गल जाता है।

मात्रा— इसकी साधारण मात्रा एक रत्ती से २ रत्ती तक होती है। खजाइनुल अदविाके मतसे इसकी मात्रा एक माशेसे ३ माशे तक है।

कर्नल चोपरा के मतानुसार यह ज्वर, अग्निमांद्य और कृमि रोग में लाभदायक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डिगिबेंटिया

नाम—

संथाल—डिगिबेटिया । नेपाल—खुट्ठी, लपसी। उड़ीसा—मोंगई, बोजारा। लेटिन—Polyalthia Simiarum (पोलिएल्पिया सिमिएरम)।

वर्णन—

यह वनस्पति उड़ीसा, बरमा और पेगू में पैदा होती है। यह एक बड़ी जाति का वृक्ष होता है। इसके पत्ते लंबगोल, फूल हरे और पीले और फल नारंगी रंगके तथा बेरके आकार के होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

उड़ीसाके अंदर इस वरस्पति की छाल बिच्छूके विषको दूर करनेके काममें ली जाती है।

डिजिटेलिस

नामः—

संस्कृत—घंटाबीणा, श्रगालगायन, तिलपुष्पी, धूम्रपुष्पी, द्विवर्षीण। अंग्रेजी— Fox Glone (फॉक्स ग्लोन)। लेटिन—Digitalis Purpurla (डिजिटेलिस परपूरिला)।

वर्णन—

यह वृक्ष हिमालयके ऊपर पैदा होता है। कुमाऊं और नीलगिरि के ऊपर इसकी खेती की जाती है और भी ऊंचे पहाड़ों पर इसको लगाने से यह सब दूर पैदा हो सकता है। इसका झाड़ करीब ७।८ फीट ऊंचा होता है। इसके पत्ते तम्बाकू के पत्तों की तरह होते हैं। फूल तिलके फूलों की तरह मगर उनसे कुछ बड़े होते हैं। इसके पत्ते औषधि प्रयोग में काममें आते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

डिजिटेलिसकी क्रिया हृद्य, रक्त वाहिनि और रक्ताभिसरणके ऊपर विशेष रूपसे होती है। रक्ताभिसरणके ऊपर क्रिया करनेवाली औषधियोंका एक स्वतंत्र वर्ग है। इस वर्गमें डिजिटेलिसके सिवाय कनेर, पीली कनेर, कोलीकांदा, कपूर, जौखार, तांबा, जश्ता, अरंड ककड़ीके पत्ता, मकई के भुट्टे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

के बाल कडु (Hellebore Nigrum) काँफी , इत्यादि वस्तुएं सम्मिलित हैं । यह वर्ग हृदयको उत्तेजना देनेवाला,हृदयकी शक्तिको बढ़ानेवाला और मूत्रल है । अधिक मात्रामें ये सब औषधियाँ विषैली हो जाती हैं । इस लिये इन औषधियोंको अधिक मात्रामें कदापि नहीं लेना चाहिये ।

डिजिटेलिसको क्रिया खास हृदयके ऊपर, हृदयमेंसे जानेवाले मज्जा तंतुओंके ऊपर और हृदयके केन्द्रस्थानपर होती है । छोटी धमनियोंके ऊपर इसकी प्रत्यक्ष क्रिया होकर यह उनका संकोचन करता है । इससे हृदयको अधिक आराम मिलता है और उस आरामके समय में उसका अच्छा पोषण होता है । नाड़ी भरपूर और व्यवस्थित चलने लगती है और पेशाबकी मात्रा भी बढ़ती है ।

उपरोक्त गुणोंकी वजहसे ज्वरमें या और किसी भी रोगमें जिसमें हृदयकी क्रिया शिथिल पड़ जाती है—डिजिटेलिसको देनेसे अच्छा लाभ होता है । इससे हृदयकी गति स्पिष्ट और नियमित हो जाती है और नाड़ीकी गति भी सुधर जाती है । नाड़ीके अव्यवस्थित होनेकी हालतमें डिजिटेलिसका प्रयोग उपयोगी होता है ।

हृदयोदर और मूत्र पिंडोदरमें इस औषधिको देनेसे दो प्रकारके लाभ होते हैं । एक तो हृदयको ताक़त मिलती है दूसरे पेशाबकी मात्रा बढ़कर पेटका संचित जल निकल जाता है । इन दोनों प्रकारके उदर रोगोंमें डिजिटेलिसको किसी मूत्रल, विरेचक और पसीना लानेवाली औषधिके साथ देना चाहिये । इस औषधिको देते समय रोगीको बिस्तरपरसे नहीं उठने देना चाहिये और पथ्यमें उसको दूध, शक्कर, अनार इत्यादि पौष्टिक पदार्थ देना चाहिये ।

रोगके ऊपर इस औषधिका प्रभाव होनेके पश्चात् रोगीको शंखभस्म, कौड़ी भस्म अथवा मंडूर भस्म देनेसे अच्छा लाभ होता है ।

दमा, खाँसी, कफरोग, क्षय, फेंफड़ेसे रक्तका बहना, फफ्फुस रोग इत्यादिमें डिजिटेलिसका बहुत उपयोग किया जाता है । इन रोगोंमें हृदयके परदे शिथिल होकर फूलने लगते हैं । उस फुलावको डिजिटेलिस दूर करता है ।

हृदयके फुलावकी वजहसे पैदा हुए अत्यधिक रजः श्रावमें डिजिटेलिसको देनेसे बहुत लाभ होता है ।

डिजिटेलिसके न मिलनेकी हालतमें इस वर्ग की ऊपर लिखी हुई औषधियोंमेंसे किसी भी एक औषधिका व्यवहार किया जा सकता है ।

यूनानी मतानुसार यह एक विषैलापदार्थ है । इसको अधिक मात्रामें लेनेसे सिर घूमना, जी मिचलना, वमन, कमजोरी, पुतलियोंका फिरना, ठंडा पसीना, बेहोशी, इत्यादि उपद्रव पैदा हो जाते है । यह उन जहरोंमें से है जो शरीर के अन्दर एकत्र होकर कुछ समय बाद अपना प्रभाव दिखलाते हैं ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सूक्ष्म मात्रामें लेने से यह शांतिदायक, हृदयको बल देने वाला, और रक्ताव रोधक होता है। जलोदर में यह विशेष लाभदायक नहीं है फिर भी एक मूत्रल औषधि होने की वजहसे यह उसमें लाभ पहुंचाता है।

हृदय की ऐसी बीमारियोंमें जब हृदय की गति जल्दी और बेकायदा होती है यह सब हृदयको ताकत देकर उसकी गति को व्यवस्थित कर देता है। जब दिल पतला होकर फ़ैल जाता है तब यह उसको ताकत पहुँचाता है। लेकिन दिलकी शिरायें जब चर्बी में बदल जाँय अथवा हृदय मोटा होजाय और हृदयके छिद्र संकुचित होजाँय तब, इस दवा के प्रयोगसे उल्टी हानि होती है।

ज्वर, नकसीर, फेफड़े और गर्भाशय से खून जाने की बीमारियों में भी यह एक उत्तम औषधि है।

इसकी मात्रा आधी ग्रेन से डेढ़ ग्रेन तक और इसके टिंचर की मात्रा १० बूंद से ३० तक है।

डौड़ी

नाम—

हिन्दी—डौड़ी, डोरी। संस्कृत—तिक्तजीवन्ती। बंबई—दौड़ो, पनकुड़ा, राय दौड़ी, शिंगुटी। कच्छ—खड़ खोटी, डूडीवल। गुजरात—नानी डोडी। लेटिन—Leptadenia Reticulata (लेप्टाडेनिया रेटिक्यूलेटा)।

वर्णन—

यह एक वर्ष जीवी लता होती है। इसकी डंडीपर सफेद और भूरे रंगकी छाला होती है। इसके पत्ते चौड़े, अणीदार, मोटे और चमकीले होते हैं। इसके फूल छोटे, पीलापन लिये हुए हरे रंगके होते हैं जो गुच्छों में लगते हैं। इसका फल ऊपर से चिकना होता है। इसमें बीज रहते हैं।

गुण दोष और प्रभाव,—

यह बनस्पति रोचक, ग्राही, कफ नाशक और सूजनको दूर करने वाली होती हैं। संग्रहणी, कफ और दर्दके अन्दर भी यह उपयोगी है। इसकी कच्ची कलियोंका साग बनाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ढाका (पलाश)

नाम—

संस्कृत—पलाश, किंशुक, पर्ण, याज्ञिक, रक्तपुष्प, क्षार श्रेष्ठ, ब्रह्मवृक्ष, कमलासन, कृमिघ्न, वक्रपुष्पक, सुपर्णी। हिन्दी—ढाक, टेसू, केसू, खाकरा, पलाश। बंगाल—पलाश गाछ। मराठी—पलास। गुजराती—खाकरा। तामील—पलासु, कट्टुमुसक, किंजुग, किरुमिस्तरू, पुंगु, इत्यादि। तेलगू—किंशुक, मोद्दुगा पलाश, मानुकाचेट्टु, तेल मोदुग, इत्यादि। उर्दू—पलासपापड़ा। लेटिन—Butea Frondosa ब्यूटिया फ्रोंडोसा, B, Monosperma (ब्यूटिया मोनोस्परमा)।

वर्णन—

ढाक या पलाश भारतवर्षमें बहुत प्राचीन कालसे एक दिव्य औषधि की तरह काममें लिया जाता है। इसके झाड़ ५ से लेकर १५।२० फुट तक ऊंचे होते हैं। इसके पत्ते तीन २ के थोक में लगते हैं। इसके फूल की फली तोते की चोंच की तरह निकलती है और खिलनेपर लाल केसरिया रंग के सुन्दर पतंग की तरह दिखलाई देती है। इसकी छाल आधेसे १ इंच मोटी और खुरदरी होती है। इस वृक्ष के ऊपर एक प्रकार का गोंद लगता है। जिसको कमर कस, चूनियां गोंद या पलाश का गोंद कहते हैं। इसके फूलोंमें से पीला रंग निकाला जाता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत से ढाक अग्निदीपक, वीर्यवर्द्धक, सारक, गरम, कसेला, चरपरा, कड़वा, स्निग्ध टूटी हड्डीको जोड़नेवाला तथा संग्रहणी, बवासीर, कृमि, व्रण और गुल्म को हरनेवाला है। इसके फूल स्वादुपाकी, कटु, तिक्त, कसैले, वातवर्द्धक, शीतल, मल रोधक और कफ, रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, वातरक्त, कुष्ट, तृषा और दाह को दूर करनेवाले होते हैं। पलाश की जड़ का स्वरस नेत्ररोग, रतौंधी और नेत्र की फूली को नष्ट करता है, यह नेत्र की ज्योति को बढ़ाता है। ढाकका गोंद संग्रहणी, मुखरोग खांसी और पसीने को दूर करता है। यह मलरोधक है।

चरक और सुश्रुतके मतानुसार इसके बीज सर्पदंशके काममें उपयोगी हैं। इसकी कोमल शाखाओं की राख दूसरी वस्तुओंके साथमें बिच्छू के विष को दूर करती है।

एन्सलीके मतानुसार तामीलके वैद्य इसके बीजोंको कृमिनाशक वस्तुकी तौरपर काममें लेते है। वे इनको १॥ चम्मचकी मात्रामें दिनमें दोबार देते हैं।

के० एल० डे के मतानुसार इसके बीज विरेचक और कृमिनाशक हैं। इसका गोंद एक तेज़ संकोचक पदार्थ है। इसे पुराने रक्तातिसारमें देनेके काममें लेते हैं। इसकी मात्रा ५ से लेकर २० ग्रेन तककी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दत्तके मतानुसार इसके बीज आंतोंके कृमियों को नष्ट करते हैं। इसके फूल संकोचक, मूत्रल और कामोद्दीपक होते हैं। गर्भवती स्त्रियोंके रक्तातिसार को दूर करने के लिए इन्हें दिया जाता है। इसके फूलों का पुल्टिस सूजन को दूर करने और मासिक धर्मके साफ करने के लिए बाह्योपचार में काममें लेते हैं।

यूनानी मत— यूनानी मतसे यह गरम और तर है। मुजर्रबात अकबरी नामके ग्रन्थ के लेखक लिखते हैं कि इसके बीज नपुंसकता की चिकित्सा के लिए बहुत उत्तम औषधि है। इन बीजों को एक घण्टे तक पानीमें भिगोना चाहिये। उसके बाद उनके ऊपर के पतले छिलके को दूर करके भीतरकी मगजको सुखा लेना चाहिये। उसके बाद एक मिट्टी की हंड़िया लेकर उसके पेंदेमें एक छेद करके उस हंडिया में पलाश की मगज को भर करके ऊपर ढक्कन लगाकर कपड़ मिट्टी कर देना चाहिये। फिर जमीन में एक आधा गज लंबा, आधा गज चौड़ा और आधा गज गहरा खड्डा खोदकर उस खड्डे के अन्दर १ छोटा खड्डा और खोदना चाहिये। उस छोटे खड्डेमें एक मिट्टी का अथवा कलई का प्याला रखकर उस प्याले के ऊपर उस मिट्टी की हंडिया को इस तरह से रखना चाहिये। जिससे उस की पेंदीवाला छेद उस प्याले के बीचोंबीच में रहे। उसके बाद उस हांडी के आसपास बाकी बची हुई जगह में ऊपले कंडे भरकर आग लगा देना चाहिये। जब आग बुझके ठंडी होजाय तब सावधानी के साथ उन बर्तनों को निकालकर नीचे के प्यालेमें इकट्ठे हुए तेल को शीशीमें भरकर रख लेना चाहिये। इस तेलकी २।४ बून्दें कामेन्द्रियके ऊपर सीवन सुपारी छोड़कर मालिश करनेसे कुछ ही दिनोंमें सब प्रकार की नपुंसकता दूर होती है और प्रबल कामशक्ति जाग्रत होती है।

अगर इस विधिसे यह तेल न निकाला जाय तो बालुका यन्त्रसे अथवा पाताल यन्त्र से भी तेल निकाला जा सकता है और वह भी ऐसाही काम देता है।

ढाक और नेत्र रोग—

नेत्र रोगों के लिये भी ढाक एक बहुत उपयोगी वस्तु साबित हुई है। इसकी जड़ों से निकला हुआ अर्क आँखों के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। इसको निकालने की विधि इस प्रकार है:—ढाक की ताजा जड़ों को लाकर उनके दो दो इंचके टुकड़े कर लेना चाहिये। फिर उन टुकड़ों को कुचलकर मिट्टी के एक चिकने बरतनमें तीन चौथाई हिस्से तक भर देना चाहिये। फिर उस हाँडी के खाली हिस्सेमें एक चीनी मिट्टी का प्याला सीधा रख देना चाहिये। फिर हाँडीके ऊपर मट्टीका ढकना लगाकर उसकी दर्जोंको गेहूँके घूंदे हुए आटे से बन्द कर देना चाहिये। उस मिट्टीके ढक्कनमें ठंडा पानी भरकर उस बरतन को चूल्हे पर चढ़ाकर मध्यम आंच देना चाहिये। जब २ उस ढकने का पानी गरम होता जाय तब २ उस पानी को निकालकर ठण्डा पानी भरते रहना चाहिये। ऐसा करने से उन जड़ों के अन्दर रहा हुआ रस भाफ बनकर उस मिट्टीके ढकनेपर लगेगा और वहाँ से पीछा टपक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर उस चीनीके प्याले में टपकेगा। यही पलाश का अर्क कहलाता है। इसको छानकर शीशी में भर लेना चाहिये। इस अर्क की एक दो बूंद आँखों में डालते रहने से आंखकी झाँक, खील, फूली, मोतियाबिन्दु, रतौंधी इत्यादि सब प्रकारके नेत्र रोग नष्ट होते हैं। इसी अर्क की ४।५ बून्दे नागर बेलके पत्ते में रखकर खानेसे भूख बढ़ती है, अनैच्छिक वीर्यस्राव रुकता है और काम शक्ति प्रबल होती है।

ढाका और कृमि रोग—

ऊपर लिख आये हैं कि पलाशके बीज कृमि रोगके लिये महौषधि है। इनके बीजों को निसोत, किरमानी अजवायन, कपिला बाय बिडंग और गुड़के साथ देनेसे सब प्रकारके कृमि नष्ट होतेहैं।

जिस प्रकार इसके बीजों का अर्क पेटके अंदरके कृमियोंको नष्ट करता है उसी प्रकार इनका वाह्य प्रयोग बाहरी जंतुओंको नष्ट करनेकी अद्भुत शक्ति रखता हैं। यही कारण हैं कि नारूके रोगमे भी यह वनस्पति अच्छा लाभ बतलाती है। इसका उपयोग करनेकी विधि इस प्रकार हैं। पलाशके बीज, जहरी कुचलेके बीज, रसकपूर, सादा कपूर और गूगल इन सब औषधियोंको लेकर बारीक पीसकर पानीके साथ खरल करके फिर एक पीपलके पत्तेपर उनका लेप करके उस पीपलके पत्तेको नारूके फोलेके ऊपर बांध देना चाहिये। इस पट्टीको ३ दिनतक नहीं खोलना चाहिये। इस प्रयोग से नारूका कीड़ा बहुत शीघ्र मर जाता है।

ढाका और सर्पविष—

सर्प के विषके ऊपर भी यह वनस्पति एक उत्तम औषधि मानी जाती है। इसकी जड़की छालको पीसकर उसका ताजा रस निकालकर रोगीके बलाबल के अनुसार ४ से १० तोले तककी मात्रामें देनेसे बिना दस्त उल्टी हुए जहर उतर जाता है।

जंगलनी जड़ी बूटीके लेखक लिखते हैं कि एक मनुष्यको चित्रानामक सर्प (चितावल) ने ६ महिनेके पहिले काटा था। जिसकी वजहसे उसके पैर पर सूजन हो गई था। दिन प्रतिदिन उसका विष शरीरमें फैलता गया और उसके सारे शरीरमें बडे २ फोले होने लगे। ये फोले भरते थे और फिर फूट जाते थे। इसप्रकार उसके शरीरमें विस्फोटककी तरह सब लक्षण नजर आने लगे। सारे शरीरमें असहय जलन होती थी और काटी हुई जगहका माँस गल २ करके टूटता जाता था। इस रोगीको शुरू २ में प्रति तीसरे दिन अमलतासका जुलाब दिया गया और उसके पश्चात् नीचे लिखी औषधिका उसे सेवन कराया गया।

पलाशकी जड, पत्ते, फूल, छाल और बीज ये पाँचों वस्तुएं दो २ सेर लेकर, धूपमें सुखाकर आगमें जलाकर राखकर लेना चाहिये। फिर उस राखमें १० सेर पानी डालकर अच्छी तरह मसलकर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एक रात भर पड़ा रहने देना चाहिये। फिर उस पानीको निथारकर चूल्हे पर चढ़ाकर उबालना चाहिये। जब दो सेर पानी रह जाय तब उसमें बकरीका मूत्र, भेड़का मूत्र, गायका मूत्र और मनुष्यका मूत्र दो २ सेर, आंकड़ेका दूध आठ तोला, काली सरसीकी अन्तर छाल, सरसीके फूल, स्वर्ण गेरू, हल्दी, दारू हल्दी, तुलसीकी मंजरी, मुलेठीकी जड़, बेरकी लाख, सेंधा निमक, जटामाँसी, निर्गुण्डीके बीज, हींग, सूंठ, मिरच, पीपर, अमलतासका गूदा, बाम्ह कंकोड़ेका सुखाया हुआ कंद, कूकड़वेलकी जड़, पीपला-मूल, मालकांगनीकी जड़ और अनंत मूल ये सब चीजें आठ २ तोला लेकर कूट पीसकर उसमें डालकर ताँबेके बरतनमें हल्की आँचसे उबालना चाहिये। जब गाढ़ा हो जाय तब उसको नीचे उतारकर थालियोंमें फैला देना चाहिये; ठंडा होनेपर उसकी डेढ़ २ माशेकी गोलियाँ बना लेना चाहिये।

इनमेंगोलियों से एक २ गोली दो २ रुपये भर गायके घी के साथ मिलाकर उस रोगीको खिलाई जाती थी और ऊपरसे आधा पाव दूध गायका पिलाया जाता था। इसी प्रकार इसकी एक गोलीको काली सिरसीके काढ़ेमें मिलाकर सारे शरीर पर लगादी जाती थी। इस प्रकार १ महिने तक इसका प्रयोग करनेसे विषके सब उपद्रव नष्ट हो गये।

जंगलनी जड़ी बूंटीके लेखक का कथन है कि इस प्रयोग को चित्रासर्प के विष पर कई वार अनुभवमें लिया गया है और हमेशा इसमें सफलता मिली है।

खजाइनुल अदवियाके लेखकके मतानुसार इसके पत्ते भूख पैदा करते है। फोड़े फुन्सी, बवासीर और पेटके कीड़ोंको नष्ट करते हैं। इसकी लकड़ी की राख पीनेसे तिल्लीकी सूजन दूर होती है। ढाककी नरम कोंपलें ७ तोला और पुराना गुड़ १ तोला। इन दोनोंको पीसकर १४ गोलिया बनालें। इनमें से रोजाना १ गोली खानेसे शीघ्र पतनका रोग दूर होता है। ढाक की जड़ोंको कुचल कर, औटाकर उनका घन सत्व निकाल कर पानमें देनेसे मनुष्यकी कामशक्ति बढ़ती है। ढाककी जड़ोंका रस निकालकर उस रसमें ३ दिन तक गेहूँको भिगोदें। उसके बाद उन गेहुओं को सुखाकर पीसलें। इनका हलवा बनाकर खानेसे प्रमेह, शीघ्र पतन और काम शक्ति की कमजोरी दूर होती है। इसकी जड़को पानीमें घिसकर नाकमें टपकाने से मृगीका दौरा बन्द हो जाता है। पलाशकी छाल और सोंठका काढ़ा बनाकर पिलानेसे सांप का जहर दूर होता है। इसके पत्तों को गरम करके बांधने से फोड़े फुन्सी मिट जाते हैं। इसके पत्तों को औटाकर पिलाने से पेट का आफरा और उदरशूल दूर होता है। इसके बीज और इन बीजों का तेल कृमिनाशक है। ढाकके बीज, तणगछ के बीज, कालीमिर्च और हींग इन सबको पीसकर खिलानेसे पेटके कीड़े मर जाते हैं। पलाश के बीज १ तोला, शहद २ तोला और घी १ तोला इन सबको घोटकर इसमें रूई को भिगोकर बत्ती बनाकर स्त्री प्रसंग से ३ घंटे पहले योनिमें रखनेसे गर्भाधान होने नहीं पाता।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुष्टरोगमें पलाश के बीजों का तेल, चालमोगरा के तेलके समान ही गुणकारी सिद्ध हुआ है। इसका विधिवत् इंजेक्शन कुष्ट रोगमें चालमोगरा से अधिक लाभदायक सिद्ध हुआ है।

इसके बीजोंको जलाकर उनमें आधी हींग मिलाकर पीसकर रखलें। इसको १॥ माशे से ३ माशे तक की मात्रामें मासिकधर्म के बाद ३ दिन तक देने से स्त्री की गर्भाधारण की शक्ति नष्ट हो जाती है। मगर इस प्रयोग को ३ महीने तक हर मासिक धर्म पर करना चाहिये। इसकी जड़ का स्वरस अथवा इसकी जड़ों का भपके द्वारा निकाला हुआ अर्क आंखों में डालने से आँख की फूली, रतौंधी, पानी का बहना, आंखों की लाली और प्रारम्भिक अवस्था का मोतियाविन्द भी आराम हो जाता है। शोढ़ल निघंटु में भी चक्षुरोगों की उपयोगिता में इस वस्तु की बहुत प्रशंसा की गई है।

इसके पंचांग की राख १ तोला, २॥ तोले कुनकुने घीके साथ पिलाने से खूनी बवासीरमें बहुत लाभ होता है। इसके कुछ दिन तक लगातार सेवन करनेसे मस्से सूख जाते हैं। इसके पंचांग की राख ५ तोला लेकर पावभर पानीमें मिलाकर रात में रख दें। सवेरे भुने हुए चने छीलकर एक मुट्ठी खिलाने के बाद उसका नितरा हुआ जल ऊपर से पिला दें। इस प्रकार कुछ दिनों तक करने से यकृतके विकार शान्त होते है। इस रोग की यह एक सिद्ध औषधि है। पलाश की जड़के रसमें एक प्रकार की तांबे की भस्म तैयार की जाती है जो नेत्ररोग के लिए बहुत उपयोगी है। उसकी विधि इस प्रकार हैं।

ताँबेके पत्रे लेकर उनके बराबर वजन की सोना मक्खी नामक उपधातुको लेकर ढाककी जड़के रसमें घोट लें। उस घुटी हुई सोना मक्खीको ताम्बेके पतरोंके दोनों तरफ लेप कर दें और छायामें सुखा लें। सूख जानेपर ढाककी एक बड़ी जड़को लेकर उसमें ऐसा खड्डा करें कि जिसमें ये सब पतरे समा जायं उस खड्डेमें इन पतरोंको रखकर उस खड्डे का मुँह उसीके बुरादे से दबा दबा २ कर भर देना चाहिये। उसके बाद उसपर कपड़ मिट्टी करके ५ सेर ऊपले कंडोंकी आँचमें फूक देना चाहिये। इस प्रयोगसे एक ही आँचमें ताम्बेकी भस्म हो जाती है। इस भस्मको आँखोंमें आँजनेसे आँखोंके कई कठिन रोग आराम हो जाते हैं।

ढाककी एक जाति और होती है जो सफेद ढाक कहलाती है। इसके फूल सफेद आते है। ऐसा कहा जाता है कि इसके संसर्ग से सोना बनाने की रासायनिक क्रिया होती है। इसके योग से बनाई हुई हरताल, सिंगरफ और पारदकी भस्में विशेष उपयोगी होती हैं। ऐसा कहा जाता है कि इसके सफेद फूलों का कल्प साधु सन्त सेवन करते हैं। इसके प्रभाव से उनका हृदय मँज जाता है और वे त्रिकाल दर्शी हो जाते हैं। गर्भावस्थामें यदि स्त्री को इसका सेवन कराया जाय तो उसकी संतान बड़ी प्रभाव शाली और बुद्धिमान होती है। इन सब बातोंमें सचाई का कितना अंश है यह कहा नहीं जा सकता।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उपयोग—

मूत्रावरोध—पलाश के फूलों को उबालकर गरम २ पेडूपर बाँधने से रुका हुआ पेशाब, गुर्दे का शूल और सूजन दूर होती है।

रक्तस्राव—इसके फूलों को रात भर ठंडे पानी में भिगोकर सुबह थोड़ी मिश्री मिलाकर पिलानेसे नकसीर, गुर्दे का दर्द और पेशाब के साथ खून आना बन्द होता है।

अतिसार—ढाक का गोंद ५ रत्ती से १५ रत्ती तक कुछ दालचीनी और अफीम मिलाकर खिलाने से अतिसार तुरन्त बन्द होता है।

फोड़ेफुन्सी—फोड़े फुन्सी पर इसका ताजारस लगाने से लाभ होता है।

आंतोंकेकृमि—इसके बीजोंको पानीमें भिगोकर छिलका उतारकर उनके मग़जको सुखाकर, पीसकर १। माशेकी मात्रामें सुबह शाम और दुपहर ३ दिन तक देना चाहिये और चौथे दिन अरंडीका तेल पिलादेना चाहिये। इस प्रयोगसे आँतोंके लम्बे कीड़े निकल जाते हैं।

दाद और खुजली—ढाकके बीजों को नींबू के रसके साथ पीसकर लगानेसे दाद और खुजली में लाभ होता है।

सूजन—इसके फूलों का पुल्टिस बनाकर बांधने से सूजन बिखर जाती है।

सर्पविष—इसकी छाल और सोंठको औटाकर छान कर पिलानेसे से सर्पके विषमें लाभ होता है।

बदगाँठ—इसके पत्तों का पुल्टिस बाँधनेसे बदगाँठमें लाभ होता है।

पित्त की सूजन—इसके गोंद को पानीमें गलाकर लेप करनेसे कष्ट साध्य पित्त की सूजन भी मिटती है।

बाजिकरण—इसकी जड़की अंतर छाल को दूधके साथ पीने से पुरुषार्थ बढ़ता है।

मूत्राशय के रोग— इसके फूलों का पुल्टिस बनाकर बांधने से मूत्राशय के रोग मिटते हैं। और अंडकोष की सूजन भी बिखर जाती है।

मिरगी— इसकी जड़ को पानीमें घिसकर नाकमें टपकानेसे मिरगी का वेग मिटता है।

मूत्रकृच्छ्र—ढाककी सूखी हुई कोपलें, ढाकका गोंद, ढाककी छाल और ढाक के फूलों को मिलाकर चूर्ण बना लेना चाहिये। जितना इस चूर्ण का वजन हो उतनीही मिश्री इसमें मिला देना चाहिये। इसमेंसे ६माशे चूर्ण दूधके साथ रोज लेनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है।

अंडवृद्धि— इसकी छालको पीसकर उसको ७ माशे की मात्रामें जलके साथ देनेसे अंडवृद्धि मिटती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ढ़ोल समुद्र

नाम—

संस्कृत—ढ़ोलसमुद्रिका, समुद्रक हिन्दी—ढ़ोलसमुद्र। मराठी—डिंडा बंबई—डिंडा। संथाल—हतकन लेटिन—Leea macrophylla (लीआ मेक्रोफिला)

वर्णन—

यह एक झाड़ीनुमा वृक्ष होता हैं। इसकी पैदायश कुमाऊसे बंगाल और आसाम तक तथा हिन्दुस्तानके गरम भागोंमें होती है। इसके पत्ते कटी हुई किनारोंके, डालियां हरी, फूल सफेद और जड़ें कंदमय होती हैं। इसकी जड़ें रंगाईके काममें और पत्ते शाग बनानेके काममें आते हैं। औषधि प्रयोगमें इसकी जड़ें काममें आती हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे इसकी जड़ ग्राही, व्रणरोपक, वेदनानाशक और रक्तस्राव रोधक होती है। इसकी जड़को पीसकर लेप करनेसे दाद मिटता है नारूकी सूजन उतारनेके लिये इसकी जड़को पीसकर गरम करके लेप करते हैं। इसके रसमें बत्ती बनाकर नासूरमें भरनेसे नासूर भर जाताहै। शरीरके किसी अंगके दर्द को मिटानेके लिये इसकी जड़को पीसकर गरम करके लेप करते हैं। इसकी जड़का लेप करनेसे घावमेंसे वहताहुआ खून बंद हो जाता है।

तगर

नाम—

संस्कृत—कालानुसार्प, तगर, कुटिल, लघुष, नत, चक्र, शठ, दीपन, इत्यादि हिन्दी—तगर। बंगाल—तगर पाटुका। मराठी—तगर। गुजराती—तगर गंठोड़ा करनाटकी—तगर। तेलगू—गन्धि तरग कुचेट्ट। नेपाल—चम्मा। उड़ीसा—पाणी फलरा। अरबी—असारून। लेटिन—Valeriana wallichii (व्हेलिरिएना वेलिची)।

वर्णन—

तगरके वृक्ष हिमालयमें काश्मीरसे भूटानतक और खासिया पहाड़ियों पैदा होते हैं। इसके पत्ते ५

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

से लेकर १० सेंटिमीटर तक लंबे होते हैं। इसके फूल सफेद होते हैं। इसकी लकड़ीमें एक प्रकरकी गंध आती है। इसकी २ जातियां होती हैं। दूसरी जातिके संस्कृतमें पिंडीतगर, दंडहस्ती, लघुहर्षण, इत्यादि नाम हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे दोनों प्रकार के तगर गरम, स्वादिष्ट, हलके तथा विष, अपस्मार, सिर दर्द, नेत्र रोग और त्रिदोष को दूर करते हैं।

भाव प्रकाश में जहाँ इस वस्तुको गरम लिखा गया है वहाँ निघण्टु रत्नाकर और राजनिघण्टु के कर्ता इसको शीतल मानते हैं। निघण्टुरत्नाकरके मतानुसार तगर शीतल, पथ्य, कड़वी, मधुर, हलकी, स्निग्ध, पाकमें चरपरी, कसेली, विष विकारको दूर करने वाली तथा नेत्ररोग, रुधिरविकार, त्रिदोष, भूतोन्माद और मृगीको दूर करती है।

यूनानीमत—यूनानीमत से यह कड़वी, दुर्गन्धयुक्त, संकोचक, मृदुविरेचक, शांतिदायक, पेटके आफ़रेको दूर करनेवाली, पार्यायिक ज्वरको नष्ट करनेवाली, ऋतुस्राव नियामक, और निद्राकारक है। यह आँखों और बालोंकी विकृति, जोड़ों के दर्द, यकृत, तिल्ली और गुर्दे के रोगों पर लाभ दायक है। पुरातन प्रमेहमें भी यह मुफीद है।

डाक्टर देसाई के मतानुसार तगर वायुनाशक, संकोच-विकास प्रतिबन्धक, रक्ताभिसरण और मज्जातन्तु समूह को उत्तेजना देनेवाला, पौष्टिक, चेतनाकारक और वाह्य प्रयोगसे वेदना नाशक और व्रणरोपक होता है। इसको अधिक मात्रामें खानेसे चक्कर आते हैं, हिचकी चलने लगती है और वमन होने लगते हैं। थोड़ी मात्रा में इसको देनेसे यह रक्ताभिसरण क्रिया को उत्तेजन देती है। इसकी फाँट बनाकर देने से हृदयकी शक्ति और नाड़ीकी गति बढ़ती है। मगर वह भी अधिक मात्रा में देनेपर नाड़ीकी गति कम हो जाती है और रक्त वाहिनियों का जोर भी घट जाता है।

तगर का रक्ताभिसरण क्रिया को उत्तेजन देने का धर्म बहुत महत्व पूर्ण हैं। इससे सारे शरीरमें गर्मी पैदा होने लगता है और फिर पसीना छूटता है। रक्ताभिसरण के ऊपर इसकी क्रिया जितनी महत्वपूर्ण है उतनी ही महत्वपूर्ण क्रिया इसकी मज्जा तंतुओंके उपर होती है। दोनों प्रकारके मज्जाओंमें से ज्ञान तंतुओं के ऊपर इसकी मुख्य क्रिया होती है।

इसके लेनेसे ज्ञान तंतुओंकी ग्राह्यशक्ति कम होकर उनमें अवसनता पैदा हो जाती है जिससे शरीरके अन्दर होनेवाली किसी भी वेदनाका कष्ट मनुष्यको अनुभव नहीं होता। इसीलिये इसका वेदना नाशक गुण महत्वपूर्ण माना जाता है।

सब प्रकारके मज्जा तंतु और मस्तिष्क सम्बन्धी रोगोंमें तगरको अकेले अथवा जस्त भस्म के साथ

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

देना चाहिये। इसको देनेसे कभी २ आलस्य और जंभाइयां आने लगती हैं। मगर उनसे नहीं डरना चाहिये। कंपरोगमें भी इसका कभी कभी २ उपयोग किया जाता है।

बहुत दिनोंतक शरीरमें ज्वर रहनेसे जब सारे शरीरमें शिथिलता पैदा हो जाती है और वात, पित्त और कफ़ तीनों दोष प्रबल हो जाते हैं ऐसे समयमें तगर उत्तेजक और चेतनाकारक पदार्थ की तरह दिया जाता है। इससे रोगकी प्रबलता कम होकर नाड़ी स्वभाविक चलने लगती है। विषम ज्वरके अन्दर इस औषधि को देने से ज्वरके बिषसे पैदा हुई मानसिक और शारीरिक थकावट कम हो जाती है। ऐसे ज्वर में तगरको जस्तभस्म, मेन्सिलभस्म अथवा अफीमके साथ नागरबेलके पानके रसमें घोंटकर गोली बनाकर देते हैं।

सूखी खांसी और श्वास नालिका के संकोच बिकास की वजह से पैदा हुए श्वासमें तगर का उपयोग बहुत लाभप्रद होता है।

मस्तक और मज्जा जंतुओं की खराबी से पैदा हुए मधुमेह और बहुमूत्रमें तगर को अफीम की थोड़ी मात्राके साथ देनेसे लाभ होता है।

जखम, दुखदाई व्रण, हड्डी का टूटना, और तीव्र आमवातमें वेदना को कम करनेके लिए तगर की फांट बहुत उपयोगी होती है। इसका यह वेदनानाशक धर्म वास्तवमें बहुत महत्वपूर्ण और ध्यान में रखने योग्य है।

वृन्द माधव, रस रत्नाकर और बापट के मतानुसार इसकी जड़ को ठंडे पानीमें पीसकर सांपके जहरमें उपयोग में लेते हैं।

कर्नल चोपरा का मत— कर्नल चोपराके मत से तगर यह एक पुरानी औषधि है। यूनानी हकीम डिओसकोरिडस ने इसका वर्णन "फू" के नाम से किया है। मध्ययुगमें यह औषधि जर्मनी, एशिया, यूनान और एशिया मायनर में सुगन्धित मसालोंके काममें ली जाती थी।

आधुनिक समयमें संसार के अन्दर इस औषधि की मांग बहुत अधिक बढ़ गई है। सन् १९१८ के महायुद्ध के बादमें इसकी कीमत करीब २ तिगुनी होगई है। कुछ समय पहिले यह औषधि सिर्फ गुल्म वायु और स्त्रियोंके स्नायुमण्डलके विकारों पर ही काममें ली जाती थी। पर अभीके अनुसंधानों से यह पता चला है कि मृगी और स्नायुशूल के ऊपर भी इस औषधि की उपयोगिता बहुत है। इसी कारण से इस औषधि का पूर्ण अध्ययन किया गया है।

इस औषधि की तारीफ इसमें पाये जाने वाले उड़नशील तेलकी वजहसे ही है। इसकी साधारण जातिके वृक्ष में .५ से लेकर .९ प्रतिशत तक उड़नशील तेल पाया जाता है। किन्तु तेल की यह मात्रा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्थान और उसको इकट्ठा करने की मौसिम पर भी निर्भर है। वसन्त ऋतुमें यदि इसकी ताजा जड़ें इकट्ठी की जायं तो इनमें २.१२ प्रतिशत उड़नशील तेल पाया जाता है।।

भारतवर्ष में तगर की जो गठानें काममें ली जातीहैं वे प्रायः अफगानिस्तान से आती हैं मगर भारतवर्ष में हिमालय के पहाड़ों पर भी इसकी दोनों जातियाँ पैदा होती हैं और परीक्षणसे साबित हो चुकां है कि उनमें भी बाहर से आने वाली तगरके बराबर ही तेल उत्पन्न होता है।

के० एल० दे के मतानुसार यह वनस्पति मूत्र की रुकावट, मृगी, सिरदर्द, मूर्छा, आक्षेप, हिस्टीरिया, स्नायुमंडल के विकार और विष के उपद्रवों पर लाभदायक है।

रासायनिक विश्लेषण— सन्याल और घोषके मतानुसार इस औषधि के मुख्य गुण इसमें पाये जाने वाले उड़नशील तेलपर ही निर्भर हैं। इसके अतिरिक्त इसमें व्हेलेरिक एसिड, साइट्रिक, टारटेरिक ग्लूकोज, एलब्यूमेनाइटस, स्टार्च और सेल्यूलेस भी रहते हैं।

उपयोग—

वातपीड़ा— तगर को जस्त भस्म के साथ देने से गठिया, पक्षाघात, गलेके रोग, संधिवात, इत्यादि रोग दूर होते हैं।

विषविकार— तगर को ६ रत्ती से १।। माशे की मात्रामें लेने से विष, रक्तविकार, त्रिदोष, भूतोन्माद, अपस्मार और नेत्र तथा मस्तक के रोग मिटते हैं।

नेत्ररोग— इसके पत्तों का आंख पर लेप करनेसे नेत्ररोग मिटते हैं।

मात्रा— इसकी मात्रा ६ रत्तीसे २ माशे तक की है। अधिक मात्रा में लेने में यह नुकसान करता है। इसलिए इसको अधिक मात्रा में नहीं लेना चाहिये।

तगर (२)

नाम—

हिन्दी—तगर, सूमियो, असरन। लेटिन— Valeriana Hardwickii (वेलेरिना हार्डवीकी)।

वर्णन और गुण दोष तथा प्रभाव—

यह औषधि तगर की ही एक दूसरी जाति है। इसके गुणदोष तगरके ही समान है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तज*

नाम—

हिन्दी और यूनानी—तज । अरबी—सालिखा । लेटिन— Cinnamomum Cassia (सिनेमोमम केसिया)।

वर्णन—

यह दालचीनीकी जाति की एक वनस्पति है। यह चायना और सीलोनमें विशेष पैदा होती है। इसका वृक्ष दालचीनीके वृक्षसे बड़ा होता है। इस दरख्त की छाल दालचीनी की तरह मगर कुछ खुरदरी होती है। जो छाल मोटी, खुशबूदार, तीक्ष्ण और चिकनी होती है वह उत्तम होती है। इसमें दालचीनी की तरह मीठा स्वाद नहीं होता मगर लोंगकी तरह तीखा स्वाद होता है। आयुर्वैदिक ग्रन्थोंमें तज और दालचीनीको एकही वस्तु लिखा है। मगर यूनानी ग्रन्थकारोंने इन दोनों चीज़ों को अलग २ बतलाया है। यह जरूर है कि इसकी सूरत, शकल और गुण—धर्म दालचीनीसे बहुत मिलते जुलते हैं। इसी लिये यह वस्तु असली दालचीनीमें मिलावट करनेके काममें भी ली जाती है।

गुणदोष और प्रभावः—

यूनानीमत से यह दूसरे दर्जेके आखिरमें गरम और खुश्क है। इसकी छाल अग्निवर्द्धक, पौष्टिक, ऋतुस्राव नियामक, रक्तवर्धक, पेटके आफरेको दूर करने वाली और बवासीरमें लाभ दायक है।

यह शरीरमें गर्मी पैदा करती है, ठण्डी हवासे पैदा हुए उपद्रवों को दूर करती है, दिल, दिमाग़, जिगर और अण्डकोषों को ताक़त देती है, पेशाब और मासिक धर्मको साफ़ करती है, गुर्दे और मसानेके दर्दको मिटाती है, सूखी और गीली खांसीमें मुफीद है। अगर बच्चा गर्भाशयमें मर जाय तो इसका काढ़ा पीनेसे बाहर निकल जाता है। इसके सेवनसे पेटके कीड़े नष्ट हो जाते हैं, पथरी गलकर निकल जातीहै, इसको पेशानी पर लगानेसे सिर दर्द और नज़ला मिटता है। सिरके के साथ इसका लेप करने से सूजन बिखर जाती है, जहरीली दवा और साँपके विषमें भी यह लाभ दायक है। छातीके अन्दर कफ जम गया हो तो इसके सेवनसे ढीला होकर निकल जाता है। इसके सेवनसे मनुष्यका कण्ठ स्वरभी सुधरता है।

मुज़िर—इसका अधिक सेवन आंतोंको नुकसान पहुँचाता है। इसके दर्पको नष्ट करनेके लिये कतीरा और सपिस्ता मुफीद है। इसकी मात्रा १।। माशेसे ६ माशे तक है।

---

*नोट—इसका विशेष वर्णन दालचीनीके प्रकरणमें देखना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर्नल चोपराके मतसे तज असली दालचीनीमें मिलावट करनेके काममें आती हैं। इसमें भी दालचीनी की तरह "साइनेमिक एल्डेहाइट" पाया जाता है। किन्तु "टरपेन्स" की मात्रा अधिक होनेकी वजहसे इसकी गन्ध कुछ अप्रिय हो जाती है। दालचीनीके अन्दर यह बात नहीं है। इसके पत्तोंको तेजपान कहते हैं।

तन्दुलिया

नाम—

संस्कृत—तंदुलिया, विषघ्न। गुजराती—ढीमड़ो। मराठी—लहानमाट। कच्छी—अड़खाड राजगरो। लेटिन—Amaranthus Viridis (एमेरेंथस वेरिडिस)

वर्णन—

इस वनस्पतिके पौधे १ हाथसे २ हाथ तक ऊंचे होते हैं। इसके पत्ते लम्बे और बीचमें चौड़े होते हैं। इसके फूल कुछ पीलापन लिये हुए हरे रंगके और बीज काले रंगके होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके कई लेखकोंने इस वनस्पतिको सांप और बिच्छूके काटनेपर बहुत उपयोगी बतलाया है। मगर केस और महश्करके मतानुसार यह वनस्पति सर्प और बिच्छूके विष पर निरुपयोगी है। इसका पौधा मूत्रल होता है और इसके पत्तोंका लेप फोड़े फुन्सियों पर किया जाता है।

तपनी बेल

हिन्दी—रान घेवड़ा, तपनीवेल। गुजराती—न्हानी कमलवेल, दारियावेल, त्रिपानी नी वेल, घानवेल, हाथ धोणानी बेल। लेटिन—Rhynchosia Minima (रिंकोस्रिया मिनिमा)।

वर्णन—

यह एक लता होती है। इसकी वेलें बहुत पतली होती हैं। यह लता विशेषकर बरसातके दिनोंमें नजर आती है। इसमें सुतलीके समान बारीक २ शाखाएं निकलती हैं। इसके पत्ते वालोर (सेम) के पत्तोंकी तरह तीन २ के जोड़ोंमें लगते हैं। इसके फूल बैंगनी रंगकी छाया लिये हुए

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पीले रंगके, छोटे सुन्दर पतंगियेकी तरह होते हैं। इसकी फली बहुत छोटी होती है जिसमें दो २ बीज रहते हैं। ये बीज चपटे, चमकीले और भूरे तथा काले रंगके होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसकी जड़ें बहुत ग्राही होती हैं और ये मरोड़ीके दस्त, आमके दस्त और संग्रहणीके ऊपर बहुत अच्छा लाभ बतलाती हैं।

तपसी

नामः—

यूनानी—तपसी।

वर्णन—

यह एक बेल होती है जो बहुत बढ़कर झाड़ीपर फैल जाती है। इसके फूल अबाडेके फूलकी तरह और फल आकारमें जामुनके बराबर, पीले और मीठे होते हैं। इसकी डालीको तोड़नेसे दूध निकलता है।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानीमत—यूनानीमत से तपसी तीसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। यह कफ और पित्तको नष्ट करती है तथा लकवा, फालिज और कंपवात में मुफीद है।

तबर्रक

नाम—

यूनानी—तबर्रक।

वर्णन—

यह एक वृक्ष होता है। इसके फल और पत्ते गुलाबके फल और पत्तों की तरह होते हैं। यह अरब में पैदा होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण दोष और प्रभाव –

यूनानी मतसे यह गरम, पचने में कड़वा, कफ नाशक, खूनके जोशको मिटाने वाला और प्रमेह में लाभदायक है।

तम्बाकू

नाम—

संस्कृत—धूम्रपत्रिका, कलंजा, कृमिघ्नि, क्षारपत्रा, तमाखू, वज्रभृङ्गी, ताम्रकुटिका। हिन्दी—तम्बाकू, तुम्बक, बुजेर भंग। बंगाल—तमाकू। मराठी—तम्बाखू। गुजराती—तमाखू। फ़ारसी—तम्बाकू बेहारे भंग। तामील—पुगई इलई। तेलगू—धूम्रपत्रम्। लेटिन—Nicotiana Tabacum (निकोटिएना टेबेकम)। अंग्रेजी—Indian tobacco (इंडियन टोबेको)।

वर्णन—

तम्बाकूका मूल उत्पत्तिस्थान अमेरिका है। मगर अब यह प्रायः भारतवर्षके सब हिस्सोंमें बोई जाती है इस वस्तुसे प्रायः सब लोग परिचित हैं इसलिये इसके विशेष वर्णन की आवश्यकता नहीं। इसके बीजोंमें से ३६ प्रतिशत तेल निकलता है जिसका रंग कुछ हरापन लिये हुए पीला होता है। यह तेल बहुत विषैला होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतानुसार इसके पत्ते तीखे, स्वादमें कड़वे, गरम, मृदुविरेचक, पौष्टिक, वमनकारक, पेटके आफरेको दूर करनेवाले और कृमिनाशक होते हैं। दांतोंकी सड़ान, चर्मरोग, विच्छूके विष और प्रदाहके ऊपर ये लाभदायक हैं। ये आंखोंकी ज्योतिको खराब करते हैं।

यूनानीमत—यूनानीमतसे इसके पत्ते तेज़ और कड़वे होते हैं। ये दांतोंकी सड़ानको दूर करते हैं। खांसी, नाकसे मवादका बहना, फोड़े-फुन्सी, खुजली और घावमें ये उपयोगी होते हैं। गलेपर होनेवाली क्षयजनित ग्रंथियों पर ये लाभ पहुँचाते हैं। इसका धुआँ कृमिनाशक, कब्जियतको दूर करनेवाला और मस्तिष्कको उत्तेजना पहुँचानेवाला होता है। हुक्केका पानी मूत्रल होता है। हुक्केमें का कालातेल और हुक्केका गुल नासूर या घावपर लगानेसे उसको पूर देता है। इसको आंखमें आंजनेसे रतौंधी और दूसरे चक्षुरोग मिटते हैं। इसके पत्ते निद्रालाने वाले, और वमनकारक होते हैं। इसके पत्तोंसे एक प्रकारका मरहम तैयार किया जाता है। इस मरहमको पुराने व्रण और साँघातिक फोड़ोंपर लगानेसे लाभ होताहै।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गायनामें इसके पत्तोंको गरम करके तेलमें भिगोकर ताजा घावपर लगाते हैं। इसके शीत निर्यास का एनिमा भी लगाया जाता है इसका धुआँ हॉनियाँकी बीमारीमें लाभदायक माना जाता हैं।

गोल्ड कारट में इसके पत्तोंको आग पर तपाकर व्हेसलाइन या मक्खन में मिलाकर गठानों पर लगानेके काम में लेते हैं। यह मरहम सीने की तकलीफों में भी खास कर श्वांस लेने में जो कठिनाई होती है उसमें लाभ पहुँचाता है।

यूरोप और दक्षिण अफ्रिका में तम्बाखू के सूखे पत्ते रक्तश्रावरोधक वस्तु की तौर पर काम में लिये जाते हैं।

भारतवर्ष में तम्बाकू का पत्ता बिच्छू के काटने की एक उत्तम दवा मानी गई है। सर्प और अन्य विष के कृमियों पर भी इसको लगाने के काम में लेते हैं।

हूपिंग कफ और तम्बाखू—

आजकल के नवीन अनुभव में यह बात मालूम हुई है कि बालकों को होने वाले हूपिंगकफ या कुक्कुर खांसी अथवा उंटाटिया की भयंकर बीमारी में तम्बाकू से बहुत लाभ होता है। इसका प्रयोग करने का तरीका इस प्रकार है:—

काली तम्बाकू के पत्तों के बीच के डंखल १ सेर लेकर उनके छोटे २ टुकड़े कर लेना चाहिये। और उतना ही सेंधा निमक लेकर उसको पीस लेना चाहिये। फिर मिट्टी की एक हांडी में नीचे थोड़े से डंखल के टुकड़े बिछा कर उन पर सेंधा निमक बिछा देना चाहिये। उसके ऊपर फिर डंखल बिछाकर फिर डंखलों पर सेंधा निमक बिछा देना चाहिये। इस प्रकार एक दूसरे के ऊपर थर पर थर जमा देना चाहिये। जब दोनों चीजें खतम हो जांय तब उस हाँडी को चूल्हे पर चढ़ा देना चाहिये। जब तम्बाकू के सब डंखल जलकर कोयले के समान हो जायं तब उस हाँडी को उतार कर उसमें की सब सामग्री को शामिल पीस लेना चाहिये और कपड़े में छान कर बोतल में भर देना चाहिये। यह खयाल रखना चाहिये कि तम्बाखू के डंखलों की एक दम राख न हो जाय, वे कोयलेकी ही हालत में रहना चाहिये।

बालक की आयु के अनुसार इस चूर्ण को १।। रत्ती से ३ रत्ती तक की मात्रा में लेकर, नागर बेल के पके हुए पत्ते के रस में मिलाकर, उसमें दो इलायची का चूर्ण मिलाकर पिला देना चाहिये। इस प्रकार दिन में २।३ बार यह दवा देना चाहिये। अगर किसी बच्चे को इससे एकाध उल्टी हो जाय तो उससे घबराना नहीं चाहिये। क्योंकि उससे छातीमें का जमा हुआ कफ निकलकर आराम मिलता है।

हूपिंग कफ के सिवाय दूसरी सादी खाँसी में भी यह दवा अच्छा फायदा पहुंचाती है। बड़े आदमियों की खाँसी में इस औषधि को ३ से ४ रत्ती तक की मात्रा में देना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पागल कुत्ते के विष में भी तम्बाकू अच्छा लाभ पहुँचाती है।

मुज़िर—यह वनस्पति मनुष्य शरीर के लिये लाभ दायक की अपेक्षा हानिकारक अधिक है। इसको अधिक खाने या पीनेसे स्नायुजालकी शक्ति निर्बल हो जाती है। यह अग्निको बिगाड़ती है, यकृत की क्रिया को शिथिल करती है और अर्द्धाङ्गका पूर्व रूप पैदा करती है। इसके अधिक सूंघने से एक प्रकार की असाध्य मन्दाग्नि हो जाती है। इससे हृदय की क्रिया भी बिगड़ती है और भी कई प्रकारके शारिरिक उपद्रव इससे होते हैं।

उपयोग—

अण्डवृद्धि—तम्बाकू, चूना और पुन्नाग की छालका लेप करनेसे अण्डवृद्धि मिटती है।

धनुस्तंभ—धनुस्तंभ रोग में रीढकी हड्डीपर तम्बाकू के पत्तों का पुल्टिस बाँधना चाहिये। धनुस्तंभ में पट्ठोंका खिंचाव और बायँठों के लिये तम्बाकूके पत्तो को सोलहगुने जल में औटाकर उस क्वाथ का बफारा देना चाहिये।

कुचले का विष—कुचला या कुचलेके सत का विष उतारने के लिये इसके पत्तों का हिम या फ़ाँट बनाकर पिलाना चाहिये अथवा तम्बाकू का सत खिलाना चाहिये। कुचले के दर्प को नष्ट करने के लिये इसके बराबर दूसरी औषधि नहीं है।

पाण्डुरोग—पाण्डुरोग वालेको तम्बाकू का धूम्रपान कराने से लाभ होता है।

मसूड़े का रोग—फूले हुए मसूड़ोंके ऊपर इसके पत्तों का चूर्ण मलने से उनका पकना बन्द हो जाता है और पीड़ा मिट जाती है।

दन्तरोग—दो भाग तम्बाकू और एक भाग काली मिरच को पीस कर मंजन करने से दन्त पीड़ा मिटती है।

सफेद दाग़—तम्बाकू के बीजोंका कोल्हू से निकाला हुआ तेल लगाने से सफेद दाग मिटते हैं।

सिरकीगंज—हुक्के के गुलको कड़वे तेल में पीसकर लेप करने से गंज मिटती है।

जोड़ों का दर्द—आधा सेर तम्बाकू को, आधा सेर पानी में ४ प्रहर तक भिगोकर उसको मसलकर छान लेना चाहिये। फिर उस पानीमें बराबर वजनका काली तिल्ली का तेल डालकर औटाना चाहिये। जब पानी जलकर तेल शेष रह जाय तब उसको छान लेना चाहिये। इस तेलका मालिश करनेसे जोड़ों का दर्द मिटता है।

श्वास और खाँसी—तम्बाकू की राख से क्षार निकालकर उस क्षारको २ रत्ती की मात्रा में देने से श्वास और खाँसी मिटती हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२—इसके हरे पत्तों के रसमें बराबर गुड़ मिलाकर शर्बत बनाकर १ तोले से २ तोले तक की मात्रा में देने से श्वास मिटता है।

नासूर—हुक्के के गुल को पानीमें पीसकर लगाने से सब प्रकार के नासूर और फोड़े अच्छे होते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार तम्बाकू कृमि नाशक है। यह संधि वातकी सूजनमें, चर्मरोग में और बिच्छू के विष पर लाभ दायक है।

तम्बाकू कलकतिया

वर्णन—

विहार—कलकतिया तम्बाकू। बंगाल—विलायती तम्बाकू। पंजाब—कक्कर तम्बाकू। लेटिन—Nicotiana Rustica (निकोटिएना रस्टिका)।

गुण, दोष और प्रभाव—

इस वनस्पतिके गुणदोष साधारण तम्बाकू के गुणदोषों से मिलते जुलते होते हैं।

तरबूज

नामः—

संस्कृत—कालिंग, शीर्णव्रत, माँस फल, चित्रफलका, चित्रवल्लिका इत्यादि। हिन्दी—तरबूज, हलींदा, हिंदवाना। बंगला—तरमूज, तरबूजा। मराँठी—कलिंगड़। गुजराती—कालिंगडूं। पंजाब—हिंदवाना, मतीरा, तरबूज। फ़ारसी—दिलपसन्द, हिंदवाना। अरबी—वातिघे हिन्दी। उर्दू—तरबूज। लेटिन—Citrullus Vulgaris (सिट्रूलस वलगेरिस)।

वर्णन—

तरबूजका फल सारे हिन्दुस्तानमें प्रसिद्ध वस्तु है। गर्मीके दिनोंमें शाँतिदायक वस्तुके बतौर यह सर्वत्र खाया जाता है। इसलिये इसके विशेष वर्णनकी आवश्यकता नहीं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे कच्चा तरबूज मलरोधक,शीतल,भारी और दृष्टि,पित्त और वीर्यको नष्ट करनेवाला होता है। यह पीलियेमें फ़ायदा पहुँचाता है। पका हुआ तरबूज पित्तकारक,क्षार युक्त, गरम और बातकफ नाशक होता है। तरबूजकी मगज मधुर, बलकारक, रुचिवर्धक, और धातुवर्धक होती हैं। इसके पत्ते कड़वे और रक्त वर्धक होते है। ये खूनकी उल्टीको बंद करते हैं।

यूनानी मत—यूनानीमतसे इसका पका हुआ फल शीतल, कफ निस्सारक, मत्रल, अग्निवर्द्धक और रक्तशोधक होता है, यह प्यासको बुझाता है और पित्तको दुरुस्त करता है। आँखोंकी तकलीफ, खाज और खुजलीमें यह लाभदायक है। इसके बीज मस्तकके लिये पौष्टिक वस्तु है।

इसके बीज मूत्रल और पौष्टिक माने जाते हैं। टायफस ज्वरमें ये कृमिनाशक वस्तुकी तौरपर काममें लिये जाते हैं। इसका फल सिंधमें विरेचक वस्तुकी तौरपर काममें लिया जाता है।

केपकालोनीके पश्चिमी प्राँतमें इसके फलका गूदा जलोदर और पेटकी अन्य शिकायतोंमें विरेचक वस्तुकी तौरपर काममें लिया जाता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसके बीज मूत्रल होते हैं। इनमें साइट्रोलिन नामक पदार्थ पाया जाता है।

तरली

नाम—

हिन्दी—तरली। बंगाल—कुद्री। पंजाब—बनकक्रा। कनाड़ी—शिंदोड़े। तेलगू—तिद्दगडड। तामील—कर कोए। मराठी—गोमेटी। लेटिन—Zehneria Umbellata (झेनेरिया अम्बेलेटा)।

वर्णन—

यह एक लता होती है। इसका फल कंदोरीके फलकी तरह होता है इस फलकी तरकारी बनाई जाती है। औषधि में इसका पंचांग काममें लिया जाता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति पौष्टिक, स्नेहन और उत्तेजक है। इसकी जड़को दूध और शक्करके साथ देनेसे धातु पुष्ट होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तरमीस

नाम—

यूनानी—तरमीस ।

वर्णन—

यह एक साग है । इसका स्वाद खट्टा होता है । इसकी बस्तानी और जंगली २ जातियाँ होती हैं । दोनों के पौधे बाकला के पौधों की तरह होते हैं। इसके बीजों में बाकलाके बीजों से ज्यादा गोलाई और ज्यादा चपटापन होता है । इसके दाने पीलापन लिये हुए सफेद रंग के और बाकला के दानों से कुछ छोटे आकार के होते हैं । इनका स्वाद कड़वा और गन्ध तेज होती है। पानी में निमक मिलाकर इनको धोने से इनका कड़वापन दूर हो जाता है ।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह पहले दर्जे में गरम और दूसरे दर्जे में खुश्क है । यह त्रिदोष को दूर करती है । शरीर में गरमी और खुश्की पैदा करती है । इसका कड़वापन दूर करने से इसकी गरमी और खुश्की कम हो जाती है । मगर इसके साथ ही कड़वेपन के निकल जाने से इसकी त्रिदोष को दूर करने की शक्ति भी कम हो जाती है ।

तरमीस और चने के काढ़े में शहद मिलाकर देने से तिल्ली में लाभ होता है । इसका काढ़ा बन्द हुए ऋतुस्राव को जारी करता है और जहरबाद की सूजनको मिटाता है । इसको पानी में भिंगोकर उस पानी में स्नान करनेसे खुजलीमें लाभ होता है । इसके आटे को पानीमें घून्द कर उसका प्लास्टर पेट पर चढ़ाने से पेट के सब कीड़े निकल जाते हैं । अगर शरीर में कहीं खून जम गया हो तो वहां भी इसका लेप करने से खून बिखर जाता है । इसके आटे का उबटन बनाकर चेहरे पर मलने से चेहरे की कान्ति बढ़ती है ।

इसके काढ़ेसे श्वेत कुष्टके दागोंको धोनेसे फायदा होता है । चोट लगनेसे अगर कहीं नीला दाग़ पड़ जायतो वह भी इसके लेपसे आराम हो जाता है । इसको सिरकेमें मिलाकर सरदीकी सूजन और जोड़ोंके दर्दपर लगानेसे लाभ होता है । गर्मीके घाव, सिर की गंज और खराब जख्मोंको इसके काढ़ेसे धोना लाभदायक है । किसी जहरीले जन्तुके काटे हुए स्थानपर इसको शहदमें मिलाकर लगाना चाहिये । सबेरेके नाश्तेके समय इसको १० माशेकी मात्रामें रोज खानेसे पुराना सिर दर्द मिट जाता है और आंखोंमें नजलेका पानी नहीं उतरने पाता ।

इसको पीसकर शहदमें मिलाकर चाटनेसे पुरानी खांसी, जलोदर और पथरीमें लाभ होता है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तिल्ली और मसानोंको ताकत पहुँचती है। जिस तरमीसमें कड़वापन न हो उसको बारीक पीसकर सिरके के साथ खानेसे मतली और वमन बंद होकर भूख बढ़ती है। कड़वी तरमीसके लेनेसे मेदे और आँतोंकी सफाई होती है, जिगर और तिल्लीके सुद्दे खुलते हैं। पेशाब साफ़ होता है और इसको पीसकर नाभिपर लगानेसे पेटके कीड़े निकल जाते हैं।

एक मुट्ठी तरमीसको कुचलकर छिलके दूर करके एक ताँबेके बरतनमें डालदें और उस बरतनमें इतना दूध डालें कि वह औषधि डूब जाय। फिर हलकी आँचपर उसको पकावें। जब सब दूध जल जावे तब गायका घी डालकर फिर पकावें। जब गाढ़ा हो जाय तो उतार लें। इस औषधिको गरम २ कपड़े पर लगाकर प्लास्टरकी तरह पेटपर चढ़ावें तो त्रिदोषनाशक दस्त होते हैं। अगर इसी प्लास्टरको जाँघकी जड़में लगावें तो पित्तका विकार दस्तोंकी राह निकल जाताहै, अगर इस प्लास्टरको बैठककी जगह लगा दिया जाय तों कफका विकार दस्तोंकी राह निकल जाता है और अगर इसको पेटके ऊपरी हिस्सेपर लगाया जाय तो वातका विकार दस्तकी राह निकल जाता है (यूसूफ़ बगदादी)

यूनानीके अन्दर इस लेपकी बड़ी तारीफ है बच्चों और बूढ़ोंको भी इससे दस्त दिलाये जाते हैं।

इसकी जड़का काढ़ा मूत्रल है। अगर कोइ स्त्री सुद्दाब और काली मिरचके साथ इसका काढ़ा बनाकर पीवे और इन तीनोंके चूर्णका गर्भाशय पर लेप करे तो उसका रुका हुआ मसिक धर्म जारी हो जाता है मगर यदि स्त्री गर्भ वती हो तो उसका गर्भपात हो जाता है। यदि किसी स्त्रीके पेटमें बच्चा मर जाय तो यह प्रयोग करनेसे बच्चा निकल कर स्त्री की जान बच जाती है।

मुजिर—इसका अधिक प्रयोग मेदे को खराब करता है।

दर्प नाशक—इसको घीके साथ पकाकर खानेसे इसके अवगुण नष्ट हो जाते हैं। नमक, पोदीना और गरम मसाला भी इसके दोषों को नष्ट करता है।

मात्रा—इसकी मात्रा १० माशेसे २ तोला तक है।

तराबुलसीदा

नाम—

यूनानी—तराबुलसीदा।

वर्णन—

यह एक जाति की मिट्टी है। जो स्याम के पहाड़ों में पैदा होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण दोष और प्रभाव—

अगर शरीर में कहीं की हड्डी टूट जाय या उखड़ जाय तो इस मिट्टी को ४ माशे की मात्रा में आधे भुने हुए अण्डे की जर्दी में मिलाकर खिलाने से और इसको पानी में गलाकर पट्टा चढ़ाने से अच्छा लाभ होता है। मृगी और दिमाग की बीमारी में भी यह फायदेमन्द है। (ख० अ०)

तरवा

नाम—

संयुक्त प्रदेश—तरवा, चूमा, दर्चक। भूतान—तरवा। पंजाब—अम्ब, बोटफुट, कलाविसा, कण्डो, माइल्स, रुल, सिरमा, सरमंग, चक, इत्यादि। लेटिन—Hippophae Rhamnoides हिपोफेइ हे मनोइदस)।

वर्णन—

यह वनस्पति उत्तरी पश्चिमी हिमालयमें ७ हजार फीट से १५ हजार फीट की ऊँचाई तक पैदा होती है। यह एक शाखादार झाड़ी है। इसकी छाल चिकनी, खुरदरी और खाकी तथा बादामी रंगकी रहती है। इसके पत्ते दोनों तरफ से रुएंदार रहते हैं। इसका फल गोल होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

तिब्बत के निवासी इसके फल को फेफड़ों के रोग दूर करने के लिये बहुत उपयोग में लेते हैं। इस प्रकार के रोगों के लिये यह उनकी एक विश्वसनीय औषधि है।

फ्रान्स के अन्दर इसके फल का काढ़ा चर्म रोगों में उपयोग में लिया जाता है।

तरवा चूक

नाम—

पंजाब—तरवाचूक, घरचूक, काला बिस, सूरच। अलमोड़ा—चूक। भूतान—लहाला। नेपाल—अशुक। लेटिन—Hippophae Salicifolia (हिपोफेइ सेलिसिफोलिया)।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

यह बनस्पति भी तरवा की ही एक जाति है।

गुणदोष और प्रभाव—

कर्नल चोपरा के मतानुसार यह वनस्पति फेफड़ों की शिकायतों में उपयोगी है।

—

तरवड़

नाम—

संस्कृत—आवर्तकी, चरमरंगा, मायाहारी, पीतकिलका, तिमिरहारी। हिन्दी—तरवल, तरवड़ तरोंदा। बंगाल–बर्बेर, बरातरोदा, मराठी—तरवड़, चमार आँवली। गुजरात—आबड़। कच्छ–आवर। तामील—अवरई, सुमई। तेलगू—तंगेदू, तंगेरा। कनाड़ी—सकोसिना, तंगदी। मारवाड़ी—आलूण। लेटिन—Cassia Auriculata (केसिया ओरीक्यूलेटा)

वर्णन—

तरवड़के झाड़ ३ से लेकर १२ फीटतक ऊंचे होते हैं। इसमें बहुत डालिया होती हैं। इसके पत्ते इमलीके पत्तों की तरह होते है। जो एक डंखल पर ८ से लेकर १२ जोड़ी तक लगते हैं। इसके फूल अत्यन्त सुन्दर, पीले रंगके, उड़ती हुई मधुमक्खी के आकारके होते हैं। फली चपटी, लम्बी, पतली, तीखी नोक वाली और भूरे रंग की होती है। यह ४ से ६ इंच तक लंबी और आधे से पौन इञ्च तक चौड़ी होती है। इसमें ५ से लेकर १० तक चपटे बीज रहते हैं। यह वनस्पति मारवाड़, काठियावाड़ कच्छ और मध्य प्रदेशके शुष्क भागोंमें पैदा होती है। इसकी छालका मुख्य उपयोग चमड़ा रंगनेके काममें होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

इसकी जड़ विषनाशक होती है। यह प्यास, मूत्रविकार, अर्बुद, चर्मरोग, दमा और बात रोगोंमें फायदा पहुँचाती है। इसके पत्ते कृमिनाशक होते हैं। ये व्रण, कुष्ट और चर्म रोगोंमें लाभदायक है। इसके फूल मूत्र सम्बन्धी रोगोंमें, मधुमेहमें और गलेकी बीमारियोंमें लाभदायक है। इसका फल कृमि-नाशक है। यह वमन प्यास और मूत्र सम्बन्धी विकारोंमें फायदा पहुंचाता है। इसके बीज मधुमेह, नेत्र रोग और पेचिशमें फायदा पहुँचाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मधुमेहके अन्दर इसके फूलोंका अथवा पंचाँगका चूर्ण ३० रत्तीकी मात्रामें दिया जाता हैं। इससे पेशावका प्रमाण कम होता है और शक्कर की मात्रा भी घटती है। इसके साथ तगर गंठोड़ा मिलानेसे विशेष फायदा होता है। पेशाब अगर गाढ़ा और गंदला आता हो तो उसमें भी यह फायदा पहुँचाती है। पेशाबके साथ वीर्य जानेकी बीमारीमें भी इसके फूल दिये जाते है। मासिकधर्मकी अधिकतामें इसके पंचाँग का काढ़ा बहुत गुणदायक है। पुराने अतिसारमें इसकी छालका काढ़ा दिया जाता है। जीर्ण ज्वरमें इसके पत्तोंकी फाँट बनाकर दी जाती है।

मैसूरमें इस बनस्पतिकी छाल संकोचक मानी जाती है इसके बीजोंका चूर्ण पुरानी नेत्र पीड़ामें आँजनेके काममें लिया जाता है। सीलोनमें इसकी जड़ और इसकी छाल संकोचक और धातु परिवर्तक मानी जाती है।

डायमाँकके मतानुसार इसके फूलोंसे एक प्रकारकी चाय तैयार की जाती है। जोकि मधुमेह रोगमें उपयोगी होती है। इसके पंचाँगको पीसकर मधुमेह रोगमें देते हैं। इसको तामीलमें अवेरी पंजागम कहते हैं। इसे शहदके साथ उपयोगमें लेते हैं। इसके फूलोंको मोचरस और इंडियन सार्सापरिलाके साथ मिला कर एक पदार्थ तैयार किया जाता हैं। जो कि रातको पेशाब आने और अनैच्छिक वीर्यश्रावमें लाभ पहुँचाता है। यह रातको पसीना आनेमें भी लाभदायक है।

कोमानके मतानुसार इस सारी वनस्पतिका काढ़ा एक औंसकी मात्रामें दिनमें तीन बार मधुमेह की बीमारीमें दिया गया। किन्तु इससे कुछ भी लाभ नहीं हुआ।

संन्याल और घोषके मतानुसार इसके बीजोंका काढ़ा पुराने नेत्र रोगोंकी एक उपयोगी दवा है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति आंखोकी बीमारीमें लाभदायक है। मधुमेह और मूत्ररोगों में भी यह लाभदायक मानीजाती है।

तरोई

नाम—

संस्कृत—कोषातकी, धाराफला, दीर्घफला, पीत पुष्पा, कृत वेधना, जालिनी, राजाकोषातकी। हिन्दी तोरई, तरोई। बंगाल—घोषालता। मराठी—शिराली, दोड़की। गुजराती—तुरियां। पंजाब—तोरि। तेलगू—बीर, गुरकई। उर्दू—तोरई। बम्बई—गोंसली, जिंगा, सिरोला, तुरई। लेटिन—Luffa Acutangula (लूफा एक्यूटेंगला)।

वर्णन—

तुरोई की शाग सारे भारतवर्ष में प्रसिद्ध है। इसकी बेल बहुत ऊंचाई तक चढ़नेवाली होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसके पत्ते ५ कोने वाले कटे हुए होते हैं। इनका रंग फीका हरा होता है। इसके फूल हलके पीले रंगके होते हैं। ये नर और मादा दो जातियोंके होते हैं। इसका फल लबा, मुलायम और ऊंची धारियों वाला होता है।

गुण दोष और प्रभाव,—

आयुर्वेदके मत से इसका फल मधुर, स्निग्ध, शीतल, कृमिनाशक, अग्निदीपक और ज्वरघ्न होता है। पित्त, श्वास और वायुनलियों के प्रदाह में यह मुफीद है। इसके पत्ते अग्निदीपक, पित्तकारक और ज्वरघ्न होते हैं। ये वायुनलियों के प्रदाह को दूर करते हैं।

यूनानी मत— यूनानी मत से यह सर्द, तर, पित्त की गर्मी को मिटाने वाली और हलकी दस्तावर हैं। रूखी प्रकृति वालों के लिए यह विशेष लाभदायक है। रक्त और कफ के उपद्रवों को यह दूर करती है। ज्वरके रोगी के लिए इसकी शाग एक उत्तम पथ्य है।

इसके बीज विरेचक और वामक होते है। इन बीजों को पीसकर कुष्ट रोग पर लगानेके काममें लिये जाते हैं। यकृत की सूजन और खूनी बवासीर पर भी इनको लगाने के काममें लिए जा रहे हैं। बच्चोंके ऐसे नेत्ररोग में जिसमें दाने भी पड़ गये हों इसके ताजे पत्तों का रस डालने से फायदा होता है। इसको डालने से रातके समय आंखें नहीं चिपकती। कंबोड़िया में इसके पत्तों को पीसकर दादके ऊपर लगाने के काममें लिये जाते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसके बीज वमनकारक, विरेचक, कटु पौष्टिक और मूत्रल होते हैं। इनमें ल्यूफिन नामक कटुतत्व पाया जाता है। इनको ५ से लेकर १० ग्रेन तक की मात्रामें कफ निःसारक वस्तु की तौर पर दिया जाता है।

डाक्टर मुडीनशरीफ के मतानुसार इसके बीज पेचिश की बीमारी में इपिकोनाके बदले मे दिये जा सकते हैं। इनबीजों का मगज निकालकर पानी में मिलाकर दिया जाता है।

डाक्टर देसाई के मतानुसार तरोई के पत्तों का मरहम बनाकर व्रणपर लगानेसे व्रण जल्दी भर जाते है। तरोईकी जड़को एरंडी के तेलमें उबालकर बगल और जांघ की जड़में होने वाली वदगाँठ पर लगानेसे लाभ होता है। इसके पत्तों को पीसकर बवासीर पर भी लगाये जाते हैं।

उपयोग—

तिल्ली की सूजन— इसके बीजों को पीस कर गरम कर लेप करने से तिल्ली की सूजन मिटती हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रक्तार्श और कोढ़— इनका ठंडा लेप करनेसे रक्तार्श और कोढ़ में लाभ होता है।

पलकों की फुन्सियां— इसके ताजे पत्तों का स्वरस बच्चों की आंखोंमें डालने से पपोटों की फुन्सियां मिटती हैं और रातके समय आंखों में कीचड़ आना बन्द हो जाता है। जिससे आँखें नहीं चिपकती है।

तवाखीर

नाम—

संस्कृत—तवक्षीर, पयः क्षीर, यवज, गवयोद्भव, गोधूमज, पिष्टिका, तंडुलोद्भव, ताल सम्भूत, तालक्षीर। हिन्दी—तवाखीर, बंगाल—तवक्षीर। मराठी—तवखीर। तामील—कुकै। कनाड़ी—कुवे। लेटिन—Curcuma Angustifolia (करक्यूमा अंगुस्टिफोलिया)।

वर्णन—

तवाखीर हलदी की जातिके एक झाड़से निकाली जाती है। यह झाड़ मध्य हिमालयके बाहरी हिस्सोंमें तथा पश्चिमी बिहार, उत्तर बंगाल, बंबई और दक्षिणी भारतमें होता है। इसके पत्ते ३० से लेकर ४५ सेंटि मीटर तक लम्बे बरछी आकारके और तीखी नोकवाले रहते हैं। इसके फूल पीले और फल गोल होते है। फलमें बहुतसे छोटे २ बीज रहते हैं। जिस प्रकार गिलोयके डंखलोंसे गिलोयका सत्व निकाला जाता है उसी प्रकार इसके डंखलों में से तवाखीर निकाला जाता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतानुसार तवाखीर मीठी, सुगन्धित, शीतल, स्निग्ध, पौष्टिक और कामोद्दीपक होती है, यह क्षय, पित्त, कुष्ट, जलन, अरुचि, अग्निमांद्य, खांसी, दमा, ज्वर, प्यास, कामला, पाण्डु और धवल रोगमें उपयोगी है। गुर्देकी पथरी, रक्त विकार, व्रण, प्रमेह और मूत्र सम्बन्धी तकलीफोंमें भी यह लाभदायक है।

यह एक उत्तम शांति दायक और पौष्टिक पथ्य है। यह बच्चोंके लिये और किसी भी रोगके बादकी कमजोरीमें देनेके लिये उत्तम पथ्य है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ताड़

नाम—

संस्कृत—भूमिपिशाच, चिरायु, ध्वजाद्रुम, दीर्घदारू, दीर्घस्कंध, दीर्घतरु, गुच्छपत्र, मधुरसा, शतपर्व, तरुराज, तंतुगर्भा, हिन्दी—ताड़ । बंगाल—तल, तलगाच्छ। मराठी—ताड़, तामाड़। कोकण—ताड़मद। गुजराती—ताड़। तामील—करदलम्, नीलम्, तालि। तेलगू—करतलम्, नमताग, पोतातागु उर्दू—ताड़। लेटिन—Borassus Flabellifer (बोटेसस फ्लेबिलीफर)।

वर्णन—

ताड़के वृक्ष बहुत ऊँचे और सीधे बढ़ते हैं। इनके पत्ते बहुत बड़े और खूबसूरत होते हैं। इसके पत्तोंमें ६० से लेकर ८० तक हिस्से होते हैं। इसके फूल कोमल, गुलाबी और पीले रंगके होते हैं। इसका फल कुछ दबा हुआ, चिकना और चमकदार होता है। उसका छिलका कुछ पीलापन लिये हुए भूरे रंगका होता है। उसमें कड़ी, चूसेदार पीले रंगकी गिरी बीजोंसे लिपटी हुई रहती है। इस वृक्षसे एक प्रकारका सफेद, झागदार, नशीला और मीठा रस निकाला जाता है। जिसको ताड़ी बोलते हैं। इससे ताडी नामक शराब तैयार की जाती है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतसे ताड़का फल मीठा, शीतल, नशीला, मज्जाबर्धक, कामोद्दीपक, कृमिनाशक, पौष्टिक, मृदु विरेचक और विषनाशक होता है। यह पित्त, जलन, प्यास, थकावट, बातरोग और रक्त रोगोंमें लाभदायक है। इसके बीज मूत्रल, मृदु विरेचक, नुकीले और पित्त नाशक होते हैं। इसकी जड़ सुगन्धित, कुष्टरोगमें उपयोगी और प्रसवकालमें लाभदायक है। इसके फूल तिल्लीके बढ़नेपर फायदा पहुँचाते हैं।

इसका कच्चा फल स्निग्ध, स्वादिष्ट, भारी, मलरोधक, बलकारक, शीतल, धातुवर्धक, तृप्तिकारक, मान्स वर्धक, कफ कारक तथा बात, श्वास, रक्त पित्त, व्रण, दाह, क्षत, पित, क्षय और रुधिरके दोषोंको दूर करने वाला है।

इसका पका हुआ फल रक्त पित कारक, कफ पैदा करने बाला, दुष्पच्य, बहु मूत्र जनक, तंद्राको उत्पन्न करने वाला और वीर्य वर्धक है।

इसके कच्चे फलके बीज मूत्रल, शीतल, रस और पाकमें मधुर, कफ कारक और बात पित्तको नष्ट करने वाले हैं।

इसके फलकी मगज किंचित् मदकारक, हल्की, कफकारक, वातपित्त नाशक, तेल युक्त, मधुर और सारक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसके फलका जल पित्तनाशक, शुक्रवर्धक, भारी और स्तनोंमें दूध पैदा करनेवाला है।

ताड़ी कफकारक, वीर्यवर्धक तथा खांसी और उबकाईको दूर करनेवाली होती है। ताड़के मस्तकका पंजर धातुवर्धक, वात पित्तनाशक और वस्तिशोधक होता है।

यूनानीमत—

यूनानी मतसे इसकाफल अग्निवर्धक, कामोद्दीपक और पित्तनाशक होता है। यह स्वादको सुधारने वाला और प्यासको बुझानेवाला है। इसका जोश देकर निकाला हुआ रस पौष्टिक, मज्जावर्धक, कामोद्दीपक, मादक और कफ निस्सारक होता है। यह प्यास और मूत्रकी जलनको मिटाता है और रक्त को शुद्ध करता हैं।

इस वनस्पतिका रस उत्तेजक और कफ नाशक होता है। अगर इसे प्रतिदिन प्रातःकाल लगातार लिया जाय तो यह मृदुविरेचकका काम करता है। ताज़ा हालतमें यह प्रदाह और जलोदरमें फायदा पहुँचाता है। अगर इसको थोंड़ा जोश देकर उपयोगमें लिया जाय तो यह मधुमेहमें उपयोगी होता है। मूत्रल होनेकी वजहसे यह पुरानी सुज़ाककी बीमारीमें भी फायदा पहुँचाता है।

बाह्य प्रयोगमें इसके ताजा रसमें चांवलके आँटेको मिलाकर गरम करके कपड़े पर फैलाकर पुल्टिसके बतौर लगानेसे कारबंकल और दूसरे सांघातिक फोड़ोंपर लाभ पहुँचाता है। इसके पत्तोंके डंखल का ताजा रस और इसकी जड़का रस पाकस्थलीके विकारोंको दूर करता है नज़ला और कुक्कुर खाँसीमें भी यह लाभदायक है। इसके ताजे पत्तोंका रस गर्मीकी बीमारीमें भी दिया जाता हैं। इसकी राख अम्ल-पित्त, पित्तप्रकोप, विषमज्वर और हृदयकी जलनमें लाभ पहुँचाती है।

इसकी राखको अगर दूसरी शांतिदायक औषधियोंके साथमें तिल्ली और यकृतके बढ़नेपर लगाया जाय तो बहुत लाभ होता है। इसकी राख जिस जगह लगाई जाती है वहाँपर छाला उठ जाता है। इसके फलका गूदा चर्म रोगोंमें लगानेके काममें लिया जाता है। ताड़की शक्कर पित्तनाशक और धातु परिवर्तक होती है। यह दाह और प्रमेहमें लाभदायक है।

इसके पिंडमेंसे एक प्रकारका हल्का, बादामी रंगका कपासके समान पदार्थ प्राप्त किया जाता है। डॉक्टर लोग इसको घावों का रक्तस्राव बन्द करने के काममें लेते हैं।

कम्बोड़िया में इसकी जड़ मूत्रल और कृमिनाशक मानी जाती है। यह सुजाक में लाभ पहुँचाती हैं। यह पित्त को नाश करने वाली और पेचिश को मिटाने वाली मानी जाती है। इसकी शक्कर में विष नाशक गुण माना जाता है।

रस रत्नाकर नामक ग्रन्थ के कर्ता स्वामी नित्यनाथ लिखते हैं कि ताड़ के सूखे फूलों को जलाकर उस राख में से क्षार निकाल कर ऊस क्षार को गुड़ के साथ देने से तिल्ली का रोग दूर होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ताड़ की जटा को लाकर उसके टुकड़े करके एक मिट्टी की हांडी में भर कर उस हांडी के ऊपर ढक्कन लगाकर कपड़ मिट्टी करके सुखा लेना चाहिये। फिर उस हाँडी को एक खड्डे में रखकर उस खड्डे में घास, कण्डे, कूड़ा करकट, वगैरह भर करके आग लगा देना चाहिये। जब अग्नि शान्त हो जाय तब उस हाँडी को निकाल कर उसके अन्दर की राख को पतले कपड़े में छानकर शीशीमें भर लेना चाहिये। प्रति दिन सबेरे शाम इस भस्म में से २ से लेकर ६ रत्ती तक की मात्रा मुंह में डालकर ऊपर से बासी जल पी लेना चाहिये। इस प्रयोग से अजीर्ण दोष, अम्लपित्त, आमाशय में खट्टा रस पैदा होने की वजह से आने वाली खट्टी डकारें, खट्टी उल्टियाँ, छाती की जलन, भोजन के पीछे होने वाला उदर शूल, ग्रहणी, मन्दाग्नि वगैरह अनेक प्रकार के जठर सम्बन्धी रोग नष्ट हो जाते हैं।

उपयोग—

हृदय की जलन—इसके सूखे हुए फूलों के गुच्छे की राख को पिलाने से हृदय की जलन मिटती है।

चर्मरोग—इसके पके हुए फलके गूदे का लेप करने से चर्म रोग मिटते हैं।

मूत्रातिसार—इसके रस में थोड़ा खमीर उठा कर पिलाने से मूत्रातिसार मिटता है।

पित्त के रोग—इसके फूलों के गुच्छे की राख पिलाने से पित्त के रोग मिटते हैं।

मूत्रकृच्छ्र—इसके ताजा रस में मिश्री मिलाकर पीने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।

हिचकी—ताड़ के कच्चे फलों में जो दूधिया रस निकलता है उसके पिलाने से हिचकी और उत्क्लेद मिटता है।

उपदंश—उपदंश से जब अंडकोष और इन्द्रिय पर सूजन हो जाती है और टाँकियाँ बहुत पड़ जाती है तब इसके हरे पत्तों का रस पिलाने से लाभ होता है।

जलोदर—इसके फूलों के गुच्छे को काटने से जो ताजा रस निकलता है उसको पिलाने से मूत्र वृद्धि होकर जलोदर मिटता है।

मेद वृद्धि—ताड़ के पत्तों का क्षार और हींग को चावल के मांड के साथ पीने से मेद वृद्धि मिटती है।

उन्माद - इसकी शाखा का रस पिलाने से उन्माद में लाभ होता है।

—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तान्दुलजा

नाम—

संस्कृत—अल्पमारिश, वर्षाभूः, तंदूलीय। हिन्दी—बननतिया, बन चौलाई। गुजराती—तांदुलजा, अड़खाउ तान्दुलजा। कच्छी—मीजी भाजी, उखेड़ी भाजी। मराठी—रान तान्दुलजा। लेटिन— Amaranthus Blitum (एमेरेन्थस ब्लिटम)।

वर्णन—

यह चौलाइ की जाति की एक तरकारी है। इसका पौधा फुट भर से लेकर हाथ भर तक ऊंचा होता है। इसके पत्ते छोटे और फूल गुच्छों में लगते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

इस वनस्पति की तरकारी आमाशय की गरमी को कम करती है और एक उत्तम पथ्य है। आगसे जले हुए स्थानपर इसके पतों को और दुर्वा को पोसकर लेप किया जाता है।

तापमारी

नाम—

मराठी—तापमारी। लेटिन—Aralia Pseudoginseng (अरेलिया स्यूडोजिनसेंग)।

वर्णन—

यह वनस्पति नेपाल, सिकिम और भूटानमें ६ हजार फीटसे १२ हजार फ़ीटकी ऊँचाई तक पैदा होती है। इसके पत्ते बड़े और कटी हुई किनारोंके होते हैं। इनमें मेथीके समान गंध और मुलहटीके समान स्वाद रहता है इसकी जड़ गंठीली होती है। इसके फल कालापन लिये हुए लालरंगके होते हैं।

गुणदोष और प्रभावः—

इस वनस्पतिकी विशेष प्रशंसा इसके कामीद्दीपक गुणोंकी वजहसे है। इसके अतिरिक्त यह अग्निमान्द्य, वमन और स्नायुमंडलके रोगोंमें भी लाभदायक है। इसमें कफ निस्सारक और ज्वरनाशक गुण भी पाये जाते हैं। इस वनस्पतिको अक्सर चीनी लोग हिन्दुस्तानमें लाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति कामोद्दीपक और उत्तेजक है इसे अग्निमान्द्य और वमन के अन्दर भी काममें लेते हैं।

तांबा

नाम—

संस्कृत—ताम्र, म्लेच्छमुख, द्विष्ट, वरिष्ट, औदुम्बर, रविसंज्ञक, रविप्रिय, रक्तधातु, इत्यादि। हिन्दी—ताँबा। बंगाल—तामा। मराठी—तांबें। गुजराती—ताँबो। कनाड़ी—ताम्र। तेलगू—रागी। तामील—ताम्त्रम, शेपु। अंग्रेजी—Copper। फ़ारसी—मिस। अरबी—नुहास। लेटिन—Cuprum क्यूप्रम।

वर्णन—

ताम्बेकी धातु सर्वत्र प्रसिद्ध है। यह सब दूर बरतन बनानेके काममें ली जाती है। पैसे और पाईके सिक्के भी इसीसे बनाये जाते हैं। इसलिये इसके विशेष वर्णन की आवश्यकता नहीं।

उत्तम ताँबेके लक्षण—जो ताँबा जपाके फूलके समान रंग वाला, स्निग्ध, गरम, घनकी चोटको सहन करने वाला और लोहे तथा शीशे के मैलसे रहित होता है वह उत्तम है। जो ताँबा काला, रूखा, अत्यन्त कठोर, सफेद, घनकी चोट को न सहने वाला और लोहे तथा शीशे के मेलवाला होता है वह ताँबा दुष्ट है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वैदिकमत—आयुर्वैदिकमत से ताँबा कसेला, मधुर, कड़वा, अम्ल, सारक, पित्त नाशक, कफ-नाशक, शीतल, हलका तथा पाण्डु रोग, उदररोग, बवासीर, ज्वर, कोढ, खाँसी, श्वास, क्षय, पीनस, अम्लपित्त, सूजन, कृमि, और शूल को नष्ट करता है।

तांबा—गुल्म, कोढ़, गुदारोग, शूल, सूजन, उदर रोग, पाण्डु रोग, मेद, भ्रम और दाह को नष्ट करने वाला है।

कुविधि से मारे हुए तांबे के दोष—गलत विधि से मारे हुए ताँबे के सेवन से दाह, पसीना, अरुचि, मूर्छा, दस्त, उल्टी, भ्रम इत्यादि कई उपद्रव हो जाते हैं। यह विष से भी अधिक भयंकर है।

ताँबे को शुद्ध करने की विधि—

ताँबे की भस्म बनाने के लिये उत्तम लाल वर्ण का नैपाली ताम्र लेना चाहिये अथवा तूतिया

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(नीला थूथा) में से निकाला हुआ ताँबा उपयोग में लेना चाहिये। इससे भी उत्तम ताँबे की आवश्यकता हो तो मोर के पंख और केंचुओं में से निकाला हुआ ताँबा काम में लेना चाहिये। वह सब से उत्तम होता है।

तूतिया में से तांबा निकालने की विधि—

ढाई सेर तूतिया को पीसकर १ साफ लोहे की कढ़ाही में बिछा दें और उस लोहे की कढ़ाही को एक बड़े लोहे को कढ़ाहमें रख दें और उस कढ़ाही में पड़े हुए तूतियाके चूर्ण को ढंक दें। उसके बाद उस बड़े कड़ाह में १० सेर पक्का बिना कुटा हुआ त्रिफला भर दें। फिर उस कढ़ाहमें १ मन पक्का मीठा पानी भर दें और उस कड़ाह को ऐसी खुली जगह में रक्खा जाय जहां हवा, सूरज की धूप और चन्द्रमा की चांदनी उस पर बराबर पड़ती रहे। इस प्रकार एक महीना बीतने पर उस पानीको छान लें यह पानी स्याही बनाने के काममें आयगा और उस छोटी कढ़ाई को बाहर निकालकर उसके पेंदे जमेहुए विशुद्ध ताम्बे के बुरादे को चाकू से खुरच २ कर निकाल लें। करीब आध सेर विशुद्ध तांबा उसमें मिलेगा। यह तांबा नेपाली ताँबे से अधिक गुणकारी होता है।

तूतिया से निकाले हुए उस तांबे को अग्नि में खूब लाल करके आकके पत्तों के स्वरस में ७ वार बुझावें। फिर २ सेर इमलीके पत्तों को १० सेर पानी में डालकर कढ़ाही में काढ़ा बनावें। जब ५ सेर पानी रह जाय तब उसमें आध सेर सेंधा नोन और आधा सेर तूतियासे निकाला हुआ तांबा भी डाल दें और ४ प्रहर तक आंच दें। अगर इस बीच में वह पानी जल जाय तो उसमें और पानी या गौमूत्र डाल देना चाहिये। इस क्रिया से वह ताम्बा शुद्ध हो जाता है।

अगर तूतिये का तांबा न मिले तो नेपाली तांबे को तेल, मट्ठा, गौमूत्र, कांजी कुल्थी के बीजों का काढ़ा, इमलीके पत्तों का काढ़ा, नीबू का रस, घीग्वार का रस, सूरण का रस, गाय का दूध, नारियल का पानी और शहद। इन १२ चीजों में प्रत्येक के अन्दर सात २ बार गरम करके बुझाना चाहिये। इस प्रकार ८४ बार बुझाने से ताँबा शुद्ध हो जाता है यह तांबा प्रत्येक भस्म बनाने के काममें लाया जा सकता है।

ताँबेका यंत्र और हैजेका रोग:—

तांबेकी धातुके पतरेका यंत्र बनाकर शरीरपर धारण करनेसे हैजेसे मनुष्यका अद्भुत तरीकेसे बचाव होता है यह बात धीरे धीरे आजकलके वैज्ञानिक मानने लगे हैं। सन् १८८२ के थिआसोफिस्ट नामक पत्रके दिसम्बरके अंकमें डॉक्टर ग्रेड्फोर्न नामक विद्वानने लिखा था कि:—

"हिन्दुस्तानमें शरीरके रोगी अवयवोंको दुरुस्त करनेके लिये धातुओंके यंत्र बनाकर पहिनाने की प्रथा प्रचलित है और उससे अच्छा फायदा होता हुआ भी देखा जाता है। ऐसे यंत्रोंसे रोग नष्ट करने

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

की घटनाएं मेरे देखनेमें भी आई हैं। मेरे खयालसे सन् १८५२ के करीब जब युरोपके कितने ही हिस्से हैजेसे बीरान हो गये थे तब यूनिच (जर्मनी) में इस बातने लोगोंका ध्यान खास तौरसे आकर्षित किया था कि उस महामारीके हजारों बलिदानोंमें बरतनका व्यापार करनेवाला एक भी ठठेरा उस बीमारीका शिकार नहीं हुआ था। इस बातसे अनुमान निकालकर शहरके डाक्टरोंने तांबेके पतले पतरोंकी ढाई इञ्च लम्बी और ढाई इंञ्च चौड़ी चकतियें बनाकर उन चकतियोंमें डोरी डालकर पेटके पोले हिस्सेपर पहिननेकी सूचना दी थी और इससे बहुतसे लोग हैजेके उपद्रवसे बच गये थे।"

"इसके पश्चात सन् १८६७ में जब ओडेसाके अन्दर हैजेका प्रकोप हुआ तब मैंने और मेरे सारे कुटुंबने इसी प्रकारकी तांबेकी चकतियें पहिन रक्खीथीं जिसका परिणाम यह हुआ कि हमारे आसपासके सब स्थानों पर हैजे और अतिसारसे असंख्य आदमी मरगये। मगर हममेंसे किसीके ऊपर इस बीमारीका हमला नहीं हुआ।"

"मेरा ऐसा विश्वास है कि अगर पेटके ऊपर एक चकती ताँबेकी और एक चकती जश्तकी मिलाकर पहिनी जाय तो इस बीमारीसे बहुत कुछ रक्षा हो सकती है।"

इस विद्वानकी सूचनाके पश्चात् इस सम्बन्धके और भी अनुभव प्राप्त किये गये, जिनका संतोष जनक परिणाम नजर आया। इससे आजकलके कई डाक्टर इस बातको मानने लगे हैं कि हैजेके समयमें ताँबेकी लंबगोल या गोल पतरी बनाकर उसके दोनों बाजू दो छेद करवाके उसमें डोरियें डालकर उन डोरियोंको गलेमें इस प्रकार बाँधना चाहिये कि ताँबेका वह टुकड़ा पेटके अगले भागपर चमड़ीके साथ बराबर चिपका रहे। इस पतरेका नाप बड़े आदमीके लिये ६ × ४ इंच और छोटे आदमीके लिये ५ × ३ इञ्च और बच्चोंके लिए ४×२ इञ्चका रखना चाहिये। इस पतरेको २।४ रोजमें किसी खटाईसे माँजकर साफ कर लेना चाहिये।

हैजेके दिनोंमें कुए, तालाब, इत्यादिके पानीमें हैजेके कीटाणु पैदा हो जाते हैं। इसलिये इन दिनों में अगर पीनेके पानीको एक दिन पहले ताँबेके बरतनमें भरकर रख दिया जाय और दूसरे दिन उसको पीने या नहानेके उपयोगमें लिया जाय तो ताँबेके संसर्गसे उसके सब कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। अमेरिकाके सुप्रसिद्ध डॉक्टर मुरेने अनेक प्रयोग करके यह बात साबित करदी है कि ताँबेके बरतन या पतरों पर किसी प्रकारके रोग कीटाणु जीवित नहीं रह सकते। इसलिये मलेरिया, टाइफाइड, हैजा, इत्यादि संक्रामक रोगोंके दिनोंमें अगर २४ घंटेतक ताँबेके बरतनमें रक्खा हुआ पानी पिया जाय तो पानीके जरिये शरीरमें रोग कीटाणुओंके पहुँचनेका अन्देशा नहीं रहता।

ऐसा मालूम होता है कि इस सत्यकी जानकारी हमारे पूर्वजोंको हजारों वर्ष पहिले भी थी और इसीलिये हमारे यहां पानी भरनेके बरतन, आचमनी, पूजाके बर्तन, पानी पीनेके लोटे, नहाने धोनेकेबरतन,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ताबीज, इत्यादि सब तांबेके ही रखनेका आदेश किया गया है। देव कार्य्योंमें भी तांबेको उत्तम माना गया है। ये सब इस बातके प्रमाण हैं कि हमारे पूर्वजोंको तांबेकी कीटाणु नाशक शक्तिका पूरा परिचय था।

ताँबे की भस्म बनाने की विधियां—

पहिली विधि—शुद्ध तूतिया का तांबा अथवा नेपाली ताँबा आधा सेर और शुद्ध आँवलासार गन्धक आधा सेर लें। गन्धक को खूब पीसकर तीन कपड़ मिट्टी की हुई चिकनी हांडी में नीचे पाव भर गन्धक का चूर्ण बिछाकर उसके ऊपर आधा सेर ताम्रपत्र रखकर उन ताम्रपत्रों पर बचा हुआ पाव भर गन्धक का चूर्ण ढंक दें। तत्पश्चात् उस हाँडी के मुख पर एक ऐसा सरावला ढंके जिसके मध्य में धुंआ निकलने के लिये छोटा सा छेद हो। फिर उस सरावले और हाँडी की दरजों को कपड़ मिट्टी से अच्छी तरह बन्द कर दें। जब कपड़ मिट्टी सूख जाय तब उस हांडी को चूल्हे पर चढ़ाकर ४ घण्टा मन्द आँच, ४ घण्टा मध्यम आँच और ४ घण्टा तीव्र आंच दें। आंच के समय में सरावले के छिद्र से बराबर धुआं निकलता रहेगा। अगर ४ प्रहर आंच देने के पश्चात् भी धुआं निकलना बन्द न हो तो एक प्रहर की तीव्र आंच और दें। जब अग्नि शीतल हो जाय और हण्डिया ठंडी पड़ जाय तब कपड़ मिट्टी को खोलकर हंडिया के पेंदे में जमी हुई ताम्र भस्म को निकाल लें। यह भस्म विशुद्ध होती है। इसमें वान्ति, भ्रान्ति, इत्यादि कोई दोष नहीं होता। जिस योग में ताम्र भस्म डालना लिखा हो उसमें इसका प्रयोग निःशंक होकर करसकते हैं।

दूसरी विधि—तूतिये का तांबा अथवा नेपाली शुद्ध किया हुआ तांबा ३ सेर लें। १॥ सेर शुद्ध पारा और ३ सेर शुद्ध गन्धक की कजली बनालें। फिर मिट्टी की २ नांदें लेकर उन पर सात २ कपड़ मिट्टी करलें। उसके बाद दोनों नांदों का मुंह मिलाकर इस बात को देख लें कि उनके बीच में कोई दरज न रह जाय। फिर ऊपर वाली नांद के पेंदे में एक ऊंगली जा सके इतना बड़ा छेद करलें। उस छेद में एक बालिश्त लंम्बी एक लोहे की नली लगादें जो नाँद के अन्दर लटकती रहे। इस नली के लगाने का उद्देश्य यह है कि नाद के पेंदे में किये हुए छिद्र के द्वारा पारा बाहर न निकल जाय किन्तु सिंदूर रस बनकर नली के चारो तरफ नांद के पेंदे में जा लगे। फिर नीचे वाली नांद में पारद और गन्धक की थोड़ी सी कजली बिछाकर उस पर थोड़े से ताम्र पत्र रख दें। फिर उस पर कजली का थर लगावें और फिर ताम्र पत्र रखें। इस प्रकार क्रम से ४॥ सेर कजली और ३ सेर ताम्र पत्रों को रख दें और कजली को हाथों से खूब दबा दें। उसके बाद नीचे की नांद के ऊपर नली लगाई हुई दूसरी नांद को रखकर उनकी दरजों पर वज्र मुद्रा* करदें। ऊपर की नांद में जिस जगह नली लगी हुई रहती है उस जगह की दर्जों को भी वज्र मुद्रा से बन्द कर दें और वज्र मुद्रा के ऊपर ७ कपड़ मिट्टी करके

---

* नोट— पीपल का गोंद, रुई, जला हुआ लोह और चिकनी मिट्टी। इन चारों चीजों को पानी के साथ २ दिन तक हथौड़े से कूट २ कर खूब चिकना करके लुगदी बना लें। इसी लुगदीसे बंद करने को वज्रमुद्रा कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खूब सुखालें। पश्चात् इस नलिका डमरू यंत्र को सर्वार्थ करी भट्टी के मुख पर बड़ा लोहे का चूल्हा रखकर रख दें और लोह जाली के ऊपर १० सेर पत्थर के कोयले भर कर भट्टी के नीचे लकड़ी की आंच दें। पहले ३ घण्टे हलकी आंच, फिर ४ घण्टे तक मध्यम आंच और फिर ५ घण्टे तक तीव्र आंच दें। जब आंच कम करना हो तब धधकते हुए कोयलों के ऊपर २।३ नम्बरी ईंटे रख देना चाहिये। जब मध्यम आंच देना हो तब ईंटों को हटाकर लोहे का तवा रख देना चाहिये और तीव्र आंच देना हो तब तवे को भी हटा देना चाहिये अथवा मन्द आंच और मध्यम आंच के समय लोह जाली पर कोयला न रखकर सिर्फ भट्टी के नीचे लकड़ी की ही आंच देना चाहिये और तीव्र आंच के समय पत्थर के कोयले भर देना चाहिये। इस प्रकार दो दिन तक आंच देना चाहिये। यह खयाल रखना चाहिये कि यह यन्त्र पत्थरके कोयलोंसे हमेंशा एक बालिश्त ऊंचा रहना चाहिये अन्यथा तीव्र अग्नि उसको फोड़ देगी।

अगर किसी को सर्वार्थकरी भट्टीका ज्ञान न हो तो हलवाइयों की भट्टी पर ही इस यंत्र को रखकर बबूल की सूखी लकड़ियों की आँच देना चाहिये परन्तु ऐसा करने से ४ दिन रात की अग्नि देना पड़ेगी।

अग्नि बुझ जानेपर और यंत्रके ठंडा हो जाने पर उसको होशियारी से खोलें। ऊपरवाली नाँद-की नली के पास वाले पैंदेमें जमाहुआ सिन्दूर रस मिलेगा और नीचे वाली नांद के पैंदेमें विशुद्ध ताम्र भस्म मिलेगी। यह खयाल रखना चाहिये कि यह यंत्र जब आग पर चढ़ा हो तब ऊपर की नांद पर नली को बचाकर आठ तह किया हुआ गीला कपड़ा हमेशा रक्खा रहे। जब एक कपड़ा गरम हो जाय तब उसको बदलकर दूसरा कपड़ा रख देना चाहिये, नहीं तो पारा उड़ जाने का डर रहता है।

ताम्रभस्म की यह विधि काशी के प्रसिद्ध रसायन शास्त्री स्वर्गीय श्यामसुन्दराचार्य की ईजाद की हुई है। उनका कथन है कि इस विधिसे बहुत उत्तम ताम्र भस्म तैयार होती है।

अत्यन्त चमत्कारिक सफेद ताम्रभस्म की विधि—

शुद्ध किये हुए १ तोला बढ़िया तांबे का जाड़ा पतरा करके उस पतरेके वजनके बराबर ही शुद्ध सोना मुखी नामक उपधातु को लेकर उसे बारीक पीसकर एक मिट्टी के सरावले में उसको आधी बिछाकर उस पर तांबे का पतरा रखकर शेष आधी सोनामुखी को उस पतरे पर बिछा देना चाहिये। फिर उस सरावलेपर एक दूसरा सरावला ढककर कपड मिट्टी करके गजपुटमें रखकर फूंक देना चाहिये। जिससे काले रंग की भस्म तैयार होगी। इस भस्म को कलिंहारी की जड़ के रसमें खरल करके टिकड़ी बनाकर सराब संपुट में रखकर गजपुटमें फूंक देना चाहिये। इस प्रकार ७ बार करना चाहिये। उसके पश्चात् नागफनी थूहर के लाल डोड़े के रसमें उसको घोट कर टिकड़ी बनाकर सुखा लेना चाहिये। उसके पश्चात् आंकड़े के दूधमें सफेद कनेरके फूलों को खरल करके उसकी लुगदी में उस टिकड़ी को रखकर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सराब संपुट में कपड़ मिट्टी करके गजपुट में फूंकना चाहिये। इस प्रकार इसके ३१ पुट देना चाहिये। जिससे सुन्दर सफेद रंग की ताम्रभस्म तैयार हो जायगी।

जन साधारणमें ताँबे की सफेद भस्मके अलौकिक गुणोंके सम्बन्धमें अत्यंत अतिशयोक्ति भरी हुई किंवदन्तियां प्रचलित हैं। वास्तवमें यह भस्म अत्यन्त प्रभावशाली, चमत्कार पूर्ण और महा उग्र होती है। इस लिये इसका उपयोग अत्यन्त अनुभवी वैद्योंको, राजा महाराजाओं या श्रीमंत लोगोंके बीच ही करना चाहिये। इसकी मात्रा एकसे २ चांवल तक की है। जिसको १० तोला घी के साथ देना चाहिये। इतने पर भी यदि गर्मी ज्यादा मालूम पड़े तो दूध और घी को मिलाकर पीना चाहिये। इसका प्रयोग ७ दिनसे अधिक नहीं करना चाहिये। यह भस्म नपुंसकता, कुष्ट, पक्षाघात, उदर रोग, बात रक्त, इत्यादि रोगोंको दूर करती है। इसको लेते समय तेल, गुड़, खटाई, दही, लाल मिरची, इत्यादि चीजें नहीं खाना चाहिये। (जंगल की जड़ी बूटी)

सफेद ताम्र भस्मकी दूसरी विधिः—

शुद्ध तांबेका १ तोला पतरा लेकर उसके ऊपर शुद्ध रांगे का १ नीला पतरा लपेट देना चाहिये। इसके पश्चात् लगभग मनुष्यकी जंघाके समान मोटा और एक हाथ लंबा अंकोलकी जड़का हरा टुकड़ा लाकर उसके ऊपरके हिस्सेमें बीचो बीच १ बालिश्त गहरा खड्डा खोदकर उसमें दूसरी अंकोलकी जड़की सूखी छालको आधे खड्डे तक भर कर उसके ऊपर रांगा लिपटा हुआ तांबेका टुकड़ा रख देना चाहिये और फिर बाकी का खड्डा भी अंकोलकी छालके सूखे बुरादेसे दबा २ कर भर देना चाहिये। उसके बाद उसपर कपड़ मिट्टी करके गजपुटमें आधे गजपुट तक बकरीकी मेंगनी भर कर उस पर उस जड़को रखकर उसके ऊपर फिर पूरी बकरीकी मेंगनियाँ भर कर आग लगा देना चाहिये। ठंडी होने पर उस जड़को आहिस्ते से निकालकर उसके ऊपरकी कपड़ मिट्टीको दूर कर ताम्बेकी भस्मको सावधानीसे निकाल लेना चाहिये। पतासेके समान सफेद रंग की भस्म मिलेगी। अगर कुछ कसर मालूम पड़े तो इसी प्रकारसे १ आंच और दे देना चाहिये। यह भस्म बहुत उत्तम बनती है। जलोदर, कुष्ट, कृमि, अतिसार, खांसी, दमा, शूल, इत्यादि रोगोंमें योग्य अनुपान के साथ देनेसे तत्काल असर बतलाती है। इस भस्मको आधी रत्तीसे अधिक मात्रामें नहीं देना चाहिये। लगातार १० दिनसे अधिक दिनों तक चालू नहीं रखना चाहिये। भूखे पेट भी इसको नहीं लेना चाहिये।

सफेद ताम्र भस्मकी तीसरी विधी—

शुद्ध किया हुआ जमाल गोटा २ तोला, भिलामा ४ तोला और अजवायन एक तोला लेकर इनको पानीमें पीसकर लुगदी बनाना चाहिये। इस लुगदीमें शुद्ध किया हुआ ताम्बेका १ ढब्बू पैसा रख देना चाहिये। फिर राँगेकी २ कटोरियाँ लाकर १ कटोरी में उस लुगदीको रखकर दूसरी कटोरी उसके ऊपर ढँककर खूब कंपड़ मिट्टी कर देना चाहिये। फिर एक खड्डेमें उसको रखकर उसके

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ऊपर कोयले भर कर आग लगा देना चाहिये, उस खड्डे के ऊपर १ छेद वाली मिट्टी की नाँद ढक देना चाहिये । जब आग शिथिल होजाय तब उसको निकालने पर वह पैसा फूल कर सफेद भस्मके रूपमें मिलेगा । यह भस्म खानेके काममें १ चांवल की मात्रामें लेना चाहिये । इस भस्मके योगसे रासायनिक काम भी होता है ऐसा कहा जाता है ।

सफेद ताम्र भस्मकी चौथी विधीः—

शुद्ध किये हुए ढब्बू पैसे को आगमें गरम कर २ के १०० दफे बेलके पत्तोंके रसमें बुझाना चाहिये । फिर बेलके पत्तोंकी लुगदी बनाकर उस लुगदी में उस पैसेको रखकर उस पर कपड़ मिट्टी करके गजपुटमें फूँक देनेसे सफेद रंगकी उत्तम ताम्र भस्म तैयार होती है ।

ताम्र कल्पः—

संचर निमक, शुद्ध पारा और गंधक ये तीनों चीजें दो २ तोला । तांबेकी लाल भस्म ६ तोला । इन सब चीजोंको लेकर जम्भीरी नींबूके रस, सूरजमुखीके रस, लीडीपीपलके क्वाथ और सेमर के गूंदके क्वाथ में एक २ दिन तक खरल करके सूरज की धूपमें सुखा लेना चाहिये । उसके पश्चात् फिरसे उसको जम्मीरी नीबूके रसमें खरल करके सुखाकर बोतलमें भर देना चाहिये । इस औषधिको पहले दिन २ रत्ती, दूसरे दिन ४ रत्ती, तीसरे दिन ६ रत्ती इस प्रकार बढ़ाते २ आठवें दिन १६ रत्ती तक बढ़ा देना चाहिये । फिर प्रतिदिन २ रत्ती घटाते २ पंद्रहवे दिन २ रत्तीपर लाकर दवा बंद कर देना चाहिये । दवा जबतक चालू रहे तबतक भोजनमें सिर्फ़ सांठी चांवलका भात, दूध, और घी ही खाना चाहिये । इस औषधिके सेवनसे अम्लपित्त, संग्रहणी, यकृत और तिल्लीकी वृद्धि, मंदाग्नि, गुल्म, शूल, वगैरह अनेकों उदर रोग नष्ट होते हैं ।

ज्वर नाशक ताम्र भस्मः—

शुद्ध किये हुए तांबेके पतले २ पतरोंको अग्नि में गरम कर २ के हुलहुलके रसमें १०० बार बुझाना चाहिये । फिर हुलहुल के रसमें उनको ७ दिन तक भिगोना चाहिये । उसके पश्चात् हुलहुलके पत्तोंकी लुगदी बनाकर उस लुगदी में उन पतरों को रखकर उस लुगदी को सराव-संपुटमें रखकर कपड़ मिट्टी करके गजपुटमें फूंक देना चाहिये । दो एक गजपुट देनेपर जब वे पतरे पिसने काबिल हो जायं तब उनको हुलहुलके रसमें खरल करके टिकड़ी बांधकर सराव सम्पुट में ५।७ गज पुटकी आंच देना चाहिये । तब उत्तम नीले रंगकी ताम्र भस्म तैय्यार होगी । इस भस्मको १ रत्ती की मात्रामें सोंठ, मिरच और पीपरके ३ रत्ती चूर्णमें मिलाकर नागरबेलके पानमें रखकर चबा जाना चाहिये और रजाई ओढकर सो जाना चाहिये । इस प्रयोगसे मलेरिया ज्वरका प्रबल वेग भी आधे से लेकर १ घण्टेमें शान्त हो जाता है । इस औषधिको भूखे पेट लेना चाहिये और इसको खाकर ऊपरसे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पानी नहीं पीना चाहिये। नागर बेलके पत्तोंकी जगह तुलसीके पत्तों के साथ भी यह दी जा सकती है।

—(जंगलनी जड़ी बूटी)

ताम्र भस्मके गुणः—

विधि पूर्वक बनाई हुई ताम्र भस्मको उचित अनुपानके साथ सेवन करनेसे गुल्म रोग, बवासीर, क्षयरोग, पाण्डुरोग, सूजन, वमन, यकृत और तिल्लीके रोग, ज्वर, श्वास रोग, कृमि रोग, कोढ़, मंदाग्नि, चक्कर आना, हिचकी, खाँसी, प्रमेह, नपुँसकता, अतिसार, इत्यादि रोग नष्ट होजाते हैं।

ताँबे के विकार की शान्तिः—

अशुद्ध ताम्बे की अपरिपक्व भस्मके सेवन करनेसे वमन, भ्रान्ति, जड़ता, कुष्ट, फोड़े, इत्यादि अनेक बपद्रव शरीरमें पैदा हो जाते हैं। इन उपद्रवोंको दूर करनेका तरीक़ा रसायन सारके कर्ताने इस प्रकार लिखा है—

श्लोक—श्यामकाऽन्नं सिता युक्तं, सिता युक्तं च धान्यकम्।
पीतं दिन त्रयं दोषान्, दुष्ट ताम्र भवाञ्जयेत् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यने "न विषं विषमित्याहु स्ताम्रं तु बिष मुच्यते। एको दोषो विषे सम्यक् ताम्रे त्वष्टौ प्रकीर्तिता:" इस वचनपर ध्यान न देकर अपनी बेवकूफ़ीसे ताम्रका पूर्ण शोधन नहीं करके भस्म बनाडाली हो तो उसके सेवन करनेसे कुष्ठ, जड़ता, फोड़े आदि अनेक व्याधियाँ शरीरमें उत्पन्न हो जाती हैं। उनको नष्ट करनेके लिये तीन दिन तक मिश्रीके साथ सावा अन्नका पतला भात बनाकर देना चाहिये और जब प्यास लगे तब घनिये के पानीमें मिश्री डाल कर पिलावे। इसके अतिरिक्त दूसरा खान पान कुछ सेवन नहीं करे। ऐसा करनेसे सर्व विकार शान्त हो जायँगे। चंद्रोदयको सेवन करनेसे भी २।३ दिनमें सर्व विकार शान्त हो जाते हैं।

उपयोग—

हिचकी— नींबू के रस और नीबू के बीजों के साथ ताम्रभस्म खाने से हिचकी मिटती है।

बवासीर—बनगोभी और मिरचों के साथ ताम्रभस्म खाने से खूनी और बादी बवासीर में लाभ होता है।

अतिसार— कच्चे बेल को भूंजकर निकाले हुए रस के साथ ताम्रभस्म खाने से अतिसार में लाभ होता है।

संग्रहणी— सोंठ के चूर्ण और घीके साथ ताम्रभस्म खानेसे संग्रहणी में लाभ होता है।

नामर्दी— मिश्री २ तोले, खोआ ५ तोले, छोटी इलायची २ माशे और ताम्रभस्म १ रत्ती।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इन सब चीजों को मिलाकर प्रतिदिन गायके धारोष्ण दूध के साथ खाने से २।३ महीने में नामर्दी मिट जाती है।

प्रमेह— गूलरके फल के चूर्ण के साथ ताम्रभस्म खाने से सब प्रकार के प्रमेहोंमें लाभ होता है।

कलेजे की जलन— अनार के रसके साथ ताम्रभस्मके खानेसे कलेजे की जलन में शान्ति होती है।

पित्त ज्वर— बताशेके साथ ताम्रभस्म खानेसे पित्तज्वरमें लाभ होता है।

वात और कफज्वर— पीपल के चूर्ण के साथ ताम्रभस्म खानेसे वात और कफ ज्वर शान्त होता है।

सन्निपात— अदरकके रस और काली मिरचों के साथ ताम्रभस्म खाने से १३ प्रकार के सन्निपातों में लाभ होता है।

तांबट

नामः—

गुजराती—तांबट, रुंछाली धामणी, चोधारी धामणी। कच्छी—चोधारी गांगणी, रूछढ़गांगी। मराठो—खटखटी। लेटिन— *Grewia Pilosa* (ग्रेविया पिलोसा)।

वर्णन

इस वनस्पतिके पौधे ३ से लेकर १० फीट तक ऊंचे होते हैं। इसके पिंड में से बहुत सी शाखायें निकलकर फैल जाती हैं। ये शाखाएं प्रायः चौधारी होती हैं। इन शाखाओंके ऊपर बहुत रुएं रहते हैं। इसके पत्ते दूर २ पर लगते हैं। ये लंबगोल तथा २ से ४ इंच तक लंबे और १ से १॥ इंच तक चौड़े होते हैं। इसके फूल पीले रंगके और फल ललाई लिए हुए भूरे रंग के, स्वादमें खटमीठे और ऊपर बारीक रुओं से भरे हुए रहते हैं।

गुण दोष और प्रभाव,—

इसकी जड़ का काढ़ा और फांट शक्करके साथ प्रमेह और पेशाब की जलन पर दी जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तांबरा (कायमा)

नाम—

संस्कृत—मसि, कज्जलम्। हिन्दी—ताँबरा, गेरू, कायमा, कुरमा, इत्यादि। अंग्रेजी—अरगट लेटिन—Clavicеps Purpurea (क्लेविसेप्स परपूरिया)।

वर्णन—

तांबरा यह एक जाति का वानस्पतिक रोग है। यह सर्वत्र मक्का, गेहूँ, जुआर, चांवल, इत्यादि तृण धान्योंके ऊपर लगता है। गेहूँ के ऊपर लगने वाले रोग को तांबरा और गेरू कहते हैं। जुआर और मकई के भुट्टों के ऊपर लगने वाले रोग को कायमा, कुरमा और काजली कहते हैं। चाँवलके ऊपर लगनेवाले रोग को पीस और काजली कहते हैं। इस्पहानी तांबरा यूरोपके अन्दर होता है। गेहूँके अन्दर लगनेवाले रोग का रंग लाल और जुआर तथा मकईके अन्दर लगने वाले रोग का रंग काला होता है।

सब धान्योके अन्दर गेहूंके अन्दर लगने वाला ताम्बरा सर्वोत्कृष्ट होता है। मकई के अन्दर लगनेवाली काजली और इस्पहानी तांबरेके गुण धर्म समान होते हैं यूरोपसे आने वाले इस्पहानी ताम्बरेके बदले में मकईकी कजली उपयोग में लेना चाहिये। मकई की कजली को बूचदार शीशी में भरकर सूखी जगह पर रखने से वह १ वर्ष तक खराब नहीं होती। इस्पहानी तांबरा और मकई की कजली इंडियन फरमा कोपिया में सम्मत मानी गई है।

गुण दोष और प्रभाव—

ताम्बरे के अन्दर दो धर्म विशेष रूपसे प्रभावशाली पाये जाते हैं। पहला छोटी रक्त वाहिनियों को संकोचन करना और उनसे होने वाले रक्त श्रावको बन्द करना और दूसरा गर्भाशय का संकोचन करना। इस वस्तुके ये दोनों धर्म अत्यन्त स्पष्ट और साफ हैं।

गर्भाशयके ऊपर तांबरेकी क्रिया—प्रसूति होनेके बाद ताम्बरे की फाँट बनाकर देनेसे अधिक रक्त श्राव नहीं होता, गर्भाशय स्वाभाविक और पूर्व स्थिति पर रहता है। उदर शूल और ज्वरका आक्रमण होने नहीं पाता। प्रसूति कालमें ५। ६ दिन तक सबेरे शाम यह वस्तु देने से प्रसूताका स्वास्थ्य सुरक्षित रहता है। जब किसी स्त्री को गर्भपात होजाता है। तब उसका गर्भाशय शिथिल रहने लगता है, बार बार रक्त श्राव होता है, कमर दुखती है, उदर शूल होता है और पाण्डुरोगके लक्षण दिखाई देने लगते हैं। ऐसी स्थितिमें इस वस्तुको देनेसे अच्छा लाभ होता है। रक्त मिश्रित प्रदरमें इसको गूगलके साथ देते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छोटी रक्त वाहिनियों पर ताँबरेकी क्रिया—फुफ्फुसके अन्दरकी धमनी फटकर खाँसीके साथ अगर रक्त बहता हो तो ऐसी स्थितिमें ताम्बरेको देनेसे लाभ होता है। दूसरी इन्द्रियोंके द्वारा होने वाले रक्तश्रावमें भी इसका उपयोग किया जाता है। ऐसी नपुंसकतामें जिसमें लिंगेंद्रियमें तेज़ी आकर तुरंत शिथिलता आ जाती हो, ताम्बरेकी फाँट बनाकर देनेसे और उसको पानीमें उबालकर लिंग्रेंद्रिय पर लेप करनेसे अच्छा लाभ होता है। स्वप्न दोषमें अथवा शीघ्र पतनमें भी इसका उपयोग किया जाता है। सुज़ाकके अन्दर अगर बराबर पीब बहता हो तो इसको देनेसे बन्द हो जाता है। अधिक पढ़ने लिखनेसे अगर दृष्टि कमजोर होजाय तो उसमें भी ताम्बरे को देनेसे लाभ होता है। आँतोंकी शिथिलता की वजह से रहने वाली कब्जियतमें इस औषधिको देनेसे आँतों की शक्ति ठीक होकर प्रति दिन दस्त साफ़ होने लगता है। मूत्र नालीमें रहने वाली मान्स पेशियों की शिथिलतासे पेशाब साफ न होता हो या रुक २ कर होता हो तो ताम्बरेको देनेसे साफ़ होने लगता है। यह एक दिव्य औषधि है। इसलिये प्रत्येक गृहस्थको इसका उपयोग जरूर करना चाहिये। प्रसूति कालमें रक्त श्रावको बन्द करनेके लिये और गर्भाशयका संकोचन करनेके लिये इसके समान कोइ दूसरी औषधि नहीं है। (औषधि संग्रह)

मात्रा और देनेकी रीति—गेहूँके ताम्बरेकी मात्रा १० रत्तीसे २० रत्तीतक और मकइ की कजली की मात्रा ७ रत्तीसे ३० रत्ती तककी होती है। इसको सोंठ अथवा पीपलामूलके साथ गरम पानीमें मिलाकर दिया जाता है।

ताम्बरेकी फाँट बनाकर देना बिशेष अच्छा होता है। आधा तोला कजली की बुकनी करके १२ तोले खौलते हुए पानीमें एक स्वच्छ कलईके या मिट्टीके बरतनमें मिलाकर आधे घंटे तक उस बर्तनको बन्द कर देना चाहिये। फिर उसको कपड़ेमें छान कर २।। तोलेकी मात्रामें बीस २ मिनिटके अन्तरसे जब तक पूरा फायदा न हो जाय देते रहना चाहिये।

ताम्बूल (नागरबेल)

वर्णन—

संस्कृत—नागवल्ली, नागिनी, नागवल्लिका, पर्णलता, ताम्बूली, ताम्बूलवल्ली, सप्तशिरा, मुख-भूषण। हिन्दी—नागरबेलका पान, ताम्बूल, बंगलापान। मराठी—नागबेल। गुजराती—नागरवेल्य, पान। करनाटकी—नागरवल्लि, पर्ण। तेलंगी—तामलपाकू, नागवल्ली। तामील–वेट्टिली। फ़ारसी–बर्ग तंबोल। अरबी—तंबोल। उर्दू—पान। अंग्रेजी–Betel leaf बीटल लीफ। लेटिन—Piper Betel पायपर बीटल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

ताम्बूल या नागरबेलका पान सारे भारत वर्षमें भोजनके पश्चात् खानेके काममें लिया जाता है। इसको सब कोई जानते हैं। इसलिये इसके विशेष वर्णनकी आवश्यकता नहीं। इसकी खेती मद्रास, बंगाल, बनारस, महोबा, साँची, लंका और मालवेके रामपुरा भानपुरा जिलेमें बहुत होती है। इन सब पानोंमें बनारसका पान सर्वोत्तम माना जाता है।

गुण दोष और प्रभाव—

श्लोक—ताम्बूलं कटु तिक्त मुष्ण मधुरं क्षारं कषायान्वितम्।
वातघ्नं कृमिनाशनं कफहरं दुःखस्य विच्छेदनम्॥
स्त्री संभाषण भूषणं धृतिकरं कामाग्नि संदीपनम्।
ताम्बूले निहिता स्त्रयोदशगुणः स्वर्गेऽ पिते दुर्लभः॥

अर्थात—पान चरपरा, कड़वा, गरम, मधुर, क्षारगुण युक्त, कसेला तथा वात, कृमि कफ और दुःखको हरने वाला है। स्त्री संभाषणके विषयमें यह अलंकारके समान है तथा धारणा शक्ति और काम शक्तिको यह बढ़ाता है। पानमें यह जो तेरह गुण विद्यमान है वह स्वर्गमें भी दुर्लभ है।

राजनिघंटुके मतानुसार पान चरपरा, तीक्ष्ण, कड़वा और पीनस, वात, कफ तथा खाँसीमें लाभ दायक है। यह रुचिकारक, दाह जनक और अग्निदीपक है।

भाव प्रकाशके मतानुसार पान विषघ्न, रुचिकारी, तीक्ष्ण, गरम, कसेला, सारक, वशीकरण, चरपरा, रक्त पित्त कारक, हलका, बाजिकरण तथा कफ, मुंहकी दुर्गन्ध, मल, बात और श्रमको दूर करता है।

पुराना पान—पुराना पान अत्यन्त रसभरा, रुचिकारक, सुगन्धित, तीक्ष्ण, मधुर, हृदय को हितकारी, जठराग्नि को दीप्त करने वाला, कामोद्दीपक, बलकारक, दस्तावर और मुख को शुद्ध करने वाला है।

नवीन पान—नवीन पान त्रिदोष कारक, दाह जनक, अरुचिकारक, रक्त को दूषित करने वाला, विरेचक और वमन कारक है। वही पान अगर बहुत दिनों तक जल से सींचा हुआ हो तो श्रेष्ठ होता है। रुचि को उत्पन्न करता है शरीर के वर्ण को सुन्दर करता है और त्रिदोष नाशक है।

मालवे का पान—मालवी पान पाचक, तीक्ष्ण, मधुर, रुचि कारक, दाह नाशक, पित्त नाशक, अग्नि दीपक, मादक, काम शक्ति को बढ़ाने वाला, मुख में सुगन्ध पैदा करने वाला, स्त्रियों के सौभाग्य को बढ़ाने वाला और उदर शूल को नष्ट करने वाला होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पान का उपयोग कफ प्रधान रोगों में विशेष रूप से होता है। खास करके दमा, फुफ्फुसनलिका की सूजन और श्वास मार्ग की सूजन में इसका रस पिलाया जाता है और इसके पत्तों को गरम करके छाती पर बांधते हैं। बच्चों की सरदी में भी पानों के ऊपर अरंडी का तेल लगाकर, उनको जरा गरम करके छातीपर बाँध देते हैं जिससे बच्चोंकी घबराहट कम हो जाती है और सर्दी का जोर मिटा जाता है।

डिप्थीरिया रोग—इस में गले के अन्दर एक विशिष्ट जन्तु का पड़दा पैदा होकर श्वासावरोध हो जाता है और अत्यन्त कष्ट के साथ रोगी की मृत्यु होती है। इसमें भी पान का रस सेवन करने से उस जन्तु का नाश हो जाता है, गले की सूजन कम हो जाती है और कफ छूटने लगता है। इस रोगमें ४।५ पत्तों का रस थोड़े कुनकुने पानी में मिलाकर कुल्ले करने से भी फायदा होता है।

गठानों की सूजन पर पान को गरम करके बांधने से सूजन और पीड़ा की कमी होकर गठान बैठ जाती है। व्रणों के ऊपर पान को बाँधने से व्रण सुधर जाते हैं और जल्दी भर जाते हैं। पान का रस एक प्रभावशाली पीब नाशक वस्तु है। कारबोलिक एसिड की अपेक्षा इसका रस पांच गुना अधिक जन्तुनाशक है। जिन स्त्रियों का बच्चा मर गया हो और स्तनोंमें दूध भरकर सूजन आगई हो उन स्त्रियों के स्तनों पर पान को गरम करके बाँधनेसे सूजन कम हो जाती है और दूध उड़ जाता है।

रतौंधी और नेत्राभिष्यंद रोगमें भी पान का रस आंखमें डालनेसे लाभ होता है।

रासायनिक विश्लेषण—कॅप ने सन् १८६० में पान के अन्दर पाये जाने वाले उड़नशील तेलों का परीक्षण किया। इसके पश्चात् भी इस वनस्पति के रासायनिक तत्वों का परिक्षण हुआ। इन परीक्षणोंसे यह मालूम होता है कि इसमें स्टार्च, शक्कर, टेनिन और डिआस्टोसिस ·८ से १·८ प्रतिशत तक रहता है। इनमें उड़नशील तेल भी रहता है। जो कुछ पानों में ४·२ प्रतिशत तक पाया जाता है। इसमें पाया जानेवाला उड़नशील तेल एक पीले रंग का द्रव पदार्थ होता है। यह गन्ध में उत्तम और स्वादमें तेज होता है। जावा और मनिला में पैदा हुए पानोंमें फेनोल नामकी वस्तु ५५ प्रतिशत तक पाई जाती है।

इसमें रहनेवाला उड़नशील तेल गर्मी का आवेश बतलाता है। यह मुंहमें और पेटमें अच्छा मालूम पड़ता है। इससे केंद्रीय स्नायुमंडल के ऊपर कुछ उत्तेजना मालूम पड़ती है। अगर इसे अधिक खुराकमें लिया जाय तो कुछ नशे का अनुभव भी होता है।

इसके पत्तों से प्राप्त किया हुआ यह तेल नज़लेमें और कृमिनाशक वस्तु की बतौर काममें लिया जा चुका है। यह मस्तिष्क के विकारों को दूर करता हैं।

कम्बोडियामें इसके पिसे हुए पत्तों का पानी माता और ज्वरके बीमारों को स्नान करानेके काममें लिया जाता हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सन्याल और घोषके मतानुसार पान सुगन्धित होता है। इसमें उड़नशील तेल पाया जाता है। इस तेलमें से कास्टिक पोटासकी मददसे चेबीफोल नामका फेनाल प्राप्त किया जाता है। जो कि कारबोलिक एसिड से पाँचगुना और यूबेनाल से दो गुना अधिक तेज होता है। इसी बेटल फिनाल ही के कारण इस में इतनी सुगन्ध पाई जाती है। इसके पत्तों का डंठल तेलमें तर करके गुदा में रखने से बच्चों को साफ दस्त हो जाता है और उनके पेट का फुलाव मिट जाता है।

डाक्टर क्लेइनस्टकका कहना है कि इसका उड़नशील तेल जुकाम, गलेका प्रदाह, स्वरनालीका भंग, रोहिणी रोग (डिप्थीरियो) और खाँसीमें लाभदायक है। यह कृमिनाशक होता है। डिप्थीरियामें इस तेलकी १ बून्द सौ ग्रेन पानीमें डालकर उससे कुल्ले करनेसे और इसका धुआं सूंघनेसे लाभ होताहै। भारत वर्षमें ४ पानोंका रस १ बून्द तेलकी बजाय काममें लिया जा सकता है।

खूनके जमाव, यकृतके रोग और बच्चोंके फेफड़ोंकी तकलीफमें पानको गरम करके उन पर तेल लगाकर बान्धनेसे अच्छा लाभ होता है।

मिस्टर जे-बुड़का कथन है कि इसके पानोंको अगर आग पर गरम करके स्तनों पर बान्धे जांय तो दूधका बहाव अवश्य बन्द होजाता है और ग्रन्थियोंकी सूजन मिट जाती है।

डाक्टर थाम्सन बाटस् डिक्शनेरीमें लिखते हैं कि इसके पत्तोंका रस आँखोकी बीमारीमें आँखोंमें डालनेसे फायदा पहुँचाता है। इससे मस्तिष्कके अन्दर होने वाले खूनके जमाव पर भी लाभ पहुँचता है।

बी० डी० बसुके मतानुसार इसके पत्तोंका रस आँखमें डालने से रतौंधी की बीमारी में लाभ होता है।

बंगसेनके मतानुसार टाँगोंके श्लीपदमें ७ पानोंको लेकर उनमें सेंधा निमक डालकर गरम पानी के साथ छानकर प्रातःकाल पीनेसे कुछ दिनोंमें अच्छा लाभ होता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार पान सुगन्धित, पेटके आफरेको दूर करने वाला, उत्तेजक और संकोचक होता है। सर्पविषमें इसे अन्तः प्रयोगके काममें लेते हैं। इसमें उड़नशील तेल और चेवी कोल रहता है।

पुराने हिन्दू लेखकों का लिखना है कि पानको सुबह खाना खानेके बाद और सोते समय खाना चाहिये। सुश्रुतके मतानुसार यह सुगन्धित, शान्तिदायक, पेटके आफरेको दूर करने वाला, उत्तेजक और संकोचक होता है। यह श्वासमें मधुरता लाता है, स्वरको सुधारता है। मुँहकी दुर्गन्धको मिटाता है। अन्य लेखकों के मतानुसार यह कामोद्दीपक हैं। उपचार में इसे कफ की खराबियों से जो बीमारियां पैदा होती हैं उनमें काम में लेते हैं। इसका रस इन बीमारियों में दी जाने

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वाली औषधियों में विशेष लाभदायक है। कोंकण में इसके फल को शहदके साथ खांसी की बीमारीमें देते हैं। उड़ीसामें गर्भ न रहने देनेके लिये इसकी जड़को उपयोगमें लेते हैं। यह वनस्पति इंडियन फरमा कोपियाके अन्दर भी सम्मत मानी गई है। मगर इसकी उपचारिक उपयोगिताके विषयमें कुछ भी नहीं लिखा गया है।

पान खानेकी आदत—दूसरी नशीली वस्तुओंकी तरह पानको भी लगातार खाते रहनेसे इसके खानेकी आदत पड़ जाती है। जो लोग पहली बार पान खाते हैं उनके मस्तिष्क पर कुछ खास प्रभाव दृष्टि गोचर होते हैं। कुछ बेचैनी, मूर्च्छा, उत्तेजना, पसीनेका बहना, इत्यादि स्वाभाविक लक्षण उनके अन्दर दिखलाई देने लगते हैं। परन्तु ये सब बातें शुरूमें ही दिखाई देती हैं। कुछ अभ्यास हो जानेके बाद इस किस्मकी अलामात नहीं दिखाई देतीं।

पान खानेवालोंको पान खानेके बाद कुछ ताजगी मालूम होती है। वे खुश तबियत होजाते हैं, प्रफुल्लित मालूम पड़ने लगते हैं, उनकी थकान दूर हो जाती है, प्यास जाती रहती है, भूख शांत हो जाती है और कामेच्छाकी प्रवृत्तिमें कुछ स्थायित्व आ जाता है। कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि इसका नशीला असर होता है किन्तु यह बात ठीक नहीं जंचती। सम्पूर्ण दृष्टिसे विचार करनेपर पान खानेके दुष्परिणाम नहींके बराबर ही मालूम होने लगते हैं।

पान खानेकी आदत उन जातियोंमें अधिक होती है जिनके भोजनमें कारबों हाइड्रेडकी मात्रा विशेष होती है अर्थात् जो चांवल इत्यादि पदार्थ विशेष मात्रामें खाया करते हैं। पानके चूसनेपर लार की मात्रा अधिक निकलती है जिससे पाचन क्रिया प्रणालीको मदद मिलती है। ऐसे लोगोंके अन्नके पचावमें पाकाशयका रस अधिक प्रभाव नहीं दिखलाता है। ऐसे लोग जब पान या अन्य लारनिस्सारक पदार्थ खाना छोड़ देते हैं तभी इन्हे अपचनकी शिकायत शुरू हो जाती है।

यूनानी मत—यूनानी मत से पान गरम, काविज और शान्ति दायक है। यह दिल, जिगर, मेदा, दिमाग और स्मरण शक्ति को ताकत देता है, शरीर में उत्तम रक्त पैदा करता है, दोषों को छांट देता है, शरीर के रोम छिद्रों को खोल देता है, इसके खाने से दाँत और मसूड़े मजबूत होते हैं और मसूड़े की सूजन मिट जाती हैं। कफ की वजह से पैदा हुआ दमा और खाँसी इसके सेवन से मिट जाते है। गला और आवाज साफ होती है। यह त्रिदोष नाशक और काम शक्ति वर्धक है। पान का लेप ताजा जख्मों को भर देता है। अगर किसी के अण्ड कोष में पानी उतर आवे तो ५।६ बंगला पान गरम करके बांध देने से नवीन बीमारी में बहुत फायदा होता है। २।३ दिन में पानी बिखर जाता है। अगर ज्यादा गरमी मालूम पड़े तो पांच, छः की ज़गह एक, दो पान बांधना चाहिये और एक दो, रोज का फासला देकर बांधना चाहिये।

पान के अधिक खाने से भूख कम हो जाती है। दिन २ मेदा कमजोर होता जाता है। इसलिये

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसको हमेशा नियमित मात्रा में खाना चाहिये। इसमें हेपिक्साइन नामक जहरीला पदार्थ रहता है। पान के साथ सुपारी भी बहुत कम लेना चाहिये क्योंकि सुपारी में अर्कीडाइन नामक विषैला पदार्थ रहता है और यह सीने में खुजली पैदा करता है। पान के अन्दर कत्था ज्यादा लगाने से फेफड़े में खराश पैदा हो जाती है। चूने का अधिक उपयोग दाँतों को खराब कर देता है। इसलिये पान में कत्था चूना और सुपारी नियमित मात्रा में डालना चाहिये।

उपयोग—

बच्चों की कब्जियत—पान के डंखल पर तेल चुपड़ कर बच्चों की गुदा में रखने से बच्चों की कब्ज और बादी के रोग मिटते हैं।

सूजन—पान पर तेल चुपड़ कर गरम करके बाँधने से सूजन का दर्द मिट जाता है।

गर्भनिरोध—पान की जड़ों को काली मिर्च के साथ पीसकर लेनेसे गर्भ रहना बंद हो जाता है।

(२) पानके रसमें कबूतरकी पीठ मिलाकरके पिलानेसे गर्भ रहना बन्द हो जाता है।

ज्वर—३।।। माशे पानके अर्कको गरम करके दिनमें २।३ बार पिलानेसे ज्वर आना बंद हो जाता है।

जुकाम और सीनेका दर्द—पान पर तेल चुपड़कर आग पर गरम करके सीनेपर बाँधनेसे जुकाम और सीनेका दर्द मिट जाता है। इसी प्रयोगसे दिल और जिगरमें जमा हुआ खून भी बिखर जाता है। इसको पेटपर बाँधनेसे पेटकी हवा निकल जाती है और पेट हलका हो जाता है।

नेत्ररोग—पानके अर्ककी बूंदे आँखोंमें डालनेसे आँखोंमें होने वाला बादीका दर्द मिट जाता है।

रतौंधी—पानका रस आँखोंमें लगानेसे रतौंधी जाती रहती है।

बच्चोंकी सूखी खाँसी—पानके रसको शहदके साथ चटानेसे बच्चोंकी सूखी खाँसी मिटती है।

पानका क्षार

और वस्तुओं की तरह पान के अन्दर से भी एक प्रकार का क्षार निकाला जाता है। इस क्षारके सेवन से दिल की धड़कन कम होती है, दस्त साफ होता है और यह कफ और वायुके दोषको दूर करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तारक

नाम—

संस्कृत—तारक। बंगाल—तारो, तारुको। मलयालम—मलइंजिकुआ। लेटिन—Alpinia Allhugas (अलपीनिया अलह्यूगस)।

वर्णन—

यह वनस्पति कुलिंजन ही की एक जाति है। इसकी जड़ गठानदार और सुगन्धित होती है। इसके फूल हलके गुलाबी रंगके और गंधहीन होते हैं। इसका फल काला, पतला और गोल होता है। इसके बीज छोटे और काले होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

इस वनस्पति के गुणधर्म और उपयोग कुलिंजन के ही समान हैं।

तालमखाना

नाम—

संस्कृत—कोकिलाक्ष, इक्षुरक, इक्षुगंधा, कोकिलनयन, इक्षुबालिका, शुक्लपुष्प, इयादि। हिन्दी—तालमखाना, कुलियाकंटा,। बंगाल—कुलियाखाड़ा, कुलेकांटा, कंटकलिका। गुजराती—एखरो, तालम खानूं। मराठी—विखरा, कोड़सुन्दा, तालमखाना। उर्दू—तालिम खाना। लेटिन—Asteracantha Longifolia (एस्टेरेकेंथा लांगिफ़ोलिया), Hygrophila Spinosa (हायग्रोफिला स्पिनोसा)।

वर्णन—

यह एक क्षुप जातिकी वनस्पति है जो जमीन पर फैलती है। इसके पते लम्बे होते हैं, फूल नीले रंगके होते हैं, डालियाँ कांटेदार होती हैं तथा इसका फल गोल और कटीला होता है। इसके बीजों को तालम खाना कहते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे इसके पत्ते मीठे, कड़वे और स्वादिष्ट होते हैं। ये स्निग्ध, पौष्टिक, कामोद्दीपक,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निद्रा लाने वाले तथा अतिसार, प्यास, पथरी, मूत्र संम्बन्धी रोग, प्रदाह, नेत्र विकार, शूल, जलोदर, उदर रोग, कब्जियत और मूत्रावरोधमें लाभदायक हैं।

इसके बीज, शीतल, स्वादिष्ट, कसेले और कड़वे होते हैं। ये वीर्यवर्धक, भारी, बलकारक, ग्राही, गर्भस्थापक, कफ बातकारक, तथा मल स्तंभक और रुधिर विकार, दाह तथा पित्तको हरनेवाले होते हैं।

इसकी जड़ें उत्कृष्ट शीतल, वेदनानाशक, बलकारक और मृदुल होती हैं। इसके बीज स्निग्ध, कुछ मृदुल और कामेंद्रियको उत्तेजना देनेवाले होते हैं। इसके पंचांगकी राख मृदुल होती है। इसकी जड़का काढ़ा सुज़ाक और बस्ती शोथ रोगमें दिया जाता है। इसके देनेसे सुजाककी जलन कम होती है और पेशाबका प्रमाण बढ़करके रोग धुल जाता है। यकृतोदरमें इसकी जड़का क्वाथ और पंचांगकी राख दी जाती है।

रासायनिक विश्लेषण—इसके बीजोंके अन्दर चिकना पदार्थ २३ प्रतिशत और एक प्रकारका स्थायी पीला तेल तथा मांसल पदार्थ ३१ प्रतिशत रहता है।

मात्रा—इसकी राखकी मात्रा १॥ माशेसे ३ माशे तक और बीजोंके चूर्णकी मात्रा ३० रत्तीसे ६० रत्ती तककी होती है।

यूनानीमत—यूनानीमतसे इसके पत्ते खांसी, प्रमेह, कटिवात और जोड़ोंके दर्दमें उपयोगी होते हैं। इसके बीज स्वादहीन, चर्बीवर्द्धक, कामोद्दीपक और पौष्टिक होते हैं। ये खूनको सुधारते हैं। सुज़ाक और अनैच्छिक वीर्यस्रावमें भी ये लाभदायक हैं।

तालमखाना और जलोदर—

अनुभवों से मालूम हुआ है कि इस औषधि में मूत्र रेचक गुण बहुत प्रभावशाली रूपमें रहता है इसलिये इसकी जड़का काढ़ा बनाकर देनेसे जलोदर के रोगमें आश्चर्यजनक लाभ होता है। जंगलनी जड़ी बूटीके लेखक लिखते हैं कि एक रोगी को ६ दिन तक प्रति दो दो घंटेके अन्तर से इसका क्वाथ बनाकर दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि पहिले जहां हर चौबीस घंटेमें उसको ४० से ८० तोले तक पेशाब उतरता था उसकी जगह इस औषधिको देनेके पश्चात् हर चौबीस घंटेमें ४५० तोला पेशाब उतरने लगा और इस प्रकार उसके पेटके अन्दर का संचित सब जल निकलकर रोगी रोग मुक्त होगया। इस क्वाथको इस प्रकार बनाया जाता है:—

तालमखाने की २॥ तोला जड़ लेकर उसको कूटकर ५० तोला पानीके साथ औटाना चाहिये। जब ३६ तोला पानी रह जाय तब उसे उतारकर छान लेना चाहिये। फिर हर दो दो घण्टेमें इस क्वाथ को २॥ से ४ तोले तक की मात्रामें पिलाना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कोमानके मतानुसार यह एक उत्तम मूत्रल पदार्थ है। इसकी जड़ का काढ़ा एक औंसकी मात्रामें जलोदर और पुरानी ब्राइट्सडिसीजमें मूत्रल वस्तुकी बतौर दिया गया और उसका प्रभाव संतोष जनक रहा। मद्रासके डाक्टर फिटस पैट्रिक और डाक्टर गिब्सन का कथन है कि अशक्त, रक्तहीन और कष्टसाध्य जलोदरके रोगियोंके ऊपर इस वनस्पति के क्वाथ का प्रयोग करके उत्तम सफलता प्राप्त की गई है। दूसरी मूत्रल औषधियों के साथमें इसकी जड़को मिलाकर देने से एक सप्ताहके अन्दर ही पेशाब की मात्रा तीन चार गुनी बढ़ जाती है जिससे जलोदर और चमड़ी की सूजन दूर होकर रोगी को आराम हो जाता है।

एन्सलीके मतानुसार इसके पंचांग की राख करके उस राख को कपड़ेमें छानकर बोतलमें भरकर रखना चाहिये और जलोदर वगैरह रोगोंमें जब इसकी ताजी जड़ें न मिल सके तब उस राख को एक चम्मच भर लेकर १० तोले पानीमें डालकर अच्छी तरह हिला देना चाहिये। इस पानी को ढाई २ तोले की मात्रामें दो २ घण्टेके अन्तर से देने पर जलोदरमें बहुत लाभ होता है।

डाक्टर नॉडकरनी का कथन है कि इसकी जड़ शीतल, कटुपौष्टिक और स्निग्ध होती है। इसकी जड़ को १ औंस की मात्रामें ५० तोले पानीके साथ १० मिनट औटाकर नीचे उतार कर छान लेना चाहिये। यह क्वाथ जलोदर, मूत्रमार्ग और जननेन्द्रिय के रोगोंमें लाभदायक है। इसके पत्ते और बीज भी स्निग्ध और मूत्रल होते हैं और वे भी सूजनके साथ वाले जलोदर में लाभदायक होते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार औषधि प्रयोगमें इसकी जड़ें और इसके पत्ते ज्यादा काममें आते हैं। इसकी जड़ का काढ़ा यकृत सम्बन्धी विकारोंमें लाभदायक है। जननेन्द्रिय और मूत्राशय के विकारोंमें भी यह लाभदायक है। इसकी जड़ का काढ़ा अपने मूत्रल गुण की वजहसे जलोदर, गठिया और मूत्र सम्बन्धी विकारोंमें लाभ बतलाता है।

वाग्भट्ट में मतानुसार तालमखाने के पौधे का रस निकालकर पीनेसे और पत्तों का शाग खाते रहने से वातरक्त नामक कुष्ट का रोग दूर होता हैं।

बंगसेन का मत है कि इसकी जड़ और शक्कर को समान भाग लेकर मुंहमें चबानेसे जो रस पैदा होता है उस रसको प्रसव कष्टसे पीड़ाती हुई स्त्रीके कानमें डालनेसे उसको तत्काल प्रसव हो जाता है।

हारीत का कथन है कि इसकी जड़ों को उकालकर पीने से बहुत दिनों की उचटी हुई निद्रा फिर गहरे रूपमें आने लगती हैं।

चरक का मत है कि गोखरू, तालमखाना और एरंडी की जड़ को दूधमें घिसकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात और पथरी रोग दूर होते हैं।

बनावटें—

कामशक्तिवर्द्धक चूर्ण— तालमखाने के बीज, कौंचके बीज, गोखरू, बलबीज, कालीमूसली

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शतावरी, सालमपंजा, चोबचीनी, बादाम, चिरौंजी, पिस्ता, खस २, इलायची, केशर, लौंग, जायफल जावित्री, तज, गिलोयका सत्व। इन सब औषधियोंको समान भाग लेकर चूर्ण कर लेना चाहिये। इस चूर्णको आधे तोलेकी मात्रामें दिनमें दो बार घी और शक्करके साथ चाटकर ऊपरसे गायका धारोष्ण दूध पी लेना चाहिये। यह चूर्ण अत्यन्त कामशक्तिवर्द्धक, वाजिकरण और नपुंसकता को दूर करने वाला है।

इसके अतिरिक्त और भी सब प्रकारके कामशक्ति वर्द्धक चूर्णों, अवलेहों और पाकों में तालमखाना एक प्रधान द्रव्य की तरह डाला जाता है जिसका वर्णन चिकित्सा ग्रन्थोंमें देखना चाहिये।

तालीस पत्र

नाम—

संस्कृत—तालीसपत्र, तालीस, धात्रीपत्र, शुकोदर, ग्रंथिकापत्र, पत्राढ्य, मुखरोगहर, इत्यादि। हिन्दी—तालीसपत्र, थूनो, बिरमी। बंगाल—तालीसपत्र, बिरमी। काश्मीर—थूनि, बर्नी, भृंगी। बबई—बरमी। गुजराती—तालीसपत्र। फ़ारसी—जरनब। अरबी—तालीसफर। लेटिन—Taxas Baccata (टेक्सस बेकेटा)।

वर्णन—

तालीसपत्रके वृक्ष बहुत ऊंचे होते हैं। इसकी डालियां जमीनकी तरफ बहुत झुकी हुई रहती हैं। इसके छोटे वृक्षोंकी छाल रेशम जैसी चिकनी और सफेद होती है। इसकी छोटी डालियोंका एक २ पत्ता चक्कर खाता हुआ निकलता है। इसके पत्ते चपटे और बहुत कम चौड़े अर्थात् $\frac{1}{12}$ इञ्च चौड़े और १ से ३ इंचतक लंबे होते हैं। इनके ऊपरका भाग गहरा हरा और चमकदार होता है। यह वृक्ष हमेशा हरा बना रहता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वैदिकमत—आयुर्वैदिक मतसे तालीसपत्र मधुर, कड़वा, गरम, हलका, तीक्ष्ण, स्वरको सुधारनेवाला, हृदयको हितकारी, अग्निदीपक, और श्वास, खांसी, कफ, वात, क्षय, गुल्म अरुचि, रुधिर विकार, वमन, अग्नि-मांद्य, मुखरोग और पित्तको नष्ट करता है।

बम्बईके अन्दर यह वस्तु दमा, श्वास नलियोंका प्रदाह और कुक्कुर खांसीको दूर करनेके काममें ली जाती है। इसके पत्ते और फल ऋतुस्राव नियामक, शांतिदायक और आक्षेप निवारक माने जाते हैं।

उत्तरी हिन्दुस्तान में इसके पत्ते ब्राम्ही या बिर्मो के नाम से अजीर्ण, और मृगी को दूर करने तथा कामोद्दीपक वस्तु की तौरपर उपयोगमें लिये जाते हैं।

इंग्लैंडमें इसके पौधोंका सत निकाला जाता है। यह सत अतिसार, पित्त, नाड़ीकी कमजोरी, दुर्बलता और ऐसा सिर दर्द जिसमें भारीपन हो उपयोगमें लिया जाता है। इसके फलोंका लुआब वायुनलियोंके पुराने प्रदाहमें और इसके पत्ते मृगीरोगमें उपयोगमें लिये जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जर्मनीके कुछ हिस्सोंमें इसकी छालका काढ़ा पागल कुत्तेके विषको दूर करनेके काममें लिया जाता है।

सुश्रुत और वाग्भट्टके मतानुसार यह वस्तु सर्पदंशके अन्दर भी फायदा बतलाती है।

डॉक्टर देसाईके मतानुसार तालीसपत्र अवसादक, संकोचविकास प्रतिबंधक और मासिक धर्मको जारी करनेवाले होते हैं। छोटी मात्रामें इनको देनेसे नाड़ी और श्वासोच्छ्वासकी गति धीमी हो जाती है। मध्यम मात्रामें इनको देनेसे श्वासोछ्वास जल्दी चलता है और हृदयकी धड़कन बढ़ जाती है। बड़ा मात्रामें इनको देनेसे चक्कर आने लगते हैं, आँचकी आती है और कभी २ प्राणघात भी हो जाता है। इस वस्तुके विषसे उल्टियां होती हैं, मतलियाँ चलती हैं, श्वासोच्छ्वास मंद हो जाता है और डूचा आ जाता है। इसके विषसे मरे हुए मनुष्यका शव चीरकर देखनेसे उसके मूत्रपिंड, आमाशय और आंतोंके अन्दर होनेवाली विकृति स्पष्ट नजर आने लगती है। तालीस पत्रसे गर्भाशयका संकोचन होता है। कई लोग यह समझकर कि इससे गर्भपात होता है इसको गर्भ गिरानेके लिये देते हैं। मगर इससे गर्भपात नहीं होता बल्कि स्त्रीकी मृत्यु हो जाती है।

उत्तरी हिन्दुस्तान में यह औषधि ज्वर में भी दी जाती है। मगर जिस ज्वरमें नाड़ी और हृदय अशक्त हो उसमें इसको नहीं देना चाहिये। कफक्षय, श्वास नलिकाकी पुरानी सूजन, दमा, खांसी और फेंफड़े के दूसरे रोगों में घबराहट दूर करने के लिये यह वस्तु उपयोगी होती है।

पेरिअराके मत से हृदयके ऊपर इस वस्तु की क्रिया सेविन और डिजिटेलिसके बीचकी होती है। सेविन की तरह इसमें मूत्रल, ऋतुस्रावनियामक और दाह जनक गुण होते हैं और यह कसेली भी होती है। डिजिटेलिस की तरह यह औषधि हृदयकी क्रिया को मन्द करती है, भारीपन लाती है और कुछ तनाव भी पैदा करती है। फिर भी डिजिटेलिस की अपेक्षा यह औषधि कम खतरनाक है। डिजिटेलिस के प्रभाव शरीर क्रिया प्रणालीमें स्थायी हो जाते हैं। मगर इसके नहीं होते। जिस प्रकार सेविन और डिजिटेलिस शान्तिदायक वस्तु की तौरपर काममें ली जाती है उसी प्रकार यह भी ली जा सकती है। पथरी, मृगी और आक्षेप के अन्दर भी यह वस्तु लाभ दायक है।

नोट—तालीस पत्रके नामसे भिन्न स्थानों पर भिन्न २ वर्गोंके झाड़ोंके पत्ते काममें लिये जाते हैं। ७५ वर्ष के पहिले फ्लेकुरटिया कॅटाफ्रेक्टा (Flacourtia Cataphracta) नामक वृक्ष, जिसको संस्कृत में प्राचीनामलक और बंगाल में पनियाल कहते हैं के पत्ते दक्षिण और हिन्दी भाषा भाषी प्रान्तों में तालीस पत्रके नामसे काममें लिये जाते थे। आजकल एबिस वेबियान (Abies Webbiana) नामक वृक्षके पत्ते बंगालमें तालिसपत्र के नामसे काममें लिये जाते हैं। इसका वर्णन चिलिराध के नामसे इस ग्रंथके तीसरे भाग में ६१२ पृष्ठ पर दिया गया है। तामील और तेलगु प्रान्तों में केसिया तमाल नामक वृक्षके पत्ते तालीसपत्र कहे जाते हैं और बम्बई में उपरोक्त टेक्सस बेकेरा नामक वृक्ष के पत्तो को तालीस पत्र कहते हैं। इस लिये इनको उपयोगमें लेते समय इस भेद को ध्यान में रखना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

त्रायमाण *

नाम—

संस्कृत—सुभद्राणी, त्रायंती, बलभद्रिका, देवबला, पालिनी त्रायमाण, भयनाशिनी। हिन्दी—त्रायमाण। यूनानी—गुलजलील। पंजाब—गाफिम। ईरान—झलील अस्फक। अरबी—झलील। लेटिन—Delphinium Zalil (डेलफिनियम झलील)

वर्णन—

यह वनस्पति ईरान के पहाड़ों में विशेष कर पैदा होती है। इसके फूल पीले होते हैं और उन पर कुछ मुलायम कांटे होते हैं। इसके पत्ते छोटे और जड़ें लंबी होती हैं। बजार में इस वनस्पतिके पंचांगके टुकड़े मिलते है। इनका रंग फीका, हरा और पीला होता है। ताजी हालतमें इनमें शहदके समान गंध आती है। इनको पानीमें डालनेके साथ ही पानी पीला और कड़वा होजाता हैं। यह वनस्पति रेशम रंगने के काममें भी आती है।

त्रायमाणके सम्बन्धमें वैद्योंके अन्दर बहुत मतभेद है। भावनगर नरेशने अपने ग्रन्थके पृष्ठ ४६३ में लिखा है कि यह क्षुद्र वनस्पति पथरीली जमीनमें अपने आप पैदा होती है और इसका आकार भांरींगणीके आकारकी तरह होता है मगर इस बातको माननेके लिये कोई पुष्ट आधार नहीं है। शहरोंमें गन्धियोंके यहाँ त्रायमाणके नामसे जो जड़ें मिलती हैं उनका आकार वैसा नहीं होता।

डॉक्टर वॉटने कामर्शल प्राडक्टस आफ इंडियामें मखज़नुल अदवियाके आधार पर जिस त्रायमाणका वर्णन किया है उसे हिन्दीमें अस्मर्क, संस्कृतमें स्पर्का और फ़ारसीमें झार कहते है। यह एक सुगन्धित द्रव्य होता है और हिन्दुस्तानमें इसका शाग बनाया जाता है मगर संस्कृत ग्रंथोंमें त्रायमाण के जो गुण बतलाये जाते हैं। वे इसमें नहीं पाये जाते।

जूनागढ़ निवासी वैद्य रघुनाथ इन्द्रजीने अपने निघंटु संग्रह नामक गंथमें त्रायमाणका वर्णन करते हुए लिखा है कि इसके पौधे भूपांथरीके पौधोंकी तरह जमीन पर फैले हुए रहते हैं। इन पौधोंके बीचमें से एक खड़ी शाखा निकलती है। उसीको त्रायमाण कहते हैं। पर यह भी बहुत संशयास्पद है। संस्कृतके अन्दर त्रायमाणके जो नाम दिये गये हैं, जैसे—मार्कव सन्दला (भांगरेके समान पत्तों वाली), अवनी

---

* नोट :— इस बनस्पति का थोड़ा परिचय गुलजलील के नामसे इस ग्रन्थके तीसरे भाग में दिया गया है। मगर कुछ विशेष परिचय मिलने की वजह से इसकी यहाँ पर पुनरावृति की जा रही है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रक्षण (अपने नीचेकी जमीनको ढककर रखने वाली चाहे जैसी बरसात पड़ने पर भी त्रायमाण के पौधेको उखाड़ा जाय तो उसके नीचे की जमीन सूखी निकलती है) इत्यादि लक्षणोंके साथ उसके लक्षण नहीं मिलते।

बंगालके अन्दर बला लताको त्रायमाण माना जाता है। चक्रदत्तकी टीकामें भी शिवदासने बला लताको त्रायमाण लिखा है। मगर यह भी गलती है। आजकल जिसको बला कहते हैं वह त्रायमाण नहीं है क्योंकि त्रायमाण हिमालय पर्वतमें होती है और बला पानी वाली जमीनमें होती है। त्रायमाण वर्ष जीवी पौधा होता है और बला बहुवर्ष जीवी पौधा है।

सुप्रसिद्ध बनस्पति शास्त्री स्व० जयकृष्ण इन्द्रजीने इसके सम्बन्ध में लिखा है कि त्रायमाण, बच्छनाग के वर्ग की वनस्पति है इसका नेचरल आर्डर रेनक्यूलस है। यह वनस्पति बंबई के बाजार में मिलती है। इसके पत्ते, फूल फल, डंखल, इत्यादि का मिला हुआ पीले रङ्ग का भूकसा ईरान से आता है। बम्बईके अन्दर यह रंगने के काममें लिया जाता है। यह वनस्पति कच्छ, काठियावाड़, गुजरात कोकण और बंगालकी तरफ पैदा नहीं होती। यह ईरानसे आती है।

इसी मत को स्वीकार करके डाक्टर देसाई ने अपने औषधि संग्रह नामक ग्रन्थ में इसको रेनक्यूलस नामक वर्ग की औषधियों के अन्दर लिखा है और इसका लेटिन नाम "डेलफिनियम झलील" और फारसी नाम "अस्प्रक" और उर्दू नाम "गुल जलील" लिखा है। हमभी इसी मतको मानकर इसका वर्णन दे रहे हैं।

गुणदोष और प्रभावः—

आयुर्वेदके मतसे त्रायमाण कसैली, शीतल, मधुर, दस्तावर, कड़वी तथा पित्तरोग, वमन, ज्वर, गुल्म, कफ, विष, शूल, भ्रम, रक्तरोग, क्षय, ग्लानि, तृषा, हृदयरोग, रक्त पित्त, बवासीर और त्रिदोष का नाश करने वाली है।

इसकी रुचि कड़वी होती है, इसके सेवनसे भूख लगती है, पाचन रस बढ़ता है, अन्न पचता है, पित्त श्राव होता है और दस्त तथा पेशाब साफ होता है। यह पेटकी वायुको नष्ट करती है जिससे उदर शूल और आफरेमें लाभ होता है। इसके पंचांगकी राख शामक और कृमिनाशक होती है यह वनस्पति बहुत प्राचीन कालसे आर्य चिकित्साके अन्दर उपयोगमें ली जातीहै। मुसलमान चिकित्सक भी इसे बहुत समय से उपयोगमें लेते है। कड़वी होनेकी वजहसे यह अजीर्ण रोग और अग्निमांद्यकी वजहसे होनेवाली शरीरकी शिथिलतामें पौष्टिक वस्तुकी तरहसे दी जाती है। मृदुविरेचक और पीड़ाशामक होनेकी वजहसे यह बवासीरमें भी उपयोगी सिद्ध होती है। इसमें मूत्रल गुण होनेकी वजहसे प्लीहोदर, यकृतोदर, जलोदर और हृदयोदरमें भी इसका प्रयोग संतोषजनक होता है। कटुपौष्टिक, मूत्रल और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मृदुविरेचक गुणोंकी वजहसे यह जीर्ण ज्वर और पित्त ज्वरमें भी लाभ पहुँचाती है। इन सब रोगोंमें इस औषधिको दूसरी उपयोगी औषधियोंके साथ दिया जाता है। इसकी राखको नीमके रसमें अथवा घीमें मिलाकर खुजली वगैरह चर्म रोगों पर लगानेसे अच्छा लाभ होता है।

मात्रा—इसकी साधारण मात्रा ३ माशे तक है जो काढ़ा बनाकर दी जाती है। यूनानी हकीम इसको प्रतिदिन १। तोलेकी मात्रामें दे देते हैं मगर इसकी इतनी बड़ी मात्रासे हृदयको नुकसान पहुँचने का डर रहता है।

तिड़ी (तिरियो)

नाम—

छोटा नागपुर—मरचइया, तिरियो। सी० पी०—तिरी। लेटिन—Pimpinella Heyneana पिम्पीनेला हाइनियेना।

ब० विवरण—

यह एक वार्षिक वनस्पति है। इसका तना सीधा होता है। इसके पत्ते तीन पत्तियों वाले रहते हैं। ये गोल और बरछी आकार के होते हैं। इनका आकार २.५ सें० मीटर लंबा और १.२ सें० मीटर चौड़ा होता है। इनकी नोक बहुत तीखी रहती है इसका फल लंब गोल होता है।

उत्पत्ति स्थान—यह कोंकन, दक्षिण उत्तरी कानड़ा, डेक्कन, सिलोन और चितगाँव में होती पैदा है।

गुण दोष और प्रभाव—

बुडके मतानुसार इसकी जड़ ज्वर में उपयोगी होती है।

क० चोपरा के मतानुसार इसकी जड़ ज्वरमें उपयोगमें ली जाती है।

तितबेगुम

नाम—

बंगाल—तितबेगुम। आसाम—हाथीभेकुटी। तेलगू—कोंदउस्ती। तामील—कोटूकटरई। लेटिन—Solanum Torvom (सोलेनम टॉरवम)।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust -

वर्णन—

यह एक झाड़ी होती है। इसकी शाखायें आड़ी टेढ़ी होती हैं। इसका पौधा मोटी रींगणी के पौधे से मिलता हुआ होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

इस औषधि के सेवन से बढ़ा हुआ यकृत ठीक हो जाता है।

तिंदू

नाम—

संस्कृत—तिंदुक, अनिलसार, अतिमुक्तक, दंतशठ, कालस्कंध, स्फूर्जक, स्रष्ट,स्यंदन, रावण, कृष्णसार, केंदू, तिंदू, इत्यादि। हिन्दी—तेंदू, तिंदू। बंगाल—गाब, मुकुरकेंडी, तेंदू। बम्बई—गाब, तेंदू, कुसी, टिम्बोरी। बुन्देलखंड—कुसी। गुजराती—टंभरू, टिम्बरवो, झीबेरवो। मराठी—टेम्बुरणी, टिम्बुरी। फारसी—आबनूस हिन्दी। तामील—कट्टारी, तुम्बिक, पनिचाइ, टुवराइ। तेलगू—इलोसु, तमिकि, गाबु, तिन्दुकि। उर्दू—तिंदू। इंग्लिश— Riber Ebony (रायबर इबोनी)। लेटिन—Dios pyros Embryopteris (डिओसपायरस एम्ब्रायटेरिस)।

वर्णन—

तिंदूके वृक्ष हिन्दुस्तानमें पंजाब और सिंधको छोड़कर प्रायः सब दूर होते हैं। इसके वृक्षकी ऊंचाई २५ से लेकर ४० फीटतक होती है। इसके पत्ते भारतवर्षमें सब दूर बीड़ियां बनानेके काममें लिये जाते हैं। इसके फूल सुगंधित और सफेद होते हैं। इसके फल ललाई लिये हुए पीले रंगके होते हैं। इन फलोंके मुँहपर एक पाँच कोने वाला ढक्कन लगा रहता है। इन फलोंके अन्दर चीकूके समान स्वादिष्ट गूदा भरा रहता है जो खानेके काममें आता है। इस गूदेके अन्दर ३। ४ काले रंगकी चमकीली गुठलियां दबी रहती हैं। इस झाड़के एक प्रकारका गोंद लगता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वैदिकमत—आयुर्वैदिक मतसे तिंदू कसेला, कड़वा, स्निग्ध, गरम, व्रणनाशक, बातको दूर करने वाला, मलरोधक और दुष्पच्य होता है। इसका कच्चा फल स्निग्ध, कसेला, हलका, मलरोधक, शीतल, रूखा और वात पैदा करनेवाला होताहै। इसका पका हुआ फल पित्त प्रमेह, रुधिर बिकार और पथरीको नष्ट करता है। यह स्वादिष्ट, स्निग्ध, दुरपच्य और वात नाशक होता है। तेंदूकी लकड़ी का सार पित्त रोगों को नष्ट करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तिन्दूका गूदा एक प्रभावशाली और उत्तम संकोचक पदार्थ है। श्लेष्म त्वचाके ऊपर इसकी प्रत्यक्ष क्रिया होती है। पुरानी आँव और अतिसारमें इसका गूदा बहुत लाभदायक होता है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे इसका कच्चा फल पहले दर्जेमें सर्द और खुश्क और पका हुआ फल पहले दर्जेमें गरम और खुश्क होता है। इसका कच्चा फल कब्जियत करने वाला और वात वर्धक है। यह श्वेत प्रदर और सुज़ाक़में लाभ पहुँचाता है, अनैच्छिक वीर्यश्रावको रोकता है, काम शक्ति वर्धक है। इसका पका हुआ फल वायु, पित्त और खूनके उपद्रवको दूर करता है।

इसके कच्चे फलका अर्क पीनेसे अतिसारमें बहुत लाभ होता है। यह अर्क स्तम्भक भी है। अगर भिलामेंके धुएंसे किसीके शरीर पर सूजन आजाय तो तिंदूकी लकड़ीको घिसकर लगानेसे फायदा होता है। तिन्दूकी लकड़ी का कालासार हैजा और पित्तके फोड़े फुन्सियोंमें लाभ पहुँचाता है। इसकी छालके काढ़ेमें तिलका तेल मिलाकर आगसे जले हुए स्थान पर लगानेसे शांति मिलती है।

हानिग्बरगरके मतानुसार इसके फल और छालमें उत्तम संकोचक तत्व रहता है। इसके फलोंका रस ताज़े जख्मों पर लगानेके लिये उत्तम वस्तु है। इसमें टेनिनका बहुत अंश रहता है। इस लिये यह एक ऐसी उपयोगी और घरेलू संकोचक औषधि है जो गरीब से गरीब मनुष्यको भी बहुत आसानी से मिल सकती है। इसके बीजोंसे निकाला हुआ तेल भी यहाँ पर रक्तातिसार और दूसरे पतले दस्तोंमें सफलता पूर्वक उपयोगमें लिया जाता है। इसकी छाल पार्यायिक ज्वरोंमें लाभदायक मानी जाती है। इसके फलोंका रस मुंहके छालों और गलेकी सूजनको दूर करनेके लिये कुल्ले करनेके काममें लिया जाता है। यह रक्तातिसार और उदरामयमें भी बहुत सफलता पूर्वक दिया जाता हैं।

चरकके मतानुसार इसके पत्तों और छालका रस दूसरी औषधियोंके साथमें सर्प विषको दूर करनेके लिये दिया जाता है।

इसके रसकी कुछ बूंदे आँखमें अञ्जनकी तरह आंजनेसे आँखें साफ़ होती हैं।

उपयोग—

अतिसार— इसके फलों को जलमें औटाने से जो तेल निकलता है उस तेल की बूंदें सोंठ के जलमें डालकर पिलानेसे अतिसार मिटता है।

(२) इसके बीजोंके चूर्ण की फक्की लेने से अतिसार मिटता है।

मुंह के छाले— इसके फल की फांट बनाकर उससे कुल्ले करने से मुंहके छाले और गलेके छाले मिटते हैं।

ताजे घाव— इसके कच्चे फलमें छेद करने से एक प्रकार का गाढ़ा, कसेला और शोषक रस निकलता है। उस रस को ताजे घावों पर लगाने से बड़ा लाभ होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्वेत प्रदर— इसके फल का ७।। माशा रस १॥ पाव जलमें डालकर स्त्री की योनिमें पिचकारी देनेसे श्वेतप्रदरमें लाभ होता है।

पार्यायिक ज्वर— इसकी छाल का क्वाथ पिलाने से बारी से आनेवाला ज्वर छूट जाता है।

नेत्ररोग— इसकी लकड़ी को घिसकर अंजन करनेसे नेत्र का ढलका बन्द हो जाता है।

भिलामें की सूजन— इसकी लकड़ी को घिसकर लेप करने से भिलामें के धुएंसे पैदा हुई सूजन मिट जाती है।

बनावटें—

तिंदू का हलवा— तिंदू का गूदा १ सेर. बिनौले की मगज आधा पाव, पिस्ता आधा पाव, बादाम का तेल ४ तोला, सफेद इलायची के बीज २ तोला, कतीरा २ तोला, केशर ३ माशे, गुलाब का अर्क आधा सेर और मिश्री २ सेर। इन सब चीजोंका हलवा बना लेना चाहिये। इस हलवे को २ तोले से ४ तोले तक की मात्रा में प्रतिदिन सेवन करनेसे कामशक्ति बहुत बढ़ती है, वीर्य पैदा होता है और पीठ तथा गुर्दे को ताकत मिलती है।

फौलाद भस्म—तिन्दूके कच्चे फल को बीज और छिलकेके साथ कूटकर उसका रस निकाल लें और फौलाद का बुरादा नमक और कांजीके साथ तीन रोज तक पीसकर बुरादे को पानीसे धोकर उसे तेंदू के रसके साथ बोतलमें इस प्रकार भरें कि फौलादके बुरादे पर पाँच उंगल ऊपर तक रस भरा रहे फिर बोतल का मुंह मजबूत बंद करके धूपमें रख दे और दिनमें कई बार हिलाते रहें। तब इसमें जोश पैदा हो जायगा। जब जोश जाता रहे और तेंदू का पानी सूख जावे तो फिर ताजा रस एक दो बार निकाल कर उस बोतलमें डालें। फौलाद की भस्म हो जायगी। यह भस्म मेदे को शक्ति देती है और क्षुधावर्धक तथा कामोत्तेजक है। यह बवासीर, जलोदर और बादी की बीमारियों को मिटाती है।

—

तिनिश

नाम—

संस्कृत—अक्षका, अश्म गर्भका, अतिमुक्तका, भस्मगर्भा, तिनिश, स्पंदनः, नेमी, रथद्रू। हिन्दी—तिनिश, तिरिच्छ, असेंडा, संदन, तिमासा। गुजराती—भीनोहारमो, हरमो, तनासी। मराठी—काला पलास, तंच, तेवास, तिवास,। बंगाल—तिनिस। बाँसवाड़ा—तूनियां। बंबई—संदन, तिमस, तिमसा, तूनियां। तामील—नरिवेंगाइ। तेलगू—नेम्मि, तेलामोटकू, तिनिश वृक्ष। लेटिन—Ougenia Oojeinensis, O. Dalbergioides (ओजिनिया ऊजेइनेन्सिस, ओजीनिया डलबेर्गिआइडस)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

तिनिशके वृक्ष हिमालय, मध्य हिन्दुस्तान, अवध, गोरखपुर और गोदावरीके किनारोंपर होते हैं। इसके वृक्षकी ऊंचाई २० से ४० फुटतककी होती है।।इसके पिंडकी गोलाई ५ से लेकर ८ फुटतककी होती है। इसकी छाल गहरे भूरे रंगकी होती है। इसके पत्ते चौड़े, अंडाकृति और २ से ६ इंचतक लंबे होते हैं। इसके लाल रंगका गोंद लगता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वैदिकमत—आयुर्वैदिकमत से तिनिश कसेला, गरम, संकोचक, कफ बातनाशक और रक्तातिसार, कोढ़, प्रमेह, मेद, व्रण, रुधिर विकार, पित्त, श्वेत कुष्ट, कृमि, दाह और पांडुरोगका नाशकरता है। इसके गोंदकी फक्की देनेसे अतिसार मिटता है। तिनिशका गोंद, सौंफ और मिश्री तीनों बराबर लेकर घी में मिलाकर चटानेसे आमातिसार मिटता है। इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूटता है।

छोटा नागपुरके अन्दरके पहाड़ी लोग जब पेशाब बहुत गहरा पीला आता है तब इसका काढ़ा बना कर देते हैं। मध्य प्रान्तके लोग इसकी छालको ज्वरनाशक वस्तुकी तौर पर काममें लेते हैं।

तिपानी

नाम—

मराठी—तिपानी। तामील—अमलई। तेलगू—इरवालू, गुआगुरि, जतिका। उड़िया—सोलोनिया लेटिन—Allophylus serratus (एलोफिलस सेरेटस)।

वर्णन—

यह वनस्पति आसाम, सिलहट, बरमा, सीलोन और भारतवर्षके दक्षिणी हिस्सेमें पैदा होती है। यह एक छोटी पराश्रयी झाड़ी होती है। इसके पत्ते अण्डाकार और रुएंदार, फूल छोटे और सफेद, तथा फल गोल, फिसलना और पकनेपर लाल होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

बेलफोरके मतानुसार इसकी ज़ड़ें संकोचक होती हैं और हिन्दुस्तानके कई भागोंमें अतिसारकी बीमारीको रोकनेके काममें ली जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तिपानी (२)

नाम—

संस्कृत—आम्लवल्लि, कंदबहुला, कंदालु, त्रिपर्णिका। मराठी—पीत्तमारि, पित्तपापड़ा, पितवेल, तिपानी। उरिया—पित्तमारि। मलयालम—नीलीनरकम। अंग्रेजी Goanese Ipecacuanha गोवानीज इपिकेंकुना। लेटिन—Naregamia Alata नरेगेमिया एलेटा।

वि०—यह एक छोटी शाखादार झाड़ी है। इसके पत्ते तीन२ के गुच्छोंमें होते हैं। इसके फूलमें५ पंखड़ियां रहती हैं। इसका फल लंबगोल होता है और इसके बीज दोनों नोकोंपर मुड़े हुवे होतेहैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसकी जड़ मीठी और शीतल होती है। यह विष नाशक और घावको पूरनेवाली है। यह दमा, वायुनलियों का प्रदाह, पित्त और व्रण को मिटाती है।

कोकण में इसके पत्ते और लकड़ी को काढ़ेके रूपमें कड़वे और सुगन्धित पदार्थों के साथमें पित्त नाशक औषधि की तरह देते हैं। इसकी जड़ एक उत्तम वमन कारक और पित्त निस्सारक पदार्थ है। इसे तीव्र पेचिश में उपयोगी माना है।

दक्षिणी भारतवर्ष में यह बनस्पति सन्धिवात और खाजमें उपयोगी मानी जाती है।

कर्नल चोपराके मतानुसार—यह वमन कारक और कफ़निस्सारक है। इसे तेज पेचिश में देते हैं। इसमें नरेगेमिन नामका उपक्षार रहता है।

तिमूर

नामः—

नेपाल—तिमूर, लेहरातिमूर। लेटिन—Zanthoxylum Oxyphyllum (झेन्थोक्सिलम ऑक्सिफिलम)।

वर्णन

यह वनस्पति कुमाऊं पहाड़ियों पर ६ हजार फीटसे ९ हजार फीटकी ऊंचाई तक पैदा होती है। पूर्व में सिकिम, भूतान और खासिया पहाड़ियों पर ४ हजार फीट से ६ हजार फीट की ऊंचाई तक होती है। यह एक हमेशा हरी रहने वाली कांटेदार झाड़ी है। इसकी छाल हरी और बादामी रंग की

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होती है। इसके पत्ते ३ से लगाकर ६ सेन्टिमीटर तक लम्बे और १·५ से लेकर ४ सेन्टिमीटर तक चौड़े होते हैं। इसके फूल गहरे बैंगनी और लाल रंग के होते हैं। इसका फल तिंदू के फल की तरह होता है और उसमें तिंदू की तरह चमकीले, काले बीज होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव,—

हिन्दुस्तान में इस वनस्पति की उपयोगिता तिन्दू की उपयोगिता की तरह ही मानी जाती है।

फिलिपाइन द्वीप में इसकी छाल उत्तेजक, अग्नि वर्धक और पौष्टिक मानी जाती है। ज्वर के अन्दर इस वस्तु को पसीना लाने के लिये देते हैं।

तिमुकिंची

नाम—

मलयालम—तिमुकिंची। लेटिन—Gastrochilus Pandurata (ग्रेस्ट्रोचिलस पेण्ड्यूरेटा)

वर्णन—

यह वनस्पति कोकण, अंडमान और मलाया प्रायद्वीप में पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

रीड के मतानुसार इसकी जड़ें पेचिश के काम में ली जाती हैं।

तिरफल

नाम—

संस्कृत—तुम्बरू। मराठी—तिरफल, चिरफल, तिसड़। तेलगू—हेट्सा। तामील—रहेट-सामरम्। लेटिन—Zanthoxylum Rhetsa (झेन्थोक्सिलम रेटसा)।

वर्णन—

यह वृक्ष दक्षिणी हिन्दुस्तान और विशेषकर कोकणमें अधिक होता है। यह एक प्रकार की

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

काँटेदार झाड़ी होती है। इसकी छाल राखके रंग की, पत्ते कटी हुई किनारों के और फूल छोटे होते हैं। फूलोंके ऊपर पीले रंगके तुर्रे लगे हुए होते हैं। इसके फल कच्ची हालतमें हरे और पकने पर काले पड़ जाते हैं। इसकी जड़की छाल लाल, सुगन्धित और कड़वी होती है। इसके फलों का स्वाद शुरूमें नीम की छालके समान कड़वा मगर बाद में अकलकरे के समान तीक्ष्ण और चिटचिटा होता है। इसके अंदर संतरे की छाल के समान गन्ध आती है। औषधि में इसके फल और जड़ें काम में आती है।

गुण दोष और प्रभाव—

इस वनस्पति का फल सुगन्धित, उष्ण, अग्निदीपक, वायुनाशक, उत्तेजक और कुछ संकोचक होता है। इसकी जड़की छाल सुगन्धित, कड़वी, मूत्रल और पौष्टिक होती है।

शरीर के अन्दर इसकी क्रिया दारुहल्दी, चोबेहयात और पीले चंपे की छाल की तरह होती हैं। शैथिल्य प्रधान अजीर्ण रोग में इसकी छाल को देने से लाभ होता है। जीर्ण आमवात में चोबे हयात से जैसा फायदा होता है वैसाही इसकी छाल से भी होता है। इससे जोड़ों का दर्द कम होता है। और रक्त शुद्ध होजाता है। आम प्रधान रोगोंमें इसको शहद के साथ देते है।

मात्रा— इसके फलके चूर्ण की मात्रा १ रत्तीसे २ रत्ती तक होती है, जो शहदके साथ दी जाती है। फलों में से बीजों को निकाल देना जरूरी होता है। इसकी जडकी छालकी मात्रा १॰से २ तोले तक की है जो फाँट बनाकर दी जाती है।

तिल

नाम—

संस्कृत—तिल, होमधान्य, जटिल, पापघ्न, पितृतर्पण, स्नेह फल, वनोद्भव, तेलफल, पूत-धान्य। हिन्दी—तिल, कालातिल, सफेद तिल। बंगाल—तिलगाछ, भादुतिल, कालातिल, कटिल, रासि। गुजराती—तल। मराठी—तिल्ली। बम्बई—कृष्णतिल, तिल। कुमाउ—भंगरू, तिल। पंजाब—कुंजा, तिल, तिल्ली। फ़ारसी—कुंजेद। अरबी—जिल्द जिलन, सिम २। तेलगू—नुव्वुलु, नुऊ,। तामील—इलु, एलू। लेटिन—Sesamum Indicum (सीसेमम इण्डिकम)।

वर्णन—

तिल की खेती भारतवर्ष में सब दूर होती है। इसका तेल खानेके काममें सारे भारतवर्ष में लिया जाता है। औषधिक प्रयोग में काला तिल काम में आता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमतसे तिल चरपरे, कड़वे, मधुर, कसेले, भारी, कफ-पित्तकारक, बलवर्धक, केशोंको हितकारी, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाले, व्रणरोपक, चर्मरोगोंमें हितकारी, दंतशूल नाशक, मलरोधक, वात विनाशक और बुद्धिवर्धक होते हैं। सब तिलोंमें कालेतिल उत्तम होते हैं। सफेद तिल मध्यम और वीर्य वर्धक होते हैं और दूसरे तिल हलके होते हैं।

तिल्लीकी खल, मधुर, रुचिकारक, तीक्ष्ण, नेत्रविकार करनेवाली, मलस्तम्भक, रूखी और कफ, वात तथा प्रमेहको नष्ट करनेवाली है।

अर्श रोगके अन्दर तिलको पीसकर गरम करके अर्शपर बांधते हैं और मक्खनके साथ खानेको देते हैं। अर्श रोग प्रायः कब्जियत होनेसे पैदा होता है और दस्त साफ होनेपर उत्तर गुदाके ऊपर दबावकी कमी होनेसे अर्श का जोर कम हो जाता दै। इस रोगमें तिल्लीके तेलकी बस्ति या एनिमा देनेसे गुदाके अन्दर १-१॥ बालिश्त तक आंतें स्निग्ध होकर मलके गुच्छे निकलजाते हैं जिससे बवासीरमें हलकापन मालूम होता है।

खाँसीके अन्दर तिलके बीजों का काढ़ा बनाकर उसमें मिश्री मिलाकर देते हैं। जिससे कफ निकलकर शांति मिलती है। गले की खराबीके वजह से पैदा हुई सूखी खांसीमें इसके ताजा पत्तों का हिम बनाकर देनेसे गलेमें चिकनाई पैदा होकर खाँसीमें आराम हो जाताहै। नवीन सुजाकमें इसके ताजे पत्तों को १२ घण्टे तक ठंडे पानीमें भिगोकर उस पानी को पिलानेसे अथवा तिल के क्षार को दूध या शहद के साथ देनेसे पेशाब की जलन कम होती है और पेशाब साफ होता है। मूत्राश्मरीके अन्दर भी इसका क्षार लाभ पहुँचाता है।

गर्भाशयके ऊपर तिलकी क्रिया बहुत प्रभावशाली होती है। इनको देनेसे गर्भाशय का संकोचन होता है और उसमें चिकनाई पैदा होनेसे पीड़ा कम हो जाती है। रक्तगुल्मके अन्दर इनके बीजों का काढ़ा पीपलामूल के साथ देते हैं। स्त्रियोंके अनार्तव में इसके बीजों का काढ़ा बच, पीपलामूल और गुड़के साथ दिया जाता है और तिलके पत्तों का काढ़ा बनाकर उस काढ़ेमें रोगिणी को बिठाया जाता है।

तिल का तेल सब प्रकारके व्रण और जख्मों के ऊपर लगानेके काममें लिया जाता है। गर्मी के दिनोंमें दूसरे व्रणरोपक या व्रणशोधक द्रव्यों की अपेक्षा यह तेल अधिक हितकारी होता है।

तिलका क्षार निकालने की विधि—

तिल के पंचांग को उखाड़कर उसको जलाकर उसकी राख कर लेना चाहिये। उस राख को

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पानीमें घोल देना चाहिये और पानीके वर्तन को स्थिर पड़ा रहने देना चाहिये। जब सब राख नीचे बैठ जाय तब साफ पानी को निथारकर अग्नि पर चढ़ा देना चाहिए। जब रबड़ी सरीखा होजाय तब उसको उतारकर सुखा लेना चाहिये।

यूनानी मत— यूनानी मतसे तिल की जड़ और इसके बीज रक्तवर्धक, बालोंके लिए लाभकारी और कामोद्दीपक होते हैं। ये गले की पीड़ा, जलन, सर्प और बिच्छूके विष, पथरी, खूनी बवासीर और तिल्लीकी पीड़ामें उपयोगी होते हैं। अत्यधिक रजः स्रावको ये दुरुस्त करते हैं, जोड़ों के दर्द पर इनका लेप करनेसे फायदा होता है। इनके बीजों का तेल मीठा और मज्जावर्धक होता है। यह सूखी खाँसी श्वास, फेफड़े की बीमारी, नेत्ररोग, कर्णरोग, छोटी माता, जोड़ों की गठिया, उपदंश के घाव और पेशाब की जलनमें लाभदायक होता है।

तिल्लीके बीज स्नेहन, पौष्टिक, मूत्रल और दुग्धवर्धक होते हैं। इनके बीजोंको पानीके साथ पीस कर उनकी लुग्दी बनाकर मक्खनके साथ मिलाकर देनेसे बवासीरमें लाभ होता है। तिल्लीसे बनाई हुई मिठाई भी बवासीरमें बहुत लाभ पहुँचाती है। इसके बीजोंसे बनाया हुआ पुल्टिस व्रणपर लगानेसे व्रण में लाभ होता है। पेचिश और मूत्र सम्बन्धी बीमारियोंमें तिल्लीका तेल और तिल्लीके बीज शांतिदायक वस्तुकी बतौर काममें लिये जाते हैं।

तिल्लीका काढ़ा ऋतुस्राव नियामक माना जाता है। इस काढ़ेमें शक्कर डालकर देनेसे खांसीमें भी लाभ होता है। तिल्लीके बीजोंको पीसकर इनकी पट्टी जलन और खाजपर लगानेसे शांति मिलती है। इसके पत्तोंसे तैयार किया हुआ लोशन बालोंको धोनेके काममें लिया जाता है। इससे बाल बढ़ते हैं और काले होते हैं।

कम्बोडियामें इस वनस्पतिका प्रत्येक हिस्सा मूत्रल वस्तुकी तौरपर काममें लिया जाता है। इसके बीजोंका तेल मासिक धर्मको नियमित करनेके लिये थोड़ी मात्रामें पिलाया जाता है और बड़ी मात्रामें गर्भपातके लिये दिया जाता है।

मेडागास्करमें इस वनस्पतिका प्रत्येक हिस्सा स्निग्धता कारक और विरेचक माना जाता है। इसके पत्तोंका शीत निर्यास श्वास क्रिया प्रणालीकी बीमारीमें दिया जाता है।

डाक्टर एवर्सका (Evers) कथन है कि भारतमें पैदा होनेवाले तिलके पत्तोंसे प्राप्त किया हुआ लुआब पेचिशकी बीमारीमें करीब १६ बीमारों पर आजमाया गया और सभीको इससे फायदा पहुँचा। जिन रोगियोंपर यह आजमाया गया उनका रोग अधिक तीव्र नहीं था। वर्षा ऋतुके बाद जो स्वाभाविक पेचिशकी बीमारी हो जाती है उसीसे वे लोग पीड़ित थे। अगर इस औषधिके साथ कुछ अफीम मिला दी जाय तो अधिक लाभ होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डाक्टर ईवन्स का कथन है कि १० ग्रेनकी मात्रामें इसके बीजोंका चूर्ण ऋतुस्राव को नियमित करनेके लिये दिनमें ३।४ बार देकर उन्होंने सफलता प्राप्तकी है। इनका कथन है कि भारतके दक्षिणमें यह विश्वास किया जाता है कि इसके बीज गर्भवती स्त्रीको देनेसे गर्भपात हो जाता है किन्तु इस प्रकार का उदाहरण अभीतक देखनेमें नहीं आया।

वॉट्सका मत है कि उन्होंने इस वस्तुको सुज़ाककी बिमारीमें काममें लिया और यह उपयोगी सिद्ध हुई।

बोस और कीर्तिकरके मतानुसार इसके बीज एक शक्तिशाली ऋतुस्राव नियामक औषधि है। भारत और ब्रिटेनमें यह विश्वास किया जाता है कि अगर अधिक मात्रामें इसके बीजोंको लिया जाय तो ये गर्भपात कर देते हैं।

शारङ्गधरके मतानुसार इसके बीजोंको पानीके साथ पीसकर लेनेसे रक्तार्शमें लाभ होता है।

सुश्रुतके मतानुसार इसके पत्ते सांप और बिच्छूके विषमें लाभदायक है।

रासायनिक विश्लेषण—तिलके अन्दर लोहा, केलशियम, और फास्फोरस की मात्रा काफी पाई जातीहै। पौने दो छटाक तिलमें १०.५ मिलिग्राम लोहा, १.४५ग्राम केलशियम और. ५७ ग्राम फास्फोरस पाया जाता है। मनुष्य शरीरके पोषणके लिये जितने केलशियमकी आवश्यकता होती है। उतना केलशियम १। छटांक तिलमें प्रतिदिन मिल सकता है। उसके साथ ही उससे लोहा और फासफोरसकी मात्रा भी प्राप्त हो जाती है। अगर तिलको गुड़में मिलाकर उनके लड्डु बनाकर खाये जायँ तो और भी अधिक लाभदायक होता है क्योंकि पौने दो छटांक गुड़में ११.४ मिलिग्राम लोहा और .०४ ग्राम फास्फोरस अलग मिल जाता है। इसलिये मनुष्य शरीरके दैनिक भोजनमें तिलका होना बहुत जरूरी है।

उपयोग—

खूनी बवासीर—तिलोंको जलके साथ पीसकर मक्खनमें मिलाकर चाटनेसे खूनी बवासीरका खून बंद हो जाता है।

मासिक धर्मकी रुकावट—तिलके काढ़ेमें सोंठ, मिर्च और पीपरका चूर्ण डालकर पिलानेसे मासिक धर्मकी रुकावट मिटती है।

सूखी खांसी—तिल और मिश्रीको औटाकर पिलानेसे सूखी खाँसी मिटती है।

अग्नि से जलना—तिलों को पीसकर अग्निसे जले हुए स्थान पर लेप करनेसे शांति मिलती है।

मोच—तिल और महुओं को पीसकर मोच के ऊपर बाँधने से हड्डी में आई हुइ मोच मिट जाती हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नेत्ररोग—तिलके फूलोंके ऊपर सरदीके दिनोंमें जो ओस कण पड़ते हैं उनको एक मलमलके कपड़े से एकत्रित करके शीशीमें भर रखना चाहिये। इस जलको नेत्रोंमें टपकानेसे सब प्रकारके नेत्र रोग मिटते हैं।

अतिसार—तिलके पत्तोंका लुआब पानीमें निकालकर पिलानेसे अतिसार, आमातिसार, विशूचिका और मूत्रनाली के रोगोंमें लाभ होता है। इस लुआबमें अफीम मिला देनेसे यह आमातिसार के लिये और भी प्रभावशाली हो जाता है।

गर्भाशय सम्बन्धी रोग—गर्भाशयमें रुधिरके जमावको बिखेरनेके लिये पांच २ रत्ती तिलोंका चूर्ण दिनमें ३।४ वार देनेसे और इस रोग वाली स्त्री को कमर तक उष्ण जलमें बिठानेसे लाभ होता है।

नागफनी थूहरका काँटा—जब नागफनी थूहरका काँटा किसीको लगजावे और वह चिमटे या और किसी यन्त्रसे न निकाला जावे तो उस जगह तिल्लीका तेल बार बार लगानेसे कुछ समयमें वह काँटा बिना परिश्रमके निकलजाता है।

मस्तक पीड़ा—तिलके पत्तोंको सिरके या पानीमें पीसकर मस्तक पर लेप करनेसे मस्तक पीड़ा मिट जाती है।

पथरी—तिलकी कोंपलोंको छायामें सुखाकर उनकी राख करके ७ माशे से १० माशे तक रोज लेनेसे पथरी गलजाती है।

गर्भाशयकी पीड़ा—तिलों को तेलमें पीसकर गरम करके नाभिके नीचे लेप करनेसे सर्दीसे हुई गर्भाशयकी पीड़ा मिटती है।

मुहाँसे—तिलोंको सिरस की छाल और सिरके के साथ मलने से मुहाँसे मिटते हैं।

विषम ज्वर—तिल्लीकी लुगदीको घीके साथ लेनेसे विषमज्वरमें लाभ होता है।

मकड़ीका विष—तिलकी खल और हलदीको पानीके साथ पीस कर लेप करनेसे मकडी का बिष उतरता है।

भिलामेंकी सूजन—तिल और मक्खनको पीस कर लेप करनेसे भिलामे से पैदा हुई सूजन मिटती है।

बालोंकी सफेदी—तिलकी जड़ और तिलके पत्तोंके क्वाथसे बालोंको धोनेसे बालोंमें काला रंग पैदा होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसायन—काले तिल और जल भांगरेके पत्तोंका लगातार एक मास तक सेवन करने से और पथ्यमें सिर्फ दूधका अहार करनेसे कई प्रकारके रोग मिटते हैं और रसायन का प्रभाव हो जाता है।

तिलक

नाम—

संस्कृत— तिलक, क्षुरक, श्रीमान्, छिन्न पुष्पक, पुंड्र पुंडक, बासन्त सुन्दर, दुग्धरुह, पुन्नाग, इत्यादि। हिन्दी—तिलक पुष्प। गुजराती—तिलक वृक्ष। मराठी— तिलपुष्पक।

वर्णन—

तिलक वृक्ष का फूल तिलके फूल के समान होता है। इस फूलमें सुगन्धि आती है। इसका फल पीपलके समान और मधुर होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मत से तिलक मधुर, स्निग्ध; पौष्टिक, बलवर्धक, मेदजनक, हृदय को हितकारी, हलका, रसमें अत्यन्त उष्ण, पचनेमें चरपरा, रसायन, तीक्ष्ण, रूखा तथा दंतरोग, कृमि, कुष्ट, वात पित्त, कफ, विष, कंडु, व्रण, रुधिर विकार, दुग्ध रोग और वस्ति रोग का नाश करता हैं। इसको किसी भी क्षारमें मिलाकर देनेसे यह गुल्म, शूल और उदररोग को दूर करता है। इसकी छाल कसेली, गरम, पुरुषार्थनाशक और दन्तरोग, रुधिर विकार, कृमि, व्रण और सूजन को दूर करनेवाली है।

तिलफाडा

नाम—

सीमान्त प्रदेश— तिलफाड़ा। लेटिन— Cocculus Laurifolius (कोक्यूलस लोरिफोलिअस)।

वर्णन—

यह वनस्पति नेपालसे लेकर जम्मू तक ५ हजार फीट की ऊँचाई तक पैदा होती है। मद्रास

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रेसिडेन्सी, पूर्वी बंगाल और पश्चिमीघाट में भी यह पाई जाती है। यह एक हमेशा हरी रहनेवाली झाड़ी है। इसकी छाल चिकनी, पत्ते अंडाकर, फल गोल, चमकीले, काले और रसदार होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

मलाया प्रायद्वीप की जंगली जातियाँ इस वनस्पति को अपने बाण जहरीले बनाने के काममें लेती हैं।

कर्नल चोपरा के मतानुसार यह वनस्पति विषैली होती है। इसमें काकलोटाइन नामक एक पदार्थ पाया जाता है।

तिलवन

इस वनस्पति का वर्णन इस ग्रन्थ के द्वितीय भागके ४४५ पर "करेलिया" के प्रकरण में देखिये।

तिलिया कोरी

नाम—

बंगाल—तिलियाकोरी। हिन्दी—करवान्त, बगमूशदा, रंगोई, करात। मलयालम—बल्लिकन्निरम। तेलगू—कपत्तिगे, तागमूशि, नल्लत्तिगे, पटवेरू, तिगेमुशि, वेत्तिचित्रमूलानू। उंरिया—कोलिचिती। लेटिन—Tiliacora Aeuminata तिलियाकोरा एक्यूमिनेटा।

वर्णन—

यह एक पराश्रयीलता है। इसके कोमल हिस्से रुएंदार होते हैं। इसके पत्ते ७·५से१५ सेन्टिमीटर तक लंबे और ३·८ से १० सें० मीटर तक चौड़े होते हैं इनमें ३ से लगाकर ५ तक नसें होती है। ये गोलाकार और तीखी नोकवाले होते हैं। ये दोनों तरफ चमकते हैं। इनके पत्र वृन्त १·३ ये २ से मीटर तक लंबे होते हैं। इनके फूल पीले रहते हैं। नरपुष्प और नारी पुष्प दोनोंही के सपल एक समान होते हैं। दोनों ही में पंखड़ियां भी बराबर होती है। इसका फल १-३ सें० मीटर लंबा मोटा और चपटा होता है।

उत्पत्तिस्थान—यह बनस्पति बंगालासे लेकर उडिसा, कोकन, सिंघापुर, जावा और कोचीन और चायना में पैदा होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण दोष और प्रभाव—

इसकी जड़को पत्थर पर पीसकर पानीके साथ मिलाकर जहरीले सर्पोंके काटनेपर पिलाते हैं ऐसा रॉक्स वर्गोंका कहना हैं।

महस्कर और केसके मतानुसार इसकी जड़ सर्पके काटनेपर निरुपयोगी है।

क० चौपराके मतानुसार यह सर्प विषको निवारण करनेवाली मानी जातीहै। इसमें तिलियाकोराइन नामका उपक्षार रहता है।

त्रिनपालि

नाम—

हिन्दी—त्रिनपालि, कंगनी। राजपुताना—धतूरोघास। अजमेर—कंगनी। बरार—रतोप। गुजराती—कासियन, कसियनघास। लेटिन—Manisuris Granularis मेनीसुरीस ग्रेनुलेरिस।

वर्णन—

यह एक प्रकार का घास होता है जो हिन्दुस्तानके गरम भागोंमें पैदा होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

एन्सलीके मतानुसार विहारके अन्दर प्लीहा और यकृतके बढ़ने पर यह औषधि मीठे तेलके साथ मिलाकर खिलाई जाती है।

त्रिपत्र

नामः—

पंजाब—त्रिपत्र। लेटिन— Tripolium Pratense त्रिपोलियम प्रेटेन्स।

गुणदोष और प्रभाव—

क० चोपराके मतानुसार—इसमें ग्लूकोसाइड, त्रिपोलिम और आइसो त्रिपोलिक नामक पदार्थ रहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

त्रिपंखी

नाम—

संस्कृत—त्रिपक्षी। हिन्दी—त्रिपंखी, त्रिपुंगकी। बम्बई—त्रिपक्षी। गुजराती—वासरियो ओखराड़। कच्छी—ओखराड़। तेलगू—हेमपदी। तामील—सेरुपदी। लेटिन—Coldenia Procumbens (कोल्डेनिया प्रोकमबेंस)।

वर्णन—

इस वनस्पति का पौधा रुएंदार होता है और वह जमीनपर फैला हुआ रहता है। इसके पत्ते गोल और दांतेदार होते हैं। इनपर बहुत रुआँ होता है। इसके फूल छोटे और सफेद होते हैं। इसका फल नीचे से चौड़ा और ऊपरसे अणीदार होता है। हर एक फलमें चार २ बीज रहते हैं।

गुण, दोष तथा प्रभाव—

इस वनस्पति का पंचांग सूजनको नष्ट करने वाला माना जाता है। इसकी राख को तेलमें मिलाकर ढोरोंके फोड़ों पर लगानेसे फोड़े अच्छे हो जाते हैं। इसके पत्तों को पीसकर संधिवात की सूजन पर लगाते हैं।

इसके पंचांगके चूर्ण को समान भाग मेथीके चूर्णके साथ मिलाकर उसका पुल्टिस बनाकर बालतोड़ पर बाँधने से बालतोड़ बहुत जल्दी आराम होजाता है।

तीताफूल

नाम—

आसाम—तीताफूल, बखतीता। गढ़वाल—कलदूना, कवादोनी। नेपाल—सूवा, चुआ। पंजाब—लालबहुक। लेटिन—Phlogacanthus Thyrsiflorus (फ्लोगेकेंथस थिरसीफ्लोरस)

वर्णन—

यह वनस्पति उत्तरी गंगाके मैदानमें और हिमालयमें ४ हजार फीट तककी ऊंचाईपर होती है। यह एक हमेशा हरी रहने वाली झाडी है। इसकी छाल चिकनी और भूरे रंगकी होती है। इसके पत्ते १५ से लेकर ३० सेंटि मीटर तक लम्बे, गहरे हरे रंगके, चमकीले और तीन २ के गुच्छोंमें लगने वाले होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण, दोष और प्रभाव—

इस औषधिके गुण धर्म अङ्सेके गुण धर्मसे मिलते जुलते हैं।

तुइया

नाम—

तेगेलाग—तुइया। लेटिन—Pouzolzia Indica (पाउझोलझिया इंडिका)।

वर्णन—

यह वनस्पति सारे भारतवर्षमें पैदा होती है। इसका तना सीधा रहता है। इसकी वाली लंबगोल और चमकीली होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति उपदंश, सुजाक, और सर्प विषमें उपयोगी है।

तुक्किर (असरून)

नाम—

संस्कृत—ऊपन। हिन्दी-बंगाल—तुक्किर,तग्गर। तामील—मूत्रीकुंजेवेई। तेलगू—चेप्पुतुतकू। लेटिन—Asarum Europoeum (असारूम यूरोपियम)।

वर्णन—

यह बहुवर्षायु क्षुद्र वनस्पति हिमालय, काश्मीर वगैरह ठंडे प्रान्तोंमें पैदा होती है। इसके पत्ते मूत्रपिंडके आकारके अखंड और रुएंदार होते हैं। पत्तेका डंखल तीन इंचके करीब लंबा होता है। इसकी जड़ गठानदार, चौकोर और जमीनमें बहुत गहरी घुसी हुई होती है। इस जड़में मिरचके समान गंध आती है।

गुणदोष और प्रभाव—

असरूनके अन्दर गर्मीसे उड़नेवाला एक उड़नशील तेल एक पीले रंगका पदार्थ, और एक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दाह जनक और तेज घीके समान पदार्थ पाया जाता है। इस वनस्पतिके धर्म इपिकेकोना के समान होते हैं। इसके पंचांगके चूर्णकी २० से ३० रत्ती तक की मात्रा देनेसे वमन होती है और ३० रत्तीसे अधिक मात्रा देनेसे बहुत जोरका जुलाब होता है। इसके चूर्णको सूंघनेसे नाकसे बहुत कफ गिरकर शिरो विरेचन होजाता है। यह वनस्पति स्वेद जनन, कफ नाशक, वामक, शोथघ्न और शिरो विरेचक है। आंखोंकी कैसी ही सूजन में इसको पीसकर पट्टी चढ़ानेसे और पेटमें खिलाने से लाभ होता है। शरीरके अन्दर अगर कफ जड़ जमावे तो इसके पंचांगकी फांट देनेसे वह बिखर जाता है।

मात्रा—इसकी साधारण मात्रा ३ से ६ रत्ती तक है।

तुख्म हमाज

नाम—

यूनानी—तुख्म हमाज।

वर्णन—

यह एक काले रंगका चमकदार बीज होता है। जो छिलके के अन्दर रहता है। इसके छिलके का रंग लाल होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह पहले दर्जेमें सर्द और दूसरे दर्जेमें खुश्क है। यह कब्जियत पैदा करता है। हृदय, आमाशय और यकृत की बीमारियोंमें लाभ दायक है। पीलिया, वमन और पित्तकी वजहसे होने वाली खूनकी दस्तोंको बंद करता है। रक्त शोधक है, पित्तकी तेजीको शान्त करता है, गर्मीके पागलपनमें मुफीद हैं, आँतोंको साफ करती है, जिससे आंतोंके जखम और पेचिशमें लाभ होता है। इसको आगपर भूनकर देनेसे दस्त बन्द होते हैं और बिना भुने हुए देनेसे दस्त खुलकर आता है। यह बिच्छूके विषमें भी लाभ दायक है। ऐसा कहा जाता है कि जो मनुष्य तुख्म हमाज खाते हैं उनपर बिच्छूका जहर असर नहीं करता। यह श्वेत प्रदरके अन्दर भी लाभ पहुँचाता है।

मुजिर—इसके अधिक सेवनसे तिल्ली और गुर्देको नुकसान पहुचाता है।

दर्पनाशक—इसकी दर्प नाशक सौंफ है।

प्रतिनिधी—इसका प्रतिनिधि तुख्म बारतंग है।

मात्रा—इसकी मात्रा ७ माशे से १० माशे तक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तुख्म रिहाँ

यह माल तुलसीके बीज हैं। इनका वर्णन माल तुलसीके प्रकरण में देखना चाहिये

तुख्म कशूस

नाम—

यूनानी—तुख्म कशूस। अरबी—बजरुल कशूर। फरसी—तुख्म बर्श।

वर्णन—

तुख्म कशूस अमरबेलके बीजोंको कहते हैं। ये बीज बहुत कठिनाईसे किसी २ बेल पर मिलते हैं। इसके बीज मूलीके बीज से छोटे, खुरासानी अजवायनके बीजों की तरह होते हैं। ये पीलापन लिये हुए लाल रंगके होते हैं। इनका स्वाद कड़वा होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

शेख के मतसे ये पहिले दर्जेमें गरम और दूसरे दर्जेमें खुश्क है। ये जिगर, मेदा और आंतोंके सुद्दों को खोलते हैं, पीलिया और कामला को दूर करते हैं। पुराने बुखार को दूर करनेमें बेजोड़ हैं। मूत्र, पसीना और मासिकधर्म को बढ़ाते हैं, हिचकी में लाभदायक हैं, रक्तावरोधक हैं, श्वेत-प्रदर को दूर करते हैं। इनसे शर्बत दिनार बनता है उसका नुसॅखा इस ग्रन्थ के पहले भागमें अमर बेल के प्रकरण में देखना चाहिए।

मुजिर—इनका अधिक सेवन तिल्ली, मसाने और फेफड़े में विकार पैदा करता है।

दर्पनाशक—शिकंजबीन, शहद और कतीरा इसके दर्प को नष्ट करते हैं।

प्रतिनिधि— कासनीके बीज, अफसंतीन और तुलसीके बीज इनके प्रतिनिधि हैं।

मात्रा— ७ माशे तक है।

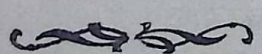

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तुख्म आशिस्त

नाम—

यूनानी— तुख्य आशिस्त ।

वर्णन—

ये आशिस्तके बीज हैं । जो पीले रंगके होते हैं ।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मत से ये पहले दर्जेमें में गरम और तर हैं । इनका खास उपयोग कामशक्ति को बढ़ाने के लिए किया जाता है । इनके सेवनसे पुरुषों में वीर्य और स्त्रियों में दूध बढ़ता है, मासिक धर्म साफ होता है, सीने की खुजली और खाँसी मिटती है, उत्तम रक्त पैदा होता है, इनको पीनेसे और लगाने से लकवा, फालिज और कंप वातमें लाभ पहुँचाता है ।

मात्रा— इनकी मात्रा ७ माशे से १७ माशे तक है ।

तुख्म शरबती

नाम—

यूनानी—तुख्म शरबती ।

गुण दोष और प्रभाव

ये शरीरमें प्रसन्नता पैदा करते है । पेट की वायु और आफरे को दूर करते है । कांबिज हैं । इनको पानीमें पीसकर स्तनों पर लेप करनेसे दूध बढ़ता है ।

मात्रा—इनकी मात्रा ७ माशे से १ तोला तक है ।

तुख्म फरुंज मुश्क

नाम—

यूनानी व हिन्दी—तुख्म फेरुंज मिश्क । अरबी—असबेल फतियात् । लेटिन Dracocephalum moldavicum (ड्रेकोसेफेलम मोल्डेविकम) ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

यह वनस्पति काश्मीरमें ७ हजार फीटसे ८ हजार फीटकी ऊंचाई तक पैदा होती है। यह एक वर्ष जीवी वनस्पति है। इसकी डालियाँ जड़से ही फूट जाती है। इसके पत्ते २-५ से लेकर ५ सेंटिमीटर तक लंबे होते हैं। इसके बीज लंवगोल होते हैं। कुछ लोगों के मतानुसार तुख्म फेरुंज मुश्क माल तुलसीके बीज हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानीमतके अनुसार इसके बीज कड़वे, संकोचक, पौष्टिक और शाँतिदायक होते हैं। ये मस्तिष्क की बीमारियोंके लिये लाभदायक हैं।

इरविनके मतानुसार इसके बीज ज्वरमें शांतिदायक पदर्थ की बतौर लिये जाते हैं।

युरोपमें यह वनस्पति पौष्टिक, संकोचक और घाव पूरक मानी जाती है।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसके बीज शाँतिदायक है और इनमें एक प्रकारका उड़न शील तेल पाया जाता है।

तुख्म बलंगू

नाम—

पंजाब—तुख्म बलंगा। लेटिन—Salvia Egyptiaca (सेजविय इजिप्टिका)।

वर्णन—

यह वनस्पति पंजाबके मैदान, सिंध और बलूचिस्तानमें पैदा होती है। यह एक छोटी बहुशाखी झाड़ी है। इसके पत्ते बरछी आकारके और तीखी नोक वाले होते हैं। इसके फूल मंजरीके रूपमें लगते हैं। इसका बीज लंबगोल, चमकीला और काले रंगका होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके बीज हृदय शक्ति वर्धक तथा पागलपन, कम्पन और मरोड़ युक्त पेचिश, में लाभ दायक है इनको ६ माशे की मात्रा में खांडके साथ गायके दूधमें के साथ लेनेसे प्रमेह नाश होता है।

स्टैवर्टके मतानुसार इसके बीज अतिसार, सुजाक और खूनी बवासीरमें लाभदायक है।

ह्व्ज बूलरके मतानुसार यह वनस्पति नेत्ररोगोंमें काममें ली जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तुख्म मलंगा

नाम—

पंजाब—तुख्म मलंगा। लेटिन—Nepeta Elliptica (नेपेटा इलिप्टिका)।

वर्णन—

यह वनस्पति पश्चिमी हिमालयमें कश्मीरसे कुमाऊं तक ५हजार फीटसे ८ हजार फीटकी ऊंचाई तक पैदा होती है। इसका तना रुएंदार पत्ते लम्ब गोल और फूल फ़ीके रंगके होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके बीजोंको ठण्डे पानीमें गलाकर इनका शीत निर्यास पेचिशकी बीमारीमें दिया जाता है।

——

तुतुम्बड़ी जटा

नाम—

यूनानी—तुतुम्बडी जटा।

वर्णन—

यह एक बेल होती है। ईसका तना पतला और मजबूत, पत्ते सफेदी माइल, बीज राईके समान और रस कडवा होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके पत्ते और बीज शक्तिवर्धक हैं। इनके सेवनसे बंध्या स्त्री गर्भवती होती है।

——

तुम्बरू (नेपाली धनियां)

नामः—

संस्कृत-अंधक, तुम्बरू, तीक्ष्णपत्र, तीक्ष्णफल, महामुनी, सौरभ, द्विज, शूलघ्न, इत्यादि। हिन्दी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तुम्बरू, नेपाली धनिया, दरमार, तेजपाल, तेजफल । बंगाल—नेपालीधने, तुन । मराठी–चिरफल, नेपाली धनियां । नेपाल—बलेतिमूर । पंजाब–कबबा,तेजबल,तुम्बर, तीमरू । यूनानी—फाघीरेह । उर्दू—कबाबेह । लेटिन—Zanthoxylum Alatum (झैंथोक्सिलम एलेटम ।

वर्णन—

यह वनस्पति हिमालयमें सिंधसे कुमाऊंतक ५ हजार फीट से ७ हजार फीटतककी उंचाई पर पैदा होती है । नेपालमें भी यह बहुत पैदा होती है । इसके बीज बिलकुल धनियेंकी तरह होते हैं । इनकी गंध और रुचि भी धनियेंके समान ही होती है । इसी लिये इसको नेपाली धनियाँ कहते हैं । यह एक हमेशा हरी रहनेवाली वनस्पति है । इसकी शाखाएं चिकनी और हरी होती हैं । इसका छिलका फीके बादामी रंगका और इसका फल लाल और लंबगोल होता है । इस फलके अन्दर बीज रहते है जो धनियेके समान होते हैं ।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे इसका फल मीठा, कड़वा, गरम, दीपन, पाचन, ग्राही, वायुनाशक, क्षुधावर्धक, कृमिनाशक और उत्तेजक होता है । यह कफ, बात, अर्बुद, शूल, उदर रोग, आंख और कानके रोग, होंठके रोग, सिरका भारीपन, धवल रोग, दमा और तिल्ली तथा पेशाबके रोगोंमें लाभदायक है ।

नेपाली धनियेंके तेलकी क्रिया शरीर पर गंधाबिरोजा और युकलिप्टस ऑइलकी तरह होती हैं । इसकी छालकी क्रिया दारू हल्दीके समान होती है ।

यह वस्तु उत्तरी हिन्दुस्तानके अन्दर बहुत काममें ली जाती है । वहां इसके बीजोंको हुक्केमें रखकर उनका धूम्रपान दमेको दूर करनेके लिये करते हैं । अजीर्ण और अतिसारको दूर करनेके लिये इसके फलोंका उपयोग किया जाता है । इस वनस्पतिका उत्तेजक धर्म बहुत उत्तम है । इसमें पाया जानेवाला उत्तेजक तत्व इसके ताजे पत्तों और सूखी जड़ोंकी छालमें दिखलाई देता है । इसकी छालका क्वाथ या इसके पत्तोंका रस पीनेसे यह उत्तेजक द्रव्य त्वचाके रास्ते पसीनेके साथ बाहर निकलता है । जिसकी वजहसे श्लेष्मत्वचा और व्रणोंकी शुद्धि हो जाती है और शरीरमें यदि ज्वर हो तो पसीनेकी राहसे हलका पड़ जाता है । इसके ताजे पत्तोंको पीसकर चांवलके आटेके साथ गरम करके गलेपर बाँधनेसे गलेकी सूजन मिट जाती है । व्रणरोगमें इसके फलोंको खिलानेसे और इसके चूर्णको व्रणपर भुर भुरानेसे और इसकी छालके काढ़ेसे व्रणको धोनेसे बड़ा लाभ होता है ।

रसायनिक विश्लेषण— इसकी छालके अन्दर एक उड़नशील तेल, राल और एक प्रकार का कड़वा रवेदार सत्व पाया जाता है । यह सत्व और दारुहल्दी में पाया जाने वाला सत्व करीब २

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

समान होते हैं। इसके फलोंमें एक प्रकारका स्थिर और सुगन्धित तेल रहता है। यह तेल और गन्धा विरोजा का तेल करीब २ समान होता है। इस तेलमें रंग नहीं होता। किन्तु युकलिप्टस ऑइल की तरह एक मनोहर सुगन्ध होती है।

यूनानी मत— यूनानी मतसे इसके बीज सुगन्धित, तीक्ष्ण और पौष्टिक होते हैं। अपने संकोचक गुण की वजह से ये अतिसार में बहुत लाभ पहुँचाते हैं। पेट का आफरा, छाती के रोग, मस्तिष्क की बीमारियाँ, पागलपन और रक्तविकारमें भी यह बहुत लाभदायक हैं। इनके सेवनसे यकृत मजबूत होता है, जठराग्नि प्रबल होती है और मुँह की सूजन मिटती है।

ज्वरमें यह औषधि एक सुगन्धित और पौष्टिक पदार्थ की तरह काममें ली जाती है। हैजे और मन्दाग्निमें भी यह मुफीद है।

निघण्टु रत्नाकर और योग रत्नाकर के मतानुसार इसके फूल दूसरी औषधियों के साथमें सर्पविष को दूर करने के लिए देते हैं।

कर्नल चोपरा के मतानुसार यह औषधि सुगन्धित, पौष्टिक, ज्वरमें लाभदायक और अग्निमांद्य तथा हैजेमें फायदा पहुँचानेवाली होती है।

मात्रा— इसके फल की मात्रा २ रत्तीसे ५ रत्ती तक है और छाल की मात्रा १ तोलेसे २ तोले तक है जो फाँट बनाकर दी जाती है।

उपयोग—

पित्त की मंदाग्नि— मिश्रीके साथ इसके बीजों की फक्की देनेसे पित्त की मन्दाग्नि मिटती है।

पित्तातिसार—बेलके शरबत के साथ इनकी फ़क्की देनेसे पित्तातिसार मिटता है।

गठिया—इसकी छाल को औटाकर पीनेसे गठिया मिटती है।

दांतकी पीड़ा— इसकी शाखा और कांटों को औटाकर कुल्ले करनेसे दांत की पीड़ा मिटती है। इसकी शाखासे दाँतुन करनेसे दांत निर्मल होजाते हैं।

विशूचिका— इसकी जड़ की छाल का क्वाथ पिलानेसे विशूचिका में लाभ होता है।

जहरीली छूत— इसका तेल लगानेसे जहरीली छूत मिटती है

—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तुम्भुल

नाम—

बिहार— तुम्भुल। नेपाल—डरीलो । लेटिन—Hypercum patulum (हायपेरिकम पेटुलम) ।

वर्णन—

यह वनस्पति खासिया पहाड़ियों में और हिमालयके समशीतोष्ण प्रान्तमें पैदा होती है। यह एक हमेशा हरी रहने वाली झाड़ी है। इसकी शाखायें नाजुक और लालरंग की होती हैं इसके पत्ते १५ से लेकर ४५ सेंटिमीटर तक लम्बे और ८ से लेकर २० सेंटिमीटर तक चौड़े होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव,—

पटनामें इस वनस्पति के सुगंधित बीज एक सुगन्धित और उत्तेजक पदार्थ के रूपमें काम में लेते हैं।

इंडोचायना में इसे कुत्ते के काटने पर या मधुमक्खीके काटने पर लगानेके काममें लेते हैं।

तुरंजबीन

नाम—

संस्कृत—यवास शर्करा। यूनानी—तुरंजबीन।

वर्णन—

यह एक प्रकारकी शक्कर होती है जो खुरासानमें जवासेके वृक्षों पर ओसके कण पड़नेसे जम जाती है। ऐसा कहा जाता है कि जमनाके किनारेपर भी कुछ वृक्षोंपर यह जमती है। इसका स्वाद मीठा होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानीमत—इसकी क्रिया शक्करकी तरहही होती है मगर इसमें शक्करसे तरी अधिक है। तुरंजबीन वात, पित्त और कफ तीनों ही प्रकृतियोंको लाभदायक है। यहप्यास बुझाती है। हलक और सीनेमें तरी पैदा करती है और उनको मुलायम रखती है। इससे दस्त साफ होता है। पित्तके विकारको यह दस्त की

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

राह निकाल देती है। खांसी, सीनेके दर्द और बुखारमें यह लाभ पहुँचाती है। इसको जीरेके पानीके साथ देनेसे हलकी बुखारमें लाभ होता है २-२॥ तोला तुरंजबीनको भैंसके दूधके साथ रोजाना लेनेसे कामशक्ति बढ़ती है और शरीर मोटा हो जाता है।

तेज़ बुखार, शीतला, खूनके दस्त, बवासीर और पेशाबके साथ खून जानेकी बीमारीमें यह औषधि बहुत नुकसान पहुँचाती है।

आयुर्वैदिकमत—आयुर्वैदिक मतसे तुरंजबीन पौष्टिक, पित्तनाशक, ज्वरको दूर करनेवाली, अग्निदीपक, शीतल और पुरानी होनेपर दस्तावर है। गर्भवती स्त्री, दुर्बल बालक और वृद्ध मनुष्योंको इससे दस्त कराना चाहिये।

राज निघण्टुके मतसे यह शीतल, स्वादिष्ट, कसेली, वीर्य वर्धक, कड़वी, मधुर तथा भ्रम, पित्त और तृषा नाशक है।

यह ध्यानमें रखनेकी बात है कि यूनानी हकीम इसको पहले दर्जेमें गरम और तर बतलाते हैं।

मुजिर—इसका अधिक सेवन तिल्ली और मेदेको नुकसान पहुंचाता है। मतली पैदा करता है। गरम प्रकृतिवालोंके लिये यह विशेषरूपसे हानिकारक है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नाश करनेके लिये इमलीका काढ़ा और उन्नाव या आलू बुखारेका पानी देना चाहिये।

प्रतिनिधि—इसके प्रतिनिधि भिश्री, शकर और सीरेखिस्त (यावनाल शर्करा) हैं।

मात्रा—१ तोलेसे २ तोलेतक है।

—

तुलसी

नाम—

संस्कृत—तुलसी, वैष्णवी, वृन्दा, सुगन्धा, गंध हारिणी, अमृता, पत्रपुष्पा, पवित्रा, सुरवल्लरी, सुभगा, तीव्रा, पावनी, विष्णुवल्लभा, माधवी, सुरवल्ली, देव दुन्दुभी, विष्णुपत्नी, मालाश्रेष्ठा, पापघ्नी, लक्ष्मी, श्रीकृष्णवल्लभा। हिन्दी—तुलसी, रामतुलसी, काली तुलसी। बंगाल—तुलसी, काला तुलसी, कुरल। बम्बई—तुलस, तुलसा। गुजराती—तुलसी। मराठी—तुलसा। तेलगू—वृन्दा, गगेरा, कृष्ण तुलसी। पंजाब—तुलसी। तामील—तुलसी। इंग्लिश—Holy Basil। लेटिन—Ocimum Sanctum आसिमम सेंक्टम।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन—

तुलसी सारे हिन्दू समाजके अन्दर एक पूज्य निगाहसे देखी जाने वाली वनस्पति है। हिन्दुओं का बच्चा २ इस वनस्पतिसे परिचित है। इसलिये इसके विशेष वर्णनकी आवश्यकता नहीं। इसकी काली और सफेदके भेदसे दो जातियां होती हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वैदिकमत—आयुर्वैदिक मतसे सफेद और काली तुलसी तीखी, गरम, दाह जनक, पित्त कारक, हृदयको लाभदायक, कसेली, अग्निदीपक, पचनेमें हलकी तथा वायु, कफ, श्वास, खांसी, हिचकी और कृमिको नष्ट करने वाली और वमन, दुर्गन्ध, कुष्ट, पार्श्वशूल, विष, मूत्रच्छृ, रक्तदोष और भूतबाधा, धनुर्वात, हिस्टीरिया, शल और ज्वरको नष्ट करने वाली है। सफेद और काली तुलसी एक समान गुणवाली है।

पद्मोत्तर पुराणमें लिखा है कि जिस घरके सामने तुलसीका बाग रहता है वह घर तीर्थके समान पवित्र रहता है और उसके सामने यमके दूत और दूसरी प्राणनाशक व्याधियां नहीं आने पाती। तुलसी की गन्धको ग्रहण किया हुआ वायु जहां २ जाता है वहां २ की हवा तत्क्षण शुद्ध हो जाती है।

मलेरिया ज्वर और तुलसी—

तुलसी के रसमें मलेरिया ज्वरके कीटाणुओं को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति पाई जाती है। सर जार्ज वर्ड बुडने २६ अप्रेल सन् १६०६ के टाइम्स में लिखा था कि बम्बईमें जब विक्टोरिया गार्डन और अलबर्ट अजायब घर खोले गये तब जो आदमी वहाँ काम करनेके लिये लगाये गये वे मलेरिया ज्वरके मारे तंग आ गये। तब एक हिन्दू कर्मचारी की रायसे उस बगीचेके चारों ओर तुलसीके झाड़ लगा दिये गये जिसका परिणाम यह हुआ कि वहांसे मच्छर और मलेरिया ज्वर बहुत जल्दी बिदा हो गये।

ईसवी सन् १७०७ में इम्पिरियल मलेरिया कान्फ्रेसने इस बातको जाहिर किया कि काली तुलसी से मलेरियाका बहुत कम उपद्रव हो जाता है।

लण्डनके इम्पीरियल इन्स्टीट्यूटके डाक्टर मोल्डिंग तथा डॉक्टर पेलोने यह बतलाया कि तुलसीके अन्दर एक ऐसा उड़न शील तेल रहता है जो हवामें मिलकर ज्वरको उत्पन्न करने वाले सब जंतुओं को नष्ट कर देता है।

शार्ङ्गधर का मत है कि तुलसीके पत्तोंका रस १ से २ तोला लेकर उसमें १॥ माशेसे ३ माशे तक काली मिरचका चूर्ण मिलाकर पीनेसे विषम ज्वर नष्ट होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डाक्टर देसाइ का मत है कि तुलसी ज्वर नाशक, सर्दी को मिटाने वाली, वात हर, कफघ्न, उत्तेजक और वायुनाशक है। इसके बीज मूत्रल हैं।

तुलसी शीत प्रधान रोगोंमें विशेष रूपसे उपयोगमें ली जाती है। ज्वरके अन्दर इसके स्वरसको काली मिरचोंके साथ पिया जाता है और जोड़ोंके दर्द तथा सन्धियोंकी सूजनमें इसको अपामार्ग और निर्गुण्डीके साथ देते हैं। सरदीके बुखारमें यह बहुत उपयोगी वस्तु है। इसके सेवनसे सरदी छातीमें नहीं उतरने पाती। छातीमें उतरी हुई सरदी कफके मार्गसे बाहर निकल जाती है। जिससे छातीका दर्द भी कम हो जाता है। कफके रोगोंमें तुलसीका रस शहदके साथ दिया जाता है। जिस ज्वरके साथ सन्धियोंकी सूजन या जोड़ोंका दर्द रहता है उसमें तुलसीकी जड़ों की फाँट बनाकर दी जाती है। अधिक दिनों तक चलने वाले अविराम ज्वरमें तुलसीका रस सारे शरीर पर मसलनेसे रोगीको शाँति मिलती है और दूसरे उपद्रव होनेका कोई डर नहीं रहता है। जिन स्थानों पर मलेरिया ज्वरका प्रकोप अधिक रहता है। वहाँ पर तलसीके पौधे लगानेसे ज्वरका प्रकोप कम हो जाता है।

आंतोंके अन्दर तुलसी का प्रभाव कृमिनाशक और वातशामक होता है। यह आंतोंके अन्दर के कृमियों को नष्ट कर देती है। इसके स्वरस से वमन बंद होती है और दस्त साफ होता है। बच्चों की पाचन नलिकाके विकारमें और विशेष कर यकृत वृद्धिमें इसके पत्तों की फांट लाभदायक होती है। दाद पर इसका रस चुपड़ने से दाद मिटता है। व्रणों को इसके स्वरस से धोनेसे उनमें कीड़े नहीं पड़ते और वे जल्दी भर जाते हैं। पीनस रोगमें इसके रस को सूंघने से लाभ होता है। इसके बीजों का हिम जीरा, खड़ी शक्कर, और दूधके साथ देनेसे सुजाक, बस्तिशोथ, मूत्रदाह और मूत्रपिंड की पथरीमें लाभ होता है।

एंसलीके मतानुसार तुलसी की जड़ का काढ़ा ज्वरमें लाभ पहुँचाता है। कोकणमें इसके पत्तों का काढ़ा काली मिरच के साथ पार्यायिक ज्वरोंमें दिया जाता है। यह गठियाके उपयोगमें भी आती है। इसके पत्ते जुकाम को मिटानेवाले और कफ निस्सारक हैं। इनका रस काली मिरच के साथमें जुकामवाले ज्वरमें दिया जाता है।

तुलसी और चर्म रोग—

तुलसीके अन्दर थायमल नामक एक तत्व पाया जाता है। इसका उपयोग चर्मरोगों के ऊपर बहुत सफलतापूर्वक होता है। इसके पंचांग का चूर्ण करके उसको नींबूके रसके साथ लगाने से दाद, खुजली, इत्यादि चर्मरोग दूर होते हैं। जिन घावोंके अन्दर कीड़े पड़ गये हों उन घावों पर इसके चूर्ण को भुरभुराने से वे कीड़े मर जाते हैं। कुष्ट रोगके ऊपर भी यह औषधि अपना प्रभाव दिखलाती है। एक स्थानपर लिखा है कि:—

"कुष्ट और वातरक्त के महारोग जो चमड़े को छोड़ करके मांस और हड्डियों में भी भिद गये

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हों तो उनका भी राम तुलसीके प्रयोगसे नाश हो" जाता है। ऐसा कहा जाता है कि तुलसी के पौधोंमें नर और मादा दो जातियां होती हैं। इनमें से नर जाति पुरुषों के रोगोंके लिए और मादा जाति स्त्रियोंके रोगोंके ऊपर काम में ली जाती है।

जंगलनी जड़ी बूटीके लेखक लिखते हैं कि वातरक्त नामक कुष्टके एक रोगी को जिसकी उंगलियाँ गल गई थीं और चेहरा कुरूप हो गया था एक सन्यासी ने एक वर्ष तक तुलसी का रस पिलाकर रोग मुक्त कर दिया जिसको हमने स्वयं देखा है।

शरीरके ऊपर सफेद दाग पड़ जाना, मुँह के ऊपर खीलें और झांई होकर चेहरे का कुरूप हो जाना इत्यादि रोगों पर भी तुलसी का रस बहुत काम करता है। कविराज रामचन्द्र विद्याविनोद का कथन है कि ताँबे के बरतन में एक दिन भर नींबू का रस भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें समान भाग तुलसी का रस और काली कसौंदी का रस डालकर धूपमें रख देना चाहिये। जब वह रस कुछ गाढ़ा होजाय तब उसको चेहरे पर लगाने से चेहरे की झांई, काले दाग, कीलें इत्यादि नष्ट होकर चेहरा सुन्दर हो जाता है। इस औषधि को निरंतर लगाते रहने से शरीरके सफेद दाग भी मिट जाते हैं।

सांपका जहर और तुलसी—

चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, इत्यादि प्राचीन आचार्य, भावप्रकाश, योगरत्नाकर, इत्यादिके कर्त्ता मध्यकालीन आचार्य और बापट, राबर्टस् इत्यादि आधुनिक चिकित्सकोंने तुलसीके प्रत्येक हिस्सेको सांपके विषमें उपयोगी माना है और आधुनिक कई उदाहरणोंसे यह बात प्रत्यक्ष देखी जा चुकी है कि सांपके काटे हुए व्यक्तिको अगर समयके ऊपर तुलसीका सेवन कराया जाय तो उसकी जान बच सकती है। सांप काटनेके पश्चात् तुरंत १।२ मुट्ठी तुलसीके पत्ते खा जाना चाहिये और उसके साथ ही तुलसीकी जड़को मक्खनमें घिसकर जिस स्थानपर काटा हो उसपर लेप कर देना चाहिये। शुरूमें इस लेपका रंग सफेद होता है मगर ज्यों २ वह जहरको खींचता है त्यों २ उसका रंग काला पड़ता जाता है। इसलिये काला पड़ते ही उसको हटाकर उसकी जगह दूसरा लेप कर देना चाहिये। यह लेप तब तक बदलते रहना चाहिये जब तक कि वह काला पड़ना बंद न हो जाय। जब वह काला न पड़े तब समझना चाहिये कि अब जहरका प्रभाव नष्ट हो गया है।

बंगालके प्रबुद्ध भारत पत्रके आधारसे कलकत्ताके माडर्नरीव्यू पत्रने अपने अक्टूबर सन् १९२६के अंकमें एक घटना प्रकाशितकी थी। वह इस प्रकार है।

"प्रबुद्ध भारत पत्रने हालही में यह प्रकाशित किया है कि थोड़े समय पहिले हमारे आश्रममें यह खबर आई कि पास हीके एक गांवमें एक मनुष्यको सांपने काटा है। यह सुनते ही हमारे आश्रमके २ स्वामी उसकी चिकित्साके लिये वहांसे निकले। सौभाग्यसे आम रिवाजके मुताबिक उस व्यक्तिको जिसस्थान

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पर साँपने काटा था उस स्थानके कुछ ऊपर रस्सीका बंध लगा दिया था। मगर बंध कुछ देरीसे और कुछ ढीला लगनेकी वजहसे स्वामीजीके पहुँचनेके पहिले ही वह मनुष्य बेहोश हो गया था। स्वामीजीने वहाँ पहुँचते ही तुरंत तुलसी मंगाई और उसको कूटकर उसका रस निकाल लिया। साथ ही केलेके पिंड का थोड़ा सा रेशा मंगाकर उसका भी रस निकाल लिया। तुलसीका रस रोगीके मस्तकपर, कपालपर और छातीपर खूब मालिश किया गया और केलेका रस आधा औंस पिलाया गया। यह प्रयोग प्रति ५ मिनट अथवा १० मिनटके अन्तरसे चालू रक्खा गया। इस प्रकार ६।७ घंटेके लगातार उपचारके पश्चात् रोगीको होश आने लगा। इतनी देर लगनेका कारण यह था कि रोगीको साँप काटे आठ घंटे हो चुके थे इसके पश्चात् इलाज शुरू किया गया था।

रोगीके होशमें आनेके पश्चात् दंश स्थानपर चाकूसे आड़े टेढ़े चगदे लगाये गये और फिर मुर्गी का एक बच्चा लेकर उसकी गुदापरके पंख साफ करके उसपर भी आड़े टेढ़े काप लगाये गये और उसकी गुदा का स्थान साँप काटी हुई जगहपर जोर से चिपका दिया गया। ३।४ मिनिटमें मुर्गी का वह बच्चा सर्प विष के प्रभाव से मर गया। उसके पश्चात् क्रमशः ४ मुर्गी के बच्चे उसी प्रकार उस जगह पर चिपकाये गये और वे चारों ही थोड़ी २ अधिक देरी से मर गये। जब छठा मुर्गी का बच्चा उसको लगाया गया तब उस बच्चे पर जहर का असर नहीं हुआ। तब यह समझ लिया गया कि उसका जहर नष्ट हो गया है। तब उसको एनेमा लगाकर दस्त करा दिया और २४ घण्टे में वह रोगी स्त्री पहिले ही की तरह स्वस्थ हो गई।

उपरोक्त पत्र लिखता है कि सर्प विष के प्रत्येक केसमें अगर मुर्गी वाला प्रयोग सम्भव न हो सके और उसमें हिंसा की भावनाएं मालूम पड़े तो सिर्फ तुलसी का रस और केले के पिण्ड का रस देते रहने से बहुत उत्तम परिणाम नजर आता है। कोई भी ऐसे प्रसंग पर जब कि रोगी के जीवन की आशा छोड़ दी गई हो, वह बेहोश हो गया हो और उसके जीवन के लक्षण भी नष्ट हो गये हों ऐसी स्थिति में भी उसके सारे शरीर पर तुलसी के रस का मालिश करते रहने से और केले का रस उसके मुंह में टपकाते रहने से कभी २ आशा के विपरीत भी रोगी की जीवन रक्षा हो जाती है। एक स्वामी जी ने तुलसी के पत्तों के रस से भयंकर से भयंकर बिच्छुओं का जहर भी उतारा था।

तुलसी और नपुंसकता—

तुलसीके बीजोंके अन्दर नपुन्सकता को नष्ट करने की भी अद्भुत शक्ति पाई जाती है। इसके सेवन से धातु का पतलापन दूर होकर गाढ़ापन पैदा होता है। वीर्य बढ़ता है, शरीर में सच्ची गरमी और सच्ची शक्ति पैदा होती है, वायु और कफसे होने वाले अनेक रोग मिट जाते हैं। आज कल नपुंसकता की स्थिति में पड़े हुए हजारों नवयुवक कामशक्ति वर्धक दवाइयोंके विज्ञापनों को टटोलते रहते हैं। ऐसे लोग अगर तुलसी के बीजों को अथवा उसकी जड़ के चूर्ण को समान भाग पुराना गुड़ मिलाकर १।। माशेसे ३ माशा तक की मात्रा में गोलियाँ बनाकर सबेरे शाम एक २ गोली

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गायके धारोष्ण दूधके साथ लिया करें तो ५।६ सप्ताह में ही उनकी सब शिकायतें दूर होकर उनका पुरुषार्थ असली अवस्थामें आजाता है और अकाल में आनेवाली वृद्धावस्था से वे बचे रह सकते हैं ।

उपयोग—

खाँसी—तुलसी के पत्तों के रस को अड़ूसे के पत्तों के रस के साथ देने से खाँसी में बड़ा लाभ होता है ।

बादी का दर्द—मेदे की खराबी से शरीर में ज़ो बादी का दर्द हो जाता है । उसको मिटाने के लिये तुलसी के पत्तोँ का काढ़ा पिलाना चाहिये ।

यकृत के रोग—तुलसी के पत्तों के काढ़े से बच्चों के यकृत की खराबी मिट जाती है ।

कर्ण शूल—तुलसी के पत्तों का ताजा रस गरम करके कान में टपकाने से कर्ण शूल फौरन बन्द होता है ।

सूखी खांसी—तुलसी की मञ्जरी, सोंठ, प्याज का रस और शहद मिलाकर चटाने से सूखी खांसी और बच्चों के दमे में लाभ होता है ।

मलेरिया ज्वर—तुलसी के पत्तों का काढ़ा अथवा इनका स्वरस काली मिर्च के साथ देने से पसीना देकर ज्वर उतर जाता है और घबराहट भी दूर हो जाती है ।

दन्त शूल—काली मिर्च और तुलसी के पत्तों को पीसकर उसकी गोली बनाकर दाँत के नीचे रखने से दन्तशूल दूर होता है ।

गर्भ निरोध—तुलसी के पत्तों के काढ़े की १ प्याली प्रति मास रजोदर्शन के बाद ३ दिन तक अगर स्त्री पी लिया करे तो उसको गर्भ नहीं रहता है ।

दाद—नीबू के रस के साथ तुलसी के पत्तों को पीसकर दाद पर लगाने से दाद अच्छा हो जाता है ।

सर्प विष—साँप के जहर में तुलसी के पत्तों का स्वरस पिलाने से और इसकी मञ्जरी और जड़ों का लेप दंशित स्थान पर बार २ करने से साँप का जहर नष्ट हो जाता हैं । अगर रोगी बेहोश होगया हो तो इसके रस को रोगी के कान और नाक में टपकाते रहना चाहिये ।

पीनस रोग—तुलसी के पत्ते या मञ्जरी के चूर्ण को नस्य रूप में सूंघते रहने से पीनस रोग में लाभ होता हैं । इससे मस्तक के कृमि नष्ट होकर नाक से बदबू का आना मिट जाता है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुरुषार्थ वृद्धि—तुलसीकी जड़को पानीमें घिसकर कामेंद्रियपर लेप करनेसे और तुलसीके बीजोंके चूर्णको समान काली मूसलीके चूर्णमें मिलाकर गायके धारोष्ण दूधके साथ सेवन करनेसे काम शक्ति बहुत प्रबल होती है।

काँतिवर्धन—तुलसीके पत्तोंको पीसकर चेहरे पर उबटन करनेसे चेहरेकी कांति बढ़ती है।

कानके पीछेकी सूजन—तुलसीके पत्ते, अरंडीकी कोंपलें और थोड़े नमकको पीसकर उसका कुनकुना लेप करनेसे कान के पीछेकी सूजन नष्ट हो जाती है।

भूर्च्छा—तुलसीके पत्तोंके रसमें थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर नाकमें टपकानेसे मूर्च्छा और बेहोशी तत्काल नष्ट हो जाती है।

रतौंधी—तुलसीके पत्तोंका स्वरस दिनमें कई बार आंखोंमें डालनेसे रतौंधी नष्ट हो जाती है।

बालरोग—तुलसीके पत्तोंके रसका शरबत बनाकर ३ माशेकी मात्रामें बच्चोंको देनेसे बच्चोंकी सर्दी, जुकाम, खाँसी, उल्टी, दस्त, पेटका फूलना, इत्यादि रोग दूर होते हैं।

स्तम्भन—तुलसीकी जड़का चूर्ण और जमीकंन्दका चूर्ण मिलाकर १ से २ माशेतककी मात्रामें पानमें रखकर खानेसे स्तम्भन होता है।

अतिसार—तुलसीकी फाँट जायफलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे अतिसार अच्छा हो जाता है।

जखम—हर प्रकारके जखमपर तुलसीके पत्तोंको पीसकर लगानेसे जखम जल्दी भर जाते हैं।

विषके उपद्रव—सबप्रकार के विषोको दूर करनेके लिये तुलसीका रस पेट भरके पिलाना चाहिये।

बनावटें—

वायुनाशक चूर्ण—काली तुलसी ६ भाग, निर्गुंडीकी जड़ ४ भाग, भांगरा ६ भाग, मालकाँगनी की जड़ २ भाग, सोंठ १ भाग, मिरच १ भाग, सहंजनेकी छाल १ भाग, पीपल १ भाग। इन सब चीजोंको पीसकर चूर्ण करलेना चाहिये। इस चूर्णमेंसे ३ माशा सबेरे शाम शहदके साथ चाटनेसे अनेक प्रकारके वायुके उपद्रव दूर होते हैं। धनुर्वातमें इस औषधिको शहदके बदले काली तुलसी, लहसन और प्याजके रसके साथ देना चाहिये। साथ ही में सारे शरीर पर तुलसीके रसकी मालिश करना चाहिये।

कफनाशक चूर्ण— तुलसी की मंजरी १ तोला, मुलेठी १ तोला, भोरींगणी की जड़ १ तोला, अड़ूसे के पत्ते १ तोला, घोड़ा बच १ तोला, आकड़ेके फूल आधा तोला, लींडीपीपल आधा तोला। इन सब चीजों को कूट, पीस, छानकर १॥ माशे से ३ माशे तक की मात्रामें बड़े आदमी को और बच्चों को ३ रत्ती से ६ रत्ती तक की मात्रामें देनेसे सब प्रकार की खाँसी और हूपिंग कफ दूर होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नंबर २ — नागरबेलके कच्चे पत्ते, काली तुलसीके पत्ते, अदरक, लौंग और थोड़ा सा कपूर इन सब वस्तुओंको मिलाकर दिनमें ३ बार खानेसे श्वास नलिकामें जमा कफ ढीला पड़कर बाहर निकल जाता है और श्वास और खांसीकी पीड़ा दूर हो जाती है।

ज्वरनाशक क्वाथ—तलसीके पत्ते, खूब कला, गावजबान, ब्राम्ही, नीमगिलोय, सोंठ, मिर्चे, पीपर, अमलतास का गूदा इन सब चीजोंको दो २ माशे लेकर कुचलकर पावभर पानीमें औटाना चाहिये। जब छटांक डेढ़ छटाक पानी रहजाय तब उतारकर छान लेना चाहिये। इस क्वाथको बराबर पिलानेसे सब प्रकारके ज्वरोंमें बड़ा लाभ होता है और शांति मिलती हैं।

तुलसी बबुई

नाम—

संस्कृत—अजगन्धिका, बर्बरा, बर्बरी, खार पुष्पा, मञ्जरीका, सुरभि, सुरसा, तुलसी देवशा। हिन्दी—बाबुइतुलसी, बाबुल, बहारी, बर्बर, रीहां, सब्जा, तुख्म रीहां। बंगाल—बाबुइ तुलसी, डेबुन शा। गुजराती—सब्जा, डमारो। मराठी—सब्जा, तुख्म रीहाँ। पञ्जाब—तुलसी, बबूरी, फुरंज मुश्क, निगन्ध, रीहान। तामील—टिरुनिट्र। तेलगू—भू तुलसी, विबूदि पत्री। उर्दू—जंगली तुलसी। अरबी—असाबुलफ्तियात, बदरबंज, रीहा। अंग्रेजी—Sweet basil (स्वीटबेसिल)। लेटिन—Ocimum basilicum ओसिमम बेसिलिकम।

वर्णन—

यह वनस्पति तुलसी की तरह ही होती है। इसके पत्ते, बीज और गन्ध तुलसीके समान ही होती है। इस पौधेके सूख जाने पर इसकी सुगन्ध बहुत उत्तम हो जांती है। इसके बीज छोटे, काले, कुछ लम्बे, चपटे और नोकदार होते हैं। उनमें सुगन्ध नहीं होती। इनका स्वाद तेलिया और कुछ चरपरा होता है। इनको पानीमें भिगोने से इनके ऊपर बहुत गाढ़ा लुआब आजाता है। इसके पंचांग का अर्क खींचनेसे उसमें से कुछ उड़नशील पीले रंगका तेल निकलता है। जो पड़ा रहनेसे सलाइयों की शकल में जम जाता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक मतसे बर्बरी तुलसी तीन प्रकार की होती है। यह तीनों प्रकार की बर्बरी, तीक्ष्ण, गर्म, कड़वी, रुचिकारक, अग्निवर्धक, कृमिनाशक और ज्वर नाशक होती है। यह

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हृदय और खूनके रोगोंमें उपयोगी है और पित्त को शमन करती है। कफ, वातरोग, धवल रोग, खुजली, जलन, वमन, कुष्ट, वात और विषके विकारों को यह नष्ट करती है। इसके बीज, तृषा, दाह और सूजन को दूर करते हैं।

यूनानी मत— यूनानी मत से यह पहले दर्जेमें गरम और खुश्क है। इस वनस्पति का स्वाद तेज और कड़वा होता है। यह मूत्रल, ऋतुस्राव नियामक और हृदय तथा मस्तिष्क के रोगोंमें उपयोगी है। जोड़ों के पुराने दर्दमें तथा दमा, प्रदाह और तिल्लीके बढ़ने पर इसको देनेसे लाभ होता है। इसके रसको आंखोंमें टपकानेसे आंखों की ज्योति तेज होती है। दाँत, कान और मस्तिष्कके दर्दमें भी यह मुफीद है। इसके रसमें कपूर को मिलाकर काम में लेनेसे नकसीर बन्द होता है। यह वनस्पति कफ निस्सारक और पसीना लाने वाली है।

पेचिशमें इसके बीजोंको शकरके साथ खानेसे बहुत लाभ होता है। खांसी और धाँसीमें इसके बीजों का लुआब पीनेसे बड़ा फायदा होता है। इसके बीज धातुको गाढ़ा और खुश्क करते हैं। इसलिये यह स्तम्भनके नुस्खोंमें भी बहुत काममें आती है। विषके उपद्रवोंपर भी यह मुफीद है। इसके रसको नाकमें टपकानेसे नकसीर बन्द होता है और पागलपनमें लाभ होता है। इसके बीजोंको गुलाबजल या बबूलके गोंदके साथ देनेसे पुरानी पेचिश मिट जाती है।

इसकी जड़ें बच्चों के आंतोंकी शिकायतों को दूर करनेके काममें ली जाती हैं। इसके पत्तोंका रस निकालकर शहदके साथ मिलाकर गरम करके देनेसे बच्चोंके गलेके रोग और कुक्कुर खांसी मिट जाती है।

इसके पत्तोंका रस दादपर लगानेसे बड़ा लाभ होता है। बिच्छूके काटे हुए स्थानपर भी इसके पत्तोंका रस लगाया जाता है। चरक और बापटके मतानुसार यह वनस्पति सर्पके विषमें भी उपयोगी है।

इसके फूल उत्तेजक, मूत्रल और शांतिदायक होते हैं। इसके बीज लुआबदार और शीतल होते हैं। ये सुज़ाक, अतिसार और पुरानी पेचिशमें लाभ पहुँचाते हैं। इनका शीतनिर्यास प्रसवकालकी पीड़ा को दूर करनेके काममें दिया जाता है।

कठिनाईसे आराम होनेवाले दुष्ट फोड़ोंपर इसके बीजोंको धोकर, पीसकर लगानेसे लाभ होता है।

इसके बीजोंके लुआबसे एक प्रकारका सुमधुर पेय तैयार किया जाता है। जिसे मुसलमानोंमें "फालूदा" कहते हैं। यह "फालूदा" शांतिदायक, शरीरकी गर्मीको दूर करने वाला और हमेशा रहने वाली कब्जियत और भीतरी बवासीरके मस्सोंको नष्ट करनेवाला होता है।

इस वनस्पतिके रसको कानोंमें डालनेसे कानका दर्द और कम सुननेकी शिकायत मिट जाती है।

गायनाके अन्दर इसके पत्ते और शाखाओंका काढ़ा ज्वर, स्नायुशूल और जुकाममें लाभदायक माना जाता है। इसके रसको आंखोंमें डालनेसे आंखोंका दुखना बन्द हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अनाममें इसका शीत निर्यास वमन और अतिसार को दूर करने के लिये दिया जाता हैं। इसे जोड़ोंके दर्द और मुंह की बदबू को दूर करने के काममें भी लेते हैं। इसके बीजों का शीत निर्यास ज्वरमें भी दिया जाता है। इसके बीज सांपके काटने पर चूसे जाते हैं इनका एक हिस्सा निगल लिया जाता है और दूसरा हिस्सा काटे हुए स्थानपर लगाया जाता है।

डाक्टर देसाईके मतानुसार इस वनस्पति का स्वरस मज्जा तंतुओं को उत्तेजना देनेवाला कृमिघ्न वातनाशक और स्वेदजनन होता है। इसके बीज मधुर, मुलायम, स्निग्ध, शीतल, मूत्रल और स्तम्भक होते हैं। मज्जा तंतुओं की थकावट से होनेवाले रोगों में, जैसे भूतोन्माद, सन्यास, इत्यादिमें इसका स्वरस अपने उत्तेजक धर्म की वजहसे अच्छा लाभ दिखलाता है।

अधिक दिनों तक चालू रहनेवाले ज्वरमें और ऐसे ज्वर में जिसमें सारे शरीरमें दर्द होता रहता है, इसके स्वरस को पिलाने से और शरीर पर मलनेसे पसीना छूटकर रोगी को शान्ति मिलती है। खांसी के अन्दर भी इसके स्वरस का उपयोग बड़ा लाभदायक होता है। इससे कफ पड़ने की त्रास की कमी होजाती है। पेट की वायु कम होकर श्वास लेनेमें सुविधा होती है। रक्ताभिसरण क्रिया को उत्तेजना मिलती है और मज्जातंतु और श्वासोच्छ्वास के केन्द्र स्थानमें जोम पैदा होता हैं। इसके बीजों की फांट कफ प्रधान रोगोंमें उपयोगी होती है। सूखी खांसीमें इसके स्वरस को शहद के साथ देने से कफ आसानी से निकल जाता है और रोगी को शांति मिलती है। अजीर्ण, उदरशूल और कृमि रोगमें इसके स्वरस को पिलानेसे बड़ा लाभ होता है। इसके बीजों की फांट बनाकर देने से पुरानी कब्जियत, अतिसार और भीतरी बवासीरमें लाभ होता है।

इस बनस्पति का स्वरस ४ से ५ तोले तक की मात्रा में चार २ घण्टेके अन्तरसे सर्पविष को दूर करनेके लिए दिया जाता है।

सर्पविष की यह चिकित्सा चरकके अन्दर पाई जाती है और मुसलमानी हकीमों ने भी इसको मान्य किया है।

इसके रस का बाह्यप्रयोग करनेसे यह फोड़े फुन्सियों को नष्ट करता है, पीब को दूर करता है, और कृमियों को नष्ट करता है। कर्णशूल, दन्तशूल, और दादके ऊपर भी इसका रस बड़ा लाभदायक है।

इसके बीजोंमें वाजिकरण धर्म भी विद्यमान है। इनको ३ माशे से ६ माशे तक की मात्रामें लेने से कामोद्दीपन होता है। सुजाक में इसके बीजों की फांट बनाकर दी जाती है। प्रसूतिकालके उदरशूल में इसका हिम बनाकर देते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तुलसी अर्जकी

नाम—

संस्कृत—अर्जका, गंभीरा, गंधपनिरज्जका, जंबीरा, कथिंजरा, क्षुद्र पर्ण, क्षुद्रतुलसी, मुखर्जिका उग्रगंधा। हिन्दी—अर्जक तुलसी। मराठी—अजगंधा। कनाड़ी—नाइतुलसी। तामील—गंजम कोरई। तेलगू—कुक्क तुलसी। अंग्रेजी—Hoary Basil (होरी बेसिल)। लेटिन—Ocimum Canum ओसिमम केनम।

वर्णन—

यह एक छोटा रुएंदार क्षुप होता है। इसकी ऊंचाई एक हाथ भर की होती है। इसका पौधा बाबुई तुलसी के पौधे की तरह मगर उससे कुछ छोटा होता है। इसमें बहुत सुमधुर गंध आती है। इसके पत्ते कटी हुई किनारों के और फूल सफेद होते है। औषधि प्रयोगमें इसका पंचांग काम में आता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

अर्जक तुलसी स्वेद जनन, उत्तोजक और खाँसी को दूर करने वाली होती है।

संथाल लोग सर्दी से पैदा हुए ज्वरमें इसके पत्तों को पीस कर हाथों और पैरोंकी ऊंगलियों के नाखूनों पर लेप करते हैं। जिससे ज्वर का वेग कम हो जाता है। इसी लेपको वे लोग चर्मरोगों को दूर करने के लिये भी लगाते हैं।

मेडागास्कर में इसके पत्ते और बीज संकोचक, पौष्टिक, शांतिदायक, जुक़ामनाशक और संधिवात की पीड़ा को दूर करने वाले माने जाते हैं। मलेरिया के अन्दर इसके पत्तों का शीत निर्यास या बीजों का चूर्ण उपयोग में लिया जाता है। इसका रस अथवा इसका चूर्ण मस्तिष्क सम्बन्धी बीमारियों में भी लाभदायक माना जाता है।

गोल्ड कास्टमें यह वनस्पति ज्वर की एक घरेलू दवा मानी जाती है। ज्वर के लिये इसको पानी में उबालकर उस पानी को पिया जाता है। नेत्र रोगोंके लिये इसका रस आँखों में टपकाया जाता है और इसका पौधा रोगी के नहाने के पानी में भी रखा जाता है। पेचिशके अन्दर भी इसके पंचांग का रस उपयोगी माना जाता है। नाकसे होने वाले रक्तश्रावमें यह वनस्पति उपयोगी मानी जाती है। नये सुज़ाक में इसका स्वरस देने से और चर्म रोगोंपर इसके पत्तों का लेप करने से लाभ होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तुलसी मूत्री

नाम—

मरा[illegible]-मूत्री तुलस। लेटिन—Ocimum Grandiflorum (ओसिमम ग्रेंडिफ्लोरम)।

वर्णन—

इस वनस्पति का पौधा १ से २ फुट तक ऊंचा और बहुत नाजुक होता है।

गुण, दोष तथा प्रभाव—

जावाके अन्दर इसके पत्तों की फाट मूत्रपिंड और मूत्राशय के रोगों में दी जाती हैं। हालेण्ड और फ्रांस में मूत्रेन्द्रिय के रोगों में इसका उपयोग किया जाता है।

तुला

नाम—

आसाम—तुला। चिटगांव—बुद्ध नारिकेल। कनाड़ी—बेकरो, जपंकतुला। ताभील—कोदइ तोंति। लेटिन—Pterygote Alata (टेरिगोटा एलेटा)

वर्णन—

यह वनस्पति चिट गांव, पेगू, अंडमान और पश्चिमी प्रायः द्वीपमें पैदा होती है। यह एक ऊँचा वृक्ष होता है। इसके नाजुक पत्ते रुएंदार होते हैं। इसका फल बड़ा और सख्त होता है। इस फलमें ४० के करीब बीज निकलते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

कर्नल चोपराके मतानुसार इसके बीज अफीमके बजाय काममें लिये जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तून

नाम—

संस्कृत—तूणी, तुन्नक, आपीन, तुणिक, कच्छक, कान्ता, कंटालक, कुमेरक, महानिम, नंदा, नंदक, नंदी वृक्ष, इत्यादि। हिन्दी—तून। मराठी—तूणी, कुटक। तामील—तून। बंगाल—तून, तूणी, बंबई—कुड़क, तून, महानिम। उर्दू—तून। तामील—तून, तूनू, मदागिरवेम्बू, मालि। तेलगू—गलि, नंदी। लेटिन—Cedrela Toona (सेड्रेला तून)।

वर्णन—

तूनके वृक्ष हिमालयमें सिंध नदीसे पूर्वकी ओर तथा मध्य और दक्षिणी हिन्दुस्तानके पहाड़ी भागोंमें और बंगाल तथा अवधमें बहुत होते हैं। इसका वृक्ष ६० से ७० फुटतक ऊंचा होता है। इसके पिंडकी गोलाई ६ से लेकर १५ फुट तक होती है। इसकी छाल चौथाई इंच मोटी और गहरे भूरे रंगकी होती है। इसकी डालियां बहुत घनी होती हैं और डालियोंकी सींकोंपर १० से लेकर २० तक पत्ते एक दूसरेके आमने सामने लगे रहते हैं। इस वृक्षके सफेद रङ्गके छोटे २ सुगंधित फूल आते हैं। फागुन और चेतमें इसके फूल लगते हैं और जेठ अषाढ़में इसके बीज पकते हैं इस वृक्षके रालकी जातिका एक गोंद लगता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुवदके मतसे तून चरपरी कड़वी, पौष्टिक, शीतल, हलकी, वीर्यवर्धक, मधुर, कसेली, मल-रोधक, त्रिदोषनाशक तथा व्रण, कुष्ट, रक्त पित्त, श्वेत कुष्ट, कंडू, पित्त, रुधिर विकार और दाहको दूर करती है।

इसकी छाल ग्राही, पौष्टिक और थोड़ी मात्रामें ज्वरनाशक है। इसके फूल गर्भाशयके लिये संकोचक है।

इसकी छाल एक शक्तिशाली संकोचक वस्तु है। इस कारण यह बच्चोंके पुराने अतिसारमें बहुत सफलताके साथ काममें ली जाती है और कई प्रकारके घावोंपर इसका पुल्टिस बनाकर लगाया जाता है।

चायना और मलाया प्रायः द्वीपमें इसकी छाल अतिसार और पार्यायिक ज्वरोंमें उपयोगमें ली जाती है।

विषम ज्वरके साथ जब अतिसारकी दस्तें होने लगती है तब इसकी छालकी फांट बनाकर देनेसे लाभ होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ज्वर की चिकित्सामें तणगचके चूर्ण के साथ इसकी फाँट दी जाती है। गर्भाशय की शिथिलता से होनेवाले अत्यार्तवमें इसकी छाल और फूलों की फांट बनाकर देनेसे बड़ा लाभ होता है। व्रणों के ऊपर इसका चूर्ण भुरभुरानेसे अच्छा संकोचन होता है।

यूनानी मत— यूनानी मत से यह सर्द, खुश्क, काबिज और कामोत्तेजक है। फोड़े, फुन्सी और दिल की बीमारियोंमें यह बहुत मुफीद है।

तून और बवासीर—

आधासेर तूनके बीजों को लेकर सिलपर पत्थरसे रगड़ें। जब उनका छिलका दूर होजाय तब उनको ढाई पाव पानीमें जोश दें। जब १॥ पाव पानी रह जाय तब उतारकर छानलें और उसमेंसे [illegible]व पानी लेकर इसमें ७ तोला बुझा हुआ चूना घोलकर आगपर चढ़ादें ज्यों २ पानी जलता [illegible] त्यों २ ऊपर से तूनका बचा हुआ पानी धीरे २ उसमें डालकर पचाते जावें। जब सब पानी जलकर गाढ़ा अवलेह की तरह हो जाय तब उसको उतारकर बेरके बराबर गोलियाँ बांध लें। इन गोलियोंमेंसे एक गोली रोज खिलानेसे खूनी और बादी दोनों प्रकारके बवासीर १ हफ्तेमें आराम हो जाते हैं। अगर ३।४ महीनेके बाद यह बीमारी फिर वापिस लौट जाय तो १ हफ्ते फिर यह गोलियाँ खिला देनेसे हमेशा के लिए आराम होजाता है।

उपयोग—

बुखार और दस्त—इसकी छालके चूर्ण की फक्की देनेसे बुखार व दस्त लगना मिट जाता है।

जीर्णज्वर— इसका काढ़ा पिलानेसे जीर्णज्वर जाता रहता है।

बच्चोंके आँव-दस्त— इसकी छाल के काढ़े से बच्चोंके आँव-दस्त मिट जाते हैं। छालके काढ़े का अवलेह बनाकर चटाने से बच्चोंके आँव दस्त बंद हो जाते है।

फोड़े-फुन्सी— इसकी छाल को घिसकर फोड़े फुन्सी पर लगानेसे आराम हो जाता है।

——

000019

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection